अंग्रेजी उपन्यास का विकास

और उसकी रचना-पद्धति

हिन्दी-समिति-ग्रन्थमाला—५३

अंग्रेजी उपन्यास का विकास और उसकी रचना-पद्धति

लेखक
श्रीनारायण मिश्र, भूतपूर्व रीडर
अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग
उत्तर प्रदेश

प्रथम संस्करण
१९६१

मूल्य
८ रुपये

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

प्रकाशकीय

स्वतंत्र भारत में भी विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी भाषा का अध्ययन अनिवार्य रूप से जारी रखा जाय या नहीं, इस प्रश्न के सम्बन्ध में मतभेद हो सकता है किन्तु वह एक बहुत ही सम्पन्न और समुन्नत भाषा है, इसमें सन्देह की गुंजाइश नहीं। उसमें उच्चकोटि के वैज्ञानिक ग्रन्थ ही अधिक संख्या में उपलब्ध नहीं हैं वरन् उसका उपन्यास-साहित्य भी यथेष्ट विस्तृत और सर्वांगीण है, जिसके अध्ययन से हिन्दी के पाठक, लेखक एवं विद्वान्, सभी लाभान्वित हो सकते हैं। इसी दृष्टि से यह पुस्तक लिखी गयी है। उपन्यासकार में क्या-क्या गुण होने चाहिए, अच्छे उपन्यास की क्या क्या विशेषताएँ होती हैं, किन किन प्रभावों और आवश्यकताओं से अंग्रेजी उपन्यास की प्रणाली और शैली का निर्माण हुआ, साहित्य-कला की दृष्टि से उपन्यास का क्या महत्त्व है, किन किन तत्त्वों के प्रयोग से अंग्रेजी उपन्यास को बल मिला और किस तरह विविध पगडण्डियों तथा राजमार्गों से चल कर वह उस शिखर तक पहुँच सका है, जहाँ वह इस समय विद्यमान है—आदि प्रश्नों का सम्यग् विवेचन इसमें किया गया है।

यह पुस्तक हिन्दी-समिति-ग्रन्थमाला का ५३वाँ पुष्प है। इसके लेखक श्री श्रीनारायण मिश्र अंग्रेजी के सुनिष्णात विद्वानों में से हैं। आपने जीवन भर अंग्रेजी साहित्य का विशिष्ट अध्ययन किया है और उसे "उदार भावनाओं का भांडार तथा स्वतंत्र विचारों का उद्दीपक" मान कर देश के युवक-युवतियों को पढ़ाया है। समूची पुस्तक में आपके गहन अध्ययन, मनन और विचारशीलता की छाप मौजूद है। आपकी शैली बड़ी सरल एवं मनोरंजक है, इसी से किसी भी स्थल को पढ़ते समय जी नहीं ऊबता। आशा है, अंग्रेजी कथा-साहित्य का सौन्दर्य और उत्कर्ष समझने तथा उसका समुचित मूल्यांकन करने में हिन्दी के पाठकों को इस पुस्तक से यथेष्ट सहायता मिलेगी।

लीलाधर शर्मा पर्वतीय
सचिव, हिन्दी समिति

विषय-सूची

भूमिका

यदि मेरे हृदय में हिन्दी भाषा में उच्चकोटि के साहित्य-निर्माण की प्रबल उत्कंठा न होती, या अंग्रेजी साहित्य से कम प्रेम होता, तो मैं इस पुस्तक के लिखने की धृष्टता कभी न करता। मेरे बचपन के समय में हिन्दी और उर्दू एक ही भाषा के दो रूप समझे जाते थे और शहरों के लोग अपनी मातृभाषा प्रायः उर्दू बताया करते थे। बहुत-से घरों मे जनानखाने की भाषा हिन्दी और बैठकखाने की भाषा उर्दू हुआ करती थी, बहुधा लोग अपनी पत्नियों को हिन्दी मे और कारिन्दों को उर्दू में चिट्ठियाँ लिखा करते थे। लड़के अपनी माता को हिन्दी में और पिता को उर्दू में खत लिखते थे। देखते-देखते हिन्दी और उर्दू दोनों मे कुछ ऐसा परिवर्तन हुआ कि वे दो अलग-अलग भाषाएँ हो गयी, और लेखक चुन-चुनकर ऐसे शब्दों को अपनी भाषा से निकालने लगे जिनका प्रयोग पहले दोनों मे हुआ करता था। आज वह दिन आ गया है कि मेरे जैसे सैकड़ों व्यक्ति चुप होकर इसलिए अलग बैठ गये हैं कि उनकी भाषा न हिन्दी मानी जाती है और न उर्दू। मेरे लिए एक कठिनाई और भी बहुत बड़ी थी, जो अंग्रेजी भाषा और साहित्य के संयोग के कारण उत्पन्न हुई थी। मेरे विचारों का ढाँचा तथा वाक्य-रचना का ढंग अंग्रेजी हो गया था जिसे ठीक करना कठिन था। इसके अलावा, ठीक शब्दों का मिलना भी जितना आवश्यक था उतना ही दुष्कर जान पड़ता था, और मैं न तो अपने अभिप्राय को कतर-ब्योंत करके कुछ-का-कुछ कर सकता था, न कोरे शब्दों के आडंबर में उसे छिपाकर केवल कोलाहल कर सकता था। जो पुस्तक मैं लिखना चाहता था उसमें ठोस बातें और विदेशी साहित्य की प्रथा एवं प्रणाली का उल्लेख करना था, जिसके लिए सादगी तथा सरलता की आवश्यकता थी। ये सारी कठिनाइयाँ मेरे सामने थीं, जो रह-रहकर मुझे निराश कर देती थी, किन्तु बार-बार लिखने की प्रबल इच्छा मुझे प्रोत्साहित करती थी और मैं यह सोचकर लिखता जाता था कि यह अपने विषय की प्रथम पुस्तक होगी, अतः किसी सूरत मे यह अच्छी भले ही न हो, पर यह आशा की जा सकती थी कि इसके बाद जो दूसरी और उसके बाद तीसरी पुस्तक निकलेगी, वह संभवतः और अधिक अच्छी होती जायगी, लिखने-वाला कोई भी क्यों न हो।

मेरी यह चेष्टा तीस वर्ष के उस जीवन का क्रम समझी जानी चाहिए जो मैंने अंग्रेजी साहित्य के पठन-पाठन में व्यतीत किया है। तीस वर्ष तक मैंने अंग्रेज़ी साहित्य को उदार भावनाओं का भंडार और स्वतंत्र विचारों का उद्दीपक जानकर देश के युवकों तथा युवतियों को पढाया है और उसके द्वारा उन्हें मातृभाषा में वैसे ही श्रेष्ठ साहित्य की रचना करने का प्रोत्साहन दिया है। उस साहित्य के अध्ययन का मुख्य लाभ मैं उनकी विचार-शक्ति एवं चेतना की उत्तेजना और उनकी कल्पना की जाग्रति मानता आया हूँ। और इस उत्तेजना तथा जाग्रति के फलस्वरूप मैंने सदा उनसे यह आशा रखी है कि वे अपने चारों ओर के संसार को सजग दृष्टि से, विचार-शील होकर देखेंगे और कल्पना द्वारा अपने आदर्शों तथा उमंगों का विस्तार करेंगे, जिसका परिणाम यह होगा कि उनका संसार सुन्दर और अर्थपूर्ण तथा उनका सारा जीवन सारयुक्त हो जायगा।

जब हम कोई ऐसी कविता पढ़ते हैं जिसमें कवि ने किसी स्थान की सुषमा मूर्तिमान् की है, तो हमें उस कविता को समझने के लिए वह स्थान देखने की आवश्यकता नहीं होती। कविता और वर्णन परस्पर-विरुद्ध शब्द हैं; यदि कोई रचना कविता कहने के योग्य है तो वह वर्णन नहीं हो सकती, क्योंकि उस रचना में कवि अपने सुख-दुःख की भावना को प्रकृति के संयोग से प्रकट करता है, प्रकृति के दृश्य का वर्णन नहीं करता। यदि वह रचना दृश्य-वर्णन है तो भावना-वर्णन को अशुद्ध किये बिना नहीं रह सकती। जब एक अंग्रेज कवि अपनी भावना से प्रेरित होकर अपने गाँव के किन्हीं वृक्षों को तीन भाई कहकर उन्हें अपनी रचना में हमारे सामने उपस्थित करता है, तो हमें कविता समझने के लिए उन्हीं वृक्षों को जाकर देखने की जरूरत नहीं होती। ऐसी कविता हमें अपने अनुभव किये हुए दृश्यों की सुन्दरता देखने की योग्यता देती है; उसे पढ़ने के उपरान्त हमारे गाँव के तीन नीम के वृक्ष जो पास-पास उगे खड़े हैं, हमें प्रकृति के ऐक्य में भाई-भाई मालूम पड़ते हैं। कविता समझने का बस यही अर्थ होता है।

टामस हार्डी के उपन्यासों की समस्याएँ हमारे समाज में अथवा हमारे व्यक्ति-जीवन में नहीं उठती, और न हम उन्हें अंग्रेजों की भाँति समझ ही सकते हैं, किन्तु हार्डी के पात्रों की मानवता तथा उनके चरित्रों से हम प्रभावित होते हैं, उन्हें हम अपने संसार में रखकर उनकी मानवता एवं चरित्रों को अपनी समस्याओं तथा समाज के सम्बन्ध में देखते और परखते हैं, उनके सत्य को स्वीकार करते है। इसी विधि से एक देश के लोग दूसरे देश के साहित्य को समझते तथा उसके अध्ययन

से शक्ति प्राप्त करके अपनी मातृभाषा में साहित्य का निर्माण करते हैं। इसी रीति से अंग्रेजों ने भी यूरोप के विभिन्न साहित्यों के अध्ययन से उत्तेजना तथा जाग्रति प्राप्त करके अपनी मातृभाषा में मौलिक रचनाएँ की थीं और यूनानी, लातीनी, फ़्रांसीसी, यहाँ तक कि पूर्वी भाषाओं के साहित्य से भी प्रभावित होकर अंग्रेजी साहित्य का निर्माण किया था। मौलिकता का यह रहस्य वे अच्छी तरह जानते थे। वे जानते थे कि मौलिक रचना मकड़ी के जाले की भाँति पेट में से नहीं उपजती, बल्कि आत्मा के उस बल से उद्भूत होती है, जो अध्ययन तथा सैकड़ों महान् लेखकों की पुस्तकों, बीसों अनुभूतियों तथा शास्त्रों एवं विद्याओं के पाचन से उत्पन्न होता है। यदि लेखक अपने पड़ोसी की निरी नकल नहीं है, यदि उसके पास अपनी कोई बात कहने की है जिसे बिना कहे उसे चैन नहीं पड़ती, और जिसे कोई दूसरा व्यक्ति संसार से कह भी नहीं सकता, तो अध्ययन और पाचन से प्राप्त यह बल उसे अपनी बात संसार के सामने साहस से कहने की सामर्थ्य देता है।

मेरी समझ में हमारी बौद्धिक परिधि को नये केन्द्र की आवश्यकता है, जहाँ से हम जीवन तथा संसार को नये पारस्परिक सम्बन्धों के साथ देख सकें और अपने अनुभवों एवं विचारों को फिर से पूर्णता के शिखर पर पहुँचा सकें। स्वतंत्र भारत में हम अपने बच्चों को अंग्रेजी भाषा पढ़ायें या न पढ़ायें, किन्तु हमारे साहित्यकार आध्यात्मिक विषयों के अतिरिक्त यदि इस लोक एवं आधुनिक संसार और मनुष्य-जीवन तथा समाज के सम्बन्ध की बात साहित्य में लिखकर गौरव प्राप्त करना चाहेंगे, तो उन्हें एक अंग्रेजी ही नहीं बल्कि सभ्य संसार की कई भाषाएँ सीखनी पड़ेंगी। "पिदरम सुल्ताँ बूद" से दुनिया बहुत दूर जा पहुँची है। यदि पक्षपात छोड़कर हम देखें और अपनी भाषा के लौकिक साहित्य की तुलना किसी सभ्य विदेशी साहित्य से करें, तो हमें अन्तर जानकर यह पता चलेगा कि हिन्दी साहित्य के आदर्शों को कितना ऊँचा उठाने की आवश्यकता है। हमें फिर से कला को तपस्या मानने की जरूरत है।

विदेशी साहित्यों के यथोचित अध्ययन से हमें मालूम होगा कि किसी की पहली, दूसरी या दसवीं रचना साहित्य नहीं होती। साहित्यकार आत्माहुति देकर तैयार होता है, और बीसों रचनाएँ आग में फूंककर कहीं एक प्रकाशित करता है। अखाड़ेबाज समालोचक "मन तुरा काज़ी बिगोयम तू मरा हाजी बिगो" के सिद्धान्त पर श्रेष्ठ साहित्य की उत्पत्ति में योग नहीं दे सकते। हम हिन्दी को देश की समुन्नत

भाषा उसी समय बना सकेंगे, जब पहले ऐसा आधुनिक साहित्य संसार के सामने प्रस्तुत करें जिसे पढ़ने के लिए लोग हिन्दी सीखें। सरवैन्टीज़ और शेक्सपियर, वर्जिल और मालियर के पढ़ने को हज़ारों ही लोगों ने उनकी मौलिक रचनाओं की भाषा सीखी होगी और उनसे प्रभावित होकर अपनी मातृभाषा में श्रेष्ठ रचनाएँ की होंगी तब जाकर कही स्पेन, इंग्लैण्ड, इटली और फ्रांस के श्रेष्ठ साहित्यों की उत्पत्ति हुई होगी। कोरी नकल करके या दूसरी पुस्तकों के आधार पर कुछ लिख-कर साहित्य की उन्नति नहीं होती, और न केवल अनुवाद करने से काम चलता है। पहले तो एक महत्त्वपूर्ण श्रेष्ठ रचना (Masterpiece) का ऐसा अनुवाद करना असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य है कि स्वयं अनुवाद भी महत्त्वपूर्ण श्रेष्ठ रचना हो जाय, फिर उस अनुवाद से मौलिक ग्रन्थ का लाभ उठाना भी प्रायः दुर्लभ है। श्रेष्ठ साहित्यकार कई-कई भाषाओं के पण्डित होते हैं, कई-कई दर्शन तथा विज्ञान की पुस्तकों को पढ़ते और उन पर विचार करते हैं, और इस सारी विद्या को अपने भीतर पचाकर बल प्राप्त करते है, तब कहीं मौलिक रचना कर पाते हैं। ऐसे विस्तृत ज्ञान के बिना वे वस्तुओं को बड़े से बड़े घेरे में लेकर संसार तथा जीवन के सम्बन्ध में नही देख सकते। वस्तुओं को ऐसे घेरे में लेकर उनके सारे सम्बन्धों के सहित देखने का नाम ही कल्चर है, जिसमें मनुष्य तथा साहित्य की पूर्णता अथवा सिद्धि होती है। इसी पूर्णता को लक्ष्य बनाकर संसार के सभी साहित्यों में श्रेष्ठ रचनाएँ की गयी है; इसी पूर्णता को प्राप्त करने के हेतु अनुभवों का सूक्ष्म निरीक्षण किया जाता है, मानव-प्रकृति की गहराइयों में घुसकर उसके तथ्यों की खोज की जाती है।

कलाकार घटनाओं तथा परिस्थितियों के बीच में व्यक्ति को रखकर उसके अस्तित्व एवं विशेष गुणों को इस प्रकार दर्शाता है कि मनुष्य-जीवन की अपारता साकार हो जाती है। कला का एकमात्र उद्देश्य जीवन को मूर्तिमान् करना होता है और कलाकार जीवन की गति का निरीक्षण इसलिए करता है कि जिसमें आत्मा की उन्नति पर अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रभाव को देखकर उसकी महत्ता का अनुमान किया जा सके। स्थूल अथवा पदार्थ, घटना तथा स्थिति, कला की दृष्टि में ऐसे परदे हैं जिनके पीछे कलाकार वह तत्त्व ढूँढ़ता है जो पूर्णता प्राप्त करने की चेष्टा करने के कारण जीवित कहा जाता है। कला अपूर्ण को ही कुरूप तथा अधर्मी समझती है, और मनुष्य एवं प्रकृति दोनों को पूर्णता प्राप्त करने की शक्ति तथा स्वतंत्रता प्रदान करती है। जीवन को इस प्रकार मूर्तिमान् करने के

बड़े अच्छे उदाहरण नाटक तथा उपन्यास में मिलते हैं, जिन्हें अंग्रेजी साहित्य में उन्नत स्थान मिला है।

आनार्ल्ड बेनेट ने 'दि आथर्स क्राफ्ट' (The Author's Craft) नामक पुस्तक में कहानी-कला के सम्बन्ध में लिखते हुए बताया है कि उपन्यासकार वह मनुष्य होता है जो जीवन तथा संसार का निरीक्षण करके "ऐसा व्याकुल हो जाता है कि उसे अपने देखे हुए तथ्यों का आभास विवश होकर दूसरे मनुष्यों के सन्मुख प्रस्तुत करना पड़ता है।" कहानी-साहित्य (Fiction) की वर्णनात्मक शैली एवं कलात्मक प्रणाली को पसन्द करके "वह इसलिए चुनता है कि उसके सजीव माध्यम द्वारा" उसकी भावना सुगम रीति से प्रकट होती है, "जिससे उसे शान्ति प्राप्त होती है।" इस परिभाषा में उपन्यासकार की तीन मुख्य विशेषताओं पर जोर दिया गया है; एक उस अनुभव पर, जो उसे जीवन से प्राप्त होता है और उसकी भावना को तीव्र करके उसे आदर्श सौन्दर्य की ओर बढ़ाता है, दूसरे उस शक्ति पर, जो उसे तीव्र भावना के बलवान् पंखों पर ऊँचा उठाकर यथार्थ के दर्शन कराती और उसे व्याकुल कर देती है और तीसरे उस विवशता पर, जो यथार्थ के आभास (vision) को दूसरों तक पहुँचाने के लिए उसे बाध्य करती है। जिस गुण का परिभाषा में न तो उल्लेख ही किया गया है और न जिसे अन्तर्गत समझा जा सकता है, वह गुण इतना महत्त्वपूर्ण है कि उसका अभाव उपन्यासकार के दूसरे सब गुणों को निष्फल तथा व्यर्थ कर देता है। यह गुण उपन्यासकार की उस विशेषता से होता है जिसके कारण इस संसार को देवलोक न मानते हुए भी वह ऊँचे से ऊँचे आदर्श मन में धारण करता है और उन्हे मनुष्य-जीवन में फलीभूत करके गौरवपूर्ण भविष्य की कल्पना करता है।

इन मानसिक शक्तियों के अलावा उपन्यासकार को प्रणाली तथा शैली के यथोचित ज्ञान की भी आवश्यकता होती है। प्रणाली का घनिष्ठ सम्बन्ध उसकी धारणा और स्फूर्ति से होता है, क्योंकि यथार्थ का आभास दूसरो तक पहुँचाना कलात्मक प्रणाली और शैली द्वारा ही सम्भव होता है। कलात्मक शैली और प्रणाली उपन्यासकार की विवशता दूसरों को अनुभव कराती एवं उनके हृदय मे भी भावना जगाती है। कोई श्रेष्ठ रचना ऐसी नही होती जिसमें प्रणाली का ध्यान न रखा गया हो, या जिसने प्रणाली का अनादर करके और उसे तुच्छ समझकर श्रेष्ठता प्राप्त की हो। यह अवश्य होता है कि कला के किसी अंग में प्रणाली के नियमों का पालन कम और किसी में अधिक दृढ़ता से किया गया हो, किन्तु किसी अंग का स्वरूप

या "बनावटी और असत्य" होता है। श्रेष्ठ उपन्यासों में कर्म चरित्र का फल ही नही होता बल्कि चरित्र को पूर्णता की ओर अग्रसर करता है और इस चेष्टा में कथावस्तु विस्तार प्राप्त करती है। कथावस्तु की गति में कभी कर्म चरित्र अथवा कर्ता के वश के बाहर हो जाता है, यहाँ तक कि कर्ता उसे अनिवार्य जानकर उसके सामने सिर झुका देता है या उसके विरुद्ध संघर्ष करने लगता है। जिन उपन्यासों में कर्म चरित्र अथवा कर्ता के अधीन नहीं रहता, उनमें दिलचस्पी क्षणिक होती है, और जिनकी कथावस्तु मे कर्म बुद्धिरहित होता है, उन्हें कोई दूसरी बार नहीं पढ़ सकता।

जिन उपन्यासों का उद्देश्य जीवन का कलात्मक चित्रण होता है उनमें कला के सिद्धान्तों के अनुसार चरित्र, कर्म तथा दृश्य का सम्भाव्य अत्यन्त आवश्यक होता है। जीवन में ऐसी घटनाएँ हो सकती हैं जो विश्वास के योग्य न हों, किन्तु हम उनमें विश्वास इसलिए करते है कि हम उन्हें सत्य जानते हैं। यद्यपि वह सत्य कल्पित असत्य से कही अधिक विचित्र होता है, फिर भी ऐसी घटनाओं का उपन्यास में प्रवेश होने से यथार्थ का वह इन्द्रजाल टूट जाता है जिसे बुनकर खड़ा करने की चेष्टा प्रत्येक उपन्यास में की जाती है। उपन्यासकार ऐसा तभी कर सकता है जब वह पाठक के मन मे से उसके उस विश्वास को पहले निकाल बाहर कर दे, जो सम्भाव्य को स्वीकार करने के लिए वास्तविक को आवश्यक समझता है। ऐसा करने के बाद भी उपन्यासकार को अपने प्रारम्भिक ढाँचे अथवा नक़शे के स्वीकृत पक्ष को छोड़ना उचित नहीं होता।

जीवन में संयोगवश घटनाएँ होती हैं, किन्तु उपन्यास के संसार में उनका होना सन्देह उत्पन्न करता है, और उनका आधिक्य तो कहानी को विश्वास के योग्य नही रखता। अनहोनी घटना विशेष अवस्थाओं में ही सम्भाव्य समझी जाती है, जिनका निर्णय कठिनाइयों से खाली नही होता। जहाँ तक चरित्र का सम्बन्ध है, कहानी मे चाहे वह स्थिर अवस्था में प्रस्तुत किया जाय चाहे उन्नति के क्रम में दिखाया जाय, उपन्यासकार उसके चित्रण में न तो प्रकृति के नमूने को बदल सकता है, न अपने अनुभव को झुठला सकता है। किसी दैवी कारण के बिना चरित्र का अकस्मात् परिवर्तन असम्भव है। एक मनुष्य अचानक कुछ तभी कर बैठ सकता है जब "अचानक" काम करना उसकी विशेषता हो। रिचर्डसन के उपन्यास में जब पैमिला उसी व्यक्ति से विवाह करती है जिसके कारण उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूटा था, तो विवाहको हम यदि स्वीकार भी कर लेते हैं तो भी यह माननेको तैयार

नहीं होते कि वह सुखी भी हो सकती है। सर वाल्टर स्काट के "दि हार्ट आफ़ मिडलोथियन" में जब जीनी डीन की बहन एफ़ी का उपन्यास के अन्तिम भाग में बिलकुल कायापलट हो जाता है, तो हमें विश्वास इसलिए नहीं होता कि उसके चरित्र में इतना परिवर्तन हम असम्भव समझते हैं।

चरित्र का चित्रण दो रीतियों से किया जाता है: एक सीधी रीति से, बिना किसी मध्यस्थ के, पात्रों के कार्य तथा वार्तालाप एवं चाल-ढाल को हमारे सामने लाकर, जिससे हमें मालूम हो जाता है कि वे लोग जो ऐसे काम करते और इस तरह बोलते-चालते हैं, कैसे हैं। नाटक की यही रीति है और उन उपन्यासों में भी इसी प्रकार चरित्र-चित्रण किया जाता है जो साहसिक कार्यों की सामग्री पर लिखे जाते हैं, जैसे ड्यूमा के उपन्यासों में किया गया है।

चरित्र-चित्रण की दूसरी रीति यह है कि पात्रों के बारे में लेखक स्वयं वे बातें बतायें जो उनकी विशेष प्रकृति और स्वभाव को दर्शाती हैं। ऐसा ही वर्णन तथा व्याख्या पात्रों से भी एक दूसरे के बारे में करायी जाती है जिनके द्वारा चरित्र का पता चलता है। बहुधा उपन्यासों में दोनों रीतियों से काम लिया जाता है, जैसे कि स्कॉट के 'क्वेन्टिन डर्वर्ड' (Quentin Durward) में किया गया है। इस उपन्यास का प्रथम अध्याय लुई ११ के चरित्र का चित्रण करता है और कहानी दूसरे अध्याय से प्रारम्भ होती है। क्वेन्टिन नाम-मात्र का कथापुरुष है जिसका चरित्र उसके कामों के द्वारा दिखाया गया है और अन्त में स्कॉट एक प्रकरण लिखकर संक्षेप में उसके चरित्र का वर्णन करता है तथा उसकी व्याख्या करता है। स्टीवेन्सन अपने 'दि एब टाइड' (The Ebb Tide) नामक उपन्यास में दोनों रीतियों का प्रयोग करके हेरिक के चरित्र का चित्र अपने वर्णन में और उसके कृत्यों को दिखाकर तथा उसका वार्तालाप पाठकों को सुनाकर खींचता है। उपन्यास के कई दूसरे पात्रों को उन्हीं की बातचीत और कामों को प्रयोग में लाकर तथा अपनी ओर से कुछ न कहकर हमारे सामने लाता है और हम उनके चरित्र भली भाँति समझ लेते हैं। ऐसे उपन्यासों में, जिन्हें हम उनके मनोवैज्ञानिक विषयों के कारण अलग श्रेणी में रखते हैं, जैसे जार्ज इलियट और जार्ज मेरिडिथ के उपन्यास, लेखक पात्रों के भावों, विचारों, प्रेरणाओं की सूक्ष्म परीक्षा करता है और इस प्रकार उनकी मनोवृत्तियों का निरीक्षण करके उनके कृत्यों तथा वार्तालाप के अभिप्राय को समझाता और चरित्र को भाँति-भाँति की परिस्थितियों में रखकर जाँचता है। ऐसा निरीक्षण नाटक में स्वगत-भाषणों के द्वारा किया जाता है जो दोनों रूपों

से कथावस्तु की गति को रोकता और कृत्यों के महत्त्व को कम करता है। आधुनिक उपन्यासकार बहुधा इस प्रकार अपने उपन्यासों को निबन्धों से भर देते हैं, और समाज-व्यवस्था से सम्बन्ध रखनेवाले विषयों पर अपने विचार प्रकट करने का उपन्यास को माध्यम बनाकर उनकी दिलचस्पी क्षणिक कर देते हैं। ऐसे उपन्यास किसी तरह समाचारपत्रों की भाँति एक बार पढ़कर रद्द कर दिये जाते हैं।

चरित्र-चित्रण मे आस-पास की वस्तुओं से भी बहुत काम लिया जाता है। लोगों के मकान, उनकी सजावट और सामान सामाजिक स्थिति, स्वभाव, व्यवहार, रुचि एवं प्रवृत्तियो की सूचना देते हैं और उनके चरित्र को बताते है। लुई ११ की गढ़ी का विस्तृत वर्णन देकर स्कॉट ने उसमें रहनेवाले का भयानक रूप दिखा दिया है। लुई के पहनावे का वर्णन करके स्कॉट ने उसकी कंजूसी और मिथ्या-विश्वास का सुन्दर चित्रण किया है। चरित्र-चित्रण की रीतियों में उपन्यासकार का वह ढंग भी गिना जाना चाहिए, जिससे उपन्यास में पात्रों को साथ-साथ रखा जाता है और तुलना अथवा अन्तर दिखाकर उनका एक दूसरे से अलग व्यक्तित्व दिया जाता है। यह रीति उपन्यास मे एक व्यक्ति को दूसरे के साथ रखकर ठीक उसी तरह देखनी है जैसे चित्रकला में एक रंग को दूसरे के निकट लाकर और एक ही रंग की विभिन्न, गहरी तथा हलकी छायाओं को पास-पास रखकर चित्रों को प्रभावपूर्ण किया जाता है। इस प्रकार वे पात्र, जो एक दूसरे से भिन्न होते हैं उनकी भिन्नता, और जो समान होते हैं उनकी समानता उभर आती है, किन्तु फिर भी वे अलग-अलग व्यक्ति के रूपों मे उपन्यास में पहचाने जाते हैं।

इस भिन्नता और समानता का प्रयोग उपन्यासकार अपनी रुचि के अनुसार करते है और इस प्रकार चरित्रों की विशेषताएँ दिखाते हैं। नाटक में शेक्सपियर ने इस रीति से अपने पात्रों के चरित्रों को बड़े सुन्दर ढंग से दिखाया है। पात्रों को इस विधि से उपन्यास तथा नाटक में रखने के लिए कथावस्तु की विशेष प्रकार से व्यवस्था की जाती है और पात्रों के संब उनकी प्रवृत्तियों, इरादों, स्वभावों के अनुसार बनाये जाते है जिसका फल यह होता है कि पात्र अपने गुण और स्वभाव सहित कहानी में काम करके अपने को पूर्ण रूप में प्रकाशित कर सकते हैं।

चरित्र-चित्रण में कहानी की पृष्ठभूमि तथा उसके वातावरण से भी काम लिया जाता है। प्राचीन कहानियों में देश और काल का कोई जिक्र नहीं होता था—"एक था राजा" से बहुधा कहानियाँ प्रारम्भ होती थीं और "जैसी उसकी बनी वैसी सबकी बने" पर समाप्त होती थीं। 'जैक एन्ड दि बीन-स्टाक' में कोई पृष्ठभूमि

नहीं है, जो उस कहानी को किसी देश की स्थिर कर सके। कहानी-साहित्य की प्रारम्भिक दशा में जब पृष्ठभूमि देने की प्रथा चली तो बहुत काल तक एक ही से दृश्य सब प्रकार की कहानियों में दिये जाते रहे जो धीरे-धीरे प्राकृतिक सौन्दर्य की झलक दिखाकर कथावस्तु से पृथक् किन्तु आवश्यक अंग बन गये। इटैलियन तथा स्पैनिश भाषाओं के "नोवेले" मध्यकालीन अनुवादों में बिना किसी हानि के दूसरे देशों में पहुँच गये, और वे जहाँ पहुँचे वहीं के हो गये क्योंकि वे देश और काल से कोई सम्बन्ध नहीं रखते थे। यही हाल प्राचीन रोमांसों का भी हुआ। प्राकृतिक सौन्दर्य के जो दृश्य उनमें होते थे उनका सम्बन्ध उनकी कथावस्तु से नहीं होता था और वे बिना हानि के उनमें से निकाले जा सकते थे। उनमें जितने दुष्कर्म होते थे वे भयानक और अँधेरे जंगलों में होते थे और सुख तथा शान्तिमय जीवन रमणीय उद्यानों में व्यतीत होता था। धीरे-धीरे लोकमत ने कुछ इसी प्रकार के और दृश्य रोमांसों के लिए निश्चित कर दिये, जो कथावस्तु से सम्बन्धित न होते हुए भी उनमें से अलग नहीं किये जाते थे।

उपन्यासों से कहीं पहले नाटकों में इस प्राकृतिक सामग्री का आधुनिक उपयोग होना प्रारम्भ हुआ और शेक्सपियर ने दृश्य तथा वातावरण को चरित्र एवं कृत्य का सहायक बनाकर यह दिखाया कि नाटक में होनेवाली घटना से उनको एकस्वर होना चाहिए। शेक्सपियर ने 'दि मर्चेन्ट आफ वेनिस' (The Merchant of Venice) में ऐन्टोनियो को अकारण शोकाकुल अवस्था में दिखाकर नाटक इसलिए प्रारम्भ किया कि थोड़े ही दिन के उपरान्त उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूटनेवाला था और उसकी जान खतरे में थी। 'जूलिअस सीज़र' (Julius Ceaser) में प्रकृति एक भयानक हलचल में है—बिजलियाँ चमक रही हैं, तारे टूटकर गिर रहे हैं, क्योंकि देश में विद्रोह उठनेवाला है जो रुधिर की नदियाँ बहा देगा।

इसी प्रकार प्रकृति के आवेग को मनुष्य के कृत्यों से एकस्वर करके 'मैकबेथ' (Macbeth) के नाटक का आरम्भ होता है। उसका पहला दृश्य एक मरुभूमि का है जहाँ तेज़ हवाएँ चल रही हैं, बिजलियाँ चमक रही हैं, बादल गरज रहे हैं, मूसलाधार पानी बरस रहा है और उस खुले मैदान में कुरूपा डाइनें किलकारी मार रही हैं। शेक्सपियर ने प्रकृति की यह सारी डरावनी शक्तियाँ इसलिए पहले दृश्य में एकत्रित की हैं क्योंकि नाटक में एक विश्वासपात्र सेना-नायक अपने राजा का वध करके उसका राज्य लेनेवाला है और मनुष्य का वध जीवन में एक बड़ी भयं-

कर तथा अमानुषिक दुर्घटना है। शेक्सपियर तथा दूसरे नाटककारों ने होनेवाली घटना से प्रकृति को एक स्वर करके यह भी प्रकट किया था कि यह ऐक्य मनुष्य जीवन का एक वडा गम्भीर अनुभव है, कोई वाहर से आरोपित दिलचस्पी की वात नही है। यद्यपि कोई पृष्ठभूमि स्वय, विना कर्ता के या विना कर्म के, भाव उत्पन्न नही करती, फिर भी उसके द्वारा भाव कथावस्तु से एकस्वर अवश्य होता है, जिसके कारण वह भाव को कर्म तथा कर्ता मे पूर्ण रूप से प्रकाशित होने में विशेप सहायता देती है। उपन्यासकारो ने इस अनुभव से उन्नीसवी शताब्दी में पूरा लाभ उठाया। वे जानते थे कि यदि एक दृश्य कार्य करने को उत्तेजित करता है तो दूसरा विचारो मे निमग्न करके चुपचाप वैठा देता है; इसी तरह यदि एक समय और स्थान दुष्कर्म की प्रेरणा देता है तो दूसरा गाने तथा खुशियाँ मनाने को प्रेरित करता है। जेन आस्टेन से आरम्भ करके मिस ब्रान्टी और मिसेज़ गैस्केल जैसे सभी उपन्यास-कारो ने इस अग को, जिसे वे 'सेटिग' (Setting) कहते थे, खूव पुष्ट किया, और जार्ज मेरिडिथ तथा टामस हार्डी ने उसे पूर्णरूप से अपने उपन्यासों की विशेषता वना दिया।

इन विभिन्न अगो को एकत्र करके उपन्यास मे कई रीतियो से उन्हे व्यवस्थित किया जाता है। वहुधा कहानियो मे तीन तत्त्व हुआ करते है; एक वह व्यक्ति, अथवा व्यक्ति-सघ, जो प्रमुख पात्र होने के कारण कहानी का कथापुरुप कहलाता है, दूसरा वह ससार जिसमे जन्म लेकर कथापुरुप प्रौढ होता, कार्य करता और जीवन व्यतीत करता है और तीसरा वह प्रश्न जिसके हल करने की चेष्टा मे कथापुरुष लगा रहकर जीवन व्यतीत करता है। इन तत्त्वो में से किसी एक को उपन्यामकार अपने अनुभव से प्राप्त करके उसके सम्वन्ध के दूसरे तत्त्व को कल्पना मे निरूपित करता है। यदि वह किसी अनजान व्यक्ति को इतना दिलचस्प पाता है कि उसे अपने उपन्यास का कथापुरुप वनाये तो कल्पना मे उस ससार को निरूपित करता है जिसमे जन्म लेकर वह व्यक्ति इस दिलचस्प अवस्था को पहुँचा होगा। व्यक्ति और उसका ससार जव इस प्रकार एकत्र हो जाते है तो उन दोनो मे परस्पर क्रिया और प्रतिक्रिया प्राकृतिक रूप से प्रारम्भ हो जाती है, जिसके फलस्वरूप कोई न कोई प्रश्न अथवा समस्या उठती है जिमे हल करने मे उस व्यक्ति का जीवन व्यतीत होता हे। उपन्यासकार इसी प्रकार किसी विशेप युग के संसार के अनुभव से प्रारम्भ कर सकता है, और ऐसे स्त्री और पुरुष की कल्पना करता है जो उस संसार में जन्म लेकर प्रौढ़ावस्था पर पहुँचें और प्राकृतिक नियम के अनुसार क्रिया

तथा प्रतिक्रिया से कोई समस्या ऐसी उठे जिसके हल करने की चेष्टा उस स्त्री और पुरुष का जीवन हो।

ऐसे ही तीसरी रीति से उपन्यासकार किसी प्रश्न अथवा समस्या को लेकर भी उपन्यास लिखना प्रारम्भ कर सकता है। इस दशा में उसे पहले वह क्रिया और प्रतिक्रिया सोचनी होगी जिसका यह समस्या परिणाम हो सकती है, और फिर ऐसे स्त्री और पुरुष की कल्पना करनी होगी जिनके संसार में ऐसी क्रिया और प्रतिक्रिया से वह प्रश्न अथवा समस्या उठ सकती है। पहली रीति से उपन्यास लिखने में अनुभव से कथापुरुष और कल्पना से उसका संसार मिलता है, और फिर वुद्धि तथा प्रकृति के नियमों के ज्ञान से उपन्यासकार उस प्रश्न अथवा समस्या तक पहुँचता है जिसे हल करना जीवन होता है। दूसरी रीति से संसार अनुभव से और कथापुरुष कल्पना से लाकर एकत्र करने पर पहली रीति के समान क्रमानुसार कहानी चलती है। तीसरी रीति से लिखने में कल्पना से कथापुरुष एवं संसार दोनों का निर्माण करना होता है, फिर वुद्धि तथा ज्ञान द्वारा क्रमानुसार और अंग उस समस्या से कहानी को मिला देते हैं, जिसे लेकर उपन्यास प्रारम्भ किया गया है। प्रत्येक रीति ज्ञान, वुद्धि, अनुभव और कल्पना की चेष्टा से विभिन्न अंगों को एकत्र करके कथावस्तु की व्यवस्था करती है।

उपन्यासकार क्रिया और प्रतिक्रिया की परिपाटी यह समझकर चलाता है कि मनुष्य की प्रकृति केवल उन्हीं तत्त्वों से वनी हुई नहीं होती जो उसके साथ जन्म लेते हैं, वल्कि ऐसे तत्त्व भी उसके निर्माण में सम्मिलित होते जाते है जो वह संसार में जीवन व्यतीत करने के कारण प्राप्त करता है। उपन्यासकार यह भी जानता है कि क्रिया तथा प्रतिक्रिया के फलस्वरूप जो समस्या उठती है, उसी के हल करने की चेष्टा में जीवन के सारे संघर्ष तथा घटनाक्रम, जिनके वीच व्यक्ति कार्य करता है, उत्पन्न होते हैं। जिस घटना-क्रम के वीच में कथापुरुष को रखकर कहानी के अंगों की व्यवस्था की जाती है, उसे प्लाट (Plot) या कथावस्तु कहते हैं। प्लाट (अथवा कथावस्तु) मनुष्य के ऊपर परिस्थितियों के प्रभाव से, उसके व्यवहार तथा प्रतिक्रिया से संसार अथवा परिस्थितियों के परिवर्तन का पता देता है, और भावनाओं को जीवित दशा में नाटकीय ढंग से प्रकाशित करता है। यही कारण है जो उपन्यास में कई पात्रों की टक्कर और परस्पर की क्रिया को वार्तालाप में दिखाना आवश्यक होता है। घटनाएँ एक दूसरे से कारण और परिणाम के सम्बन्ध में ही नहीं वल्कि अनिवार्य और एक सुन्दर अनुक्रम में बँधी हुई दिखाई जाती हैं,

जिससे सारी कथावस्तु आदि से अन्त तक तागे की एक लच्छी के समान खुलती चली जाती है।

उपन्यास में इन सारे विभिन्न अंगों को एकत्र करके उनके कलात्मक प्रयोग के लिए लेखक में जीवन का रस लेने की योग्यता और समाई होनी चाहिए। मनुष्यो तथा वस्तुओं को इस प्रकार देख सकने की उसमें सामर्थ्य होनी चाहिए कि उनको वह हास्यजनक करके दूसरों के सामने प्रस्तुत कर सके; और ऐसा वह तभी कर सकता है जब उसकी आनन्दवृत्ति एवं वुद्धि को जीवन-मात्र से समवेदना हो। जिस उपन्यासकार में ऐसी समवेदना नहीं होती या समस्त जीवन से सहानुभूति नही होती, वह कोई भी सफलता प्राप्त करे, किन्तु उसकी रचनाओं में न तो सच्ची उदारता होगी, न वे रोचक ही होंगी। इस प्रकार की सहानुभूति के लिए कल्पना-शक्ति की आवश्यकता होती है; जिसके दुर्बल होने से चरित्र-चित्रण भी अच्छा नही हो सकता।

उपन्यासकार के लिए कल्पना का अर्थ कल्पित कहानी लिखना, या कल्पित मनुष्यों को उत्पन्न करना ही नही होता, वल्कि उसके लिए भी कल्पना का वही अभिप्राय होता है जो इतिहासकार के लिए होता है। उसमें भी अपने अनुभव से बाहर की घटनाओं तथा अनजान मनुष्यों को समझने की ऐसी सामर्थ्य होनी चाहिए कि वह उन सबके प्रति न्याय कर सके और सबसे सहानुभूति रख सके। यदि उसमें यह योग्यता नहीं है तो वह श्रेष्ठ उपन्यासकार कभी नहीं हो सकता। उपन्यास के जितने भी अंग हैं—क्या मनुष्य के आचरण के प्रति उसका व्यवहार, क्या अनुभव को आदर्श तक पहुँचाना, क्या चरित्र को परिस्थितियों एवं प्राकृतिक पृष्ठभूमि के सम्बन्धों में परिवर्तित करना—सबके सब कहीं न कहीं से कल्पना के अधीन होते हैं, जो अपने वास्तविक अर्थ में समवेदना, सादृश्य एवं संकेत के तत्त्वों की मिश्रित शक्ति है।

इन सब बातों पर विचार करने के बाद यह कहना पड़ता है कि उपन्यासकार को ऐसी शैली की आवश्यकता होती है जिसमें बड़ी समाई और गुंजाइश हो। उपन्यासकार को नाटक की जैसी समझ और सहानुभूति के साथ अपने पात्रों का वास्तविक चित्रण करना होता है, और ऐसा करने के लिए उसे ठीक उन्हीं के शब्दों का प्रयोग करके वार्तालाप कराना होता है। उपन्यास के पात्रों को लेखक की भाषा में नहीं वल्कि अपने देश और काल की भाषा में वातचीत करनी चाहिए, अन्यथा वे आत्मीय अनुभवों तथा भावों को प्रकट नही कर सकते। उसमें नफ़ासत और

सलीक़े के साथ हँसी-मज़ाक के वर्णन की योग्यता होनी चाहिए जिसके लिए उसकी भाषा में लालित्य तथा लोच-लचक की आवश्यकता होती है।

हास्य का हँसने से सम्बन्ध जरूर है, किन्तु साहित्य में हास्य जीवन का वास्तविक अर्थ समझने और समझाने की एक विधि है। वेमेल कार्यों एवं वस्तुओं की असंगति से लेकर प्रकृति के ऐक्य तक उसका क्षेत्र विस्तृत है, जिसे लेखक अपनी रुचि और पहुँच के अनुसार अपने प्रयोग में लाता है। जब हास्य का सम्बन्ध चरित्र एवं परिस्थिति से होता है तो हँसी सिमटकर ऐसी मुस्कराहट हो जाती है जो मनुष्य-जीवन और मानवता की संसार तथा प्रकृति से असंगति प्रकट करती और आँसुओं के निकट पहुँच जाती है। उपन्यास मे ऐसे प्रभावो को उत्पन्न करने के लिए भाषा और शैली में बड़ी नफ़ासत होनी चाहिए और लेखक में बड़ा सलीक़ा होना चाहिए। यह नफ़ासत और सलीक़ा सभ्य समाज में उत्पन्न होते है और उसकी सभ्यता के माप समझे जाते हैं। इन प्रभावों के लिए गद्य बहुत काल में तैयार होता है। यही कारण है कि किसी भाषा के साहित्य में उपन्यास प्रारम्भिक कालमें नहीं लिखा गया। जब तक गद्य उन्नति पाकर कल्पना को पूर्ण स्वतंत्रता देने और आविष्कार के योग्य नहीं हो जाता, तब तक उसमें श्रेष्ठ साहित्य की रचना नहीं की जा सकती। संकेत-मात्र से गहरी से गहरी बातों को गद्य प्रकाशित करने योग्य जब तक नही होता, उसमें सभ्य मनुष्यों के वार्तालाप अथवा हास्यजनक विचार नहीं लिखे जाते। इसके अलावा, साहित्यिक रचनाओं में जो मानवीय तत्त्व होता है उसे शैली प्रकट करती है, इसी तत्त्व की उपस्थिति रचनाओं को जीवित करती है, और उन्हें महत्त्व या गौरव देती है, जो विषय के वश की बात नहीं होती। कोई तथ्य जीवित नहीं होता; जब वह लेखक के मानवीय तत्त्व की लालिमा के सहित रचना में प्रकट होता है, तो वह सौन्दर्य के रूप में सजीव होकर शैली द्वारा प्रकाशित होता है। यही कारण है जो साहित्य का अध्ययन वास्तव में शैली का अध्ययन होता है, और उपन्यास में शैली का इतना महत्त्व होता है।

उपन्यास की शैली को उसके मुख्य तथा विधायक विचार अथवा केन्द्रीय विषय से एक स्वर होना चाहिए। कोई वाक्य या किसी वाक्य का कोई शब्द भी ऐसा नहीं होना चाहिए जो पाठक के मन में ऐसी भावना उत्पन्न करे, जो विधायक विचार या केन्द्रीय विषय की विरोधी हो। घटनाओं और पात्रों को सब प्रकार से केन्द्रीय विषय और विधायक विचार का समर्थन करना चाहिए जिसमें विभिन्न तत्त्व मिल-जुलकर उपन्यास को एक ऐसा भावपूर्ण चित्र बना दें, जिसके सारे रंग

उसके आशय के अनुरूप हों। इसी अभिप्राय से उपन्यासकार कथावस्तु को ज़ंजीर की तरह या मकड़ी के जाले के समान व्यवस्थित करता है। कथापुरुष के चरित्र को उसके आरम्भ से वह ज़ंजीर की तरह लेकर चलता है और अनेक प्रकार के अनुभवों में से गुजारता हुआ उसे सफलता के शिखर पर पहुँचा देता है, या असफल रखकर उसे कुचल देता है। दूसरी व्यवस्था में उपन्यासकार अपने कथापुरुष के जीवन के किसी विशेष सीमित भाग को इसलिए चुनता है कि उस काल में कोई बड़ा महत्त्वपूर्ण अनुभव उसे प्राप्त हुआ है। जितने भी पुष्टिकर साधन तथा नष्ट करने वाले प्रभाव कथापुरुष के चरित्र को बनाते या बिगाड़ते हैं वे सब इसी अनुभव में सिमटकर मिल जाते हैं और उसकी आत्मा को जड़ से हिला देते हैं। उसका चरित्र और जीवन इन प्रभावों के जाल में फँसकर चूर हो जायगा, या जाल को तोड़-फोड़ कर नयी शक्ति प्राप्त करके अपने बल एवं पुरुषार्थ से फिर उठ खड़ा होगा। यह क्रिया और प्रतिक्रिया कथावस्तु की सामग्री होती है।

कथावस्तु जैसे भी व्यवस्थित की गयी हो, उसमें ऐक्य कारण और परिणाम के समवाय से उत्पन्न होता है, जिसका उपन्यासकार क्रिया और प्रतिक्रिया के समन्वय में विशेष ध्यान रखता है। यदि ज़ंजीर की एक भी कड़ी उससे ज़रा भी अलग होगी, तो तथ्य का वह आभास जो उपन्यास प्रकट करने की चेष्टा करता है, धुँधला और निर्जीव होगा। ऐक्य होने से ही हम उपन्यास के प्रारम्भ में उसकी कथावस्तु का अन्त और उसकी परिधि पर से केन्द्र देख सकते है; जिस प्रकार किसी भवन की नीव के सामने खड़े होकर हम अपनी कल्पना में उसकी ऊपर की सारी इमारत का चित्र अपनी आँखों के सामने ला सकते है। परन्तु कोई उपन्यासकार अपने पाठक को यह जानने नही देता कि अब क्या होनेवाला है। पाठक यह ज़रूर जानता है कि जो कुछ होता है वह स्वभाव के अधीन और पहले कृत्यों से एकस्वर एवं अनुरूप है।

प्रणाली की ये विशेषताएँ उपन्यास की शैली पर गहरा प्रभाव डालकर उसे ऐसी समाई तथा विस्तार देती है कि उपन्यासकार की बहुज्ञता यथोचित रीति से प्रकट होती चली जाती है। उपन्यास लिखनेवाले में बहुत प्रकार के लेखकों की सम्भाव्यता होती है और इसी लिए उसकी शैली में भी बहुत समाई होनी चाहिए। वह कभी इतिहास, कभी जीवनी और कभी निबन्ध की जैसी रचना करता है, जिसके लिए उसे अपनी आवश्यकता के अनुकूल शैली की आवश्यकता होती है। चरित्र एवं जीवन के सम्बन्ध में उसके विचार दार्शनिक होते हैं; घटनाओं तथा

परिस्थितियों को वह कभी पत्रकार की दृष्टि से देखता है और सामयिक ढंग से उनके बारे में लिखता है; वातावरण और दृश्यों का उसे ऐसा वर्णन करना होता है कि पाठकों को उनका पूरा अनुभव हो जाय। इन विभिन्न अभिप्रायों के लिए भाषा तथा शैली में विशेष गुणों की आवश्यकता होती है। उपन्यास में ऐसे अवसर भी बहुत आते हैं जब विचार और भावना देश और काल से परे विश्वव्यापक एवं अनन्त के शिखर पर पहुँचती हैं, और लेखक अनुमान से बाहर की कल्पना में निमग्न हो जाता है, उस समय उसकी भाषा गद्य नहीं रहती, बल्कि छन्दरहित काव्य की संकेतपूर्ण और ओजस्विनी भाषा हो जाती है।

किस प्रकार और किन प्रभावों तथा आवश्यकताओं के कारण उपन्यास की प्रणाली और शैली तैयार हुई, उपन्यास ने कौन-से तत्त्व कब और कहाँ से प्राप्त किये और उनके कैसे प्रयोग से उसे कौन-सी शक्ति मिली, साहित्य-कला की दृष्टि में उपन्यास का क्या महत्त्व है, और अंग्रेज़ी भाषा की उन्नति से उसका क्या सम्बन्ध रहा है; क्या वह केवल मनोरंजन की सामग्री है या उसमें भी महाकाव्य तथा नाटक की भाँति कलाकार सृष्टि-निर्माण करता है; ये सारे प्रश्न पूछने के हैं और जिनका ठीक उत्तर बिना उपन्यास का इतिहास अच्छी तरह पढ़े और उसके विकास की विभिन्न दशाओं पर विचार किये, नहीं मिल सकता। विषय बहुत बड़ा और गूढ़ है, जिस पर यह छोटी-सी पुस्तक लिखी गयी है। इसका उद्देश्य इन्हीं प्रश्नों का उत्तर पाने की सामग्री प्रस्तुत करना है। उपन्यास अपने विकास में साहित्य के किन अंगों से कैसी सहायता पाकर किस प्रकार उन्नति करता हुआ एलिज़ाबेथ काल तक पहुँचा और फिर सत्रहवीं शताब्दी में क्या परिवर्तन हुए, जिनके बाद डिफ़ो, रिचर्डसन और फ़ील्डिंग आधुनिक अंग्रेज़ी उपन्यास लिख सके? इतना रास्ता चलने में बहुत तेज़ी से काम लेना पड़ा और बहुत-सी सामग्री को छोड़कर अठारहवीं शताब्दी में पहुँचना पड़ा। नहीं मालूम कितने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का उल्लेख नहीं हुआ, कितने ही लेखकों का नाम तक नहीं लिया गया। अभिप्राय यह था कि जहाँ तक हो सके पाठकों को उलझनों से बचाकर उन्हें अंग्रेज़ी उपन्यास की प्रगति का अनुमान कराया जाय और वे सीढ़ियाँ दिखायी जायँ जिन पर से वह उन्नति करता हुआ प्रौढ़ता को पहुँचा है।

कहानी-साहित्य (fiction) के दो विरोधी उद्देश्य रहे हैं जिनका ठीक रूप दिखाना ज़रूरी था, क्योंकि रोमांस और उपन्यास दोनों उनके संघर्ष से निकलते और फूलते-फलते चले आ रहे हैं। इस बीच में किस देश के किन लेखकों के प्रभाव

मे किस उद्देश्य को वल प्राप्त हुआ, जिससे अग्रेज लेखको ने लाभ उठाकर अपने साहित्य मे जो उन्नति दिखायी, उसका जानना अत्यन्त आवश्यक था, जिसे प्रस्तुत किया गया। इन शताब्दियो को पार कर चुकने के वाद का इतिहास ऐसे उपन्यास-कारो की रचनाओ से भरा है, जो एक दूसरे को प्रभावित करते हुए अपनी वुद्धि के अनुसार और अपनी प्रकृति तथा स्वभाव से प्रेरित होकर अग्रेजी साहित्य के भडार को भरते चले गये, यहाँ तक कि उन्नीसवी शताव्दी का उपन्यास अग्रेजी साहित्य के गोरव की वस्तु हो गया। उन्नीसवी शताव्दी मे उपन्यासकारो तथा रचनाओ का चुनना कठिन हो गया ओर चुनाव के नियम को और भी कडा करना पडा। आशा है कि वहुत-से लेखको तथा रचनाओ के छोड देने पर भी उपन्यास की उन्नति की कहानी आगे वढती रही हे ओर उसकी अविच्छिन्नता का चित्र धुँधला नही हुआ है। उन्नीसवी शताव्दी के अन्त से लेकर वीसवी के प्रथम चरण के वाद तक ऐसे उपन्यास-कारो की वढती का समय रहा, जो विक्टोरियन होते हुए भी प्रगतिशील कहे जाते थे और जिन्होने उपन्यास की प्रणाली मे और उसके विपय मे वहुत-से परिवर्तन किये थे। इस समय के वीतने पर उपन्यासकारो का युग समाप्त होकर उपन्यासो का युग प्रारम्भ हुआ और ऐतिहासिक वृत्तान्त भी कुछ समय तक के लिए स्थगित हो गये।

यह कहना असम्भव होगा कि इस पुस्तक के लिखने मे सामग्री कहाँ-कहाँ से प्राप्त हुई। तीस वर्ष के अध्ययन मे एक साहित्यिक विपय से दूसरे पर प्रकाश पडा और वीसो समस्याएँ उठी, जिन्हे हल करने के सिलसिले मे वात कही से कही पहुँच गयी। फिर, मेरे अपने उद्देश्य ने लिखते समय कैसे-कैसे प्रश्न उठाये, जिनके सम्वन्ध मे लिखना अनिवार्य हो गया और व्यक्तिगत विचारो के साथ अपने मत को मै प्रकट होने से रोक नही सका। मुझे आशा है कि मैंने पाठक का रास्ता नही खोया है, न किसी भ्रम मे डाला है। जहाँ तक तथ्य और प्रमाण का सम्वन्ध है, मै सर वाल्टर रैले के 'दि इग्लिश नावेल' (Sir Walter Raleigh's 'The English Novel') और प्रोफेसर सेन्टसुवरी के 'दि इग्लिश नावेल' (Professor Saintsbury's 'The English Novel') पर भरोसा करता हूँ। विविध विपयो पर 'दि केम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इग्लिश लिटरेचर' (The Cambridge History of English Literature) को भी सामग्री की एक खानि समझना चाहिए, जिससे मैंने वहुत लाभ उठाया है। 'दि इग्लिशमेन आफ लेटर्स सीरीज' (The Englishmen of Letters Series) मे वहुत-से उपन्यासकारो के

ऊपर अलग-अलग पूरी पुस्तकें हैं, जिन्हें प्रत्येक अंग्रेज़ी साहित्य का पढ़नेवाला पढ़ता है और जिनसे मैंने भी लाभ उठाया है।

हिन्दी में लिखने के कारण भी बहुत-से लेखकों की रचनाएँ, जो बड़े महत्त्व की हैं, मुझे छोड़नी पड़ीं। साथ ही इस विचार से भी उपन्यासों और लेखकों की संख्या सीमित रखने पर ध्यान रखा गया कि साधारण पाठकों को अंग्रेज़ी न जानने के कारण उनकी विशेषताएँ समझने में कठिनाई होगी। अपने माध्यम के सम्बन्ध में मुझे जो कठिनाइयाँ पड़ीं उनका अनुमान पाठक स्वयं कर सकते हैं। मेरी सारी कोशिश यह रही है कि किसी प्रकार मेरा आशय स्पष्ट रूप में पाठकों की समझ में आ जाय। इस सम्बन्ध में मैंने बहुत-सी हिन्दी-समीक्षा की पुस्तकें पढ़ीं, जिन्हें पढ़कर मुझे मालूम हुआ कि प्रचलित फ़ैशन शब्दों की आँधी चलाने का है, बात समझाने का नहीं, चाहे धूल पड़ने से लेखक के समान पाठक भी आँखें मलता ही क्यों न रह जाय। अंग्रेज़ी साहित्य में समीक्षकों की विशेष सेवा अंग्रेजी भाषा को सरल से सरल बनाने की रही है, जिसमें समीक्षक की बात ऐसे पाठकों की समझ में आ जाय जो मूल पुस्तक या मूल विषय को नहीं समझ पाते। मुझे इस सम्बन्ध में पण्डित कृष्णदत्त वाजपेयी, प्रोफ़ेसर लक्ष्मीनारायण शर्मा तथा प्रोफ़ेसर सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, युवराज डिग्री कालेज, लखीमपुर-खीरी, से बड़ी सहायता मिली, जिसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

अन्नपूर्णा फार्म,
लखीमपुर-खीरी

श्रीनारायण मिश्र

अध्याय १

रोमांस से उपन्यास की उत्पत्ति

अंग्रेजी साहित्य के विकास में उसके अन्य अंगों की अपेक्षा उपन्यास ने सबसे अधिक देर में प्रौढ़ता प्राप्त की। पहला उपन्यास लिखा जाने के कही पहले प्रगीत, नाटक तथा निबन्ध ने पर्याप्त उन्नति करके अंग्रेज़ी साहित्य में अपना विशेष स्थान बना लिया था। किन्तु देर में प्रौढ़ होने पर भी उपन्यास को नया नवाब नहीं समझना चाहिए। उसकी उत्पत्ति उतनी ही प्राचीन है जितनी कहानी कहने की प्रथा, अथवा मानव जाति और उसकी सभ्यता। उपन्यास की उत्पत्ति उन रोमांसों (romances), नोवेलों (novelle), कहानी-काव्यों (ballads) और इसी प्रकार की अन्य रचनाओं से हुई थी, जो मध्यकाल (middle ages) में यूरोपीय भाषाओं में प्रचलित थी और उनके साहित्य की अंग कही जाती थी तथा जिनकी नींव प्राचीन पौराणिक कथाओं और परम्परागत कहानियों में पड़ी थी। इन सारी रचनाओं की विशेषताएँ किसी न किसी रूप में अंग्रेज़ी उपन्यास के लक्षण बन गयीं और इस प्रकार उपन्यास के तत्त्व तथा अंग समय पाकर प्रौढ़ता पर पहुँच गये। जिस क्रम के द्वारा ये तत्त्व और अंग प्रौढ़ हुए वह क्रम अंग्रेजी उपन्यास के विकास में एक विशेष महत्त्व रखता है। जिन-जिन अवस्थाओं में होकर उपन्यास का विकास हुआ, और किस किस प्रकार के अन्तर उन अवस्थाओं के बीच उपस्थित हुए उन सब के कारण और परिणाम के परस्पर सम्बन्ध में उसकी उन्नति का रहस्य छिपा है। रोमास, नोवेले, कहानी-काव्य अपने-अपने ढंग से मनुष्य के पराक्रम, दीर्घ चेष्टा, आकांक्षा को कथा-सामग्री मानते आये है। इनकी शैली वर्णनात्मक रही है। इन दो विशेषताओं के सिवाय इन रचनाओं में और कोई भी समानता नही पायी जाती।

रोमांस तथा नोवेलों के लेखकों ने उस ऐक्य-सिद्धान्त का भी पालन बहुधा नही किया है, जिसके ऊपर महाकाव्यों और नाटकों में विशेष ध्यान दिया जाता था। मध्यकालीन रोमांसों में कथानक का आदि, अन्त अथवा मध्य नही हुआ करता था।

एक घटनाचक्र को दूसरे घटनाचक्र से इस प्रकार मिला-जुलाकर वर्णनों को आगे वढ़ा दिया जाता था कि कहानी कभी समाप्त न होती थी। जव लेखक की युक्ति अथवा शक्ति शिथिल होने लगती तो वह कहानी को वहीं समाप्त कर देता। दूसरा लेखक अथवा कहानी कहनेवाला उस कहानी को अपने इच्छानुसार फिर आगे वढ़ाता चला जाता था। ऐसा करना इसलिए सम्भव होता था कि रोमांस की एक शैली अलग वन गयी थी जिसमें एक ही ढंग से लोग कहानी लिखते चले जाते थे।

छन्दोवद्ध रोमांस

इन आदिकालीन कथाओं को "रोमांस" इसलिए कहा जाता था कि वे पहले पहल उन भाषाओं में लिखी जाती थीं जिन्हें रोमांस भाषा कहते थे। लातीनी भाषा से निकली हुई स्पेनिश, इटैलियन तथा फ्रेंच भाषाएँ रोमांस कहलाती थीं। ये कहानियाँ छन्दोवद्ध भाषा में होती थीं और इनकी विचारधारा तथा शैली काव्यात्मक होती थी। अंग्रेज़ी भाषा में लिखी जाने के पहले ये कहानियाँ फ्रांस में प्रचलित थीं और गरीव-अमीर सव का मनोरंजन करती थीं। इन मनोहर छन्दोवद्ध कहानियों की कथावस्तु उन मध्यकालीन योद्धाओं की वीरता के कार्यों पर आधारित होती थी जिन्हें नाइट (knight) कहते थे, और जो अपनी सत्यपरायणता, उदारता, अपने विनय और सदाचार के लिए विख्यात होते थे। ये नाइट उस काल के डाकुओं, साँसियों, लुटेरों से युद्ध करके जनता को उनकी क्रूरता से वचाते थे तथा अपने जीवन में वड़ी से वड़ी मुसीवत का सामना करके और अपने सिद्धान्तों पर आरूढ़ रहकर कीर्ति प्राप्त करते थे। रोमांसों में इनके विलक्षण कार्यों को वड़ी सज-धज के साथ दर्शाया जाता था, उन उत्सवों का वर्णन विस्तार से किया जाता था जो इनकी युद्ध-कुशलता सिद्ध करने को मनाये जाते थे। चमचमाते कवचों, तरह-तरह के रंगीन झंडों, शिकारी कुत्तों, वाज़ पक्षियों और तड़क-भड़क की पोशाकों के वर्णनों की पृष्ठभूमि पर रोमांसकार इन योद्धाओं के वीर चरित्र को कहानियों में दर्शाते और उनके रोमांचकारी एवं अलौकिक तथा विलक्षण कार्यों का वखान करते थे।

इन वातों के अलावा रोमांसों में स्त्रीपूजा का भाव विशेष रूप से दर्शाया गया है। इस भाव की उत्पत्ति सर्वप्रथम वर्जिन मेरी (Virgin Mary) के प्रति धार्मिक लोगों की भक्ति से हुई और फिर आगे चलकर फ्रांस के प्राचीन कवियों (Troubadours) ने यही भाव लौकिक स्त्रियों के प्रति प्रकट करना आरम्भ कर

दिया, यहाँ तक कि जागीरदारी के काल में यह भक्ति-भाव धीरे-धीरे स्त्रीपूजा में परिवर्तित हो गया और फिर नाइट समाज-व्यवस्था में शूर-वीरों के धर्म का आवश्यक अंग वन गया।

कहानियों का प्रारंभिक रूप

अपने प्रारम्भिक रूप में ये कहानियाँ ज़रूर किसी न किसी व्यक्ति अथवा स्थान-विशेप के सम्बन्ध में सीधे-सादे ढंग से लिखी या कही गयी होंगी। लिखने या कहनेवाला तया श्रोतागण अवश्य उस व्यक्ति और स्थान के पक्षपाती रहते होंगे जिसका कहानी में वर्णन किया जाता होगा, और एक दीर्घ काल तक यह आप-बीती घटना का रूप कहानी में वना रहा होगा। फिर जैसे-जैसे समय बीतता गया होगा, नयी पीढ़ियों के लोगों में व्यक्ति और स्थान के प्रति वह पुराना पक्षपात कम होता गया होगा, तव कहानी को रोचक वनाने की चिन्ता हुई होगी। नयी पौध के लेखकों ने विविध प्रकार के अलंकारों से कहानियों का सजाना आरम्भ कर दिया होगा, यहां तक कि एक दिन वह आ गया होगा जव कहानी की नींव में स्थित व्यक्ति तथा स्थान सजावट और अलंकारों के नीचे दवकर सदा के लिए अदृश्य हो गये होंगे। अव समय की प्रगति के साय-साथ कहानीकारों ने अपनी युक्तियों से अलंकृत करके कहानियों के रूप तथा आशय तक वदल दिये और अपने अनुभवों से उन्हें भरना आरम्भ कर दिया। इन नये अनुभवों में से कहानीकारों का एक अनुभव प्रकृति की शक्तियों के प्रति भय और विस्मय का वह भाव था, जिसे हम आज के युग में अंधविश्वास कहते हैं, परन्तु जो उन आदिकालीन मनुष्यों के लिए जीवन का काव्य और उनके आगामी जीवन का स्वप्न था।

इन्हीं भावों के फलस्वरूप प्राकृतिक शक्तियों का मानवीकरण हुआ और कहानियों में देवों, दैत्यों, परियों तथा देवताओं की एक वड़ी आवादी आकर उपस्थित हो गयी। धीरे-धीरे वह सव मानव-जीवन एवं सांसारिक कार्यों में हस्तक्षेप करने लगी। इसी प्रकार कहानियों में ऐसे पशु-पक्षी भी पहुँच गये जो मनुष्यों की भापा का प्रयोग करते, उनके सुख-दुख की और आगे आनेवाली आपदाओं की सूचना देते तथा मनुष्य-जीवन में ज्ञान उत्पन्न कराने की शिक्षा देते थे। जैसे-जैसे कहानियों में गम्भीर विपयों का प्रवेश होता गया, नये-नये भाव भी उत्पन्न होने लगे और कहानियों की भापा में स्पष्टता तथा वर्णन-शक्ति वढ़ने लगी। समय पाकर कहानियों में दूसरे विशेप गुण पैदा होने लगे, यहाँ तक कि सीधी-सादी कहानियाँ

धीरे-धीरे मूल-घटना से दूर होकर ऐसे सौन्दर्य से अलंकृत हो गयी जिसके कारण हम उन्हे कलात्मक कह सकते है।

कहानियों में विशेष गुणों का समावेश

मध्यकाल मे पुस्तके हस्तलिखित होती थी। मठों के महंत बड़े परिश्रम से प्रतिलिपि लिखा करते थे, जिनको धनाढ्य लोग अच्छा मूल्य देकर खरीद लिया करते थे। बहुधा एक ही जिल्द मे धर्म, अर्थ तथा मनोरंजन की सामग्री एकत्र कर दी जाती थी। छन्दोवद्ध रोमास भी इन्ही पुस्तकों में सुरक्षित होते थे। साधारण श्रेणी के लोगो को ये पुस्तके सुलभ न थी। उन्हे कहानी कहनेवाले गवैयों का आश्रय लेना होता था। ये गवैये (minstrels) भ्रमण करते हुए दूर-दूर जाया करते थे और लोगो को कहानियाँ सुनाया करते थे। किसी नगर में जब कोई ऐसा कहानी कहनेवाला पहुँचता तो एक उत्सव-सा मनाया जाता और लोग बड़े चाव से कहानी सुना करते। अच्छे गवैयो को कई रोमांस-कहानियाँ कंठस्थ होती थी और वे उन्हे बड़े अच्छे ढग से कहते भी थे। कोई कोई गवैया आशुकवि भी होता था ओर अपनी ओर से प्राचीन कहानियो को बढ़ाता चला जाता था। ये लोग आवाज के उतार-चढाव, शब्दो के विशिष्ट उच्चारण, चेहरे-मोहरे के इशारो से ऐसा हाव-भाव दर्शाते कि कथावस्तु सजीव हो उठती और कहानी में नाटक की जैसी निकटता उत्पन्न हो जाती। सुनने-वालों को अनुभव होता कि जैसे कहानी की घटनाएँ उनकी नजर के सामने फिर से हो रही है। साथ ही श्रोतागणों की कल्पना-शक्ति उत्तेजित हो जाने के कारण कहानी की सजीव कथावस्तु उन्हें यथार्थ विदित होने लगती। कल्पना के ऐसे वातावरण में साधारण घटनाएँ विलक्षण दिखाई देती और सामान्य व्यक्ति अलौकिक गुणो से भरे-पूरे मालूम होते।

दूसरे गायको, विदूपको और भाटों की तरह ये कहानी कहने वाले भी अपने यजमानो अथवा सरक्षको की प्रशसा करके उन्हे प्रसन्न करने का प्रयत्न करते थे। यह प्रशसा जितनी ही बढा-चढा कर की जाती उतना ही अधिक पुरस्कार कहानी कहने वाले को मिलता। पहले तो यजमानों अथवा संरक्षको का नाता कहानी के पात्रों से जोड़ा गया, फिर उनके कार्यो की इतनी प्रशंसा की गयी कि वे अलौकिक प्रतीत होने लगे। कार्यो की प्रशंसा में उनके कर्ताओ की भी प्रशंसा सम्मिलित हो गयी और कुछ ही समय में वे साधारण मनुष्यो की श्रेणी से उठाकर यक्ष, गंधर्व, देवता बना दिये गये। इसी प्रकार कहानियों में जो स्त्री-पात्र वर्णित थे उनकी

सुन्दरता ऐसी उत्कृष्ट बतायी जाने लगी और उनमें ऐसे गुण देखे जाने लगे जिनके कारण उन स्त्री-पात्रों के प्रति पूजा का भाव उत्पन्न हुआ और उनके पुजारी बड़े-से-बड़े साहसिक बल्कि असम्भव कार्य करने को उत्सुक रहने लगे। इस कल्पित वातावरण में कहानियों के नायक स्त्रियों के सर्वोत्कृष्ट सौन्दर्य से प्रभावित होकर ऐसे तीव्र संवेगों की खोज में रहने लगे जो साधारण सांसारिक जीवन में दुर्लभ है।

रोमांस और टेल

जिन कहानियों में मनुष्य-जीवन का यह काल्पनिक चित्र खींचा जाता था, जीवन को अद्भुत अथवा असम्भव कार्यों का क्षेत्र बताया जाता था और आदर्श की दृष्टि से मनुष्यों को भला या बुरा कहा जाता था, उन कहानियों को रोमांस कहते थे। ये कहानियाँ ऐसी बातों का वर्णन करती थीं जो न कभी हुई थी और न कभी हो सकती थीं। इसके विपरीत जो कहानियाँ इंग्लैण्ड में लिखी जाती थीं उनकी कथावस्तु किसी वास्तविक घटना पर आधारित होती थी, जो बहुधा सेल्ट और रोमन तथा सैक्सन जातियों के उस संघर्ष से सम्बन्ध रखती थी जिसने अंग्रेजों के चरित्र का सगठन किया था और इंग्लैण्ड के इतिहास का निर्माण किया था। इन कहानियों को टेल (tale) कहते थे। इन कहानियों की सामग्री किसी प्राचीन इतिहास की पुस्तक (chronicle) से ली जाती थी और उन्हें इस प्रकार लिखा जाता था कि वे कहीं पर भी इतिहास के विरुद्ध न होने पायें। किन्तु ग्यारहवीं शताब्दी में जब अंग्रेज कहानी-लेखक नार्मन-फ्रेंच जाति के निकट सम्पर्क में आये और रोमांसों का अंग्रेज़ी मे अनुवाद होने लगा, तो वे भी अपनी कहानियों को इतिहास के चौखटे से मुक्त करने को उद्यत हो गये। कुछ ही समय के उपरान्त इंग्लैण्ड में भी रोमांस लिखे जाने लगे।

टेल्स एवं रोमांसों की कथासामग्री

इन अतिशयोक्ति-पूर्ण कहानियों की सामग्री तीन प्रकार की थी, जो तीन प्रमुख स्रोतों से ली गयी थी। एक तो ब्रिटेन की सामग्री, जहां से किंग आर्थर और राउन्ड टेब्ल (King Arthur and The Knights of The Round Table) के नाइटों की कहानियाँ ली गयीं, दूसरे फ्रांस की सामग्री, जहां से शार्लिमेन और उसके बारह साथियो (Charlemagne and his Twelve Pears) की कहानियाँ आयीं, और तीसरे 'रोम' की सामग्री, जहाँ से प्राचीन यूनानी कहानियाँ और

रहस्यमय स्थानों की कथाएँ प्राप्त हुईं। ट्राय (Troy) की कहानी, सिकन्दर के विजय-सम्बन्धी वृत्तान्त और उनके साथ पूर्वी देशों के आश्चर्यजनक वर्णन इसी सामग्री में सम्मिलित हैं। इन तीनों कथा-भंडारों में ब्रिटेन का भंडार सबसे अधिक समृद्ध था, क्योंकि यहाँ कई शताब्दियों से आर्थर सम्बन्धी कथाएँ एकत्र हो रही थीं। बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध के पहले आर्थर सम्बन्धी बहुत-सी कथाएँ हेनरी प्रथम के दरबार के एक पादरी ने लातीनी भाषा में लिखकर बारह छोटी-छोटी जिल्दों में एकत्र की थी। इस पादरी का नाम जेफ्री आफ़ मनमथ (Geoffrey of Monmonth) था और वह वेल्स प्रान्त में रहता था। यद्यपि जेफ्री को रोमांस-कहानियों से प्रेरणा मिली थी और उसने कहानियों को उसी ढंग से लिखा भी था, किन्तु उसने अपनी पुस्तक का नाम हिस्टोरिया रीगम ब्रिटेनी (Historia Regum Brittanie) रखा था, जिसके कारण इतिहासकार उससे बहुत रुष्ट हुए थे और उसे झूठा एवं निर्लज्ज कहा था। वास्तव में जेफ़्री ने बड़ी चतुराई से आर्थर सम्बन्धी सामग्री अपनी पुस्तक में रखी थी और अपनी कल्पना-शक्ति से उसे बढ़ाकर सजीव और चित्रमय कर दिया था। फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि नार्मन विजय के उपरांत इंग्लैण्ड मे कहानी-कला की यह प्रथम पुस्तक लिखी गयी थी। पुस्तक शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गयी और इंग्लैण्ड की ही भाँति यूरोप में भी सर्वप्रिय हो गयी।

यह कहना ठीक होगा कि जिस आर्थर को नेनिअस (Nennius) ने अपनी इतिहास की पुस्तक में शुष्क और निर्जीव कहावती व्यक्ति के रूप में रखा था, जेफ्री ने उसे जीता-जागता कथापुरुष बनाकर देश के सामने खड़ा कर दिया। ऐसा करने में जेफ्री को बहुत-सी वे कथाएँ भी अपने वृत्तान्त में सम्मिलित करनी पड़ी जो वेल्स प्रान्त में प्रचलित थीं। इसके अतिरिक्त उसे खुले दिल से अपनी कल्पनाशक्ति का प्रयोग भी करना पड़ा, जिसने कथावस्तु में कुछ ऐसे प्राण फूंक दिये कि सारे पात्र सजीव हो गये। शीघ्र ही पुस्तक का अनुवाद फ्रांसीसी पद्य में हुआ और रोमांस के विशेष अलंकारों से वह सुसज्जित कर दी गयी। तेरहवीं शताब्दी के आरम्भ में पुस्तक रोमांस के रूप में इंग्लैण्ड में प्रचलित हुई, तब लेयामान (Layamon) ने पहले-पहल अपने ब्रुट (Brut) अर्थात् इतिहास में इन आर्थर सम्बन्धी कहानियों को अंग्रेज़ी पद्य में लिखकर उनका देश में प्रचार किया।

लेयामान का ब्रुट (इतिहास)

लेयामान के ब्रुट की भूमिका से विदित होता है कि उस काल में आर्थर सम्बन्धी

कथाओं को अंग्रेजी भाषा में लिखना देशभक्ति और देशसेवा का कार्य समझा जाता था। लेयामान लिखता है—"मेरे हृदय में प्रेरणा हुई और मेरे मन में विचार उत्पन्न हुआ कि मैं अंग्रेज जाति की कीर्त्ति बखानूँ और यह बताऊँ कि इस जाति का प्राचीन नाम क्या था, इस जाति के लोग कहाँ से इस द्वीप में आये थे और हज़रत नूह के तूफ़ान के उपरान्त इस द्वीप का स्वामी कौन था. . .।" लेयामान ने जो ऐतिहासिक वृत्तान्त अंग्रेजों के अतीत का चित्रण करते हुए लिखा है वह काल्पनिक तो ज़रूर है, परन्तु वह बड़े रोचक ढंग से जातीयता का भाव उत्पन्न करता है। ब्रुट की एक विशेषता यह भी है कि उसमें सबसे पहले अंग्रेज़ी भाषा में केवल आर्थर की ही कहानी नहीं लिखी गयी, बल्कि लियर (Lear) और सिम्बलीन (Cymbeline) की भी, जिनका अंग्रेज़ी साहित्य में आगे चलकर प्रयोग किया गया। आर्थर के सम्बन्ध में भी लेयामान ने वे अमानुषिक तथा अलौकिक बातें लिखीं जिनका जेफ्री ने उल्लेख नहीं किया था और जिन्हें आगे चलकर साहित्यकारों ने कविता और कहानियों में गूढ़ रहस्यों की ओर संकेत करने में व्यवहार किया। आर्थर के सम्बन्ध में भी उसने बहुत-सी वे कहानियाँ ब्रुट में लिखीं जो न जेफ़्री को मालूम हुई थीं और न उस फ्रांसीसी रोमांसकार को जिसने उसकी पुस्तक का पद्य में अनुवाद किया था। लेयामान ने अपनी ओर से भी कई महत्त्वपूर्ण अवान्तर कहानियाँ जोड़ीं, जैसे राउन्ड टेब्ल (Round Table) की स्थापना की कहानी अथवा आर्थर के जन्म और अवसान की कहानियाँ, जिनमें उन दिव्य पुरुषों और स्त्रियों की भी कथाएँ हैं जो उन समयों पर उपस्थित थे और जो अन्तिम युद्ध के पश्चात् आर्थर को एविलान (Avilon) के रहस्यमय द्वीप में लिवा ले जाते हैं।

रोमांसों की अन्य ग्रन्थमालाएँ

बारहवीं शताब्दी के दो तीन ही दशक व्यतीत हुए होंगे, जब आर्थर के साथी नाइट जर्मनी, फ़्रांस, इंग्लैण्ड आदि सभी देशों में विख्यात हो गये। गवेन, लान्सिलाट, ट्रिस्ट्रम पर्सिवल और दूसरे बहुत-से नाइट कहानियों एवं रोमांसों के प्रमुख पात्र बन गये। साहित्यकारों और साधारण लोगों की कल्पना को उन रोमांसों से बड़ा प्रोत्साहन प्राप्त हुआ और इस कारण ये नाइट एक-एक करके विशेष गुणों के प्रतिरूप बन गये और आर्थर खुद भी वीरता तथा सदाचार का अवतार हो गया। उन रोमांसों में अधिकांश को साहित्यिक रूप सब से पहले फ़्रांस में दिया गया, क्योंकि उस समय फ्रांस मध्यकालीन सभ्यता एवं साहित्य का अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र

बना हुआ था। इंग्लैण्ड के लगभग सभी रोमांस जो बारहवीं और तेरहवीं शताब्दियों मे लिखे गये, फ्रांसीसी मूल कथाओं पर आधारित थे। यह बात केवल शार्लिमेन तथा सिकंदर आदि यूरोपीय योद्धाओं की कथाओं के सम्बन्ध में ही सत्य नहीं, किन्तु आर्थर सम्बन्धी कहानियों के बारे में भी सत्य है, जो इंग्लैण्ड की उत्पत्ति थीं।

फ्रांसीसी रोमांसों से ही उन अंग्रेज़ वीरों की भी कहानियाँ अंग्रेज़ी भाषा के रोमांसों में आयीं जिनको यूरोप में कोई नहीं जानता था, जैसे बेविस आफ़ हैम्पडेन (Bevis of Hampden) और गाई आफ़ वारवारिक (Guy of Warwick); अथवा वे कहानियाँ जो केवल फ्रांस में प्रचलित थी, जैसे फ्लारिस और ब्लांगफ्लोर (Floris and Blancheflour), ऐमिस और ऐमिलून (Amis and Amiloun)। यह सारा मध्यकालीन साहित्य, जो रोमांस भाषाओं द्वारा स्वयं यूरोप में और बाहर के देशों में फैला, बड़ा ही सुन्दर है। परन्तु उसकी सुन्दरता न तो भाषा पर निर्भर है और न किसी तथ्य पर।

मध्यकाल की विशेषता यह थी कि अविद्या, मूढ विश्वास तथा निर्दयता के होते हुए भी जो वातावरण था, उसमें लोगों की विचार-शक्ति और कल्पना जीवित रही। लोग गुण तथा सदाचार का मूल्यांकन नैतिक सिद्धान्तों के अनुसार करते रहे। लोगों को अपने नैतिक अनुभवों के सत्यत्व में ऐसा दृढ़ विश्वास था कि उन्होंने इस काल में ऐसे धार्मिक प्रतिबन्धों का बड़े जोरों से विरोध किया, जो मनुष्य के विचारों और अनुभवों पर मध्यकाल में लगाये गये थे। यह विरोध सबसे पहले फ्रांस में उठाया गया और फिर धीरे-धीरे फ्रांसीसी रोमांसों द्वारा दूसरे देशों में भी जा पहुँचा।

इन रोमांसो में नैतिक अनुभवों के सत्यत्व में पूर्ण विश्वास प्रकट किया गया है और मध्यकालीन मूढ़ विश्वासों का विरोध किया गया है। सभी देशों में ये रोमांस लोकप्रिय हुए और लगभग सभी देशों की भाषाओं में इनके अनुवाद हुए। सभी देशों में इनसे साहित्यकारों को स्फूर्ति मिली और न मालूम कितने रोमांस और काव्य इनके आधार पर लिखे गये।

ऐमिस और ऐमिलून

इन रोमांसों में ऐमिस और ऐमिलून नामक एक बड़ा सुन्दर रोमांस है, जो नैतिक अनुभवों में मनुष्यों के उस अटल विश्वास को प्रकट करता है जिस पर अंग्रेजी साहित्य में भी बहुत जोर दिया गया है। इस रोमांस की कहानी का विषय मित्रता है जो

स्वयं एक गुण होते हुए कई विशिष्ट सद्‌गुणों का समन्वय है। कहानी के प्रमुख पात्र ऐमिस तथा ऐमिलून दो नाइट हैं, जो अपने पदों को प्राप्त करते ही एक दूसरे की मित्रता के पाश में बँध जाते हैं। मित्रता के साधारण स्नेह तथा प्रचलित रीतियों के अतिरिक्त नाइट होने के कारण ये दोनों अपने ऊपर कुछ और विशेष प्रतिबन्ध लगा लेते हैं जो उनके पद के आदर्शों के अनुकूल हैं। कुछ कठिन कर्त्तव्य भी वे अपने ऊपर ओढ़ लेते हैं जो साधारण मनुष्य सोच भी नहीं सकते।

रोमांस में लम्बा वर्णन उन कठिन परीक्षाओं का है जो उन दोनों की मित्रता को जाँचने के लिए ली गयी थी। इन परीक्षाओं में भाँति-भाँति के प्रलोभन उन्हें दिये गये, बहुत प्रकार के कष्ट और दुःख, क्लेश और पीड़ा से उन्हें सताया गया, परन्तु न तो उनके मन में एक दूसरे की ओर से कोई मैल आया न कोई भेदभाव उत्पन्न हुआ। बहुत बार उन्हें एक दूसरे की ओर से लड़ाई-झगड़ों में डाला गया, परन्तु उनकी मित्रता पर कुछ भी इन बातों का प्रभाव नहीं पड़ा। ये परीक्षाएँ किसी भी स्वाभिमानी वीर पुरुष का हृदय चूर-चूर कर सकती थीं और असह्य हो सकती थीं, किन्तु उन्होंने सब कुछ हँसी-खुशी सहा। कोई भी दुर्बलता नहीं दिखायी और कोई भी अपने नाइट पद के आदर्श से गिरा हुआ काम न किया। अन्त में एक ऐसा अभागा दिन आया जब ऐमिस को एक शत्रु से युद्ध करके अपने नाइट पद की प्रतिष्ठा की रक्षा करना अनिवार्य हो गया। ऐमिस उस दिन इतना बीमार था कि युद्ध करना तो दूर रहा, वह उठ बैठ भी न सकता था। अतः ऐमिलून ने अपने मित्र का कवच एवं शिरस्त्राण धारण किया और उसकी ढाल लेकर युद्ध करने नियत समय पर पहुँच गया। उसने बड़ी वीरता से युद्ध किया और शत्रु को परास्त करके ख्याति प्राप्त की। यद्यपि किसी ने उसे पहचाना नहीं, परन्तु फिर भी ऐमिलून ने सत्याघात तो किया ही था, जो ईश्वरीय विधान के अनुसार एक दण्डनीय दुष्कर्म है; उद्देश्य कैसा ही अच्छा क्यों न रहा हो, ऐमिलून पर ईश्वरीय प्रकोप हुआ और उसे कुष्ठ रोग हो गया।

मध्यकाल में कुष्ठ से पीड़ित रोगियों की बड़ी दुर्गति हुआ करती थी। अन्य लोगों से अलग रोगी को अकेला रहना होता था, उसे कपड़े इस प्रकार के पहनने पड़ते थे कि जिसमें उसका चेहरा छिपा रहे और लोग दूर से ही पहचान लें कि वह कोढ़ी है। उसे अपने पास एक घन्टी रखनी होती थी जिसे बजाकर वह अपने आने की सूचना दिया करता था। उसे भिक्षा माँगने की छूट रहती थी, परन्तु भोजन आदि कोई वस्तु उसके हाथ में देने की किसी को अनुमति नहीं थी। भोजन

उसकी ओर फेंक दिया जाता था। यदि यह रोग किसी नाइट को हो जाता था तो उसे अपना पद त्याग देना पड़ता था और अपने वीवी-वच्चे तथा घर-वार छोडकर चला जाना होता था। देश-देशान्तर में उसे भ्रमण करके किसी प्रकार अपना जीवन व्यतीत करना होता था।

ऐमिलून घर से वहुत दूर किसी देश में था; जिस समय उसको यह वीमारी हुई। वहुत काल तक इधर-उधर भ्रमण करने के उपरान्त एक दिन वह किसी नगर मे वहुत वडी गढ़ी के विशाल फाटक पर पहुँचा और भिक्षा माँगी। ड्योढ़ीवान ने देखा कि कोढी मनुष्य के पास ठीक उसी प्रकार का वड़ा सुन्दर पानी पीने का कटोरा था जैसा उसके मालिक गढ़ी के स्वामी के पास था। ड्योढ़ीवान तुरन्त अपने मालिक के पास पहुँचा और उसे खवर की। गढ़ी का स्वामी यह वृत्तान्त सुनते ही व्याकुल हो उठा और पागल की भाँति भागता हुआ गढ़ी के फाटक पर जा पहुँचा, जहाँ उसका वहुत दिन का खोया मित्र कोढ़ी के वेश मे खड़ा था। ड्योढ़ीवान से कटोरे की वात सुनते ही उसे स्मरण हो आया था कि एक समय रोम के वड़े पादरी ने उसे और उसके मित्र ऐमिलून को एक ही जैसे वड़े सुन्दर कटोरे अपने आशीर्वाद सहित दिये थे। यदि कोढ़ी के पास उसके जैसा कटोरा है तो वह जरूर ऐमिलून होगा। कटोरा हाथ मे देखते ही ऐमिस पुलकित हो उठा। उसने झपट-कर कोढी को छाती से लगा लिया और फूट-फूट कर रोने लगा। ऐमिस की स्त्री को जव यह समाचार मिला तो वह भी विह्वल होकर फाटक पर पहुँची और अपने पति के उस मित्र को जिसने अपनी जान पर खेलकर नीच दुराचारी नाइट के चगुल से उसे छुड़ाया था, कोढी के वेश में देखा। गढ़ी में ऐमिस को मृत्यु के मुँह में से निकालने और फ्रांस की राजकुमारी से उसका विवाह कराने की सारी कहानी फिर से गूँजने लगी। ऐमिलून की मित्रता तथा आत्मसमर्पण की चारों ओर चर्चा होने लगी। ऐमिस और उसकी स्त्री के हर्ष और शोक के आँसू वह रहे थे और दोनो ऐमिलून से आग्रह कर रहे थे कि वह उन्ही के पास ईश्वर की इच्छा पूर्ण होने तक ठहरा रहे। जव उन्होंने आग्रह करके किसी प्रकार ऐमिलून को राजी कर लिया तो उसके रहने का प्रवन्ध किया गया। गढ़ी में सवसे अच्छे कमरे मे वह रखा गया और उसे आराम पहुँचाने के सारे सामान एकत्र किये गये। परन्तु ऐमिलून को किसी प्रकार से शान्ति न मिली, क्योकि उसे इस घर मे रहने मे दो आपत्तियाँ दिखाई देती थी। एक तो उसका मित्र मध्यकालीन सरकारी कानून को तोड़ रहा था, दूसरे ऐसे व्यक्ति पर कृपा करके, जिसपर ईश्वर का कोप हो, वह स्वयं भी उसी

कोप का भागी हुआ जा रहा था। किन्तु ऐमिस की मित्रता को किसी का भय छू तक नहीं गया था और उसकी करुणा सच्ची करुणा थी।

एक रात को ऐमिलून के कान में किसी के पुकारने की आवाज पड़ी और वह जागकर उठ बैठा। सामने एक दिव्य पुरुष खड़ा हुआ उससे कह रहा था—"मैं देवदूत रैफेल हूँ, मुझे यह वताने के लिए भेजा गया है कि तुम किस प्रकार इस भयानक रोग से छुटकारा पा सकते हो। तुम अपने मित्र ऐमिस से कहो कि वह अपने दोनों छोटे वच्चों को मारकर उनके रक्त से तुम्हें नहलाये। यही करने से तुम्हारा कोढ़ अच्छा होगा।" ऐमिलून ने उत्तर में कहा,—"यह काम नहीं होगा। मैं अपने मित्र को अपने लिए हत्यारा नही वनाऊँगा।" रैफेल ने उससे फिर कहा—"उसके लिए यही आदेश है कि वह ऐसा करे।" इतना कहकर वह दिव्य पुरुप ऐमिलून के सामने से हटकर चला गया।

किन्तु ईश्वर का आदेश होते हुए भी उस ईश्वर मे अखण्ड विश्वास रखने-वाले ने अपने मित्र से दिव्य पुरुष के आने की तनिक भी चर्चा नहीं की। ऐमिस के कान में अकस्मात् उस रात की बातों की भनक पड़ चुकी थी। उसके वहुत आग्रह करने पर ऐमिलून ने रैफ़ेल की बातें ऐमिस से कह सुनायीं। इस पर ऐमिस ने कहा—"मैं तुम्हें धन दौलत, नौकर चाकर, जो कुछ मेरे पास है सब अर्पण कर देता, किन्तु तुमने तो यह अनोखा ढोंग रचा है कि तुमसे देवदूत ने कहा है कि मैं अपने दोनों वच्चों का वध कर डालूँ। मैं तुम्हें उस धर्म की शपथ देता हूँ जिसमें हम दोनों श्रद्धा रखते हैं, उस मैत्री की शपथ देता हूँ जो हम दोनों को आजन्म सुख और दुःख में साथ रखेगी, और उस बपतिस्मे की शपथ देता हूँ जो हम दोनों को साथ-साथ दिया गया था और पूछता हूँ कि उस रात्रि को तुमसे किसी मनुष्य से अथवा देवदूत से बातें हुई थीं?"...इतना कहते-कहते ऐमिस अपने रोगी मित्र को छाती से लगाकर फूट-फूटकर रोने लगा। रात के सन्नाटे में जब कभी वह अकेला होता तो यही सब बातें सोचता और रोने लगता। "यही वह मित्र है जो मेरे लिए अपनी जान तक देने को तैयार रहा है, जिसे मेरा सम्मान अपने सुख से अधिक प्यारा रहा है। क्या मैं ऐसे मित्र के प्रति अपनी श्रद्धा की सत्यता प्रमाणित नही कर सकता, जो मृत्यु के भी भय से विचलित न होकर सदैव मेरे प्रति वफ़ादार रहा है?" ऐमिस इन्हीं विचारों मे डूबा हुआ लम्बी-लम्बी साँसे लेता और फिर बिलख-बिलखकर रोने लगता। परन्तु कभी भी उसे ऐमिलून की कही बातों पर ज़रा भी संदेह न होता।

एक रात ऐमिस घबरा उठा, तलवार लेकर उस कमरे में गया जहाँ उसके

दोनों बच्चे अपने पलंग पर सो रहे थे। ऐमिस उनके पास पलंग पर लेट गया और यह कहकर विलाप करने लगा—"कभी किसी ने ऐसा भी पिता देखा है जो स्वयं अपनी इच्छा से अपने बच्चों का वध करे?" ऐमिस ने बच्चों की गर्दनें काट दीं और उन्हे इस प्रकार लिटा दिया जैसे कि वे सो रहे हों। रुधिर ले जाकर अपने मित्र की देह धोयी और ईश्वर से विनय करने लगा—"हे प्रभु ईसा मसीह! जिसने हम सब पर हुक्म लगाया है कि हम श्रद्धा रखें और विश्वास करें, जिसने हुक्म से कोढ़ी नीरोग किये। हे प्रभु! अब मेरे मित्र को भी इस शाप से मुक्त कर, जिसके लिए मैंने उसे अपने प्यारे बच्चों के रुधिर से धोकर साफ़ किया है।" ऐमिस ने प्रार्थना मे सिर उठाया तो अपने मित्र को रोगहीन पाया।

बच्चो की माता को उनके वध का हाल मालूम न था। वह उनके कमरे में भी बहुत देर से नहीं गयी थी। परन्तु पिता का हृदय विदीर्ण हो रहा था और कभी-कभी उसकी गहरी साँसे लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती थीं। उसे मालूम था कि शोक का कितना भारी पहाड़ टूट पड़ने को तैयार था। माता ने बच्चों को नीचे लाने का हुक्म दिया कि वे भी सबकी खुशी में सम्मिलित हो सकें। किन्तु ऐमिस ने रोक दिया, और यह कहता हुआ कि बच्चों को सोने दीजिये, स्वयं अकेला उनके कमरे मे चला गया। बच्चे पलंग पर बैठे खेल रहे थे। तलवार के घाव की जगह पर उनकी गर्दनों में महीन गुलाबी धारियाँ पड़ी हुई थीं। ऐमिस ने झपटकर बच्चो को गोद में उठा लिया और दौड़ता हुआ अपनी पत्नी के निकट पहुँचकर चिल्ला पड़ा—"धन्य है ईश्वर की महिमा! ये लो अपने बच्चे और ईश्वर को याद करो। देवदूत रैफेल के कहने से मैंने इनका वध किया था, पर ये जीवित है। इन्ही के रुधिर से ऐमिलून को आरोग्य हुआ है।"

इस रोमास की तह में जो महान् नैतिक सत्य निहित है उसका आवेग बड़े ज़ोर से मध्यकाल में अनुभव किया गया था। ऐमिस और ऐमिलून समय पाकर उन पवित्रात्मा सिद्ध जनों में गिने जाने लगे थे, जिनसे लोग मित्रता के आदर्श कर्तव्यों मे सफल होने को दैवी शक्ति माँगते थे। सत्रहवीं शताब्दी में लोगों को मालूम हुआ कि ये दोनों रोमांस के पात्र थे, तब धार्मिक सन्तों की सूची में से इनके नाम काटे गये। गिरजे से निकाल दिये जाने पर भी ऐमिस और ऐमिलून की कहानी लोकप्रिय रही और लोग उस पर विचार करके सदाचार सीखते रहे। ये दो व्यक्ति कल्पना के जादू ने उत्पन्न किये थे और मानव आदर्श के वातावरण में सैकड़ों वर्ष जीवित रहे तथा मानवता के गुणों को चमकाते रहे। गिरजा अपनी सूची से

इन्हें निकाल सकता है, परन्तु साहित्य में वे सदा मानव जाति के सर्वोत्तम स्वप्नों में गिने जायँगे।

सर गवेन और ग्रीन नाइट

अंग्रेज़ी भाषा के आर्थर सम्बन्धी रोमांसों में सर्वोत्तम रोमांस सर गवेन और ग्रीन नाइट का है। यह रोमांस सन् १३९० के लगभग का है, परन्तु इसे नार्मन-फ्रेंच समय की प्रणाली का मानते हैं। पिछली दो शताब्दियों में जिस-जिस ढंग के रोमांस लिखे गये उन सबका निचोड़ इसमें पाया जाता है। इस कारण यह रोमांस संसार के अच्छे रोमांसों में गिना जाता है। कहानी के आरम्भ के समय आर्थर कैमलाट (Camelat) में नव वर्ष का उत्सव मना रहा है। एक सुन्दर भवन के प्रशाल (महाकक्ष) में बड़ी मेज़ पर वह बैठा है, चारों ओर नाइट बैठे हैं और सब के सब, जीवन की उमंगों तथा यौवन की उन्मत्त भावनाओं से परिपूर्ण, भोजन प्रारम्भ करने के पहले किसी ऐसे अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो उन्हें कोई साहसिक कार्य कर दिखाने को प्रेरित करे। इतने में तुरही, धौंसा, नगाड़े का बजना तथा भोजन का आना प्रारम्भ ही था कि बड़े कोलाहल के साथ एक विशाल-काय योद्धा, हाथ में बड़ा-सा कुठार लिये हुए सिर से पाँव तक हरे रंग के कपड़े पहने हुए, घोड़े पर सवार, पहरेदारों और सिपाहियों को धक्के देता हुआ सीधा आर्थर के सन्मुख आकर खड़ा हो गया। चारों ओर देखकर उसने ललकारा और कहा, "है यहाँ कोई ऐसा नाइट जो अपना कुठार मुझ पर चला सके और फिर मेरा वार सह सके?" इस गर्वपूर्ण ललकार को सुनते ही आर्थर का भानजा गवेन उठा और अपने फरसे से ग्रीन नाइट का सिर गर्दन से अलग कर दिया। ग्रीन नाइट ने चुपचाप बाल पकडकर ज़मीन से अपना सिर उठाकर गवेन के मुँह के सामने किया तो उसके होठों से आवाज़ निकली और उसने कहा—"तुम्हारा और मेरा सामना न्यू इयर के दिन हरे गिरजे के पास होगा; अगर तुमको साहस हुआ।" इतना कहकर ग्रीन नाइट प्रशाल नें से जैसे आया था लौट गया।

आल हैलोज़ डे (All Hallow's Day) को, जो पहली नवम्बर को पड़ता है और सेल्ट संवत् का नया दिन है, गवेन अपने ग्रिंगोलेट नामक घोड़े पर सवार होकर वेल्स के बीहड़ प्रान्त की ओर चल दिया। उसके रास्ते में विराल और साईन्ज के बड़े-बड़े पहाड़ी जंगल पड़ते थे, जिनमें सैकड़ों प्रकार की भयानक आपत्तियों का सामना करके निकास मिलता था। गवेन को भी बहुत-सी प्राकृतिक

तथा पैशाचिक आपत्तियों का सामना करना पड़ा। कहीं वड़े-वड़े विषधर अज़दहों, भेड़ियों के समूहों एवं भयंकर दैत्यों से और कहीं कामुक पुरुषों तथा वन के राक्षसों से लड़कर उसे अपना पथ साफ़ करना पड़ा। वड़े दिन (Christmas) के एक रोज़ पहले वह वलूत के घने और अंधेरे जंगल से गुज़र रहा था। जो मार्ग उसके सामने था उसे पार करके नियत दिवस तक हरे गिरजे के निकट पहुँचना कठिन जान पड़ता था। गवेन पर एक उदासी छायी जाती थी। ऐसी अवस्था में उसने कुमारी मेरी (Virgin Mary) की प्रार्थना करनी प्रारम्भ की और भजन गाने लगा। प्रार्थना करके जव उसने अपना सिर ऊपर उठाया तो उसकी दृष्टि एक विशाल गढ़ी पर पड़ी जो सामने एक ऊँची पहाड़ी पर वनी थी। फाटक पर पहुँचकर उसने रात्रि के लिए आश्रय माँगा। गढ़ी के स्वामी और उसकी सुन्दर पत्नी ने उसका स्वागत किया और वड़े आदर-सत्कार से वड़ा दिन अपने साथ व्यतीत करने का आग्रह किया। उन्होंने गवेन को यह भी वताया कि हरा गिरजा निकट ही है और वह एक ही दिन चलकर वहाँ सुगमता से पहुँच सकेगा। गवेन ठहरने पर राज़ी हो गया, वड़े दिन में वहुत चहल-पहल रही, वड़े उत्सव मनाये गये। जव यह सव समाप्त हुआ तो शिकार की तैयारी प्रारम्भ हुई। हँसी-हँसी में दोनों ने एक दूसरे को वचन दिये कि शिकार के दिनों में जो उत्तम वस्तु मिलेगी वह एक दूसरे को देगा। जव गढ़ी का स्वामी शिकार पर चला गया तो उसकी पत्नी ने गवेन से प्रेम करने की व्यर्थ चेष्टा की और ऐसा करने में एक वार उसका चुम्वन भी किया। गवेन ने जो वचन दिया था उसके अनुसार शिकार से लौटने के उपरान्त गढ़ी के स्वामी को चुम्वन दिया और वदले में कुछ ऐसी वस्तुएँ पायीं जो शिकार में मिली थीं। अन्तिम दिवस जव वह महिला आयी तो उसने गवेन को एक हरे रंग की पेटी दी और कहा कि उसके वाँधने से जीवन-हानि की कोई आशंका नहीं रहती। महिला के वड़े अनुरोध पर और यह सोचकर कि उसे ग्रीन नाइट से सामना करने जाना है, गवेन ने पेटी वाँध ली और गढ़ी के स्वामी से प्रतिज्ञा भंग करके उसके सम्वन्ध में कुछ नहीं कहा।

नये वर्ष के दिन (New Year's day) प्रातःकाल गवेन ग्रीन गिरजे को चल दिया। वरफ़ ज़ोरों से गिर रही थी और आँधी की भाँति वायु उसे घोड़े की पीठ पर से उड़ाये लिये जाती थी। पहाड़ी जंगल में होकर वह गिरजा ढूँढता हुआ चला जा रहा था। वहुत दूर जाने के पश्चात् उसे एक खुली घाटी में हरी घास से ढका हुआ टीला मिला, जिसके नीचे एक खोह में से वही ग्रीन नाइट निकला

जिसका उसने सिर काटा था। गवेन अभी संभल भी न पाया था और मन में उस गिरजे की मनहूसियत पर विचार ही कर रहा था कि ग्रीन नाइट ने अपने कुठार से उसकी झुकी हुई गर्दन पर वार कर दिया। कुठार के वार का धक्का इतनी ज़ोर का था कि गवेन घोड़े पर से नीचे आ गया। पृथ्वी पर उसके रुधिर की बूँदें भी गिरीं जो बरफ़ पर चमकने लगीं। उसने अपनी तलवार खींच ली और शिरस्त्राण धारण करते हुए कहा कि शर्त पूरी हो गयी। ग्रीन नाइट ने अपना कुठार पृथ्वी पर फेंक दिया और गवेन को बताया कि गढ़ी का स्वामी, जिसका वह आठ दिन से मेहमान था, वही है। उसने यह भी बताया कि आर्थर की बहिन मारगन ला फ़े (Morgan la Fay) ने उसे गिनीवियर को डराने के लिए कैमलाट भेजा था, जब उसके कटे सिर ने बातें की थीं। मारगन ला फ़े ही गवेन का भी सर्वनाश कराने पर तुली हुई थी जिससे गिनीवियर के हृदय को चोट पहुँचे। उसने कहा—"यदि तुम मुझसे विश्वासघात करते और झूठ बोलकर अपने वचन का पालन न करते तो तुम कहीं के भी न रहते। तुमने मेरे साथ वफ़ादारी करके अपने को बचा लिया। यह जो तुम्हारी गर्दन पर छोटा सा घाव लगा है वह इस बात की सज़ा है कि तुमने पेटी का हाल छिपाने की चेष्टा की थी। अब तुम्हारे लिए उचित है कि तुम अपने इस दोष को याद रखने के हेतु यह पेटी सदा कमर में बाँधा करो।" गवेन की इस विजय का बड़ा नाम हुआ और उसके अनुभव की स्मृति जीवित रखने के लिए आर्थर की राउण्ड टेबल के नाइटों तथा उसके दरबार की सारी महिलाओं ने हरे चमकदार रंग की पेटी पहनना आरम्भ कर दिया।

इस रोमांस की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं जो फ्रांस के रोमांसों से इसे पृथक् करती हैं। इस रोमांस में भावनासंघर्ष अधिक तीव्र है, पात्रों तथा दृश्यों का वर्णन बहुधा काल्पनिक है, नैतिक सत्यों का प्रवर्तन बहुत सीधी सादी रीति से किया गया है, और जितने कल्पित अंग हैं वे सब एक दूसरे से इस प्रकार मिला-जुला दिये गये हैं कि रोमांस की कहानी ऐक्य-सिद्धान्त के अनुसार संगठित हो गयी है। रोमांस की भाषा ओजस्विनी तथा चित्रित करनेवाले शब्दों से पूर्ण हो गयी है और वर्णन को साकार बनाने में सफल हुई है। इन सब गुणों के कारण यह रोमांस इंग्लैण्ड के सामयिक जीवन का बड़ा अच्छा चित्रण करता है। उत्सवों के दृश्यों के साथ-साथ, नित्यप्रति के जीवन तथा घरेलू रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार, खेल-कूद, शिकार और अखाड़े के पराक्रम; आदि बातों से कहानी भरी हुई है और हास्योत्पादक प्रसंगों से इस सामग्री को एक वर्णन में घुला-मिला दिया गया

है। इन गुणों के कारण यह रोमांस इस काल के रोमांसों में सर्वोत्तम माना गया है।

मध्यकालीन कहानी-साहित्य के परिवर्तन

नार्मन विजय के उपरान्त दो शताब्दियाँ उन जातियों के सम्मिश्रण में लगीं जो इंग्लैण्ड में बसी थी। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, इन जातियों की सभ्यता और संस्कृति बदलती गयी, यहां तक कि जरमैनिक और नार्मन-फ्रेंच जातियाँ आपस में ऐसी मिल-जुल गयी कि उनके मिलाप से एक नयी अंग्रेज जाति उत्पन्न हो गयी। दोनों जातियों की सभ्यता भी इसी प्रकार मिलकर नयी सभ्यता हो गयी। कहानी-साहित्य ने भी इस परिवर्तन के अनुरूप बहुत सी बातें बदल गयीं। जहाँ बँधे-टँके पात्र, जैसे भ्रमण करनेवाले नाइट, विपत्ति में पड़ी हुई महिलाएँ, दुष्ट जादूगर, हुआ करते थे, वहां साधारण स्त्री और पुरुष, जो नयी सामाजिक व्यवस्था के प्रतिरूप थे, पात्र बनाये जाने लगे। व्यक्तिवाद के कारण इस काल में नयी नयी स्थितियाँ सामने आने लगी थी और क्या युद्ध, क्या प्रेम क्षेत्र, जीवन के प्रत्येक संघर्ष में मनुष्य स्वतंत्र होता जाता था। सामाजिक व्यवस्था भी मनुष्य की स्वतंत्रता को बहुत सी बातों में सीमित नहीं करती थी। नयी नयी घटनाएँ सामने आती थीं जो अब इस योग्य समझी जाती थी कि रोमांसों में उनका समावेश किया जाय। जहाँ पहले आग उगलनेवाले दैत्यों से लड़ने और छिपे हुए शत्रु के आक्रमण से अपने को बचाने में मनुष्य की सारी शक्ति और बुद्धि लगी रहती थी, वहाँ अब नये रोमांसों में प्रेम-चर्चा बहुत बढ़ गयी और नित्यप्रति जीवन की साधारण घटनाओं में धैर्य और पराक्रम के कार्य होने लगे, जो रोमांसों में जगह पाने लगे।

प्राचीन रोमांसों में स्त्रियों का कर्तव्य आज्ञापालन हुआ करता था; आधुनिक स्त्रियों को इतना ऊँचा आसन दिया जाने लगा कि धीरे-धीरे पुरुष उनका आज्ञाकारी सेवक अथवा गुलाम बन गया। इन रोमांसों की स्त्रियाँ रूपवती, गर्विता तथा नकचढ़ी होने लगी, जो अपने प्रेमियों के प्रति क्रूरता का व्यवहार करती थीं और जब तक उनकी जान ही पर न आ बने, कभी दया नहीं करती थीं। जहाँ प्राचीन समय के रोमांसों में ऐंग्लोसैक्सन योद्धा बड़े गर्व से अपने शत्रु को परास्त करके उसकी हँसी उड़ाता और उसे समाप्त करता, आधुनिक रोमांस में गवेन आजकल के शिष्ट मनुष्यों के समान अपने शत्रु ग्रीन नाइट के प्रति नम्रता तथा सज्जनता का व्यवहार करता है। प्राचीन काल के रोमांसों में कठोरता और

निर्दयता भरी पड़ी है, जिसकी जगह पर इस काल के रोमांसों में सुजनता तथा भलमनसी को व्यवहार में लाया जाता है। स्त्रियों के प्रति जो गवेन का व्यवहार है वह प्राचीन समय के रोमांसों के योद्धाओं को घृणित और असहनीय जान पड़ता।

कहानियों की रचना-प्रणाली तथा निर्माण-विधि में भी उन्नति हुई। प्राचीन काल के रोमांसकार विना किसी रोक-टोक के अथवा सोच-विचार के अपनी कहानी को जितना चाहते बढ़ाते चले जाते थे। नये रोमांसों को नियमित क्रम के अनुसार किसी निश्चित घटना से आरम्भ करके कहानी का विस्तार किया जाता था और एक विशेष अन्त तक पहुँचाया जाता था। इस विस्तार में जितनी स्थितियाँ उपस्थित होतीं वे भी उसी क्रम में बँधी हुई कौतुक और आकांक्षा उत्पन्न करतीं और भावों को तीव्र करती थीं। इन सब परिवर्तनों के साथ साथ रोमांसों की छन्दबद्ध भाषा भी बदलती गयी और तेरहवीं शताब्दी के मध्यकाल में गद्य का प्रयोग होने लगा। जैसे जैसे कथा-सामग्री और भावों में परिवर्तन होता गया, रोमांसों का गद्य उन अलंकारों को भी छोड़ता गया जो पहले प्रयोग में लाये जाते थे। चौदहवीं शताब्दी के आते आते गद्य ने वे विशेष गुण उत्पन्न कर लिये जो बौद्धिक विचारों को व्यक्त करने की योग्यता रखते थे और उन्हें तर्क के अनुसार यथोचित रीति से उपस्थित कर सकते थे।

मध्यकालीन यथार्थवादी कहानी-साहित्य

इन रोमांसों में भी हमें यथार्थ तथा वास्तविकता नहीं मिलती। नाइटों और योद्धाओं के साहसिक कार्यों को ये भी वर्णन करते हैं, तथा राजदरबार के बड़े आदमियों और कर्मचारियों की प्रेम-कहानी भी कहते हैं। ऐसे रोमांस अभिजातवर्ग के मनोरंजन के लिए लिखे जाते थे। इस वर्ग के लोग बहुधा पढ़े-लिखे होते थे, उन्हें कला और कारीगरी की वस्तुओं से दिलचस्पी रहा करती थी और फिर उनके पास अवकाश की कोई कमी नहीं होती थी। ऐसे लोगों के लिए जो रोमांस लिखे जाते थे, उनमें जीवन का जो चित्रण किया जाता था, वह सर्वथा काल्पनिक होता था। शक्ति, पराक्रम, सामर्थ्य, सदाचार तथा भावनाओं को इतना बढ़ा-चढ़ाकर दर्शाया जाता था कि वे अलौकिक अथवा अप्राकृतिक लगती थीं। जनसाधारण की कहानियों में इनसे कहीं अधिक वास्तविकता होती थी। वे लोग कभी-कभी शूरवीरों के गुण गानेवाले रोमांसों को जनता के लिए फिर से लिखते थे और संवेग तथा करुणा के शुद्ध भावों को यथार्थ रूप देते थे। उनकी

सर्वप्रिय कहानियाँ अधिकांश वह सीधी-सादी चेतावनी देनेवाली कहानियाँ होती थीं जिनको पादरी लोग अपने धर्मोपदेशों में दृष्टान्तों की भाँति कहा करते थे। ये कहानियाँ एग्ज़ेम्पला (Exempla) कहलाती थीं और बहुधा पूर्वी देशों से उन तक पहुँची थीं।

इनके अतिरिक्त बहुत से प्राचीन रोमांसों को निन्दा करने के अभिप्राय से इस प्रकार लिखा जाता था कि वीरता तथा पराक्रम के कार्यों में छिपी हुई अशिष्ट प्रवृत्तियाँ ऊपर उभर आती थीं। इस प्रकार की जगत्-विख्यात पुस्तक रेनार्ड दि फ़ाक्स (Reynard the Fox) है, जो पहले सन् १२०० के लगभग फ्रांस में लिखी गयी थी और धीरे-धीरे अगली दो शताब्दियों में यूरोप के सब देशों में पहुँच गयी थी। जिस देश में भी वह पहुँची वहाँ की जनता में वह सर्वप्रिय हो गयी और उसमें कुछ न कुछ बातें वहाँ के विशेष अनुभवों के अनुसार जोड़ दी गयी। इस पुस्तक का भावार्थ गेटे ने भी जर्मन भाषा में लिखा है। इस व्यंग्यात्मक कहानी के पात्र पशु है और प्रमुख पात्र, जिसके नाम से पुस्तक जगत्-विख्यात है, रेनार्ड (Reynard) नामक लोमड़ी है। 'रेनार्ड' शब्द का अर्थ 'उपदेशकुशल' है, जिससे पुस्तक लिखने का अभिप्राय प्रकट होता है। कहानियों में नाइट कोई न कोई पशु है जो अपने साहस और पराक्रम से ख्याप्ति प्राप्त करता है, परन्तु रेनार्ड अपनी चालाकी अथवा चालबाज़ी से शक्ति तथा वीरता दोनों ही को मात देता है। 'चालाकी' और 'चालबाजी' को प्रधान चेष्टा बनाकर बहुत कहानियाँ लिखी जाती थीं और यह चालाकी व्यग्य करने अथवा तुरन्त उत्तर दे सकने में देखी जाती थी।

उन छोटी-छोटी कहानियों में, जिनमें मनुष्यों की दुष्टता और मूढ़ता दिखायी जाती थी, पादरियों के पाखंड और छल-कपट का बड़ा हास्यप्रद वृत्तान्त दिया जाता था। मध्यकालीन कहानी-साहित्य के फैलाव तथा उसकी सीमा का अनुमान उन संग्रहों से किया जा सकता है जो चौदहवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में प्रचलित थे। जो कहानियाँ इन संग्रहों द्वारा इस समय लोकप्रिय होती जा रही थीं उनमें दिन पर दिन वास्तविकता आती जा रही थी और वे नित्य-जीवन के निकट हो रही थीं। मानव-जीवन तथा प्रकृति का निरीक्षण अधिक गहरा और उसका निरूपण दया-भाव की दृष्टि से हो रहा था।

बोकैशियो और उसकी डेकामेरान

इस प्रकार की कहानियों का सबसे श्रेष्ठ संग्रह बोकैशियो की डेकामेरान

(Decameron) नामक पुस्तक में था। गायोवानी बोकैशियो (Giovanni Boccaccio) इटली का बड़ा प्रतिभाशाली कवि तथा उपन्यासकार था, जिसका विश्व-साहित्य में बहुत ऊँचा स्थान है। उपन्यास के इतिहास में तो डेकामेरान को यदि स्फूर्ति का भंडार और पथदर्शक कहा जाय तो अनुचित न होगा। चौदहवीं शताब्दी के मध्यकाल के उपरान्त से लेकर टेनिसन तक कोई भी कवि तथा नाटककार अथवा कहानी लेखक न होगा, जिसने बोकैशियो से प्रेरणा न पायी हो और जिसने उसकी किसी न किसी कहानी पर काव्य या कोई नाटक न लिखा हो। न मालूम कितने चित्रकारों ने उसकी कहानियों से प्रेरित होकर बड़े सुन्दर तथा अमर चित्र खींचे हैं।

गायोवानी बोकैशियो का जन्म लगभग १३१३ में पैरिस में हुआ था। उसका पिता इटली के फ्लोरेन्स नगर का निवासी था। उसने फ्रांस की एक महिला से विवाह किया था। बोकैशियो बाल्यावस्था में ही फ्लारेन्स चला गया था। वहीं उसने अपना जीवन व्यतीत किया और ख्याति पायी। पहले उसने रोमांस और कविता लिखकर अपने समकालीन देशवासियों को चमत्कृत कर दिया और गद्य तथा पद्य दोनों में उन्हें नवीन रीतियाँ और छन्दों के नमूने दिये। सन् १३४८ और १३५८ के अन्तर में उसने वे एक सौ कहानियाँ लिखीं जिनका संग्रह डेकामेरान है। यद्यपि ये कहानियाँ नयी नहीं हैं, और उनमें से बहुत सी मामूली अथवा साधारण हैं, किन्तु बोकैशियो ने उन्हें कहा कुछ ऐसे ढंग से है कि वे अर्थपूर्ण और सर्वथा नयी हो गयी हैं। कोई कोई कहानी प्राचीन काल के छन्दबद्ध फ़ेब्लियो (Fabliaux) से ली गयी है, जो फ्रांस के भाट तथा गायक जनता को सुनाया करते थे। वे कहानियाँ साधारण जीवन-घटनाओं से सम्बन्धित हैं और उनमें कोई विशेषता नहीं है, परन्तु बोकैशियो ने उन्हें इस प्रकार अपने ढंग से दुबारा लिखा है कि उनकी कथावस्तु में गंभीर विषयों पर विचार करने के अवसर निकल आये हैं और कहानियों का हलकापन दूर हो गया है। डेकामेरान में लगभग एक-तिहाई ऐसी ही कहानियाँ हैं।

दूसरे प्रकार की कहानियाँ वे हैं जो पूर्वीय नैतिक-कथाओं के आधार पर लिखी गयी हैं। ये नैतिक कथाएँ इस काल में सब यूरोपीय देशों में प्रचलित हो रही थीं। बोकैशियो ने इन्हें दृष्टान्त की श्रेणी से निकालकर मनुष्य के अनुभवों के निकट कर दिया और जीवन के तथ्यों को इनके द्वारा निश्चित एवं सिद्ध किया।

डेकामेरान में एक तीसरे प्रकार की कहानियाँ भी हैं जो इन सबसे उत्तम हैं।

ये कहानियाँ उसी प्रकार की सीधी-सादी हैं जैसी बहुधा समाचारपत्रों में छपा करती हैं—किसी ने किसी का वध कर डाला, कोई स्त्री को भगा ले गया, किसी के बदले कोई और दंड भोगता है। ऐसी कहानियों के लिखने का कोई उद्देश्य नहीं होता, न उनके द्वारा कोई उपदेश दिया जाता है और न कामुकता उत्पन्न करायी जाती है। इन साधारण समाचार के ढंग की कहानियों में बोकैशियो ने जान डाल दी और मानव-प्रकृति का वास्तविक स्वरूप दिखा दिया। नित्यप्रति के जीवन में ही गूढ़ रहस्य छिपे हैं और साधारण घटनाओं में मनुष्य के गुण तथा दोष हमारे सामने आते हैं।

बोकैशियो ने अपनी कहानियाँ इतनी सरल तथा स्वाभाविक भाषा में लिखी थीं कि वे थोड़े ही समय में लोकप्रिय हो गयीं और देश-देशान्तर में पढ़ी जाने लगीं। दस वर्ष के भीतर ही उनका यूरोप की सब भाषाओं में अनुवाद हो गया। उनका लेखक जगत्-विख्यात उपन्यासकारों का पथदर्शक माना जाने लगा।

डेकामेरान की कहानियों को इटली की भाषा में नोवेले (novelle) कहा जाता था। इसी शब्द से अंग्रेज़ी नाम नावेल (novel) निकला है। नोवेले की विशेषता यह समझी जाती थी कि वे साधारण जीवन में ही सत्य और सौन्दर्य दिखाने की चेष्टा करते थे। बोकैशियो सामने की सीधी-सादी घटना को अथवा साधारण मनुष्य को ही कथावस्तु बनाता और चमत्कार उत्पन्न करता था। उदाहरण के हेतु यदि हम डेकामेरान की प्रथम कहानी को देखें तो उस का कहानी लिखने का ढंग मालूम हो जायगा। एक दुराचारी वकील मरते समय पादरी से अपने पापों को कहकर ईश्वर से क्षमा का प्रार्थी होता है और एक धार्मिक मनुष्य की भाँति अपने प्राण त्याग करता है। बस, इस छोटी सी साधारण बात को लेकर बोकैशियो कहानी लिखता है और दम्भ तथा सारे पाखंडों की खाल खींचकर मनुष्य का हृदय सामने रख देता है। इसी प्रकार अंतिम कहानी में धैर्य अथवा सहनशीलता का चित्र खींचता है और ऐसा करने में ग्रीज़ेल्ड़ा को पराक्रम के शिखर पर चढ़ा देता है। तीव्र उत्कंठा का भाव, अज्ञानता, अहंकार, झूठा अभिमान, तथा इस प्रकार के दोषों में प्राप्य आपत्तियों तथा भय का उल्लेख उसकी कहानियों में बार बार आता है, किन्तु उनको वह ऐसे कलात्मक प्रबन्ध से कथा-सामग्री में रखता है कि मनुष्य-जीवन गुण और दोषों से परे किसी ऐसी शक्ति का खेल दिखाई पड़ता है, जो हमें सदा मूर्ख बनाने पर तुली रहती है।

डेकामेरान की ओजस्विनी कहानियों में मध्यकालीन जगत् के पराक्रम तथा वीरता के कार्यों द्वारा भी साधारण जीवन की समस्याएँ दिखाई गयी हैं और उन पर प्रकाश डाला गया है। टस्कनी के वीर पुरुषों में फ़ेडेरीगो डेग्ली अल्बरीगी (Federigo degli Alberighi) हथियार चलाने तथा अपने नम्र एवं विनययुक्त स्वभाव के लिए सबसे अधिक विख्यात था। बोकैशियो उस वीर पुरुष की कहानी इस प्रकार लिखता है—"यह फ़ेडेरीगो, युवकों की साधारण रीति के अनुसार मोना गायोवाना नामक एक सुशील तथा फ्लोरेन्स की सबसे अधिक सुन्दर युवती से प्रेम करने लगा। उस युवती का अनुग्रह तथा स्नेह प्राप्त करने के हेतु वह उन्मुक्त हृदय से धन का व्यय करने लगा। कभी उत्सव मनाता, कभी बड़े-बड़े भोज देता, बर्छे तथा भाले की लड़ाई के लिए योद्धाओं को बहुत रुपया खर्च करके एकत्रित करता, दंगल कराता और सदा इसी सोच-विचार में रहता कि कैसे मोना को प्रसन्न करूँ और अपनी ओर आकर्षित करूँ। परन्तु इन खेल-तमाशों का मोना पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा और उसने यह तक जानने की उत्सुकता प्रकट न की कि कौन यह सब कुछ करा रहा है। परिणाम यह हुआ कि फ़ेडेरीगो का सारा धन इन व्यर्थ के कार्यों में लगकर समाप्त हो गया और उसे फ्लोरेन्स छोड़कर किसी दूर के गाँव में चला जाना पड़ा। इस गाँव में उसके पास थोड़ी भूमि थी जिसमें उसने खेती करना आरम्भ किया। उसके पास एक बाज़ पक्षी भी था जो उसके लिए कुछ न कुछ शिकार कर लाता था, इस प्रकार उसका निर्वाह होने लगा। यह पक्षी ही उसका साथी और मित्र था और इसी को लेकर वह अकेला रहता था। यदि बाज़ उसके पास न होता तो खेती से न तो उसका निर्वाह होता और न उसकी दरिद्रता की दशा में कोई उससे सहानुभूति करने वाला मित्र होता।

इस प्रकार कुछ समय व्यतीत होने के उपरान्त फ़ेडेरीगो को मालूम हुआ कि मोना गायोवाना के पति का स्वर्गवास हो गया है और वह अपनी भूमि तथा सम्पत्ति अपने इकलौते बेटे के नाम छोड़ गया है। मरते समय वह वसीयत भी कर गया कि यदि उसका लड़का सन्तानहीन मर जाय तो सारी सम्पत्ति तथा भूमि मोना गायोवाना को मिले। विधवा होने के बाद से वह अपने बेटे को लेकर देहात में रहने लगी और अपना ध्यान तथा समय उसी की देख-भाल और सेवा में व्यतीत करने लगी। गर्मी के महीनों में लड़के को लेकर वह जिस गाँव में रहती थी वह फ़ेडेरीगो के गाँव से बहुत दूर नहीं था। मोना का लड़का, जिसे शिकार का बहुत शौक़ था, जब कभी इधर से निकलता तो फ़ेडेरीगो के बाज़ को देखता और उसके गुणों को सराहता।

धीरे-धीरे दोनों में मित्रता हो गयी और कभी-कभी वे शिकार में साथ-साथ जाने लगे। ऐसे अवसर पर लड़का फ़ेडेरीगो के पक्षी की बड़ी प्रशंसा करता और मन ही मन यह चाहता कि वह पक्षी उसका होता तो बड़ा अच्छा होता। किन्तु यह देखकर कि फेडेरीगो अपने बाज को कितना प्यार करता है, लड़के को पक्षी माँगने का कभी साहस न हुआ।

कुछ समय के उपरान्त लड़का बीमार पड़ा और अच्छे से अच्छे वैद्यों की चिकित्सा होने पर भी उसकी दशा बिगड़ती ही गयी। मोना गायोवाना रातदिन उसकी देखभाल तथा सेवा में लगी रहती, परन्तु कुछ फायदा दिखाई न पड़ता। यह सोचकर कि लड़के के मन में कोई अभिलाषा न हो, जिसके कारण उसका मन मलिन रहता हो, एक दिन मोना ने पूछा—"बेटे, तुम मुझे किसी ऐसी वस्तु का नाम बताओ जो तुम्हे बहुत प्रिय हो और जिसके प्राप्त करने की तुम्हारी बड़ी इच्छा हो। मैं जहाँ तक मुझसे हो सकेगा वह वस्तु तुम्हें देने की चेष्टा करूँगी।" जब कई दिन लड़के से यह प्रश्न किया गया तो उसने अपनी माता से कहा,—"यदि मुझे वह बाज पक्षी जो फेडेरीगो नामक किसान के पास है, मिल जाता तो मैं भी खूब शिकार खेलता और शीघ्र ही अच्छा हो जाता।"

मोना गायोवाना बेटे की यह बात सुनकर सन्नाटे में आ गयी और बहुत देर तक न मालूम कितनी बातों पर सोच-विचार करती रही। उसे मालूम था कि फ़ेडेरीगो अपने बाज को कितना प्यार करता है और कभी उसे अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देता। उसे यह भी याद था कि फ़ेडेरीगो के हृदय में स्वयं उसके लिए कितना अधिक प्रेम था और वह यह भी जानती थी कि कैसे उस प्रेम के बदले में कभी सौजन्य तक उसने प्रकट नही किया। मोना की समझ में नहीं आता था कि वह करे तो क्या करे। मन ही मन बार बार सोचती रही—"मैं कैसे किसी के हाथ फ़ेडेरीगो को संदेशा भेजूँ; कैसे मैं उससे यह सब कहूँ तथा उससे बाज माँगूँ? और बाज भी वह जो दूर-दूर तक अपने गुणों के कारण विख्यात है? मैं कैसे उसके शून्य-जीवन का एक-मात्र आधार उससे छीन लेने की चेष्टा करूँ?" मोना को पूर्ण विश्वास था कि उसके माँगते ही फ़ेडेरीगो अपना बाज उसे भेंट कर देगा, और यही विश्वास उसे बेचैन कर देता था और वह काँप उठती थी। अन्त में माता के प्रेम की विजय हुई और उसने मन में ठान लिया कि कुछ भी हो, मैं स्वयं जाऊँगी और फ़ेडेरीगो से कहूँगी। मोना ने अपने बेटे से बाज देने का वादा कर लिया और उसके बाद से लड़का धीरे धीरे स्वस्थ होने लगा।

एक दिन प्रातःकाल अपनी सहेली को साथ लेकर मोना फ़्रेडेरीगो के गाँव को चल दी। फ़्रेडेरीगो अपने घर के पीछे कुछ कर रहा था। मोना के आने की सूचना पाते ही वह भागा हुआ उसके स्वागत को बाहर पहुँचा। मोना ने बड़ी नम्रता से उसे नमस्कार किया और बोली—"फ़्रेडेरीगो, मैं आज आपके पास उस महान् समर्पण की क्षतिपूर्ति के लिए आयी हूँ, जो इतना अधिक प्रेम आपने मुझे देकर किया था जितना न तो आपके लिए ठीक था और न मैं जिसके योग्य थी। मैं जानती हूँ कि मेरे कारण आपको क्या क्या नहीं सहना पड़ा है। इस समय मैं उसकी किसी अंश में पूर्ति करने आपके यहाँ अतिथि होकर आयी हूँ और हम दोनों आपके साथ भोजन करने को प्रस्तुत हैं।"

फ़्रेडेरीगो ने सिर झुकाकर नमस्कार किया और कहा—"हे देवि, मुझे याद नहीं कि कब आपके कारण मुझे कोई हानि पहुँची। सत्य तो यह है कि यदि आज मैं किसी योग्य हूँ तो उसका श्रेय केवल आपके गुणों तथा आपके प्रति मेरे हार्दिक प्रेम को है। आपका यहाँ आना मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात है। आपकी उदारता उस धन की अपेक्षा कहीं अधिक मूल्यवान् है जो मेरे पास हो सकता था, क्योंकि आज आपने एक निर्धन व्यक्ति के घर पर आने की कृपा की है।" यह कहकर फ़्रेडेरीगो ने मोना गायोवाना का बड़े आदर-सत्कार से स्वागत किया और अपनी छोटी-सी फुलवाड़ी में लिवा ले गया और बोला—"देवि, मैं क्षमा का प्रार्थी हूँ, आपके पास इस स्त्री को छोड़कर मुझे भोजन का प्रबन्ध करने जाना पड़ रहा है। मेरे पास कोई नौकर-चाकर नहीं है। यह सीधी-सादी स्त्री मेरे मज़दूर की पत्नी है जो मेरे लौटने तक आपकी सेवा में रहेगी।"

यद्यपि फ़्रेडेरीगो निर्धन था, किन्तु आज से पहले उस बेचारे ने अपनी दरिद्रता का इतना कटु अनुभव कभी नहीं किया था। आज के दिन उस महिला को भोजन कराने भर की सामग्री घर में न थी जिसके प्रभाव से कभी उसने हज़ारों मनुष्यों की दावतें की थीं। दुःख के मारे वह आकुल होकर इधर-उधर दौड़ रहा था और अपने भाग्य को कोस रहा था। न तो उसके पास रुपया ही था और न ऐसी कोई वस्तु ही थी जिसे बेचकर रुपया मिल सकता। अपने मज़दूरों से उधार लेने में उसे बड़ी हिचक मालूम होती थी और माँगने का तो प्रश्न ही क्या था। वह इसी असमंजस में था कि अनायास उसकी दृष्टि अपने बाज़ पर पड़ी जो कमरे में अड्डे पर बैठा हुआ था। "बस, इसके अतिरिक्त कोई दूसरा साधन नहीं है।" इतना कहकर फ़्रेडेरीगो ने बाज़ को अड्डे पर से उतारकर हाथों में तौला और टटोलकर निश्चय कर लिया कि

उसके मांस की मीना के खाने योग्य कोई चीज़ बन जायगी। फिर क्या था, तुरन्त उसने पक्षी की गर्दन मरोड़ दी और बाल व पर साफ़ करके सीख पर चढ़ाने के लिए नौकरानी को दे दिया। फ़ेडेरीगो ने इसके उपरान्त जो कुछ बची हुई चीज़ें थीं उन्हें लेकर खाने की मेज़ सजायी। जब सब सामान किसी भाँति ठीक कर लिया तो बाहर जाकर महिलाओं को भोजन करने को आमंत्रित किया। जब भोजन करने को वे मेज़ पर बैठ गयीं तो फ़ेडेरीगो ने जो कुछ उससे बन पड़ा था उनके सामने परोस दिया। महिलाओं ने हँसी-खुशी, बिना जाने कि वे क्या खा रही हैं, बाज़ के मांस का स्वादिष्ट भोजन किया।

भोजन कर चुकने के बाद कुछ देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं। मोना गायोवाना ने यह सोचकर कि अब अपने आने का मतलब बताने का समय आ गया है, फेडेरीगो से कहा—"फ़ेडेरीगो, मैं विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि जब तुम यह सुनोगे कि मै आज तुम्हारे पास किस मतलब से आयी हूँ, तो तुम ज़रूर मेरी धृष्टता पर चकित रह जाओगे और तुम्हें उस विगत समय की स्मृति हो आयेगी जब मैंने सम्मान से तुम्हारे प्रेम को अस्वीकार किया था, जिसे तुमने मेरी निष्ठुरता समझा था। मेरी इस धृष्टता को तुम क्षमा कर सकते यदि तुम्हारे अपने बच्चे होते, क्योंकि तब तुम समझ सकते कि माता-पिता का सन्तान के प्रति प्रेम कितना प्रबल होता है। यद्यपि तुम्हारे सन्तान नहीं है परन्तु मेरे एक पुत्र है। मुझे तो उस प्राकृतिक नियम ने बाँध रखा है जिसका पालन मेरा धर्म है। यही कारण है जो मैं अपनी इच्छा के विरुद्ध तुमसे एक ऐसी वस्तु दे देने की अनुचित प्रार्थना करती हूँ जिसे तुम बहुत प्यार करते हो और जो तुम्हारे शून्य जीवन का एक मात्र सहारा है। मैं यह सब कुछ समझती हूँ, फिर भी विवश होकर तुम्हारा बाज़ पक्षी माँगती हूँ। मेरा पुत्र कुछ समय से बीमार है। उसने तुम्हारे पक्षी को लेने की ऐसी रट लगायी है कि यदि मैं खाली हाथ लौट जाऊँ तो सम्भव है उसका रोग और बढ़ जाय और मैं उसे खो बैठूँ। मैं तुमसे विनती करती हूँ—उस प्रेम के नाते नहीं जो तुमने मुझसे किया था, वह कोई बन्धन अथवा प्रतिज्ञा नहीं थी—उस उदारता के नाते जो मैंने और मनुष्यों की अपेक्षा तुममें सबसे अधिक पायी है—कि तुम मुझे बाज़ दे दो। यदि तुम्हारे पक्षी के कारण मेरा पुत्र जी गया तो आजीवन वह तुम्हारा ऋणी रहेगा।"

मोना गायोवाना की बात सुनकर फ़ेडेरीगो की आँखों में आँसू भर आये। वह विक्षिप्त मनुष्य की भाँति स्तब्ध सा खड़ा रह गया और एक शब्द भी उसके मुँह से निकल न सका। उसे इस दशा में देखकर मोना ने समझा कि वह अपने पक्षी से

बिलग होने के विचार से घबरा गया है। मन में निश्चय करके कि वह बिना पक्षी लिये ही अपने घर चली जायगी, वह उठने को थी कि फ़ेडेरीगो ने कहा—

"हे देवि, भगवान् की यही इच्छा थी कि मैं आपसे प्रेम करूँ परन्तु भाग्य ने मेरा साथ न दिया और मुझे अनेक आपत्तियों का सामना करना पड़ा। आज जो दुःख मुझ पर पड़ा है वह सहा नहीं जा सकता। इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या होगा कि आज जब आपने मेरी इस झोपड़ी में पधारने की कृपा की है, जो पहले मेरे महलों में नहीं की, और एक छोटी सी वस्तु माँगी है तो उसे भेंट कर सकना मेरे लिए असम्भव हो गया है। इसमें भी मेरा सौभाग्य मेरे दुर्भाग्य से अलग नहीं हो सका। जैसे ही मुझे मालूम हुआ कि आप मेरे यहाँ भोजन करने की कृपा करनेवाली है, जिस कृपा के लिए मैं आपको उचित प्रकार से धन्यवाद देने के भी योग्य नहीं हूँ, तो मैंने आपकी प्रतिष्ठा तथा सम्मान के योग्य भोजन प्रस्तुत करना अपना कर्तव्य समझा और ऐसा ही करने की चेष्टा की। जिस बाज़ पक्षी को आप माँग रही है वह मेरी दृष्टि में सबसे बहुमूल्य तथा आपके सत्कार में काम देने योग्य था। मैंने यह विचार किया कि उसका सब से अच्छा उपयोग आपके भोजन में ही हो सकता है। अब मुझे मालूम हुआ कि आपको उसकी दूसरे काम के लिए आवश्यकता थी, तो मैं अपने दुर्भाग्य के कारण आपकी सेवा से वंचित हूँ जिसका शोक मुझे सदा रहेगा।"

फ़ेडेरीगो की बात सुनकर तथा पक्षी के अवयव देखकर मोना गायोवाना ने पहले तो उसे एक स्त्री को भोजन कराने के लिए ऐसे सुन्दर पक्षी का वध करने का अपराधी ठहराया, फिर यह सोचकर कि निर्धनता की दशा में भी वह कितना उदार-चित्त है, मन ही मन में उसे सराहने लगी। उसका दिल भर आया और अपने पुत्र के भविष्य की चिन्ता में डूबी हुई वह निराशा लेकर घर लौटी। कुछ समय के बाद, बाज़ न मिलने के कारण अथवा रोग ही से, लड़के की दशा बिगड़ने लगी और अन्त में उसकी मृत्यु हो गयी। पुत्र के निधन से माता को असीम दुःख हुआ।

यद्यपि मोना गायोवाना के दुःख का ठिकाना न था किन्तु उसके भाइयों ने यह सोचकर कि वह अभी युवती है और धनवान् है, उससे दूसरा विवाह करने का आग्रह किया। अन्य सम्बन्धियों ने भी यही आग्रह करना आरम्भ किया, यहाँ तक कि उसका उठना-बैठना कठिन हो गया। ऐसे समय में मोना को फ़ेडेरीगो की महानता की याद आयी और उसके उदार हृदय की उसने प्रशंसा की। जब कभी उसके विवाह की चर्चा होती तो वह कह देती—"यदि आप लोग मुझे शान्ति से रहने दें तो मैं जैसी दशा में हूँ उसमें बिल्कुल सन्तुष्ट हूँ किन्तु यदि आपका आग्रह है कि मैं फिर अपना

विवाह करूँ, तो मैं फ़्रेडेरीगो को छोड़कर किसी दूसरे से विवाह नहीं करूँगी। रहा फ़्रेडेरीगो का निर्धन होना, सो मेरी समझ में, धनहीन मनुष्य से विवाह करना मनुष्य-हीन धन से विवाह करने से कहीं अच्छा है।"

इस कहानी के लालित्य तथा शिष्टाचार, कोमलता तथा विनय को जितना सराहा जाय कम है। दुःखान्त न होने पर भी करुणा के वे सारे गुण कहानी में प्रस्तुत कर दिये गये है जो दुःख की सीमा को सूचित करते हैं। जिस अभागी घटना पर कहानी केन्द्रित है,वह एक ऐसी साधारण नित्य जीवन की समस्या है जो किसी गृहिणी के सन्मुख उपस्थित हो सकती है। बोकैशियो का वर्णन आदि से अन्त तक इतनी स्वाभाविक रीति से आगे वढ़ता चला जाता है कि सहज में जीवन का अर्थ तथा प्रतिष्ठा का चित्र पाठक के हृदय पर अंकित हो जाता है। उसकी रचना-प्रणाली में वर्णन और सवाद इस प्रकार मिले-जुले है कि हम विना प्रयास पात्रों के निकट होते जाते है और समवेदना द्वारा उनके जीवनरहस्य को प्रत्यक्ष कर लेते हैं। नित्य-जीवन की सामग्री का ऐसा भावपूर्ण प्रयोग कर के बोकैशियो वहुधा अपनी कहानियों में वे तथ्य प्रकट कर देता है जो केवल उच्चकोटि के कवि अपनी रचना में व्यक्त करते है। मानव प्रकृति के तथ्यों के व्यक्त करने में वह जितना सफल है उतना ही वह भाषा के प्रयोग में भी सफल है। डेकामेरान की कहानियों में वीसों ऐसे प्रसंग आते है जिन्हें अन्य लेखकों ने अपनी रचनाओं में लाने की चेष्टा की है, परन्तु किसी को भी वह सफलता नहीं मिली। ये ही सव गुण हैं जिनके कारण उसकी कहानियाँ जगद्-विख्यात हुई और वह उपन्यास के क्षेत्र में जगद्गुरु माना गया।

अंग्रेजी साहित्य का यह वड़ा सौभाग्य था कि चौदहवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में उसे एक ऐसा व्यक्ति प्राप्त हुआ, जो बोकैशियो से प्रभावित हुआ और उसी की भाँति वास्तविक जीवन के सार को समझकर अपनी रचनाओं में उसे प्रत्यक्ष कर सका। वोकैशियो की भाँति वह भी साधारण जीवन की घटनाओं को एक कलाकार की दृष्टि से देखने की योग्यता रखता था, जिस कारण वह प्रचलित प्रणाली से ऊपर उठकर अंग्रेजी साहित्य में एक नया युग स्थापित कर सका। यूरोपीय कहानीकारों के प्रभाव को वह अपनी मातृभाषा में प्रतिष्ठित कर सका। यद्यपि वह कवि था और उसने कविता ही में कहानियाँ लिखीं, परन्तु उसने कथा-सामग्री को सँवारने तथा कल्पना द्वारा उसकी गहराइयों में प्रवेश करके जीवन-तथ्यों को प्रकट करने का नया ढंग सिखाया। वह व्यक्ति जेफ्री चॉसर था जिसने कुछ गद्य भी लिखा और पद्य की कहानियाँ लिखने में युगपुरुष हुआ।

अध्याय २

रोमांस पर वास्तविकता का प्रभाव

मध्यकाल में सभ्यता को बर्बरता से निकाल कर ऊँचा उठाने में लौकिक और धार्मिक प्रवृत्तियों ने पूरा योग दिया था। लौकिक प्रवृत्ति ने पहले सामन्त-तन्त्र को प्रबल किया जिसने बड़े-बड़े अजेय दुर्ग बनवाये, और अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र देकर मनुष्य को अपनी शक्ति तथा सत्ता में विश्वास कराया। धार्मिक प्रवृत्ति ने मठ और मन्दिर बनवाये और प्रत्येक ईसाई देश के हज़ारों मनुष्यों को अपने धर्म की सेवा में आत्म-समर्पण करने फिलस्तीन की पुण्यभूमि को भेजा। यदि एक प्रवृत्ति ने मनुष्य को आत्मविश्वास देकर उसे पराक्रमी योद्धा तथा शूरवीर बनाया, तो दूसरी ने मनुष्य में श्रद्धा उत्पन्न की और उसके हृदय में जीवन-रहस्यों को जानने की उत्सुकता पैदा की। इन दोनों प्रवृत्तियों ने मनुष्य को इतना उत्तेजित किया कि कुछ ही काल में उसने अति कर दी, जिसका फल यह हुआ कि समाज धीरे-धीरे अव्यवस्थित होने लगा, स्वतन्त्रता का अभिप्राय नियमों को तोड़ना समझा जाने लगा और धर्मनिष्ठा ने धर्मोन्माद का रूप धारण कर लिया। नागरिक जीवन में बाधाएँ पड़ने लगीं, शौर्य (Chivalry) की आड़ में लूट-मार होने लगी तथा चारों ओर राजद्रोह के चिह्न और संकेत मिलने लगे। तेरहवीं शताब्दी में मनुष्य की स्वतन्त्रता चारों ओर से सीमित होने लगी और जीवन बन्धनों से जकड़ दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ ही समय में ये दोनों प्रवृत्तियां दुर्बल हो गयीं और मनुष्य लोक-सम्मति तथा अभ्यास पर धर्म को निर्भर समझने लगा, अपने हित को ही सब से ऊँचा आदर्श मानने लगा और सांसारिक जीवन को ही सफल बनाने में सारी निपुणता दिखाने लगा। गम्भीर विषय तथा उच्च आदर्श नित्य-जीवन और पुस्तकों से लुप्त होने लगे। साहित्य का उद्देश्य केवल आमोद-प्रमोद समझा जाने लगा और कविता में नाजुक-ख़याली सबसे बड़ा गुण हो गया। ऐसी कहानियों का सबसे अधिक आदर होने लगा जो केवल मनोरंजन के लिए लिखी जाती थीं और जिनका गम्भीर विषयों अथवा तथ्यों से कोई प्रयोजन नहीं होता था। पाठकों की

भावना उत्तेजित कर उन्हें उन्मत्त करना इन कहानियों का एकमात्र लक्ष्य समझा जाता था।

जेफ्री चासर और उसका प्रथम फ्रेंच प्रभाव का युग

चौदहवी शताब्दी के ऐसे वातावरण में जव संकीर्ण विचार, अनेक रीति-रिवाज, धार्मिक निषेध और वहुत तरह के सामाजिक बन्धन मनुष्य को चारों ओर से जकड़े हुए थे, सन् १३४० ई० के लगभग जेफ्री चासर का जन्म हुआ। उसकी युवावस्था के काल में मध्यकालीन घटा छायी हुई थी और मनुष्य-जीवन लोकसम्मति तथा प्रचलित आचार-विधि के अनुसार व्यतीत किया जाता था। कहीं-कहीं उस धार्मिक विधान के विरुद्ध आवाज़ उठायी जाने लगी थी जिसके अधीन एक ही प्रकार के विचार तथा एक ही सी पुस्तकें और कहानियाँ जनता के लिए विहित कर दी गयी थी। इन वहुत सी वाधाओं से देश के वड़े आदमी पीड़ित नहीं होते थे। जेफ्री का पिता लन्दन में मदिरा का व्यापार करता था और उच्च श्रेणी के लोगों से उसका व्यावहारिक सम्वन्ध रहा करता था। ऐसे ही सम्वन्ध के कारण उसने जेफ्री को सत्रह वर्ष का होने के पहले ही एक वड़े घराने में नौकर करा दिया, जहाँ से वह दो वर्ष के भीतर फ़ौज में भरती होकर १३५९ में सेना के साथ फ्रांस चला गया। यहाँ उसने वह मध्यकालीन ठाट-वाट और तड़क-भड़क देखी, जो फ्राइसार्ट (Froissart) ने अपनी पुस्तक मे निरूपित की है। इस समय फ्रांस और इंग्लैण्ड के वीच वह युद्ध चल रहा था जिसने सौ वर्ष तक इन देशों को पृथक् रखा था। एक लड़ाई में फ्रांस वालों ने चासर को क़ैद कर लिया और वहुत धन लेकर उसे छोड़ा। इंग्लैण्ड लौटने पर वह राजदरवार में नियुक्त हो गया और कुछ समय के उपरान्त दूसरी श्रेणी का दरवारी भी वना दिया गया। अव उसे राजदूत वनाकर विशेष राजकाज करने को फ्रांस और इटली के राज्यों में भेजा जाने लगा। यद्यपि जेफ्री चासर कवि था, परन्तु इस काल में उसका जीवन एक कर्मठ सांसारिक मनुष्य जैसा था और उसने अपने कार्यो मे सफलता भी एक कुशल नीतिनिपुण व्यावहारिक मनुष्य की भाँति प्राप्त की। प्रत्येक श्रेणी तथा कारवार के लोगों को वह अच्छी तरह से समझता और उनके गुण-दोप जानता था। जिन राज्यों में उसे जाने के अवसर मिले वहाँ से वह अपनी मातृभापा को समृद्ध वनाने के लिए कोई न कोई सुविख्यात काव्य या कहानी लाया, जिसका उसने अनुवाद किया अथवा जिसके आधार पर स्वयं कुछ लिखा। किस देश से उसने कौनसी कहानियाँ चुनी और किन कवियों अथवा कहानीकारों

से वह प्रभावित हुआ, यह जानकर हमें चॉसर के समय की रुचि तथा मान का हाल मालूम होता है। तृतीय एडवर्ड के राज्यकाल में इंग्लैण्ड के राजदरबार पर फ्रांस के लोकाचार का बड़ा प्रभाव था, जिस कारण कविता, कहानी, शोभाचार सब के सब फ्रेंच रंग में रँग गये थे। कवि तथा कहानीकार फ्रेंच ढंग से सोचते और लिखते थे। चॉसर ने भी अपने प्रारम्भिक काल के दस वर्ष इसी प्रकार की कविता करने में लगाये थे।

लव-विज़न्स या प्रेम-गीत

जेफ्री चासर के समय के बहुत पहले से इंग्लैण्ड तथा फ्रांस में एक प्रकार की कविता, जिसे लव-विज़न्स (Love Visions) कहते थे, लिखी जाती थी। इन प्रेम-गीतों में विशेष शिष्टाचार के उन नियमों का पालन किया जाता था जो सभ्य समाज तथा राजदरबार में प्रचलित थे। यह शिष्टाचार मध्यकाल की कविता का विशेष ढंग हो गया था, और लगभग सभी यूरोपीय देशों में मान्य था। चॉसर ने फ्रेंच पद्धति का अनुकरण करके कविता की और प्रेम की उन परम्पराओं का निर्वाह किया, जो उसके समय में उच्चस्तर के लोगों में मान्य थीं और जो सारे असांप्रदायिक साहित्य में पायी जाती थीं। इन परम्पराओं के अनुसार प्रत्येक प्रेमी के लिए यह आवश्यक समझा जाता था कि वह अपने को कामदेव तथा अपनी प्रेमिका का दास समझे और सदा प्रणयनिष्ठ बना रहे, प्रेम-चिन्ता में घुल-घुलकर दुर्बल और पीला पड़ जाय, उसे बेचैनी में नींद न आये तथा वह बिस्तर पर पड़ा हुआ करवट बदलता और तड़पता रहे, बार-बार मूर्छित हो जाय, अपनी प्रेमिका के सौन्दर्य तथा उसकी बुद्धि की प्रशंसा में प्रेमगीत लिखे और प्रेमिका के दिये हुए प्रेम-स्मारक चिह्न की प्रतिष्ठा के लिए युद्ध करने को सदा उत्सुक रहे। प्रेमिका के लिए भी यह आवश्यक समझा जाता था कि वह अपने प्रेमी के प्रति बर्फ़ के समान ठंडी अथवा उदासीन रहे और कभी तीव्र भावना को अपने मन में उठने न दे। अपने प्रेमी की भक्ति तथा पराक्रम और वीरता की परीक्षा उसे असम्भव तथा ऐसे काम करने को कहकर करनी चाहिए जो किसी के ध्यान में भी न आ सकते हों। अनेक वर्षों की कठिन तपस्या एवं सेवा के पश्चात् यह सम्भव हो सकता था कि प्रेमिका अपने प्रेमी पर दया करे और उसे स्वीकार कर ले, परन्तु यह सौभाग्य प्रेमी के गुण अथवा सेवा का फल नहीं, बल्कि प्रेमिका की असीम अनुकम्पा का परिणाम समझा जाता था। प्रेमगीतों में प्रेमी तथा प्रेमिका इस शिष्टाचार का पालन करते थे और परम्परा के अनुसार

गीतों में प्रेमी अपनी भावुकता के वेग से थककर अरुणोदय होते-होते पक्षियों के मधुर संगीतमय कलरव और कलकल करते निर्झरों की सुरीली ध्वनि को सुनता हुआ सुरभित समीर के हलके झोंकों से शान्ति पाकर सो जाता था और स्वप्न में भी नाइटों को अपनी-अपनी प्रेमिकाओं को प्रसन्न करने की चेष्टा करते देखता था।

इस प्रकार का सबसे प्रसिद्ध काव्य रोमान डी ला रोज़ (Roman de la Rose) था जो इस समय यूरोप के सब देशों में पढ़ा जाता था। यह काव्य फ़ान्सीसी भाषा में लिखा, लगभग बीस हज़ार पंक्तियों का पद्य-रोमांस है, जिसका कुछ भाग तेरहवीं शताब्दी के मध्य काल में और शेष भाग चौदहवी शताब्दी के प्रारम्भ में लिखा गया था। इसके रूपक में एक प्रेमी बड़े प्रयास से गुलाब का वह फूल तोड़ने की चेष्टा करता है जिसे कई प्रतीकात्मक शक्तियाँ सुरक्षित रखने को दिन रात पहरा देती है। यह रूपक एक सुन्दर स्वप्न की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है, जिसमें वसन्त ऋतु और मनोहर उद्यानों के दृश्य तथा नदी, पहाड़, फूल, फल इत्यादि के चित्र दिये गये है। बहुत से मुस्कराते हुए महिलापात्र जैसे स्वतंत्रता, शोभा, विभव और उनके विपरीत दुःख तथा भय उपजानेवाले वे पात्र भी आते हैं जो प्रेम में बाधा डालते हैं। मध्यकालीन पाठकों की रुचि के अनुसार इस रोमांस में बहुत से गम्भीर तथा उपहासपूर्ण विषयों पर लम्बे-लम्बे विवरण है जो तत्कालीन दशा के सूचक हैं। इस रोमांस का चॉसर ने अंग्रेज़ी पद्य में अनुवाद किया था, जिसकी दो हज़ार पंक्तियाँ मिलती हैं। सम्भव है, उसने इतनी ही पंक्तियाँ लिखी हों। यह निश्चय है कि चॉसर पर इस काव्य का गहरा प्रभाव पड़ा था और इस प्रारम्भिक काल में उसने जो कुछ लिखा उस पर इस रोमांस का पूरा रंग चढ़ा है। इसी रंग में उसने लगभग दस बरस तक बहुत से प्रेमगीत, कहानी-काव्य तथा छोटे-छोटे वे गीत, जिनमें एक ही कोमल विचार प्रकट किया गया है, लिखे। इस काल की सबसे महत्त्वपूर्ण कविता बुक आफ़ दी डचेस (Boke of the Duchesse) है जो उसने १३६९ ई० में लिखी थी। यह कविता जान आफ़ गाण्ट (John of Gaunt) को उसकी पत्नी की मृत्यु पर शान्ति तथा आश्वासन देने के लिए लिखी गयी थी, इस कारण इसमें कुछ विशेषता आ गयी है। प्रेमगीतों में जो प्रेम सम्बन्धी शिष्टाचार और जो स्वप्न की पृष्ठभूमि हुआ करती थी, वे सब वास्तविकता के प्रभाव से छोड़ दिये गये है और उनकी जगह पर व्यक्तिगत तथा निजी शोक कविता मे प्रकट किया गया है। जहाँ रूढ़ रीति अथवा रस्मी प्रेम होता था, वहाँ इस कविता में यथार्थ भावना है, और इसी गुण के होने से यह कविता उन गीतों से भिन्न है।

चॉसर पर इटली का प्रभाव; नव-युग की उत्तेजना

चॉसर ने राज्य के कार्यों के सम्वन्ध में १३७० और १३८५ के बीच फ्लैण्डर्स, मिलान, जेनोआ तथा फ्लोरेन्स की यात्राएँ कीं और विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त किये। सन् १३७३ की यात्रा का उसके साहित्यिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उस समय इटली एक ऐसी कलात्मक शक्ति से आविष्ट था जो मध्यकालीन वौद्धिक नियन्त्रण को तोड़कर एक नयी जाग्रति के रूप में चारों ओर स्फूर्ति और उत्साह वढ़ा रही थी। इस नवचेतना ने संकुचित विचारों, धार्मिक वन्धनों, हठधर्मी के सिद्धान्तों और रूढ़िग्रस्त रीति-रिवाजों के बुने हुए जाल को तोड़ दिया था और मनुष्य में आत्मविश्वास की एक लहर सी दौड़ा दी थी। मध्यकालीन लोकसम्मति, रूढ़ियों और निश्चय-विचारों का सन्धि-प्रकाश आधुनिक विचारों के वाल-सूर्य की चमक में छिन्न-भिन्न हो रहा था। मनुष्य अपने जीवन को उस कठोर संविधान तथा क्लेशदायक संस्था से छुड़ाना चाहता था, जो गिरजे ने और सामन्त तन्त्र ने वना रखे थे। स्वतन्त्रता का उपयोग इसमें समझा जाता था कि मनुष्य अपनी इच्छानुसार अपना जीवन व्यतीत कर सके, अपने विचारों पर अपने ही सिद्धान्त स्थापित कर सके, अपने सिद्धान्तों को प्रकट कर सके और अपनी इच्छानुसार अपने भाव तथा विचार अपनी लिखी कविता और कहानियों में संसार के सामने ला सके। ऐसा कर सकने में ही वह अपना व्यक्तित्व समझता था।

जिस समय चॉसर आल्प्स पहाड़ को पार करके इटली में पहुँचा तो उसने देखा कि सव छोटी छोटी रियासतें किसी न किसी कलात्मक कार्य में वड़े उत्साह के साथ लगी हैं। यदि कहीं चित्रकला में लोग चमत्कार दिखा रहे हैं तो कहीं मूर्ति-निर्माण में विलक्षण प्रतिभा प्रकट कर रहे हैं। स्थापत्य कला के अद्भुत नमूनों से तो कोई नगर खाली नहीं था। सारे देश में उस समय वे रचनात्मक कृतियाँ प्रस्तुत की जा रही थीं जिनके कारण इटली आज भी कला-प्रेमियों के लिए तीर्थस्थान वना हुआ है। साहित्य-कला में भी इसी प्रकार की क्रियाशीलता दिखाई देती थी। दान्ते (१२६५-१३२१) को मरे हुए पचास वर्ष हो चुके थे, किन्तु उसकी कविता का आदर अव हो रहा था और अव कल्पना के क्षेत्र में उसे संसार के महान् कवियों में गिनने लगे थे।

फ्लोरेन्स के निकट वोकैशियो अपने जीवन के अन्तिम दिवस व्यतीत कर रहा था। उसकी कविता तथा उसकी कहानी-कला इस नव-युग में साहित्यकारों को

प्रभावित कर रही थी और उसकी पुस्तकों से इस काल के लेखक प्रेरणा ग्रहण करते थे। यह उत्साह और क्रियाशीलता देखकर चॉसर बहुत प्रभावित हुआ और उसने अपनी मातृ-भाषा में वही कार्य करने का दृढ निश्चय किया जो इटली के लेखक कर रहे थे। जिस नव-जाग्रति से चॉसर इटली में इतना प्रभावित हुआ था, उसे इंग्लैण्ड पहुँचते-पहुँचते लगभग एक शताब्दी का समय लग गया, परन्तु उसने अपने हृदय के भावों तथा विचारों को अपनी भाषा में व्यक्त करना निश्चित करके अपनी कविता में वास्तविकता का कलात्मक प्रयोग आरम्भ कर दिया। उसकी आँखें मानो खुल सी गयीं और वह संसार को एक नयी दृष्टि से देखने लगा।

ट्रोयलस ऐण्ड क्रेसीडा

इटली के इस प्रभाव में चॉकर चासर ने जो पहली कविता लिखी वह ट्रोयलस एण्ड क्रेसीडा (Troilus and Cresiada) के नाम से प्रसिद्ध है और इस काल की प्रधान रचना है। इस रचना की कथावस्तु बड़ी प्राचीन है, जिसे होमर से लेकर कई देशों के प्रमुख लेखकों ने अपने-अपने ढंगों से लिखा है। चॉसर ने यह कहानी बोकैशियो की फ़िलैस्ट्राटो (Philastroto) नामक कविता से ली है। इटली में इस समय बोकैशियो की यह कहानी सबसे मनोहर प्रेम-कहानी समझी जाती थी। ट्रोयलस ट्राय के प्रायम नामक राजा का लड़का था, जो एक पुजारी की लड़की क्रेसीडा से प्रेम करता था। जब यूनानियों ने ट्राय पर चढ़ाई की तो क्रेसीडा को छोड़कर उसका पिता यूनानियों से जा मिला। क्रेसीडा ने ट्रोयलस का प्रेम स्वीकार कर लिया। इस प्रेमकहानी में पैंडारस नाम के एक व्यक्ति ने मध्यस्थ का काम किया था। जब यूनानियों ने विजय प्राप्त कर ली तो युद्ध के क़ैदी अपने देशों को वापस भेजे गये, जिनमें क्रेसीडा भी थी। यूनान में जाकर क्रेसीडा डायोमीडी नामक यूनानी से प्रेम करने लगी और ट्रोयलस को भूल गयी। ये दोनों लड़ाई के मैदान में मिलते हैं परन्तु इनमें से कोई दूसरे को मारता नहीं। अन्त में ऐकीलीज़ के हाथों ट्रोयलस मारा जाता है। इस कहानी को बोकैशियो ने बड़ी सज-धज के साथ कुछ इस प्रकार लिखा कि वह सजीव हो उठी और उसके पद्य में वह अत्यन्त हृदयग्राही हो गयी। चॉसर ने कहने को तो बोकैशियो की पुस्तक का अनुवाद किया था, परन्तु वास्तव में उसने कहानी का ढाँचा बदल दिया और उसके ऐसे विशेष अंगों तथा स्थितियों पर ज़ोर दिया जो बोकैशियो ने बड़ी साधारण रीति से वर्णन किये थे। ऐसा करके चॉसर ने कहानी के पात्रों और उनके संसार के उन प्रभावों का भली-भाँति वर्णन

किया जो परस्पर एक ने दूसरे पर डाले थे, जिन्हें क्रिया और प्रतिक्रिया कहते है और जिनके परिणामस्वरूप वे समस्याएँ आ उपस्थित होती हैं जिनको हल करने में प्रत्येक मनुष्य का जीवन सफल अथवा निष्फल होता है। जिन लेखकों ने पहले यह कहानी लिखी थी उन्होंने क्रेसीडा के हृदय की प्रेरणा तथा उसके प्रेम का विश्ले-षण नही किया था, जिस कारण यह बात स्पष्ट नही होती थी कि उसने ट्रोयलस को छोड़कर डायोमीडी से क्यों प्रेम किया। ऐसा न करने से कहानी एक सामान्य षड्यन्त्र-रचना होकर रह गयी थी। चॉसर ने यह कमी पूरी कर दी और क्रेसीडा की प्रेम-प्रेरणा के मनोवैज्ञानिक तत्त्वों को दर्शा दिया, जिससे कहानी का हलकापन दूर हो गया। अंग्रेज़ी भाषा की यह पहली कहानी है जिसमें ये तत्त्व दिखाये गये है।

चॉसर ने कहानी में एक और महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया। ट्रोयलस का सम-वयस्क तथा उसी के-जैसे स्वभाव वाला एक शौकीन तबियत का पैण्डरस नामक व्यक्ति इस प्रेम-कहानी में मध्यस्थ का काम करता है। चॉसर ने पैण्डरस को बिल्कुल बदल दिया और उसका प्रकृतिभाव ऐसी अच्छी रीति से दिखाया, मानो स्वयं शेक्सपियर ने किसी मध्यस्थ को प्रस्तुत किया हो। चॉसर का पैण्डरस एक अधेड़ अवस्था का दुनियादार तथा दिखावटी सुशील मनुष्य है जो अनात्मवादी सिद्धान्त के अनुसार संसार को देखता है। इस कथा-काव्य के क्रिया-कलाप, वार्तालाप तथा पृष्ठभूमि आदि अंगों की रचना ऐसी वास्तविक है और ऐसे अद्भुत प्रकार के अभि-प्राय निकाले गये हैं कि हमें चॉसर को वर्णनात्मक शैली का एक बड़ा कलाकार मानना पड़ता है। यद्यपि इस कहानी की घटना प्राचीन ट्राय में होती है, तथा इसमें जो आचार-विचार वर्णन किये गये हैं और जो रीति-रिवाज दिखाये गये हैं, वे सब मध्यकालीन युग के नाइटों तथा महिलाओं से सम्बन्ध रखते हैं, और तथा इसके प्रेम का सारा शिष्टाचार परम्पराओं से भरा हुआ हैं, तो भी इसे पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है मानो हम कोई बिल्कुल आधुनिक उपन्यास पढ़ रहे हों। सारा वर्णन ऐसा वास्तविक है, सारी बातें ऐसी आपबीती-सी लगती हैं. जैसे चॉसर ने इस कहानी में स्वयं अपने ही अनुभवों को स्वाभाविक रीति से लिख दिया हो।

चॉसर पर तत्कालीन राष्ट्रीय जीवन का प्रभाव

जैसे-जैसे चॉसर की अवस्था बढ़ती गयी, वह जीवन को एक नाटककार की दृष्टि से देखता गया। तत्कालीन समाज का उसे अच्छा अनुभव था और उसका

चित्रण करने के लिए वह बहुत सामग्री भी एकत्र करता जाता था। अपने जीवनकाल में वह सभी प्रकार के तथा सभी श्रेणियों के मनुष्यों और परिस्थितियों के सम्पर्क में आ चुका था। कलाकार की दृष्टि से उसने अपने समय की गति-विधियों की सजीवता तथा उसकी विचित्रता एवं सुन्दरता के दर्शन किये थे। इस काल में इंग्लैण्ड भी दिन पर दिन अपने अस्तित्व को जानता और समझता जा रहा था। लोगों में जाग्रति और एक विशेष प्रकार की चेतना आ रही थी। जनता अब सैक्सन और नार्मन न रहकर इंग्लिश हो चुकी थी। एडवर्ड के उत्कर्षपूर्ण राज्यकाल के प्रारम्भ से वह जातीयता तथा स्वाभिमान के मादक घूंट पीती चली आ रही थी। सरकारी कर्मचारी तथा पार्लिमेन्ट का सदस्य और ऐडवर्ड का दरबारी होने के कारण चॉसर को इन सारी स्थितियों का पर्याप्त अनुभव हो गया था। उसकी बड़ी इच्छा थी कि वह अपनी लेखनी से इस नये समाज तथा नये जीवन का जीवित चित्र खींचे। अपने समय की नयी धारणाएँ, नये विचार तथा नयी अभिलाषाएँ उसे उत्साहित करती थीं और वह उनको अपनी कविता द्वारा दूर-दूर पहुँचाना चाहता था। जब चॉसर के मन में यह भावना उठी थी उस समय वह लेजेण्ड आफ़ गुड वीमेन Legend of Good Women) और हाउस आफ फ़ेम (House of Fame) नामक काव्य लिख रहा था, जो समाप्त होने पर प्राचीन परम्परा तथा प्रेम-शिष्टाचार की बड़ी रोचक कहानियाँ होती। उसने इन दोनों को अधूरा ही छोड़ दिया और अपने प्रयोजन को सिद्ध करने के हेतु एक नया ढंग निकालकर कैन्टरबरी टेल्स (Canterbury Tales) लिखने लगा।

कैन्टरबरी टेल्स के संग्रह की पृष्ठभूमि

मध्यकालीन युग में कहानियों के बहुत से संग्रह प्रचलित थे, जिनमें से कई सर्वप्रिय हो गये थे। जैसे-जैसे समय पुनरुत्थान के निकट आता जाता था, कहानियों का क्षेत्र अधिक विस्तृत होता जाता था और वे मनुष्य-जीवन तथा उसकी समस्याओं के निकट आती जाती थीं। इन प्रचलित संग्रहों में कोई न कोई ऐसा ढंग निकाला गया था कि कहानियों में सम्बन्ध उत्पन्न हो गया था। बोकैशियो की डेकामेरान (Decameron) में अभिजात-वर्ग के कुछ युवक तथा युवतियाँ फ्लोरेन्स में प्लेग की बीमारी चलने के कारण नगर को छोड़कर बाहर फ़ीजोल नामक पहाड़ी प्रान्त के एक गाँव में जाकर रहने लगे। यहां वे घाटियों तथा उद्यानों में घूमते और किसी स्थान पर बैठकर भावुकता से भरी हुई कहानियां कहकर समय बिताते थे।

इटली के एक और कहानीकार, सेराकैम्वी (Seracambe), ने एक तीर्थयात्रा में विविध श्रेणियों के व्यक्ति इकट्ठा किये और उन्हें कहानियाँ सुनायीं।

चॉसर ने भी इसी ढंग से अपनी कहानियों का संग्रह किया, परन्तु उसने अपनी कहानियों की पृष्ठभूमि को वोकैंगियो अथवा सेराकैम्वी के संग्रहों की अपेक्षा अधिक रोचक कर दिया। उसने तत्कालीन समाज के मध्यम श्रेणी के लगभग सभी प्रकार के व्यवसाय करनेवालों को अपनी कहानियों में स्थान दिया और इस तरह जातीयता के भावों को पुष्ट किया। दूसरी वात उसने यह की कि कहानियों के पात्रों का व्यक्तित्व दर्शाया और उनका जीता-जागता चित्र खींचा। उस समय साहित्य में कहानी की जितनी शैलियाँ प्रचलित थीं उन सबमें चॉसर ने कहानियाँ लिखीं और सबसे मुख्य बात जो उसने की वह यह थी कि कहानियाँ यात्रियों से ही कहलवायीं।

टैवर्ड सरांय में यात्रियों का समूह

चॉसर लिखता है कि मैं एक दिन वसन्त ऋतु में संध्या के समय लन्दन के समीप साउथ्वार्क की टैवर्ड नामक सराय में जा पहुँचा। यह साउथ्वार्क वह स्थान था जहाँ से जगत् विख्यात कैन्टरवरी की यात्रा आरम्भ होती थी और वहीं लौटकर समाप्त होती थी। चॉसर ने सराय में यात्रियों का एक समूह देखा जो प्रस्थान करने को तैयार था। यात्रियों से जान-पहचान हो जाने के उपरान्त वह भी उस समूह में मिलकर यात्रा पर जाने को राज़ी हो गया। चॉसर को लेकर यात्रियों की संख्या तीस हो गयी। समूह में एक नाइट था जो हाल में ही प्रशा तथा टर्की की लड़ाइयों में भाग लेकर इंग्लैण्ड लौटा था। वह वड़े-बड़े दूसरे युद्धों में भी सम्मिलित हो चुका था और सब स्थानों में नाम कमा कर आया था। उदारचेता तथा सभ्य व्यवहार वाला यह वीर योद्धा उस युद्धप्रिय एवं विनयपूर्ण नाइट-समुदाय का एक व्यक्ति था, जो इन दिनों बड़ी तेज़ी से समाप्त हो रहा था। नाइट के साथ उसका जवान लड़का भी था जिसके बाल घूंघरवाले थे और जो बड़ा हँसमुख युवक था तथा जिसमें वे सब गुण पाये जाते थे जो उस समय के युवकों में अंग्रेज़ी समाज देखना चाहता था। उन दोनों का एक नौकर भी उनके साथ था जो ज़मींदार श्रेणी का था और उस धनिक योद्धा वर्ग का प्रतिनिधि था जिसने क्रेसी (Cracy) तथा एजिनकोर्ट (Agincourt) की लड़ाइयों में फ्रांसीसियों के छक्के छुड़ा दिये थे और यूरोप में अंग्रेज़ों की बहादुरी के झंडे फहरा दिये थे। यात्रियों के

समूह में गिरजे के वहुत तरह के कर्मचारी भी थे, जो अपने कार्यो तथा कर्तव्यों द्वारा मध्यकालीन धार्मिक उद्योगों की अव तक सूचक है। चॉसर ने इनमें से वहुतों का व्यग्यात्मक चित्रण किया है, क्योंकि ये लोग अपने सांसारिक जीवन में उन सारी वुराइयों के प्रतिरूप थे जिनके कारण उस समय धर्म का चेहरा लगाये हुए ढोंग के विरुद्ध एक वड़ा आन्दोलन चल रहा था। इस धार्मिक व्यवसाय के लोगों में एक महन्त था जिसे केवल शिकार खेलने और अच्छा खाने-पीने तथा प्रसन्न रहने से मतलव था। उसका गंजा सिर रोशनी में शीशे के समान चमकता था और उसकी चमकती हुई आँखें वड़ी चंचलता से फिर-फिर कर चारों ओर देख रही थीं। वह एक मोटे-ताजे कुम्मैत घोड़े पर सवार था और उसकी अश्वशाला में एक से एक सुन्दर घोड़े वँवे थे। इस यात्रा में वह जो लवादा पहने था उसकी आस्तीनों में चरू की वालदार गोट लगी थी और उसका कन्टोप सुनहरे कलावत्तू की डोरी से ठोड़ी के नीचे वँधा था। यात्रियों के समूह में इस आखेट-प्रिय महन्त के जोड़ की एक महन्तिन भी थी, जो युवा स्त्रियों को पढ़ाने का कार्य करती थी और फ्रेंच भाषा वोलती थी। वह भोज सम्वन्धी शिष्टाचार तथा दरवार के राजसी ठाठवाट का अभिनय करने में वड़ी कुशल थी। इनके साथ लगे रहनेवाले, धार्मिक संस्थाओं से सम्वन्धित कुछ गिरजा के कीड़े-मकोड़े भी यात्रा में जा रहे थे, जैसे पारडनर (Pardoner), जो सदा अपने को उसी क्षण रोम से लौटा हुआ वताता तथा अपने थैले में से निकाल-निकालकर लोगों को 'क्षमापत्र' वाँटता था। अपने थैले में वह चिथड़े, गुदड़े तथा सूअर की हड्डियाँ भरे रहता था, जिन्हें वह लोगों के हाथ यह कहकर वेचता था कि वे पहुँचे हुए साधुओं तथा संतों के स्मारक चिह्न और अवशेष है। इसी प्रकार का लाल मुँह का घिनौना समनर (Summoner) भी था जो ढोंग तथा पाखंड रचने में अपना कोई जोड़ीदार नहीं रखता था। चॉसर ने इन व्यक्तियों का वर्णन न तो इनपर क्रोध दिखाकर और न घिन प्रकट करके किया है, वल्कि वड़ी सहनशीलता तथा भलमनसी से। यही नहीं, उसने इन सव व्यक्तियों के साथ ही साथ ऐसे अच्छे कर्मचारियों के वर्णन भी लिखे हैं जो वास्तव में सच्चे धार्मिक और गिरजे की असली सेवा करनेवाले हैं और जिन्होंने धार्मिक संस्थाओं तथा स्वयं धर्म का संशोधन करके गिरजा की उन्नति करायी और वह धार्मिक विप्लव कराया जो सोलहवीं शताव्दी में सुधार करने को सारे यूरोप में हुआ था।

धर्म के क्षेत्र से अलग ऐसे लोगों के भी चित्र चॉसर ने खींचे है जो लौकिक कार्य करते तथा लौकिक प्रवृत्तियों को वल देकर समाज की उन्नति कराने की चेष्टा

करते थे। ऐसे मनुष्यों में उसने किसान को सबसे आगे रखा है, जो अपने पड़ोसी को अपने ही समान मानता है और उसकी सेवा करता है। दूसरों में अग्रसर आक्स-फर्ड के एक विद्वान् को रखा है जो फटे-पुराने कपड़े पहने, दुर्बल टट्टू पर सवार, यात्रा को जा रहा था। यह विद्वान् भिक्षा अथवा ऋण से जो कुछ पाता विद्योपार्जन में लगाता और संतोषी जीवन व्यतीत करता था। वह उस उत्साह का प्रतिरूप था जो इस काल में ज्ञान-वर्धन हेतु यूरोप के बहुत से देशों में उमड़कर लहरें ले रहा था और जिसे भौतिक तथा ओजस्वी विचारशक्ति उत्पन्न करने में केवल उस प्राचीन साहित्य को प्राप्त करने की देर थी जो कुछ ही समय के उपरान्त उन यूनानी विद्वानों से मिल गया जो कान्स्टैन्टिनोप्ल की विजय के बाद सारे यूरोप में जा पहुँचे थे। इंग्लैण्ड के भविष्य का एक और प्रतिरूप वह कुशल व्यापारी था जो बड़े ऊंचे घोड़े पर सवार, सबके साथ यात्रा को जा रहा था। वह इतना गम्भीर दिखाई देता था कि उसे देखकर कोई यह नहीं जान सकता था कि कितने ऋण का बोझ उसके सिर पर लदा हुआ है। इन सबके अतिरिक्त कुछ कारीगर और तरह-तरह के पेशे करनेवाले भी यात्रा को जा रहे थे। उनका भी चरित्र-चित्रण चॉसर ने बड़ी चतुरता से किया है। सारे चित्र उसके मनोवैज्ञानिक निरीक्षण तथा अर्थबोध की सूचना देते हैं। इन्हीं गुणों ने उस को महान् कहानीकार तथा मनुष्य की प्रकृति का इतना बड़ा चित्रकार बनाया था।

रात्रि के भोजन के समय टैवर्ड के मालिक ने यात्रियों के सामने यह प्रस्ताव रखा कि यात्रा की थकावट मिटाने के लिये प्रत्येक यात्री कहानी सुनाये। उसने यह भी निश्चय किया कि यात्रा से लौट आने पर निर्णय किया जायगा कि किस यात्री ने सबसे अच्छी कहानी सुनायी और सबसे अच्छी कहानी कहनेवाले को सब यात्रियों की ओर से दावत दी जायगी। रास्ते का ठीक प्रबन्ध करने को वह सबके साथ चलने को भी तैयार हो गया। दूसरे दिन प्रातःकाल सब लोग यात्रा को चल दिये। चलने से पहले उन्होंने चिट्ठी डालकर यह तय किया कि पहली कहानी कौन कहेगा। चिट्ठी में नाइट का नाम निकला और उसने पेलेमान ऐण्ड आर्साइटी (Pallamon and Arcite) की कहानी, जो अत्यन्त मनोहर और वीरतापूर्ण है सब लोगों को सुनायी। दूसरे नम्बर पर महन्त से कहानी कहने को कहा गया, परन्तु मिलर (Miller), जो बड़ा तुनुक-मिज़ाज़ था और उस समय कुछ नशे में भी था, अपनी कहानी कहने पर ज़िद करने लगा और एक बढ़ई की कहानी उसने आरम्भ कर दी। इस पर रीव (Reeve), जो पहले कभी बढ़ई का काम

करता था और जो अब मुख्तार हो गया था, इतना क्रोध से भर गया कि उसने फौरन एक ऐसी कहानी कही जिसमें मिलर की बड़ी दुर्गति हुई थी। कहानियाँ इसी प्रकार कही जा रही थीं और कई कहानियाँ कभी कभी एक ही विषय के सम्बन्ध में भी होती थी। जिस यात्री की जैसी प्रकृति थी उसी के अनुसार उसने कहानी भी सुनायी। कभी कभी कहानी के समाप्त होने पर टिप्पणी भी होती थी और यथोचित स्थानों पर यात्रियों की बात-चीत तथा उनकी हरकतों को भी लिख दिया गया है। कोई कोई कहानियाँ अशिष्ट भी कही जा सकती हैं, जैसे समनर (Summoner) और फ्रायर (Friar) की कही हुई कहानियाँ।

चॉसर की कहानियों का स्रोत

बोकैशियो तथा दूसरे कहानीकारों की भाँति चॉसर ने भी अपनी कहानियों की सामग्री जहाँ से उसका जी चाहा ले ली है। कभी कभी उसने सामग्री को बिना कुछ भी परिवर्तन किये जैसी मिली रख लिया है और कभी उस सामग्री में अपनी इच्छानुसार उसने बहुत कुछ बदल भी दिया है। मध्यकालीन समय में मौलिकता क्या वस्तु होती है, इसका किसी को स्वप्न में भी ध्यान न था। साहित्यिक सामग्री सर्वसाधारण की वस्तु थी। सब लोग एकसी पुस्तकें पढ़ते, एक-सी ही कहानियाँ कहते तथा सुनते थे। यदि हम चॉसर की कहानियों का स्रोत ढूंढना चाहे तो हमे मध्यकालीन युग के विशाल कहानी-भंडार को खोजना पड़ेगा और विज्ञान तथा दर्शन-शास्त्र के विस्तृत साहित्य की छानबीन करनी होगी। चॉसर की अपनी मौलिकता तथा वह अंश, जो उसकी देन है, इसी बात में है कि जो कुछ उसने दूसरों से लिया उसमें पर्याप्त सुधार किया, प्राचीन कहानियों को लेकर उन पर अपने विचार, अपनी शैली तथा अपने रचना-चातुर्य की छाप लगा दी और उनमें इतना परिवर्तन कर दिया कि वे उसकी मौलिक कृतियाँ हो गयीं। चॉसर रोमांसकार भी था और साथ ही यथार्थ का लेखक भी। वह अपनी इच्छानुसार जब जैसा चाहता था करता था। बहुत-सी रोमांसकथाओं में उसने यथार्थ कूट-कूटकर भर दिया है। बहुत-सी नित्यजीवन की साधारण घटनाओं में वह रोमांस का सा चमत्कार उत्पन्न कर देता है। उसमें अपने चारों ओर के संसार की सुन्दरता देखने की शक्ति थी और वह उस सुन्दरता का प्रेमी भी था। उसने मनुष्य को वे गीत भी सुनाये है जो उसने प्रेम के देवता से सुने थे, और वे दृश्य भी दिखाये हैं जो केवल ऋतुराज के अनुभव में है। वह डाइडो (Dido), थिस्बी (Thisby)

तथा ऐल्सेस्टिस (Alcastice) के गीत गाता है जो अपने प्रेम में अटल रहे थे, और जो प्राचीन साहित्य में जगद् विख्यात हो गये हैं। रोमांसकारों ने इन महिलाओं के चारों ओर आकांक्षाओं और मधुर स्वप्नों का जाल बुन रखा था। जब चॉसर ने ट्राय अथवा थीव्स की कहानियाँ फिर से लिखीं तो उनकी घटनाएँ तथा स्थितियाँ उसके वर्णनों में सजीव हो उठीं और कहानियों में वास्तविकता उत्पन्न हो गयी और वे कुछ की कुछ हो गयीं। चॉसर ने अपनी मातृभाषा में वही काम कर दिखाया जो इटली में वोकैशियो तथा अन्य कहानीलेखकों ने किया था और जैसा करने की उसे भी वड़ी अभिलाषा थी। उसके विचारों के चमत्कार तथा उसकी हास्यप्रियता ने कहानियों की घटनाओं और पात्रों के चित्रों में जान डाल दी, इससे वास्तविकता का गुण उत्पन्न हो गया।

जेस्टा रोमानोरम तथा इंग्लैण्ड के गद्य रोमांस

इस काल में जो रोमांस गद्य में लिखे जाते थे वे सव प्राचीन प्रणाली का अनुकरण करते थे। वे केवल घटना और पात्रों के कामों से सरोकार रखते थे। उनकी कथावस्तु वास्तविकता से कोसों दूर स्वप्न के समान रंगीन और परिवर्तनशील होती थी। चॉसर ने अपनी रचनाओं में यह सारा ढंग वदल दिया और कहानी को एक ऐसी चेतना तथा स्वतन्त्रता प्रदान की कि रोमांस में भी मनोविज्ञान के तथ्य प्रकट हो गये। गद्य के रोमांस इस काल में वहुधा जेस्टा रोमानोरम (Gesta Romanorum) के आधार पर लिखे जाते थे। यह जेस्टा रोमानोरम लातीनी भाषा का एक संग्रह था जिसकी अधिकांश कहानियाँ पूर्वी देशों से ली गयी थीं। चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कहानियों का संग्रह हुआ था और उनमें से कुछ का समय समय पर अंग्रेजी भाषा में अनुवाद हुआ था। इस संग्रह की कहानियों में उन सारी वातों का उल्लेख है जिनमें उस काल के लोगों को दिलचस्पी थी। धर्म सम्बन्धी वातों से कहानियाँ भरी पड़ी हैं, क्योंकि धर्म उस काल में जीवन तथा साहित्य का अभिन्न अंग वन गया था। अन्तिम निर्णय वाले दिवस का भय लोगों के हृदयों में भरा हुआ था और उनके विचार तथा कार्य इसी भय से प्रभावित थे। इसी कारण वहुधा इन कहानियों में आध्यात्मिक वाद-विवाद तथा धर्मनिष्ठा का इतना अधिक उल्लेख है कि कहानियाँ वहुधा नीरस एवं शुष्क हो गयी हैं। मध्यकालीन युग में साधारण से साधारण वात को धर्म से ऐसा मिला दिया गया था कि मनुष्य का नित्यजीवन धार्मिक तथा नैतिक सत्यों का एक रूपक वनकर रह गया था। कहानियों में से

यदि ऐसे रूपक निकालने की चेष्टा की जाय तो केवल कहावतें अथवा दृष्टान्त शेष बचते हैं। चॉसर के समय में भी गद्य में लिखी हुई कहानियाँ इन्हीं विशेषताओं के कारण शुष्क हुआ करती थीं। कैन्टरबरी टेल्स में भी चॉसर की कही हुई मेलीबियस नामक कहानी इन्हीं दोषों के कारण नीरस हो गयी है। उसमें गद्य होने के कारण चॉसर को भी तत्कालीन प्रणाली के अनुसार यही शुष्क ढंग ग्रहण करना पड़ा था। यह दोष इस कारण भी कहानियों में आ जाते थे कि अंग्रेज़ी भाषा की गद्य शैली इस समय तक ठीक नहीं हुई थी। अतः उसमें मौलिकता का अभाव था। धर्म और नीति सम्बन्धी बँधी-टँकी बातें शताब्दियों से एक सी ही भाषा में लोग लिखते चले आते, अपने पूर्वजों की नक़ल करते और प्राचीन विचारों को दोहराते रहते थे। भाषा जैसी अपनी बात कहने की चेष्टा में बनती है, दूसरों के बंधे-बँधाये विचारों को दोहराने से नहीं बनती। यही दोष उस पद्य में भी होता है जो दूसरों की बात दोहराने वाला कवि लिखता है। चॉसर एक कवि था, उसने अपने पड़ोसी का अनुकरण नहीं किया, उसकी कविता में उसी के विचार तथा अनुभव प्रकट होते हैं। इस चेष्टा में उसने अंग्रेज़ी पद्य की भाषा बनायी थी। चॉसर के समान अपनी बात गद्य में लिखनेवाला अभी देश में अन्य कोई नहीं था। सन् १४०० में चॉसर की मृत्यु हो जाने के उपरान्त अंग्रेजी गद्य रोमांस को आधी शताब्दी से अधिक समय उन गुणों को प्राप्त करने में लग गया जो कैन्टरबरी टेल्स की पद्य कहानियों में हैं।

सर टामस मैलोरी का मार्ट डार्थर नामक गद्य रोमांस

ऐसा रोमांसकार सर टामस मैलोरी (Sir Thomas Malory) था, जिसने 'मार्ट डार्थर' (Morte D' Arthur) नामक पुस्तक लिखकर अंग्रेज़ी गद्य में वही काम किया जो चॉसर ने कैन्टरबरी टेल्स लिखकर पद्य में किया था। यह पुस्तक पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य काल में लिखी गयी थी और इसे विलियम कैक्सटन (William Caxton) ने अपने छापेखाने में छापकर १४८५ ई० में प्रकाशित किया था। इस पुस्तक में महाकाव्य के जैसे उदात्त विचारों तथा कल्पना के चमत्कार के सारे गुण पाये जाते हैं। अंग्रेजी भाषा के गद्य के निर्माण में मैलोरी का पद बहुत ऊँचा है। इतिहासकारों ने उसकी पुस्तक के बारे में लिखते हुए बार-बार 'दिव्य शक्ति' और 'चमत्कार' शब्दों का प्रयोग किया है। साहित्य के सुप्रसिद्ध निरीक्षकों ने उसकी लेखन-पद्धति की जो प्रशंसा की है उसमें मौलिकता तथा अनुभव का विशेष प्रकार से उल्लेख किया है।

मैलोरी एक नाइट था और बड़े घराने से उसका सम्बन्ध था। अपनी युवावस्था में उसने अर्ल आफ़ वारिक के सैनिक परिजनों में भर्ती होकर फ्रांस में युद्ध किया था। उसने अपने जीवन में उन आदर्शों को चरितार्थ किया था जो प्राचीन काल के नाइटवर्ग ने अपने लिए स्थिर किये थे। कुल तथा शिक्षा ने मैलोरी को यह योग्यता दी थी कि वह आर्थर और उसकी राउन्ड टेवल (Round Table) के नाइटवर्ग की कीर्ति और उनके कार्यों का वर्णन उन कहानियों को लिखकर करे जो इंग्लैण्ड तथा फ्रांस के कविगण लिखते आये थे और जो उस समय तक गद्य में लिखी नहीं जा सकी थीं। जिस संसार की ये कहानियाँ थीं वह बड़ी शीघ्रता से एक स्वप्न हुआ जा रहा था। जो वास्तविक संसार उसके चारों ओर शीघ्रता से उत्पन्न हो रहा था, उसमें जीवित रहकर आर्थर तथा उसकी नाइट-संस्था के कार्यों की कल्पना तक कठिन होती जा रही थी। मैलोरी ने उस प्राचीन संसार तथा वीते हुए समय का चित्रण करने का निश्चय किया और मार्ट डार्थर लिखकर वीरता, स्वामिभक्ति, प्रेम, आत्मसमर्पण तथा प्रतिशोध के महान् कार्यों की कहानियाँ सुनायीं। कल्पना के ऊँचे शिखर पर वास्तविकता से दूर विचरण करते हुए हम इन गुणों के प्रतिरूप गवेन, परसीवेल, लान्सिलाट, गैलाहेड और दूसरे वहुत से नाइटों से भेंट करते हैं और अंग्रेज़ जाति के उस अतीत के दर्शन करते हैं जव उसकी प्रतिभा, वुद्धि, चरित्र तथा व्यक्तित्व की नींव पड़ी थी और ये सव गुण प्रवल हुए थे।

फ्रेंच भाषा के मूल ग्रन्थों का अनुकरण करने से मैलोरी की लेखनपद्धति सरल तथा स्वाभाविक हो गयी, वाक्यरचना में कुछ लोच-लचक आ गयी तथा भाषा में भावों को प्रकट करने की शक्ति उत्पन्न हो गयी। साधारणतया व्यक्तिगत जीवन में वोली जानेवाली भाषा विषय की सुन्दरता एवं उसके महत्त्व के कारण सुन्दर और श्रेष्ठ हो गयी। लगभग एक सौ वर्ष की उन्नति के फलस्वरूप वर्णनात्मक अंग्रेज़ी गद्य में शब्दभंडार वहुत कुछ संपन्न हो जाने के कारण मैलोरी को अपने भाव प्रकट करने में सुगमता हो गयी थी। वाक्यों में नरमी तथा कोमलता आ गयी थी। यह सव गुण कहानी की भाषा में आवश्यक थे जो मैलोरी के काम आये। मार्ट डार्थर के विषय के प्रति मैलोरी को जो उत्साह था उससे उसने अपनी भाषा के दोषों पर विजय पायी और जिस प्रकार ईसाई धर्म के प्रचारकों को धर्म से स्फूर्ति मिलती थी, उसी तरह मैलोरी को उस कीर्ति से प्रेरणा मिली जिसे वह मानवता का मुख्य अंग समझता था और जो आर्थर तथा नाइटों की कहानियों में एकमात्र आदर्श होकर उनसे वड़े से वड़े कठिन कार्य कराती थी।

कीर्ति, प्रेम, युद्ध और नाइट-संस्था

कीर्ति की कल्पना बहुधा युद्ध के सम्बन्ध में की जाती है और मैलोरी के ग्रन्थ में जहाँ प्रेम तथा मार-काट होती है वहीं कीर्ति प्राप्त होती है; इस कारण लोग मार्ट डार्थर के महत्त्व को समझने में बड़ी भूल करते हैं। सत्य तो यह है कि मैलोरी के विचार में कीर्ति और सदाचार तथा सामर्थ्य एक दूसरे पर निर्भर हैं और साथ ही साथ रहते है। मानव जाति की रक्षा करने तथा बढ़ाने के हेतु हमें प्रेम की स्वाभाविक प्रवृत्ति एवं भाव मिले है और उसे अच्छे-अच्छे कामों से सुशोभित करने को हमे कीर्ति प्राप्त करने की उत्कट इच्छा मिली है। मैलोरी के विचार से कीर्ति ही सब कार्यों की प्रेरक होती है। कीर्ति पाने की इच्छा स्वाभाविक है और ऐसे सभी मनुष्यों में प्रबल रूप में पायी जाती है जो इस प्रकार के गुण अथवा योग्यता रखते हैं। मैलोरी ने जिस शब्द का प्रयोग करके अपना अभिप्राय प्रकट किया है उसे समझने में बहुत लोगों ने भूल की है। इसमें सबसे अधिक अपराधी वे साहित्यिक जन रहे है, जिन्होंने रोमांस को रोमान्टिक से पृथक् न करके उस लाभ को ही खो दिया जो मैलोरी की पुस्तक से हो सकता था—मार्ट डार्थर को रसिकता तथा अनहोनी घटनाओं का भंडार बनाकर दीर्घ चेष्टा और सामर्थ्य को उससे जो उत्तेजना होती थी—मिटा दिया। मैलोरी का अभिप्राय गैरेथ एन्ड लिनेट (Gareth and Lynette) की कहानी से अच्छी तरह प्रकट होता है और वह कहानी ग्लोरी (Glory—कीर्ति) के अर्थ को भी भली-भाँति दर्शाती है।

गैरेथ और लिनेट की कहानी

एक दिन तीन मनुष्य जिनके साथ एक बौना भी था, आर्थर की गढ़ी के फाटक पर घोड़ों से उतरे। एक मनुष्य जो देखने में बड़ा सुन्दर और लम्बा-चौड़ा था, दूसरे दो हृष्ट-पुष्ट मनुष्यों के कन्धों का सहारा लेकर कठिनाई से आर्थर के दरबार में पहुँचकर उसके सामने खड़ा हो गया। उसकी भुजाएँ बहुत लम्बी और आकृति तेजस्वी थी। देखने से मालूम होता था कि वह अपने आप चल फिर नहीं सकता था। यह मनुष्य वास्तव में सर गैरेथ नामक नाइट था जो इस प्रकार वेष बदलकर आर्थर के सामने आकर खड़ा हुआ था। इस युवक ने आर्थर से प्रार्थना की कि उसके खाने पीने का प्रबन्ध एक वर्ष के लिए कर दिया जाय और उसे आज्ञा हो कि वह ऐसे दो वरदान माँग ले जो एक वर्ष व्यतीत होने पर उसे मिल जायँ। आर्थर को युवक की प्रार्थना सुनकर आश्चर्य हुआ, क्योंकि देखने से युवक बड़ा योग्य

तथा आदरणीय पुरुष जान पड़ता था। उसने युवक की प्रार्थनाएँ स्वीकार कर लीं और सर के (Sir Kay) नामक अपने भंडारघर के अधिकारी को हुक्म दिया कि युवक को एक राजकुमार की भाँति महल में रखा जाय और उसका सम्मान किया जाय। सर के को यह बात पसन्द नहीं आयी। पहले तो सर के को शिष्टाचार के नियम मालूम ही कम थे, फिर वह उस अनजान परदेशी युवक का ऐसा आदर-सत्कार करने का विरोधी था। "मैं निश्चय के साथ कह सकता हूँ कि यह युवक यों ही किसी आदमी का लड़का है। इसमें कभी कोई योग्यता उत्पन्न होना असम्भव है। यदि यह किसी भले आदमी का लड़का होता तो आर्थर से घोड़ा अथवा कवच माँगता। जैसी रह वैसे फरिश्ते; रोटी दाल माँगता है और इसका नाम भी कोई नहीं जानता। मैं इसका नाम बोमेन्स (Beaumains) रक्खूँगा, जिसका अर्थ है 'सफ़ेद हाथ', और मैं इसे रसोई में ले जाकर मोटा अनाज खिलाऊँगा तथा साल भर के भीतर सूअर जैसा मोटा कर दूँगा।" सर गवेन और सर लेन्सिलाट (Sir Gawaine and Sir Lancelot) ने ऐसे व्यवहार का दोनों ने विरोध किया, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि युवक एक दिन कीर्ति प्राप्त करेगा और बड़ी योग्यता दिखायेगा। सर लेन्सिलाट ने कहा—"देखो खबरदार, कहीं कूनार की भाँति तुम्हें इस युवक से भी धोखा न हो।" परन्तु सर के को अपने अनुमान पर पूरा भरोसा था। उसने जवाब दिया "यह मुझे मालूम है परन्तु इस युवक से मुझे धोखा नहीं हो सकता। इसमें किसी भी योग्यता के लक्षण नहीं हैं। सर कूनार तो आदर-सत्कार चाहता ही था किन्तु यह युवक तो रोटी चाहता है। मैं शर्त लगा सकता हूँ यह किसी मन्दिर या ठाकुरद्वारे की रोटियों पर पलता था, जो किसी कारण बन्द हो गयीं तो यह यहाँ आ गया है।" सर के ने युवक को नौकरों के साथ रख दिया जहाँ वह किसी प्रकार शोकमय जीवन बिताता रहा।

बारह मास व्यतीत हो जाने पर राजदरबार में एक महिला आर्थर से सहायता माँगने आयी। पूछने पर भी उसने अपना नाम और पता तथा काम नहीं बताया, जिस कारण आर्थर ने उसकी सहायता को अपना कोई नाइट भेजना स्वीकार नहीं किया। बोमेन्स ने इस पर आगे बढ़कर आर्थर को अपने दो वरदानों की याद दिलायी जो वह देना स्वीकार कर चुका था। उसने कहा—"मुझे इस महिला की सहायता करने पर नियुक्त किया जाय और इस कार्य के लिए मुझे सर लेन्सिलाट नाइट बनाने का कष्ट उठायें।" आर्थर ने युवक की दोनों प्रार्थनाएँ मंजूर कर लीं, परन्तु उस महिला ने इस प्रस्ताव को बड़े क्रोध में आकर अस्वीकार कर दिया।

"क्या मैं इसी लायक हूँ जो मुझे आप अपने रसोईघर का यह नौकर देते हैं? मैं इसे नही ले जाऊँगी।" इतना कहकर महिला अपने घोड़े पर सवार होकर चली गयी। युवक ने आर्थर की आज्ञा के अनुसार, जैसी उस समय की प्रथा थी, सर लेन्सिलाट से घोड़े पर चढ़कर भाले तथा तलवार का युद्ध किया औरं जव अपनी योग्यता से सबको अपने अनुकूल कर लिया तो नाइट का पद पाकर वह उस महिला की खोज मे निकला।

जब ब्रोमेन्स महिला के पास पहुँचा तो उसने बड़े क्रोध में आकर कहा,--"तू यहाँ क्या करने आया है? तुझमें से रसोईघर की वास निकलती है। तेरे वेहूदा कपड़ों पर तेल तथा चर्वी के वीसों धव्वे लगे हैं। क्या तू समझता है कि मैं धोखे मे आ जाऊँगी और तेरे जैसे वरतन धोनेवाले को मैं अपने कार्यो में लगाऊँगी? मैं तुझे भली-भाँति जानती हूं। तू वही तो है जिसका सर के ने वोमेन्स नाम रखा था। तू अभी यहाँ से चला जा, तेरा यहाँ कोई काम नहीं है।" वोमेन्स ने जवाव दिया--"आप जो जी चाहे मुझे कहिए, मैं यहाँ से लौटकर नहीं जाऊंगा। मैंने महाराज आर्थर के सन्मुख आपके वे साहसिक कार्य करने का प्रण किया है जिनके करने के लिए आप नाइट लेने दरबार में गयी थीं। जव आपका कार्य समाप्त कर लूँगा तभी मैं यहाँ से लौटूंगा, चाहे मेरे प्राण रहें या न रहें।" "धिक्कार है तेरे प्रण को, चमचे धोनेवाले! क्या तू मेरे कार्यो को करने का साहस रखता है? बहुत जल्दी ही तेरा सामना एक ऐसे भयंकर व्यक्ति से होगा जो तुझे तोड़-मरोड़कर फेक देगा। तू तो उसकी ओर देख भी नहीं सकेगा, चाहे कितना भी शोर्वा तूने आर्थर की रसोई में पिया हो।" वोमेन्स ने शान्तिपूर्वक उत्तर में कहा--"मैं भरसक प्रयत्न करूँगा, आप चिन्ता न करें, मैं स्वयं जानता हूँ कि मैं क्या हूँ।"

वोमेन्स का यह उत्तर मनुष्यजीवन का सारांश है। "मैं जानता हूँ कि मैं क्या हूँ" का दूसरा टुकड़ा "मैं जानता हूं मैं क्या होने वाला हूं"—"क्या होने की मेरी चेष्टा है"—पहले टुकड़े में छिपा रहता है। इसकी चिन्ता व्यर्थ है कि मैं क्या हूँ। "चिन्ता तो इसकी होनी चाहिए कि मैं क्या होना चाहता हूँ। मैं जो हूँ वह मेरी असफलता का चिह्न है, परन्तु जो मैं होना चाहता हूँ उसके पीछे मेरा वह आदर्श है जो मुझे इस अधूरे जगत में पूर्णता की ओर ले जा रहा है।"

वोमेन्स ने एक के उपरान्त दूसरे कई डाकुओं, लुटेरों तथा खूनी अत्याचारियों से युद्ध करके उन्हें परास्त किया। महिला की उसके प्रति जो घृणा थी वह धीरे धीरे समाप्त होती गयी। चार युद्धों के समाप्त करने के उपरान्त सर वोमेन्स

महिला के साथ जा रहा था और वह उसे भला-बुरा सुना रही थी, तब वह बोल उठा—"आप जिस प्रकार का व्यवहार मेरे साथ करती हैं वह सभ्य पुरुषोचित आचरण के विपरीत है। अपने विचार से तो मैंने आपकी सेवा करने में उचित ध्यान दिया है और कुछ उठा नहीं रखा है। फिर भी आप उसी प्रकार क्रोध में मुझे यही धमकी देती हैं कि अगली बार जिस शत्रु से मेरा सामना होगा वह मुझे पीस डालेगा। मैं इन बातों से भागनेवाला नहीं हूँ। यदि मैं ऐसे समय में भाग जाऊँ जब मैं कीर्ति (worship=worth-ship) प्राप्त कर रहा हूँ तो मेरे समान कोई मूढ़ न होगा।" महिला ने, जिसका नाम लिनेट (Lynatte) था, जवाब में कहा—"अच्छा तो देखना अब की बार क्या होता है। अब जो योद्धा मिलेगा वह तुमको ठीक कर देगा, क्योंकि वह आर्थर के सिवा सभी योद्धाओं से अधिक कीर्तिमान् कहा जाता है।" "यही तो मैं भी चाहता हूँ। जितना कीर्तिमान् वह होगा उतनी ही कीर्ति उसे परास्त करने में भी तो मिलेगी।" इसके उपरान्त जितने भी युद्ध हुए उनमें सब कीर्ति आर्थर को समर्पित की गयी क्योंकि हारे हुए व्यक्ति से आर्थर का आधिपत्य मनवाया गया। और होता भी क्या? क्योंकि आर्थर अपनी बहादुरी तथा योग्यता से सर्वश्रेष्ठ पद पर पहुँचा था, न कि किसी दैवी शक्ति से।

विलियम कैक्सटन (William Caxton) ने मार्ट डार्थर की भूमिका भी लिखी थी, जिसमें उसने सर्वोत्तम रोमांस के आदर्श का संक्षिप्त वर्णन किया था और यह भी बताया था कि यह पुस्तक एक प्रकार से इस बात की घोषणा है कि साहित्य भी एक कला है। कैक्सटन का मत था कि मार्ट डार्थर से कहानी-साहित्य में इस प्रकार के गद्य का प्रयोग आरम्भ हुआ। यह भूमिका राजर एस्कम (Roger Aschem) के उस कथन का खंडन भी करती है, जिसमें उसने यह दोषारोपण किया था कि इस पुस्तक में जो कुछ दिलचस्पी है वह केवल मार-काट तथा स्त्रियों की कामुक प्रवृत्तियों के वर्णन में है। कैक्सटन लिखता है कि उसने इस पुस्तक का प्रकाशन केवल इस अभिप्राय से किया है कि उदारचेता मनुष्य शौर्य के महान् एवं उदारतापूर्ण कार्यों को समझें तथा नाइट-वर्ग के पुण्यकार्यों का ज्ञान प्राप्त करें, जिन्हें करके उन्होंने प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। वह बड़ी नम्रता से प्रार्थना करता है कि पाठकगण इन सत्कार्यों को अपनी स्मृति में स्थान दें और उनका अनुकरण करें और दोषों को त्याग कर शुद्ध आचरण का पालन करें जिससे उन्हें कीर्ति प्राप्त हो। इस पुस्तक में औदार्य से पूर्ण शौर्य, विनय, मित्रता, मानवता,

सहनशीलता, प्रेम, भीरुता, हत्या, घृणा, पुण्य और पाप सभी का वर्णन है। भूमिका को समाप्त करते हुए कैक्सटन लिखता है कि यह पुस्तक एक आदर्श ग्रन्थ है जिसके पढ़ने से सुख तथा लाभ प्राप्त होता है "किन्तु आपको इस बात का पूर्ण अधिकार है कि जो कुछ इसमें लिखा है उसे आप सत्य समझें या न समझें।"

विलियम कैक्सटन के ये अन्तिम शब्द अंग्रेज़ी साहित्य में पहली बार इस बात की घोषणा करते हैं कि गद्य कहानियों का मूल्यांकन हमें कला के सिद्धान्तों के अनुसार करना चाहिए न कि ऐतिहासिक दृष्टि से। मैलोरी के मार्ट डार्थर की जैसी साहित्यिक पुस्तक का उद्देश्य इतिहास की अपेक्षा कहीं अधिक गम्भीर तथा अर्थपूर्ण होता है, जिस गुण के कारण साहित्य एक कला है।

मूल्यांकन का सबसे महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त सत्य है जो प्रत्येक अन्वेषण करनेवाले के लिए बाध्यकारी है। साहित्य में भी यही सिद्धान्त सदा मान्य रहा है। भेद यह है कि सत्य के इस सिद्धान्त का प्रयोग इतिहास और कला में एक ही प्रकार से नहीं हुआ, न होता है। इतिहासकार से हम यही आशा करते हैं कि वह घटना अथवा किसी परिस्थिति को बिना घटाये-बढ़ाये जैसी की तैसी, जिस प्रकार न्यायालय में कोई साक्षी सत्य कहता है, वर्णन कर दे। हम आशा करते हैं कि इतिहासकार ने न तो सत्य के किसी अंश को छिपाया है और न असत्य को अपने किसी संकेत से हमारे सन्मुख लाने की चेष्टा की है। हम यह भी आशा करते हैं कि सत्य के सम्बन्ध में मतभेद होने पर वह निष्पक्षता से उसका निर्णय करके हमारे सामने रखेगा। इसके विपरीत, जब हम किसी यात्रा का वर्णन अथवा किसी निबन्ध में किसी मनुष्य का वर्णन पढ़ते हैं तो हमें उन वर्णनों के लिखनेवालों के व्यक्तित्व का भी ध्यान रखना होता है, क्योंकि उनके वर्णनों के भीतर उनकी अनुभूति का रंग रहता है जो उनके चित्रण को रंगीन बनाता है। इन वर्णनों को लिखनेवालों के अनुभव किये हुए सत्यों का प्रतिरूप कहना चाहिए, चित्रण नहीं। साहित्यकार केवल अपने देखे हुए दृश्य का ही वर्णन नहीं करता किन्तु उन विचारों तथा भावनाओं का भी, जो किसी दृश्य या मनुष्य के सन्मुख उसके हृदय में उत्पन्न होती है और जिनका वह अनुभव करता है। सत्य का सिद्धान्त बाह्य जगत् अथवा जीवन की प्रत्यक्ष घटनाओं तथा उनके साहित्यिक चित्रण के बीच एक समानता स्थापित करता है, जिस समानता का स्वरूप साहित्य के विभिन्न अंगों में विविध प्रकार से प्रकट होता है। हो सकता है कि हमें किसी दृश्य का अथवा किसी मनुष्य का जो चित्र एक साहित्यकार देता है वह आपेक्षिक होने के कारण

अधिक वास्तविक हो और इसलिए कलात्मक प्रतिरूप होने से सत्य के निकट-तर भी हो। कलाकार ने विषय के कुछ प्रमुख प्रसंगों को छाँटकर विशेष रूप से उनको दर्शाया है और कुछ ऐसे प्रसंगों को छोड़ दिया है या कम महत्त्व दिया है जो उस प्रभाव को हमारे हृदय पर पड़ने से रोकते हों, जिसे कलाकार डालना चाहता है। कला के ऐसे प्रयोग से हमें सारभूत सत्य प्राप्त होता है; और यही सारभूत सत्य (essential truth) मैलोरी के मार्ट डार्थर से हमें मिलता है। यही वह सत्य है जिसे प्रकट करने की चेष्टा में साहित्य सदा लगा रहता है।

विलियम कैक्सटन और मध्यकालीन रोमांस

विलियम कैक्सटन ने उन तमाम सर्वोतम रोमांसों में, जो उसने अपने छापे-खाने से छापकर प्रकाशित किये, यही सारभूत सत्य दर्शाने का प्रयत्न किया। घटना-सत्य (Truth of fact) के सम्बन्ध में वह लिखता है—"आप इस पुस्तक में वर्णित बातों के सत्य को मानने या न मानने में पूरी तरह स्वतन्त्र हैं।" उन भूमिकाओं में जो उसने अपने छापे हुए रोमांसों में लिखी थीं, उसने वे विचार पाठकों के सामने रखे जिनसे प्रेरित होकर उसने छापने के लिए विशेष पुस्तकें चुनी थीं। छापाखाना स्थापित करने और अपनी मृत्यु के बीच के सोलह वर्षों में कैक्सटन ने लगभग अस्सी पुस्तकें प्रकाशित की थीं, जिनमें से अधिकांश का उसने स्वयं फ्रेंच भाषा के मूल ग्रन्थों से अनुवाद किया था और उनमें अधिकांश रोमांस थे। उसके विचारों पर मध्यकालीन संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा था। उसने उसी काल की पुस्तकों का अध्ययन भी किया था, यही कारण था कि उसने इतनी अधिक पुस्तकें उसी काल की छापीं। यही नहीं, जब उसने अपने पाठकों को ईनिड (Aenied) की कहानी सुनानी चाही तो उसने एक मध्यकालीन रोमांस से ही उसकी सामग्री लेकर उसे लिखा पर वर्जिल (Virgil) के मूल ग्रन्थ को आधार नहीं बनाया। कैक्सटन अपने देशवासियों को पढ़ने की रोचक सामग्री देना चाहता था। उसका उद्देश्य विद्वानों को प्रसन्न करना नहीं था। उसने रोमांसों को सुलभ कर दिया और विशेष कर मैलोरी के मार्ट डार्थर के तो कई संस्करण निकालकर पुस्तक को घर-घर पहुँचाने की चेष्टा की। कैक्सटन की यह सारी चेष्टा बड़ी सराहनीय है और उसके कारण अंग्रेज़ी साहित्य को बहुत लाभ हुआ। एक तो मैलोरी की भाषा तथा लेखनप्रणाली ने लोगों को दुःखात्मक ध्वनि का इतना अभ्यास करा दिया कि वे दो विरोधी शक्तियों तथा इच्छा और

परिस्थिति के संघर्ष से उत्पन्न हुई करुणा एवं वेदना का अनुभव करने लगे। दूसरे, प्राचीन अग्रेजी साहित्य की सर्वोत्तम कृतियो का प्रकाशन करके उसने आधुनिक साहित्य और उसकी विशेषताओ को दर्शाया तथा जाति की उस कल्पनाशक्ति अथवा अपूर्व बुद्धि का ज्ञान कराया, जो अन्य जातियो से अग्रेजो की भिन्नता की सूचक है। तीसरी सेवा जो उसने की वह भी बड़ी महत्त्वपूर्ण है। उसने अंग्रेजी साहित्य की विकास-शृंखला की प्रत्येक कडी को सुरक्षित रखा, जिसके कारण नव युग मे यूनान तथा रोम (Greece and Rome) के साहित्य के नवीन नमूनो की बाढ आने पर भी लोग स्पेन्सर (Spenser) को चॉसर का शिष्य तथा उसकी सतति मान सके। कैक्सटन ने रोमास को इतने लम्बे काल तक जीवित रखने मे भी साहित्य की एक और सेवा की। नवयुग (Renaissance) के काल का आरम्भ हो जाने पर कई शताब्दियो तक रोमास सर्वप्रिय बना रहा और किसी प्रकार के नये ढगो का प्रभाव उस पर नही पडा। इग्लैण्ड के साहित्य मे मध्यकालीन रोमास की प्रतिध्वनि ने एक विशेष चेतना उत्पन्न कर दी, जिसने चॉसर के समय के बाद गद्य और पद्य दोनो को एक नया रूप और व्यजना प्रदान की और उसे आधुनिक युग के अधिक गहरे एव अर्थपूर्ण जीवन का चित्रण करने के योग्य बनाया।

लार्ड बर्नर्स के रोमांस और वास्तविकता

कैक्सटन ने रोमास साहित्य के जितने ग्रन्थ प्रकाशित किये उनमे जान बुशियर, लार्ड बर्नर्स (John Bouıchier, Lord Bernars) के ग्रन्थ का विशेप महत्त्व है। लार्ड बर्नर्स एक ऊँचे कुल का वशज था और राज-दरबार के जीवन तथा शिष्टाचार से भली-भाँति परिचित था। उस समय की प्रथा के अनुसार उसे सैनिक शिक्षा दिलाने के पहले आक्सफोर्ड भेजकर उच्चकोटि का पडित बनाया गया। सेना मे उसने अच्छा नाम पाया और वह कैले का गवर्नर बनाया गया। उसे अपने समय का प्रारूपिक व्यक्ति समझना चाहिए क्योकि उसके व्यक्तित्व मे भूतकाल का शौर्य तथा भविष्य की बौद्धिक चेष्टा एक साथ विद्यमान थे। वह किंग हेनरी अष्टम का कृपापात्र था और उसकी आज्ञा के अनुसार उसने फ्रायसार्ट के क्रानिकल्स (Chronicles of Fıoissart) का फ्रेंच भाषा से अनुवाद किया था। उसकी लिखी हुई हून आफ बोर्डो (Houn of Bordeau\) की कहानी जो १५३४ मे छपी थी, शार्लेमेन (Charlemagne) सम्बन्धी रोमांसमाला की उतनी ही अच्छी कहानी है, जैसी आर्थर रोमांसमाला में मैलोरी

की लिखी हुई कथा। नायक, हून आफ वोर्डो, दुर्भाग्यवश एक झगड़े में शार्लीमेन के पुत्र की हत्या कर डालता है और यह नहीं जान पाता कि किसका उसने वध किया है। शार्लीमेन उसे प्राणदंड देता है, किन्तु इस शर्त पर स्थगित कर देता है कि वह वैबिलोन के राजदरबार में जाकर बादशाह के बालों का एक गुच्छा और उसके चार दाँत लाये और बादशाह के सबसे बलवान् नाइट का वध करके राजकुमारी का चुम्बन करे। आवेरान नामक देवपुरुष की सहायता से हून ये सारे कार्य करता है और लौट आता है। लार्ड वर्नर्स ने आवेरान (Oberon) का परिचय अपने पाठकों से इस प्रकार कराया है—"वह केवल तीन फुट लम्बा है, उसके कन्धे झुके होने से पीठ पर कूबड़ निकला है, किन्तु उसका चेहरा ऐसा दिव्य दिखाई पड़ता है कि लोग उसे देखते रह जाते है। यदि तुम उस जंगल की ओर जाओ या उसमें घुसो तो वह किसी न किसी प्रकार तुमसे बातें करने का ढंग निकाल लेगा; और यदि तुमने उससे बात की तो तुम्हारा सर्वनाश हुआ। तुम्हारे सामने वह कुछ इस प्रकार आयेगा कि तुम्हारे लिए उससे बात न करना असम्भव सा होगा और फिर वह ऐसे मधुर शब्दों में तुमसे बातें करेगा कि तुम उससे बिना बोले नहीं रह सकोगे। यदि वह यह देखे कि तुम उससे एक शब्द भी नही बोलते हो, तो वह तुमसे बहुत नाराज हो जायगा और इससे पहले कि तुम जंगल के बाहर निकलो वह इतना जल बरसायेगा, इतनी तेज़ हवा चलायेगा, ओले गिरायेगा और ऐसे तूफान लायेगा, बिजली कड़कायेगा, बादल गरजायेगा, कि तुम्हें मालूम होगा कि प्रलय आ गया और तुम्हारे सामने वह एक नदी बहायेगा जो बड़ी गहरी और काली दिखाई पड़ेगी। मगर तुम बड़ी सुगमता से उसे पार कर सकते हो, क्योंकि तुम्हारे घोड़े के पैर भी उस नदी में नही भीगेंगे, इसलिए कि वह तो सब धोखा और जादूगरी की बात है।" इस पुस्तक ने सबसे प्रथम आवेरान का अंग्रेजी भाषा में उल्लेख किया, और बर्नर्स के लिखने मे भी वह नया ढंग था जो इस काल मे कहानी का ढंग बन रहा था। धीरे धीरे, एक बात के बाद दूसरी बात, और फिर वह भी दोहराकर, जैसे मैलोरी और कैक्सटन कहते थे, हल्के-फुल्के शब्दों मे और छोटे-छोटे वाक्यों में जैसे बच्चों से कुछ कहा जाता हो—यही वह ढंग है जो कहानी कहनेवालों ने इस काल के लेखकों से सीखा और इसी को अपने-अपने ढंग से सुधारा।

लार्ड वर्नर्स ने अपने अनुवाद में मूल ग्रन्थ की भाषा का जोर तथा उत्साह अपनी भाषा द्वारा उत्पन्न कर दिया है। यद्यपि वह शौर्य और आभिजात्य की

मुक्त कंठ से प्रशंसा करता है, परन्तु उसे समाज के सभी स्तर के मनुष्यों से सहानुभूति थी. इसी लिए उसके वर्णनों में वास्तविक जीवन के सजीव चित्र भरे पड़े हैं। यही वह गुण था जिसने उसकी पुस्तक को लोकप्रिय बनाया था। बर्नर्स अपने विषय को बड़ी सावधानी तथा विस्तार से प्रस्तुत करता है और मैलोरी की भाँति अपना प्रयोजन स्पष्ट करने के लिए शब्दों को बार बार दोहराने में संकोच नहीं करता। अपने स्वभाव तथा शिक्षा के कारण तथा नैतिक गुणों का समर्थन करने के कारण और मनुष्य मात्र से अपनी सहानुभूति रखने के कारण, मैलोरी और बर्नर्स अपने युग के सबसे बड़े रोमांसकार हुए हैं, जिन्होंने अंग्रेज़ों की कल्पनाशक्ति को उत्तेजित किया और आगामी शताब्दियों में मौलिक रचना के लिए सामग्री तथा स्फूर्ति प्रदान की। अंग्रेज़ी गद्य भी जैसा इन लेखकों ने लिखा बहुत काल तक कहानी के क्षेत्र में प्रामाणिक बना रहा। इनकी लेखन-प्रणाली में भावों को प्रकट करने की जो शक्ति है वह बड़े स्वाभाविक ढंग से उन भावों को दूसरे के हृदय तक पहुँचा भी देती है।

कैक्सटन के उपरान्त जिन लोगों ने छापेखाने चलाये वे भी कुछ काल तक उसी की भाँति रोमांस को प्रथम स्थान देते गये। परन्तु जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, ये छापेखाने उस साहित्य की पुस्तकों को छापने और देश में फैलाने लगे जिसे नयी विद्या (New Learning) कहा जाता था और जो नवयुग (Renaissance) की नयी जाग्रति को प्रत्येक यूरोपीय देश में पहुँचा रही थी। पर यह नवयुग तथा नयी विद्या लगभग पचास वर्ष पिछड़कर इंग्लैण्ड पर प्रभाव डाल सकी, क्योंकि चॉसर की मृत्यु के समय से देश पर कोई न कोई परेशानी आती गयी। फ्रांस से शतवर्षीय युद्ध चल ही रहा था, परन्तु देश के भीतर के युद्ध ने इंग्लैण्ड के उच्चस्तर के लोगों की जिनकी संरक्षकता में कला और साहित्य दोनों का ही विकास हो रहा था दशा खराब कर दी। युद्धों ने साधारण जनसंख्या में भी कमी कर दी थी और प्लेग की बीमारी ने और भी जनसंख्या को नष्ट कर दिया था, जिसके कारण अन्न उपजाने वाले तथा दस्तकार बहुत कम हो गये थे। प्राचीन व्यवस्था को बनाये रखने के लिए जो अनुचित कानून बनाये गये उन्होंने साधारण जनता के हृदय में धनिक वर्ग के विरुद्ध क्षोभ उत्पन्न कर दिया। आन्दोलन और बलवे होने लगे तथा किसानों का एक देशव्यापी उपद्रव उठ खड़ा हुआ था। इस तत्कालीन दशा का हाल चॉसर की कृतियों से हमें नहीं मालूम होता, किन्तु गावर (Gower) तथा लैंगलैण्ड (Langland) की पुस्तकें हमें बताती हैं कि

साधारण जनता किस प्रकार नैतिक शक्ति प्राप्त करती चली जा रही थी और किस प्रकार उसका जीवन और उसके भाव साहित्य में प्रवेश कर रहे थे। ऐसी स्थितियों के होते हुए रोमांस की दशा में परिवर्तन होना अनिवार्य था और हुआ। सन् १४८५ में हेनरी सप्तम राजा हुआ और देश में शान्ति का फिर से आगमन हुआ। यूरोपीय देशों में इंग्लैण्ड ने पहले जैसा स्थान पाया और नवयुग के उत्साह से प्रभावित होकर वह उन्नति के मार्ग पर चलने लगा। अंग्रेजों के हृदयों में भी नवयुगकी उमंगें तथा उत्साह फिर से हिलोरें लेने लगे।

रेनासां या नवयुग

नवयुग वास्तव में एक बौद्धिक पुनर्जन्म था जो इस काल में मनुष्य की उस दीर्घ चेष्टा से प्रकट हुआ था जो उसने मध्यकालीन युग की संस्थाओं के कठोर पाशों से मुक्त होने के लिए की थी। साथ ही मनुष्य ने अपनी इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करने, स्वतंत्रतापूर्वक विचार तथा अनुभव करने और निर्भीकता से उन्हें प्रकट करने के अधिकार की घोषणा भी की थी। जैसे-जैसे मनुष्य की यह स्वतंत्रता स्थापित तथा दृढ़ होती गयी वैसे-वैसे वह मध्यकालीन युग की इस विचार-धारा का, कि इस लोक के जीवन का तिरस्कार करके अपने परलोक को सुधारना चाहिए, विरोध करता गया और इसी जीवन को सफल बनाने की अधिक चेष्टा करता गया। लोग कुछ ही काल में धनोपार्जन तथा राजनीति में दिलचस्पी लेने लगे और इस प्रकार बहुत से सुधार करके अपना आधिपत्य संसार में जमाने लगे। वैज्ञानिक अनुभवों द्वारा संसार के रहस्यों को समझने और कला तथा साहित्य द्वारा जीवन के रस और आनन्द की वृद्धि के लिए अधिक प्रयत्न करने लगे। एक शक्ति जो इस आन्दोलन में विशेष महत्त्व की सिद्ध हुई उस पुरातन ज्ञान की थी, जो उन्हें यूनान तथा रोम के साहित्य से प्राप्त हुई। इस साहित्य की नींव में मनुष्य का आत्मविश्वास और उसका यह सिद्धान्त था कि सत्य कोई बाहर से दी जाने-वाली वस्तु नहीं बल्कि मनुष्य की अपनी खोज की वस्तु है। अपने सामर्थ्य से मनुष्य सत्य की खोज कर सकता और उसे प्राप्त कर सकता है। इस पुरातन साहित्य के अध्ययन से नवयुग के लोगों ने यह भी जाना कि संसार का एक मात्र उपयोग मनुष्य के व्यक्तित्व को विकसित करना है। नवयुग के उत्साही लोग इन विचारों से बड़े प्रभावित हुए और इस प्रभाव का नाम मानवता (Humanism) रखा गया। इस दृष्टि-कोण से सारी कलाओं का अध्ययन किया जाने लगा।

इसके अतिरिक्त इस नवयुग के लोगों को यूनान के कवियों, सुवक्ताओं, मूर्ति तथा भवन-निर्माण करनेवालों की कृतियों के जो सुन्दर नमूने मिले, वे उनके कार्यो की कसौटी वन गये और आधुनिक काल में सारी कलाओं के लिए आदर्श हो गये।

इटली में नवयुग अथवा रेनासां

रोमन सभ्यता का केन्द्र होने के कारण इटली में इन सारी कलाओं के सर्वोत्तम नमूने पहले से ही भरे पड़े थे और वहाँ के लोगों को ऐसी सुन्दर और प्राचीन काल की याद दिलानेवाली वस्तुओं के लिए भूख भी वहुत थी। जव तुर्कों ने रोम के पूर्वी साम्राज्य को विजय किया और १४५३ में उन्होंने कुस्तुन्तुनिया पर अपना पूर्ण अधिकार जमा लिया, तो सैकड़ों यूनानी धुरंधर विद्वान् वहाँ से निकल भागे और उन्होंने इटली में शरण ली। ये यूनानी विद्वान् अपने साथ हज़ारों हस्त-लिखित पुस्तकें इटली में लाये और अपनी जीविका के लिए वहाँ के उत्सुक लोगों को पढ़ाने लगे। प्रत्येक नगर में यूनानी विद्या सीखने के केन्द्र स्थापित हो गये जहाँ कुछ काल में दूर देशों के लोग भी पुरातन ज्ञानोपार्जन के लिए आने लगे। नयी विद्या (New Learning) की चर्चा दूर दूर तक होने लगी और इस प्रकार मानवता (Humanism) का विकास भी होता गया। इटली ललित कलाओं के क्षेत्र में सारे यूरोप का गुरु वन गया एवं इन शरणार्थी विद्वानों द्वारा नयी विद्या के लिए उत्साह दिन पर दिन वढ़ता गया और प्रत्येक स्तर के लोग नयी विद्या सीखने की सुविधाओं से लाभ उठाने लगे। इसी उत्साह और पुस्तकों की माँग के कारण छपाई की कलों का आविष्कार हुआ और छापेखाने स्थापित हुए। नवयुग की घोषणा से धीरे-धीरे यूरोप के सभी देश प्रभावित होते गये और चारों ओर मानव-जीवन में एक चमत्कार उत्पन्न होने लगा। प्रत्येक देश की प्रवृत्ति के अनुसार नवयुग की उत्तेजना ने मानवता का विकास किया और सौ वर्ष तक उस उत्तेजन का प्रभाव अपना काम करता रहा। परिणाम यह हुआ कि यूरोप के लगभग सारे देशों में एक नया संसार उत्पन्न हो गया और एक नया मनुष्य अपनी इच्छा से और विना किसी अंकुश के वड़े चमत्कार के कार्य करने लगा।

लोकसाहित्य और कहानी-गीत

नवयुग में मनुष्य ने मध्यकालीन पाशों से मुक्त होकर जो दीर्घ चेष्टा की थी उसके प्रभाव तथा महत्त्व का पता उस लोक-साहित्य से चलता है, जो साधारण

लोगों में प्रचलित था। यह लोकसाहित्य पारिवारिक दुख-दर्द से लेकर साधारण समाज के हित तथा अनहित की बातों के सम्बन्ध में सीधी सादी रीति से मनुष्य के भावों को व्यक्त करता था। रोमांसों के पीछे इस साहित्य की उत्पत्ति सदा होती रही थी। रोमांसों में उच्च स्तर के लोगों की कीर्ति वर्णित की जाती थी और वे राजदरबारों के जीवन तथा शिष्टाचार का चित्रण करते थे। उनकी कहानियों में जिस वीरता का उल्लेख होता था वह नित्यप्रति के जीवन से बहुत दूर कोई अपूर्व अथवा अलौकिक घटना होती थी। अभिजातवर्ग के इस कहानीसाहित्य में मनुष्य-जीवन का जो दृश्य दिखाया जाता था, वह ऐसा काल्पनिक होता था कि साधारण श्रेणी के लोग उसमें किसी प्रकार की वास्तविकता नहीं पाते थे। लोक-साहित्य में गीत और नाटक हुआ करते थे जो बहुधा उपहास की भावना से उस भेद को प्रकट करते थे जो रोमांसकथाओं में वर्णित जीवन के आदर्शों, एवं साधारण जीवन की वास्तविकता में पाया जाता था और जो भेद दिन पर दिन बढ़ता जाता था। लोकगीतों में जो कहानियाँ होती थीं उन्हें लोग सुनकर याद रखना चाहते थे और बार बार सुनाते थे। पहले तो ये कहानियाँ रोमांस की कथाओं से भिन्न ही होती थीं और भाषा भी साधारण लोगों की ही होती थी, परन्तु कभी-कभी उनका कथानक एक ही होता था, तो कहने का ढंग बदल दिया जाता था जिससे सर्वसाधारण लोग उन्हें समझ सकें।

रोमांस ऐसे सुसंस्कृत लोगों के लिए लिखे जाते थे जिन्हें अवकाश की कोई कमी नहीं होती थी और जो काव्यात्मक लेखनप्रणाली का आनन्द उठा सकते थे एवं भाषा की सुन्दरता को समझ सकते थे। लोकसाहित्य में कहानी-गीत छंद द्वारा इस कमी को कुछ न कुछ पूरा करते थे और निम्न स्तर के लोगों को आनन्द देते थे। रोमांसों में बहुत सी बातों का विस्तार किया जाता था, दृश्य और स्थितियाँ सविस्तर वर्णित होती थीं, भावों को दर्शाकर उनकी व्याख्या की जाती थी, गहरे विचारों को पूर्ण रूप से स्पष्ट किया जाता था। कहानी-गीतों में मनुष्य के कृत्यों पर विशेष बल दिया जाता था, उसके साहस तथा सहनशीलता का वर्णन होता था। शब्द सरल परन्तु ज़ोरदार होते थे और बिना किसी लम्बी भूमिका अथवा घुमाव-फिराव के कहानी आरम्भ कर दी जाती थी। किसी वस्तु अथवा विषय का विस्तृत वर्णन नहीं होता था। संक्षिप्त वर्णनों का विस्तार करने और घटनाओं का क्रम समझने का कार्य पाठकों अथवा श्रोतागणों की कल्पनाशक्ति पर छोड़ दिया जाता था। कहानी अपना प्रभाव स्वयं ही उत्पन्न करती थी और कहानीकार

की टीका-टिप्पणीं के विना ही अपनी शक्ति से पाठकों को आकर्षित करती थी। किन्तु कहानी-गीत लिखनेवाले यह जानते थे कि वे किस ढंग से कहानी कहें कि वह तुरन्त ही पाठकों को प्रभावित करे और उनके हृदय पर छा जाय। वे हृदयग्राही तथा सजीव दृश्यों, प्रभावोत्पादक स्थलों और ऐसे शब्दों के छाँटने और चुनने मे दक्ष थे जिनके द्वारा इन सवका वर्णन सुचारु रूप से किया जा सकता था।

जन-साधारण दुःखान्त एवं भयोत्पादक कहानियाँ पसन्द करते थे। इस लिए जो दुःख और भय कहानियों में लाये जाते थे, जैसे मृत्यु तथा कोई घोर कष्ट, वे सव ऐसे होते थे जो उनके अनुभव किये हुए होते थे। उस कठिन समय में लोग जो दृश्य देखते थे वह उनके हृदय में अंकित हो जाते थे और वहुत काल तक भुलाये नही जाते थे। ऐसी घटनाओं को वे लोग अपनी सन्तान को सुनाते थे और आनेवाली पीढियों के लिए गीतों में उनका वर्णन करते थे। यह नहीं समझना चाहिए कि सभी कहानी-गीत दुःखान्त होते थे। जनता चतुर, विनोदी तथा कुशाग्रबुद्धि वाले उन लोगों को पसन्द करती थी जो प्रश्नों के चुभते हुए उत्तर दे सकते थे अथवा अपनी चतुराई से वलवान् शत्रु के पजे से छूट जाते थे और वदला लेते थे। जिन कहानियो मे ऐसी सामग्री होती थी वे ही अधिक पसन्द की जाती थीं।

उस समय के साधारण लोग परियों, दैत्यों, पिशाचों में विश्वास रखते थे और इस धारणा को स्वीकार करते थे कि परियाँ सुन्दर लोगों को परिस्तान ले जा कर अपना वन्दी वनाकर रखती है। कुछ कहानियों में मृतात्माओं के प्रेत पृथ्वी प पुनः आकर मनुष्यों को इच्छा के विरुद्ध कार्य करने पर मजवूर करते है। वहुत सी कहानियों में पक्षी मनुष्यों के सदृश वार्तालाप करते है, सव वातें समझते है और उन सच्चे प्रेमियों की सहायता करते है जो एक दूसरे से दूर होते है अथवा मिल नही सकते।

कहानियों के लिखनेवाले भली-भाँति समझते थे कि उनका कर्त्तव्य पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करना और फिर उस ध्यान को स्थिर वनाये रखना था। समय, स्थान तथा पात्र का वड़ा सूक्ष्म-सा परिचय कराकर कहानीकार शीघ्र ही घटना पर पहुँच जाता है और कथानक आरम्भ कर देता है। शीघ्र ही कहानी उस उत्कर्ष पर पहुँच जाती है जो उसकी दिलचस्पी तथा प्रभाव का केन्द्र होता है वहुधा यह केन्द्र (Crisis) कहानी के आरम्भ में ही आ जाता है और फिर यहाँ से कहानी का उतार प्रारम्भ हो जाता है। पाठक अथवा श्रोता परिस्थिति और दृश्य से उद्भत करुणा की कल्पना किया करता है परन्तु उसकी उत्कंठा का स्वर मद्धिम

हो जाता है। जो कहानियाँ सीधी सादी होती हैं उनमें घटना की प्रधानता रहती है और साधारण विशेषणों द्वारा पात्रों का चित्रण किया जाता है। श्रोता की कल्पना तथा उसके भावों पर सीधा प्रभाव डालने के लिए कहानी-गीत में बातचीत की प्रधानता रहती है और इस प्रभाव को तीव्र करने हेतु कहानीकार पात्र के मुख से कहानी कहलाता है, जिससे वह सजीव हो उठती है और घटना पाठक अथवा श्रोता की आँखों के सामने होने लगती है।

इस सम्बन्ध में कि यह कहानी-गीत सबसे पहले किसने लिखे, कई मत प्रचलित हैं। एक मत वह है जिसे "सामूहिक' मत कहते हैं, जिसके अनुसार कहा जाता है कि कहानी-गीतों की रचना बिरादरी ने की थी। कैसे और कहाँ का उत्तर नहीं मिलता। साहित्यिक मत है कि कहानी-गीत मध्यकालीन रोमांस-कहानियों पर आधारित हैं। कहानी-गीत रोमांस कथा को संक्षेप में दोहराते हैं अथवा उसकी ऐसी नकल करते हैं कि मूल कहानी के लेखक की हँसी उड़ायी जा सके। यदि यह ठीक है तो कहानी-गीत मध्यकालीन साहित्य के खंडित महल के ईंट-पत्थर हैं। जिस मत को सबसे अधिक मान्यता प्राप्त है वह प्रोफेसर गुमियर का मत है, जिसके अनुसार कहानी-गीतों की रचना व्यक्तिविशेष द्वारा आरम्भ हुई थी, किन्तु इनका प्रसार मौखिक रीति से होने के कारण इनके कथानक एवं स्वरूप में समय तथा स्थान के अनुसार परिवर्तन होता गया और अन्त में जीवन को एक ऐसी कहानी मानने की उनमें प्रथा चल गयी जिसकी सार्थकता मनुष्य के तीव्र संवेगों पर निर्भर है। कहानी-गीतों की रचना प्रतिदिन के जीवन की घटनाओं तथा समस्याओं को लेकर हुई थी, जैसे प्रेम, घृणा, भयंकर मृत्यु तथा दैविक भय। कुछ गीतों की कहानियाँ ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित हैं, जैसे "राबिनहुड" अथवा "गेवीशेज्र" की कहानियाँ जिनकी उत्पत्ति साधारण समस्याओं को सुलझाने में हुई थी।

इंग्लैंड में जब तक छापेखाने नहीं स्थापित हुए थे तब तक ये कहानी-गीत लोगों तथा गायकों की स्मृति में सुरक्षित रहे। छापेखाने खुल जाने के उपरान्त उनका प्रसार बढ़ गया और जनता की माँग पूरी करने को नये गीतों की रचना होने लगी। जब कभी कोई विलक्षण एवं सनसनी उत्पन्न करनेवाली घटना होती तो उसका एक गीत बन जाता। घटना जितनी अद्भुत एवं असम्भव होती उतनी ही शीघ्रता से कहानी-गीत की माँग बढ़ जाती। जैसे-जैसे समय व्यतीत होने लगा, इन गीतों से वह काम भी लिया जाने लगा जो राजनीतिक क्षेत्र में पत्रिकाओं से लिया जाता था। कुछ समय के उपरान्त कहानी-गीतों में राजनीतिक दलों का संघर्ष भी स्थान

पाने लगा और गाली-गलौज होने लगी। ऐसी स्थिति आने के पहले ही कहानी-गीतकारों ने साहित्यिक लोगों को यह बताकर कि किस प्रकार सरल, शक्तिपूर्ण, निर्भीक एवं प्रभावशाली ढंग से किसी घटना का वर्णन करके पाठकों पर प्रभाव डाला जा सकता है, कहानी की रचनापद्धति में एक नया परिवर्तन उत्पन्न कर दिया।

लोक-नाटक तथा कैरोल्स

जो कहानी-गीत इस प्रकार से लोगों के हृदय और मन पर प्रभाव डालते थे और बड़े दिन के अवसर पर गाये जाते थे, वे कैरोल्स (Carols) कहलाते थे। इनकी कथावस्तु हज़रत ईसा का जन्म, उनका स्वागत और दुष्ट हेराड (Herod) द्वारा उनकी हत्या करने की चेष्टा विषयक होती थी। मध्यकालीन युग के लोग इन कथाओ को वास्तविक एवं सत्य मानते थे और समझते थे कि मानो ईसा, मेरी तथा जोज़ेफ का उन्हें साक्षात् परिचय है और वे उनके मित्र तथा हितैषी हैं। इस प्राचीन काल की एक बड़ी अर्थपूर्ण कहानी प्रसिद्ध है, जिसमें एक फ्रांस के रहने-वाले नट की असीम श्रद्धा और भक्ति दिखाई गयी है। यह नट कलाबाजी दिखा-कर लोगों का मनोरंजन किया करता था। इस पेशे को करते-करते जब उसका मन ऊब गया और उसके मन में अपना परलोक सुधारने की इच्छा प्रबल हुई तो वह साधु होकर एक मठ मे भरती हो गया। कुछ दिन पश्चात्, उसे प्रतीत होने लगा कि दूसरे साधु उसकी अपेक्षा बड़े विद्वान् और पढ़े-लिखे थे, जिनके सामने उसकी कोई गणना नहीं थी। उनके सामने न तो वह भली-भाँति प्रार्थना कर सकता, न अच्छे भजन गाकर ईश्वर और सन्तों को प्रसन्न कर सकता था। बड़ा प्रयत्न करके भी उसे सफलता न मिली, तो वह दुखी रहने लगा और अपने को धिक्कारने लगा। उसे डर लगा कि यदि दूसरे साधु उसकी अज्ञानता जान गये तो वे जरूर उसे मठ से निकाल देंगे। बहुत सोच-विचार के उपरान्त एक दिन वह मन्दिर में गया और माता मेरी (Our Lady, Virgin Mary) के सामने हाथ जोड़कर कहने लगा—"हे माता, मैं दूसरे साधुओं की भाँति न तो प्रार्थना कर सकता हूँ न भजन गाकर आपको प्रसन्न कर सकता हूँ। मैं केवल कलाबाज़ी का खेल जानता हूँ, जिसे दिखाकर मैं आपको प्रसन्न करने की आशा करता हूँ।" यह कहकर उसने तुरन्त अपने कपड़े उतार डाले और जो सबसे अच्छे करतब उसे आते थे, मूर्ति को दिखाने लगा। उसे पूरा विश्वास था कि ईश्वर जरूर सबके मन

की बात समझकर जो कुछ जिससे बन पड़ता है उसी से प्रसन्न होता है। कहा जाता है कि उस नट ने जैसी कलाबाजी माता मेरी को दिखायी वैसी उसने किसी को कभी नहीं दिखायी थी।

एक और कैरोल में उस गड़रिये का हाल दिया गया है जो बड़े दिन की रात्रि में बाँसुरी बजाकर अपनी भेड़ों की रखवाली कर रहा था। उसने देखा कि बेथलेहम के गाँव के ऊपर आकाश में एक अत्यन्त चमकदार तारा निकला है। साथ ही उसने देवदूत की आवाज़ सुनी कि हजरत ईसा का जन्म हो गया। गड़रिया भेड़ों की रखवाली अपने कुत्ते को सौपकर दौड़ता हुआ बेथलेहम जा पहुँचा और वहाँ उसने नवजात शिशु को ढूँढ़ निकाला। पूजा करने के उपरान्त गड़रिये ने शिशु के सामने अपनी बाँसुरी, लवादा, रंग का डिब्बा, तथा जो कुछ उसके पास था, भेंट में चढ़ा दिया और भेड़ों के पास लौट गया। विदा होते समय जोसेफ (Joseph) और मेरी (Mary) से शिशु की भली-भाँति रक्षा करने को कहता गया।

इस प्रकार की कहानियों के उदाहरणों से हमें ज्ञात होता है कि अंग्रेज लोगों ने जब नाटक बनाना तथा उन्हें खेलना आरम्भ किया, तो क्यों उन्होंने ऐसे ही धार्मिक विषय चुने। हमें यह भी ज्ञात होता है कि क्यों उन नाटकों के पात्र जो बाइबिल (Bible) से तथा सन्तों की जीवनियों से लिये गये थे, जनता को न तो ग़ैर लगते थे न डरावने। इन पात्रों के और अंग्रेज जनता के बीच एक भाईचारा-सा स्थापित हो गया था जिसके कारण वे उन्हें अपने ही जैसा मनुष्य समझते थे और अपना शुभचिन्तक मानते थे। मध्यकालीन युग में यह भली भाँति सम्भव भी था, क्योंकि एक तो लोग इन्हीं कहानियों को पढते और सुनते थे, जिस कारण हजरत आदम और हव्वा, हजरत नूह तथा उनकी नौका, हजरत इब्राहीम, सेन्ट पीटर, जूडास, शैतान और लैजरस आदि, जिनका उल्लेख बाइबिल में है, जाने पहचाने लोग हो गये थे और सब इनकी कल्पना कर सकते थे। साधु-संन्यासी यह प्रयत्न करते रहते थे कि जनता के मन में इन पात्रों तथा धार्मिक महानुभावों के लिए श्रद्धा रहे और उनके कृत्यों की जानकारी बढ़े। उन्हें सजीव करके जनता के सन्मुख लाने की चेष्टा में उन्होंने कहानियों के नाटक कराने आरम्भ किये थे। ऐसे नाटक पहले तो धार्मिक पर्वो पर गिरजाघरों के प्रांगणों और कुछ काल बाद बाजारों और सार्वजनिक चौपालों में इन कहानियों की लीला रचने को खेले जाते थे। इन नाटकों को मिरेक्ल प्ले (Miracle Play) कहते थे या इनको

रहस्यमय होना प्रकट करने के लिए उन्हें मिस्ट्री प्ले (Mystery Play) भी कहते थे। जैसे-जैसे इन नाटकों का प्रचलन जनता में बढ़ता गया, वैसे-वैसे रंगमच की व्यवस्था तथा अभिनय के कार्यों में उन्नति होती गयी। प्रत्येक व्यवसाय के लोग विशेष लीलाएँ करते तथा एक ही लीला के दृश्यों को सँभालते थे। उदाहरणार्थ बढ़ई लोग हजरत नूह और उनकी नौका की लीला करते, जिसके लिए वे एक बड़ी नाव बनाते और उसे एक गाड़ी पर रखकर लीला के प्रांगण में लाते थे, जहाँ अभिनय करनेवाले शब्दों तथा संकेतों से लोगों को कहानी सुनाते थे।

यद्यपि ये लीलाएँ अपरिष्कृत और बिल्कुल स्वाँग मालूम होती हैं, तो भी मध्यकालीन युग के लोगों को ये नाटक बहुत प्रभावित करते थे और उनकी धार्मिक भावनाओं को बल देते थे। नाटकों में समय पाकर जो परिवर्तन हुए उन्होंने मानवता के भावो का भी सचार किया। नाटककारों ने इच्छानुसार बाइबिल की कहानियों में प्रतिदिन के जीवन की घटनाओं तथा अनुभवों को स्थान देकर उन्हें अधिक मनोरजक बना दि ।। यदि कभी इन घटनाओं तथा अनुभवों के मिश्रण से कहानी प्रहसन का रूप धारण कर लेती थी तो भी किसी को क्षोभ न होता था। कभी-कभी कहानी दुःखान्त भी हो जाती थी। तत्कालीन अवस्था के अनुसार कहानियों में रूपक भी बाँधे जाने लगे थे, जैसे कि उस समय के रोमांसों और टेल्स (Tales) में होता था। समय की वृद्धि के साथ-साथ रोमांस, टेल्स, कहानी-गीत तथा नाटक अपने-अपने ढंग से कहानी लिखने की प्रणाली में परिवर्तित होते गये और थोड़े समय में मनुष्यजीवन के समस्त कार्यक्षेत्र को न लेकर केवल उसके विशेष गुणों अथवा कृतियों पर कहानियाँ लिखी जाने लगीं। कहानियों के पात्र भी अधिक साकार और सजीव होने लगे। रूपक के प्रयोग के कारण कहानियों में जो गम्भीरता तथा अरोचकता उत्पन्न हो जाती थी, उसे दूर करने अथवा कम करने के लिए उनमें प्रहसन का भी समावेश किया जाने लगा। कहानियों के पात्र भी साधारण, प्रतिदिन के ज वन से चुने जाने लगे। सोलहवीं शताब्दी में जैसे-जैसे नवयुग की स्वतंत्रता प्रौढ़ता प्राप्त करती गयी, वैसे वैसे कथावस्तु मानवता (Humanism) के दृष्टिकोण से सारे भावों को प्रकट करने के हेतु छाँटी जाने लगी। कहानी-गीतों तथा नाटकों के प्रभाव से कथाओं (tales) और रोमांसों में भी मनुष्य की सहज भावनाओं का उल्लेख होने लगा और उसकी अच्छाई तथा बुराई, आनन्द अथवा शोक उन्हीं भावनाओं के फल समझे जाने लगे। लेखकगण सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ से मध्य तक पहुँचते-पहुँचते विषयों के लिए साहित्य के समस्त भंडार को

जो इस काल में छपे हुए ग्रन्थों के रूप में सुलभ हो गया था मथने लगे। इस प्रयास के फलस्वरूप उनकी कल्पनाशक्ति तीव्र तथा शिक्षित हो गयी और वे विविध विषयों को भली भाँति-जान गये। इन सब परिवर्तनों का फल यह हुआ कि कहानीसाहित्य में नवीनता उत्पन्न हो गयी और कहानी की प्रणाली बदल गयी, विविध दृष्टिकोणों से जीवन और संसार का अध्ययन होने लगा और कहानीकार प्रतिदिन के संसार में विचरने तथा उसके तथ्य को व्यक्त करने लगा।

इसके पूर्व कि कहानियों में सारभूत सत्य (Essential truth) प्रकट किया जा सके, नवीन कथावस्तु और निश्चित उद्देश्यों तथा विशेष साधनों को स्थिर करना आवश्यक हो गया। साधारण मनुष्य अब साहित्य की सामग्री बन गया और संसार तथा जीवन के प्रति मनुष्य का भाव बदल गया। कथा-साहित्य में लोग वास्तविकता ढूँढ़ने लगे। यद्यपि रोमांस अब भी पढ़े और लिखे जाते थे परन्तु इस समय के कहानीकार आर्थर को भी एक विषय मात्र समझते थे और रोमांस को उस समाजव्यवस्था का सूचक समझते थे जो अब समाप्त हो रही थी। अब उसकी सामग्री को जीवित रखना असम्भव जान पड़ता था। यदि कोई चीज उसे जीवित रख सकती थी तो वह लेखन-प्रणाली थी, जो मनुष्य के नये विचारों और भावनाओं को सजीव कर सके।

अध्याय ३

विभिन्न स्रोतों से उपन्यास को अंशलाभ

सोलहवीं शताब्दी का पूर्वार्ध, अंग्रेज़ी उपन्यास के विकास में एक अनुपजाऊ अथवा शून्यता का काल था। इस काल का महत्त्व इस बात में है कि उसने सर्जनात्मक शक्ति की उस बाढ़ के लिए यथेष्ट भूमि तैयार की थी, जिसने एलिजबेथ के युग को इतना वैभवशाली बना दिया था। नयी विद्या (New Learning) ने पन्द्रहवीं शताब्दी में विश्वविद्यालयों में अपनी जड़ जमा ली थी और आक्सफर्ड तथा केम्ब्रिज उस विद्या के अध्ययन के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र बन गये थे। ऊँचे घरानों के अंग्रेज़ युवक विश्वविद्यालयों में अपनी शिक्षा समाप्त कर चुकने के उपरान्त इटली इसलिए जाने लगे कि वहाँ जीवनकलाओं को सीखकर वे पूर्ण रूप से शिक्षित बन सकें। अनेकों विद्वान् यूनान तथा रोम की उत्तम साहित्यिक पुस्तकों के अंग्रेजी में अनुवाद एवं उनकी व्याख्या करने में व्यस्त थे। इस प्राचीन साहित्य के नमूनों से ऐसे सिद्धान्तों का निर्माण करने की बड़ी चेष्टा की जा रही थी जिनसे उस साहित्य का मूल्यांकन किया जा सके, जो बहुत शीघ्रता से इस काल में मातृभाषा में प्रकाशित हो रहा था। नवयुग (Renaissance) की प्रेरणा दिन पर दिन अधिकाधिक प्रबल होती जा रही थी और मानवस्वतंत्रता के वे सिद्धान्त, जो ईसाई धर्म के पूर्व व्याप्त थे, फिर से स्थापित हो रहे थे ये। वे ही सिद्धान्त थे जिन्होंने मनुष्यों को युग-युगान्तर से सुधार एवं क्रान्ति के लिए अनुप्राणित किया और नाना प्रकार के कठिन कार्यों के करने का उन्हें साहस दिया तथा घोर से घोर प्रयत्नों को सफल बनाया। इन्हीं सिद्धान्तों ने मनुष्य में ऐसी विलक्षण जिज्ञासा उत्पन्न की जो उसके विचारों तथा भावनाओं में प्रविष्ट होकर किसी भी विषय का अनुसन्धान कर सकती थी और प्रत्येक विद्या के क्षेत्र की चाहे वह कितना ही दूरस्थ तथा गुप्त हो अथवा सुप्रतिष्ठित तथा अलौकिक हो, परीक्षा कर सकती थी। मधुमक्खी के छत्ते के समान सारा इंग्लैण्ड एक नये जीवन के उल्लास एवं स्फूर्ति से ध्वनित हो रहा था। अर्ध शताब्दी के समाप्त होते होते इस नयी प्रेरणा के प्रभाव से सारे

देशवासी अपने हृदयों में विजय की-सी लालसा लिये चतुर्मुखी विजय के लिए कटि-वद्ध हो गये थे।

हेनरी अष्टम और उसके समय की साहित्यिक प्रगति

इस नयी प्रेरणा के परिवर्धन का श्रेय विश्वविद्यालयों की अपेक्षा हेनरी अष्टम के दरबार को अधिक है। हेनरी अष्टम का व्यक्तित्व नवयुग के राजाओं के समान था जो इटली में उस समय राज्य करते थे और जिन्होंने कला के क्षेत्र में नयी स्फूर्ति को उत्साह दिया था। इटली के उन राजाओं के समान हेनरी में भी कुशल राजनीतिज्ञ की सूक्ष्म बुद्धि तथा स्वेच्छाचारी राजा की संदेहजन्य निर्दयता एक साथ मिली हुई थी। उसने सामन्त-तंत्र के बचे-खुचे चिह्नों को समाप्त कर दिया और नीचे घरानों के लोगों को राजा की सेवा करने के फलस्वरूप उच्च एवं गौरवशाली पदों पर नियुक्त कर दिया। इस प्रकार उसका दरबार एक ऐसा क्षेत्र बन गया था जहाँ प्रत्येक मनुष्य अपनी बुद्धि तथा पराक्रम द्वारा निरन्तर उन्नति करता चला जा सकता था। किन्तु जो कोई उसकी सेवा द्वारा उन्नति करने की इच्छा रखता था उसे जुआरी की भाँति बड़ा ही सतर्क रहना पड़ता था, क्योंकि उस जुए में दाँव बहुत ऊँचा तथा हार-जीत बड़ी लम्बी होती थी। हेनरी की विदेशी नीति धीरे-धीरे इंग्लैण्ड को यूरोपीय जातियों के निकटतर सम्पर्क में लाती जा रही थी। इंग्लैण्ड उस नवीन सभ्यता के निर्माण में अपना सहयोग प्रदान कर रहा था जिसका विकास उस समय यूरोप में बड़े ज़ोरों से हो रहा था। उसने सभी वृत्ति तथा व्यवसाय के सुप्रसिद्ध लोगों को इंग्लैण्ड आकर बसने को आमंत्रित किया और ऐसे लोगों की सहायता से नये-नये महलों का निर्माण, नये कालेजों की स्थापना करायी और सुन्दर चित्रकारी के नमूने बनवाये। इस प्रकार हेनरी अष्टम के राजत्व-काल में एक नया जीवन लगभग सभी कलाओं में संचारित हुआ और उसका दरबार सुशोभित हो उठा। केवल साहित्यकला में कोई विशेष प्रगति दिखाई नहीं देती थी। यह कह सकना उस समय असम्भव था कि आगामी पचास वर्ष में इंग्लैण्ड साहित्यकला में इतनी उन्नति करने वाला है अथवा ऐसे महान् कवि तथा नाटककार एवं दूसरे लेखक उत्पन्न करके यूरोप के सबसे ऊँचे शिखर पर चढ़कर बैठनेवाला है। यह अवश्य था कि इस काल में इटली की प्रणाली का अनुकरण करके कविता में कुछ नयी जान पड़ गयी थी और यूनान के नाटको के प्रभाव से कुछ नाटक भी लिखे गये थे। किन्तु न यह कविता और नये नाटक उस शक्ति-विशेष का फल अथवा परिणाम कहे जा सकते थे जो नवयुग

से सम्बन्धित थी। कविता में आधुनिकता आ गयी थी और नाटकों में बहुत सा प्राचीन साहित्य का रंग उतर आया था, परन्तु ये कोई चमत्कार की बातें न थीं। यह जरूर था कि यूनान तथा चीन के प्राचीन साहित्य के अध्ययन ने लोगों के विचारों को स्वतंत्र कर दिया था और साहित्य को एक नयी स्फूर्ति दे दी थी तथा प्रसुप्त अंग्रेजी गद्य को पुन. जगा दिया था। अंग्रेजी विश्वविद्यालयों के नवयुवकों की वुद्धि को नया वल मिला था और उस प्राचीन भंडार से उन्हें पौराणिक कथाएँ, इतिहास और तत्त्वज्ञान की प्रचुर सामग्री प्राप्त हुई थी। नवयुग के लेखकों ने इस सामग्री से विविध प्रकार के रूपक, एवं विचार तथा कल्पनाएँ निकालकर अपनी कृतियों में अर्थपूर्ण प्रभाव उत्पन्न किये थे। अनुवाद करनेवालों ने अन्य भाषाओं से अनेकों शब्द लेकर मातृभाषा के कोप में वृद्धि की थी। इन सव लाभों के कारण अब अंग्रेजी भाषा मे नये विचारों तथा नयी भावनाओं को प्रकट करने की क्षमता उत्पन्न हो गयी थी। इस काल मे, यद्यपि इन प्राचीन साहित्यो के अध्ययन पर इतना जोर था, दूसरे यूरोपीय देशो की भाषाएँ अथवा साहित्य भी बड़े उत्साह से पढ़े जाते थे। सुशिक्षित लोग मातृभाषा के अतिरिक्त कई अन्य भाषाओं का पठन-पाठन परमावश्यक समझते थे। नये साहित्य के निर्माण में फ्रांस तथा जर्मनी, इटली तथा स्पेन के सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थो से भी प्रेरणा प्राप्त करना आवश्यक समझा जाता था, जिस कारण अग्रेजी साहित्य में एक प्रकार का बहुमुखी विस्तार उत्पन्न होता जाता था। दिन पर दिन शिक्षित समाज के जीवन में भी एक समग्रता तथा गम्भीरता आती जाती थी। जीवन तथा साहित्य में समस्याओं को सुलझाने की नित्य नयी रीतियाँ सामने आती थीं और उन्हें बड़ी उत्सुकता से समझने की चेष्टा की जाती थी। बहुत प्रकार के अनुभवों से साहित्य की सामग्री बहुरंगी तथा उसकी लेखन-प्रणाली बहुत सफलता प्राप्त कर रही थी। इस बहुमुखी प्रगति का परिणाम यह हुआ कि जिस समय एलिजवेथ के राज्यकाल में अंग्रेजी साहित्य के महान् युग की लालिमा से आकाश रंजित हुआ, तो इंग्लैण्ड में प्रतिभासम्पन्न उन सारे साहित्यकारों के स्वागतार्थ सभी सामग्री प्रस्तुत थी, जिन्होने वहाँ जन्म लिया। साहित्य का कोई भी विभाग ऐसा नहीं रहा था जिसके लिए सामग्री, प्रणाली तथा सुगमता उत्पन्न न हो गयी हो।

एलिज़ावेथ का राज्यकाल

नवयुग की प्रगति का वेग जो कुछ समय के लिए जातीय संशय तथा द्विविधा के कारण थम गया था, अब फिर से जोर पकड़ने लगा और दूर तक फैल गया। मनुष्य

को अपना जौहर दिखाने तथा जीवन में विविध प्रकार से दिलचस्पी उत्पन्न करने के अनेक अवसर प्राप्त होने लगे। मनुष्य का कर्मक्षेत्र पहले से अधिक विस्तृत हो गया था और उसे बड़े बड़े महत्त्वपूर्ण कार्य करने के अवसर भी सुलभ हो गये थे। जो नया संसार मनुष्य के चारों ओर बन रहा था उसमें बाहुबल तथा पराक्रम से वह जो चाहता कर सकता था। प्राचीन साहित्य से प्राप्त ज्ञान तथा विचार की स्वतन्त्रता ने मिलकर परिकल्पी तथा काल्पनिक कार्यों के करने की सुविधा दे दी थी, जिस कारण व्यक्ति के सम्मुख एक ऐसा संसार उपस्थित हो गया था जो पहले की अपेक्षा अधिक नवीन, विस्तृत ओर अवसरों से परिपूर्ण था। ऐसे ससार में मनुष्य को अपने व्यक्तित्व के महत्त्व को पहचानने और अपने आदर्श के अनुसार कार्य करने तथा जीवन व्यतीत करने की सुविधा प्राप्त थी। अब केवल ऐसे आकस्मिक एवं प्रबल उत्साह को आवश्यकता थी जो सर्जनात्मक शक्ति प्रकट करने में सहायक हो। इन नवीन परिस्थितियों ने अंग्रेज़ जाति में एक नयी जान डाल दी थी, जिससे अनुप्राणित होकर उन्होंने सन् १५८८ में स्पेन के जहाज़ी बेड़े को मार भगाया और आकस्मिक उत्साह तथा उत्तेजना के भावों एवं दीर्घ चेष्टा के अवसरों ने उन्हें वैसा ही अवसर दिया, जैसा प्राचीन समय में एथेन्स को मारेथान (Marathon) के युद्ध के पश्चात् प्राप्त हुआ था।

यह बात समझना कठिन नहीं है कि तत्कालीन साहित्य में यह सामयिक उत्साह किस प्रकार प्रवेश करके प्रगति तथा नाटक द्वारा, जो इस समय के सहज एवं स्वाभाविक रूप थे, प्रकट किया गया। परन्तु यह समझना कि किस प्रकार यह उत्साह उस साहित्य द्वारा प्रकट हुआ, जिसे विचार-प्रेरित और कृत्रिम (Conscious and artificial) कहा जाता है, कठिन है। फिर भी इसे जानने की चेष्टा दिलचस्पी से खाली नहीं। जिस देश-प्रेम ने स्पेन के जहाजी बेड़े को परास्त किया था, उसी देश-प्रेम ने इग्लैण्ड की महानता के अनुकूल साहित्य-निर्माण के लिए भी लोगों को प्रेरित किया। अन्य बातों के साथ-साथ लोगों का यह विचार था कि साहित्य का सबसे श्रेष्ठ उद्देश्य शिक्षा देना है और इसलिए रोमासों तथा प्रगीतों के स्थान पर, जिनका प्रचलन उस समय बहुत था, लेखकों ने ज्ञान के विभिन्न विभागों के शिक्षाप्रद ग्रन्थ लिखकर छापेखानों के लिए काम की भरमार कर दी। कवियों के भी विचार धीरे-धीरे बदल रहे थे और वे भी समझने लगे थे कि ऊँची श्रेणी के साहित्य को शिक्षाप्रद होना चाहिए, सैकड़ों कवि जो कहीं अच्छा कार्य कर सकते थे, इस विचार के अधीन इतिहास, दर्शन, भूगोल आदि विषयों पर पद्य में बड़े बड़े ग्रन्थ लिखने

लगे जो गद्य में कहीं अधिक सुगमता से लिखे जा सकते थे। इसी उद्देश्य से कुछ ग्रन्थ ऐसे भी इस काल में लिखे गये जिनसे कवियों और नाटककारों ने सामग्री लेकर बड़े सुन्दर ग्रन्थों की रचना की।

सन् १५६२ में जान फ़ाक्स (John Foxe) ने बुक आफ़ मार्टर्स (Book of Martyrs) नामक पुस्तक लिखी, जिसमें उसने ऐसे स्त्री-पुरुषों का वृत्तान्त लिखा जिन्होंने अपने धर्म के लिए महारानी मेरी के राज्य-काल में अपने प्राणों को वलिदान कर दिया था। इस पुस्तक में उस अध्यवसाय के वीरतापूर्ण उदाहरण मिलते हैं जिन पर उन लोगो का पोषण हुआ था जिन्होंने कुछ काल के उपरान्त बड़ा महत्त्वपूर्ण धार्मिक सुधार किया और जिनके प्रभाव के परिणामस्वरूप बड़ी लगन से उन्होंने अनवरत परिश्रम करने की वृत्ति को अंग्रेज जाति का धर्म वना दिया, जो आगे चलकर हमें प्यूरिटनिज्म (Puritanism) के इतिहास में दिखाई देता है। सन् १५६६ में विलियम पेन्टर (William Painter) ने इटली के कहानी-भंडार से सामग्री लेकर पैलेस आफ प्लेजर (Palace of Pleasure) नामक पुस्तक लिखी, जो इंग्लैण्ड में लोकप्रिय हुई और जिसमें से एलिजेवेथ के काल के वहुत से लेखकों ने अपनी महत्त्वपूर्ण कृतियों के लिए कथावस्तु निकाली। इस पुस्तक से शेक्सपियर तक ने लाभ उठाया और कई कहानियाँ लीं। इस पुस्तक के प्रकाशन के एक ही दो वर्ष उपरान्त ट्रैजिकल डिस्कोर्सेज (Tragical Discourses) नामक वह संग्रह भी सर्वप्रिय हुआ (१५६७), जिसमें इटली के वैन्डेलो तथा सिन्थियो (Bandello and Cinthio) नामक लेखकों की कहानियां थीं, जिन्हें लेकर शेक्सपियर के वाद वाले लेखकों ने भय, मार-काट तथा कामुकता के कथानकों का अपने नाटकों और कहानियों में प्रयोग किया। इस काल में वीरतापूर्ण रोमांसों का चलन कम हो गया था और ऐसा मालूम होता था कि यूनान तथा रोम के साहित्यों का अध्ययन धीरे-धीरे उन्हें पीछे हटाता जाता था। यह भी मालूम होता था कि रोमांसों के स्थान पर इटली के लेखकों की कहानियाँ प्रचलित हो रही थीं। और ऐसा होना स्वाभाविक भी था, क्योंकि इस नये काल में इटली उस नयी सभ्यता तथा उद्देश्यपूर्ण आदर्श जीवन का केन्द्र वन गया था।

जान लाइली

यह कहा जा चुका है कि इस नवयुग (Renaissance) का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को ऐसी शिक्षा प्रदान करना था जिसके द्वारा वह अपनी सारी शक्तियों का

अच्छे से अच्छा प्रयोग करके अपने जीवन को सार्थक कर सके। इस काल में बहुत से लेखकों ने शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को इन्सान बनाना समझा था और वे विद्या को इसलिए प्रशंसनीय बताते थे कि उसके द्वारा चरित्र का निर्माण तथा आचरण की शुद्धि होती है। वे समझते थे कि साहित्य ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जिन्हें जानकर अच्छे आचरण की आदत पड़ती है। जीवन का मुख्य उद्देश्य समत्व स्थापित करना था और धर्म वही ठीक समझा जाता था जो आचरण पर प्रभाव डालकर मनुष्य में अच्छाई उत्पन्न करे। केवल वही मनुष्य धर्मात्मा समझा जाता था जो अपने जीवन में कर्म तथा आचरण द्वारा अपने धर्म को चरितार्थ करता था। इस सिद्धान्त का उदाहरण हमे जॉन लाइली (John Lyly) की पुस्तकों से प्राप्त होता है। जॉन लाइली (१५५३-१६०६) ने आक्सफ़र्ड मे शिक्षा पायी थी जहाँ वह अपने पढ़ने-लिखने के लिए तो कम किन्तु अपनी वाक्पटुता एव बुद्धि-चातुर्य के लिए अधिक प्रसिद्ध था। उसने सन् १५७५ में एम० ए० की उपाधि प्राप्त की और विश्वविद्यालय छोड़ने के पश्चात् वह राज-दरबार की नौकरी के लिए दौड़धूप करने लगा। उसका सारा परिश्रम विफल रहा क्योंकि एलीज़बेथ के दरबार में बिना किसी बड़े सहायक के प्रवेश कर सकना असम्भव था। उसने विश्वविद्यालय छोड़ने के तीन वर्ष के भीतर ही यूफ्यूईज़, दि अनेटमी आफ़ विट (Euphues, the Anatomy of Wit) नाम की एक पुस्तक लिखी जिसने उसे तुरन्त प्रसिद्ध कर दिया और वह अंग्रेज़ी साहित्य में एक नयी शैली का प्रचारक और अधिष्ठाता बन गया। सन् १५८० में उसकी यूफ्यूईज़ ऐण्ड हिज़ इंग्लैण्ड (Euphues and his England) नामक दूसरी पुस्तक प्रकाशित हुई और पहली पुस्तक की भाँति वह भी लोकप्रिय हुई। इन दोनों पुस्तकों के नये सस्करणों की माँग बराबर बढ़ती जा रही थी और चारों ओर लाइली की ख्याति देश में गूँज रही था। अब उसने कोर्ट प्लेज़ (Court Plays) के नाम से नाटकों का एक सग्रह निकाला जो सन् १५८५ में सर्वप्रिय हुआ और लाइली एक विद्वान् लेखक समझा जाने लगा।

जिन गुणों के कारण लाइली विश्वविद्यालय में चतुर कहलाता था, उन्हीं गुणों ने उसे जीवन में यह सफलता भी दी थी। न तो उसने कोई नयी कथा-प्रणाली निकाली थी, न किसी नवीन शैली का आविष्कार ही किया था, फिर भी उसके नाम से साहित्य में एक नया फैशन चल गया था और एक नयी कहानी-प्रथा का नाम उसकी पुस्तकों से जोड़ दिया गया था। उसकी यूफ्यूईज़ (Euphues) नामक पुस्तकें इस काल की सर्वप्रथम रोमांस हैं जो एक नवयुवक की यात्रा और उसकी जीवन-घटनाओं पर

आधारित है। इन रोमांसों में नाइट वर्ग के शौर्य के कार्यों का उल्लेख नहीं किया गया है। वार्तालाप की शैली में यूफ्यूईज वास्तव में एक लम्बा निवन्ध है जिसमें शिक्षा, चरित्र-गठन, व्यक्तिगत गुण व दोष बड़े रोचक ढंग से तत्कालीन रिवाज के अनुसार समझाये गये है, और जैसे शिष्टाचार बढ़ा-चढ़ाकर चॉसर के समय के प्रेम-स्वप्नों में दिखाये जाते थे वैसे ही तकल्लुफ़ की बातें इन पुस्तकों में भी दिखायी और कही गयी है। उस तत्कालीन साहित्य के समान, जो विशेषकर स्त्रियों के लिए लिखा जाता था, यूफ्यूईज़ भी बताता था कि "कामदेव अपने बाण को किस प्रकार चलाकर हृदय को वेधता है।" ये पुस्तके इंग्लैण्ड की सुन्दर स्त्रियों को आदर्श रूप में चित्रित करती हैं, इसलिए कि जिसमें अन्य देशों के लोग उनकी प्रशंसा करें और उन्हें आदर्श मानकर उनकी नकल करे। यूफ्यूईज़ के रोमांस में कथानक का कोई महत्त्व नही है। यूफ्यूईज़ एथेन्स का रहनेवाला एक कुशाग्रबुद्धि तथा उदारचेता नवयुवक है, जो अपने देश के विद्यापीठ से शिक्षा पाकर इटली के नेपिल्स नगर में आता है, जहाँ उसे एक वृद्ध सज्जन मिलता है जो उसे बहुत सी बातों की शिक्षा देता है। वृद्ध सज्जन इस बात पर विशेष जोर देता है कि संसार में सफलता प्राप्त करने के लिए आचरण किस प्रकार का होना चाहिए। उन सारी चेतावनियों को, जो यूफ्यूईज़ को दी जाती है, वह अपने अहंकारवश ठुकरा देता है। इसके उपरान्त यूफ्यूईज की एक युवक से भेंट होती है जिसका नाम फाइलाटस (Philautus) है और जो सम-स्वभावी तथा उसी का-सा रोमांटिक भी है। ये दोनों युवक एक दूसरे के मित्र हो जाते हैं। कुछ दिन बीत जाने पर फाइलाइटस यूफ्यूईज को लुसिला नामक युवती से मिलाता है जो उसकी मँगेतर है। यूफ्यूईज़ जब ऐसे विषयों पर वार्तालाप करता है जो "प्रेम की एकनिष्ठा", "सौन्दर्य तथा चातुर्य की तुलना" से सम्बन्ध रखते है, तो लुसिला (Lucilla) उससे बहुत प्रभावित होती है और उसकी वाक्पटुता की बड़ी प्रशंसा करती है। थोड़े दिनों में यूफ्यूईज़ लुसिला से प्रेम करने लगता है। जब वह लुसिला से अपना प्रेम प्रकट करता है तो वह उसे अपना प्रेमी स्वीकार कर लेती है। फ़ाइलाटस को जब इसकी सूचना मिलती है तो इन दोनों मित्रों का सम्बन्ध टूट जाता है और साथ ही साथ लुसिला और उसके पिता का भी, क्योंकि वह उसकी मंगनी पहले ही कर चुका था। इस समस्या का समाधान स्वयं लुसिला ने किया। उसने यूफ्यूईज को भी त्याग कर अपना विवाह क्यूरिओ (Curio) नामक एक अन्य युवक से करना निश्चय कर लिया और इस प्रकार उसने अपनी अस्थिरता अथवा चंचलता का प्रत्यक्ष प्रमाण दिया। यूफ्यूईज और फ़ाइलाटस दोनों

ने लुसिला को घृणा का पात्र समझकर उसका तिरस्कार कर दिया और इस समान हानि के कारण दोनों का वैमनस्य दूर हो गया और वे मित्रों की भाँति एक दूसरे से विदा हुए। यूफ्यूईज़ यूनान चला गया। चलते समय वह एक छोटी-सी पुस्तिका छोड़ गया जिसमें उसने प्रेमियों के लिए कुछ उपयोगी सीखे लिखी थी और उन्हे ठंडा करने के निमित्त कई नुसखे दिये थे।

लाइली ने एक वर्ष के उपरान्त अपनी पुस्तक का द्वितीय भाग लिखा जिसमे यूफ्यूईज़ तथा फाइलाटस की इग्लैण्ड आने की यात्रा का वृत्तान्त बताया। यह यात्रा नेपिल्स (Naples) की यात्रा के बराबर भी दिलचस्प नही है और उसके अनुभव भी बहुत साधारण से ही है। फाइलाटस कुछ काल तक इग्लैण्ड मे प्रेम की ठोकरे खाता रहा और अन्त मे उसने विवाह करके अपना घर बसा लिया। फाइलाटस के प्रेमकांड के सम्बन्ध में लाइली ने यूफ्यूईज़ से एक वार्तालाप इस विषय पर कराया है कि प्रेमी के लिए अपने प्रेम को गुप्त रखना अधिक आवश्यक है या प्रेम मे स्थिर रहना। कथानक के अन्त मे यूफ्यूईज यूनान बुला लिया जाता है और वहाँ जाकर वह एथेन्स में बस जाता है। शारीरिक तथा मानसिक व्याधियो से पीडित दशा मे वह इटली की स्त्रियों को सम्बोधित करके एक पत्र लिखता है, जिसमे वह इग्लैण्ड और वहाँ की संस्थाओं तथा अग्रेज़ जाति की महिलाओ और शिष्ट मनुष्यो एव इग्लिश साम्राज्ञी का विस्तार से वर्णन करता है। फाइलाटस के नाम एक लम्बा पत्र लिखकर और बहुत प्रकार का परामर्श उसे देकर वह पुस्तक समाप्त कर देता है।

स्पष्ट है कि पुस्तक में जो कुछ कहा गया है वह इस सीधे-सादे कथानक पर किसी प्रकार निर्भर नही। जिस परिस्थिति का इस पुस्तक मे प्रयोग किया गया है, वह उसी प्रकार की साधारण परिस्थिति है जो मध्यकालीन रोमासो मे बहुधा पायी जाती थी। दो मित्र एक ही स्त्री से प्रेम करने लगते है और कथानक के इस बहाने से मध्यकालीन कहानीकार मित्रता की उदारता और प्रेमनिष्ठा का प्रभावपूर्ण चित्रण करने का बड़ा अच्छा अवसर पा जाता था। किन्तु लाइली ने इस कथानक को दूसरे ही मार्ग मे चलाया और अपनी पुस्तक मे वे गुण उत्पन्न किये जिनके कारण हम यूफ्यूईज़ को अंग्रेज़ी भाषा का पहला उपन्यास कह सकते हैं। चरित्र-चित्रण का कोई प्रयत्न नहीं किया गया है और कथानक को विविध विषयो पर निबन्ध लिखने का एक बहाना बनाया गया है। कहीं-कहीं पर ऐसे प्रसग भी उठाये गये हैं जिनमें जीवन की कई समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। शिक्षा, प्रेम, सामाजिक व्यवस्था, धर्म, मित्रों के हृदय की उदारता आदि बहुत से विषयो पर वाद-विवाद

किया गया है। वार्तालाप में वड़े सुन्दर अथवा गूढ़ विचार प्रकट होते है और उनकी व्याख्या की जाती है। नाटकों के क्रियाकलाप के समान कही-कहीं इन पुस्तकों में भी वहुत सी धारणाओं का सजीव चित्रण किया गया है। पुस्तक के नाम में एक ऐसे व्यक्तित्व का आदर्श निहित है जिसका पूर्ण विकास बड़े क्रमिक ढंग से किया गया हो। "यूफ्यूईज" शब्द का अर्थ भी यही है—"सुडौल वाढ़"—और उसके कथानक में कई स्थानों पर इसी आदर्श पर जोर दिया गया है और कथानायक की शारीरिक एवं मानसिक दोनों शक्तियों को बराबर श्रेष्ठता दी गयी है। उसका अंग-सौष्ठव आकर्षक और उसकी बुद्धि कुशाग्र है और उसका व्यक्तित्व ऐसा सम्पूर्ण है कि उसमें कोई दूसरा अंग जोड़ने की आवश्यकता अवशिष्ट नही रहती। यह एक आदर्श का चित्रण-मात्र है, न कि किसी व्यक्ति-विशेष का। लाइली के विचारों के अनुसार चरित्र-निर्माण में धर्म का वड़ा हाथ होता है। संसार में सफल जीवन व्यतीत करने के लिए जिस शिक्षा की आवश्यकता है उसके सम्वन्ध में वार्तालाप करते हुए यूफ्यूईज यकायक वडे उत्साह में आकर कहने लगता है—"दर्शन शास्त्र व्यर्थ है, विज्ञान भी व्यर्थ है और इसी कारण कानून व्यर्थ है, सारी विद्याएँ व्यर्थ है; यदि इनके साथ-साथ ईश्वर के ज्ञान की चाह न हो।"

यूफ्यूईज़ की शैली

लाइली के समय के पाठकों की राय में सीधी-सादी अलंकार-रहित भाषा में लिखी हुई पुस्तकें कोई महत्त्व नही रखती थीं। भाषा में किसी न किसी प्रकार की वनावट लाना आवश्यक समझा जाता था; इसलिए कि विना तकल्लुफ के भाषा में कोई लालित्य उत्पन्न नही हो सकता। लाइली ने अपने लिए एक ऐसी शैली का आविष्कार किया जिसमें उसने आवाज का उतार-चढाव, विरुद्ध अलंकारों का वारम्वार प्रयोग, अनुप्रासपूर्ण सतुलित वाक्य और कई अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग करके भाषा में सौन्दर्य उत्पन्न करने की चेष्टा की। यूनान और रोम के प्राचीन साहित्य के वहुत से हवालों के कारण लाइली की पुस्तको का पढ़ना कठिन है। इन हवालों से यह जरूर जान पड़ता है कि वह वहुत पढ़ा-लिखा लेखक था। वहुधा पाठकों को पशु-जीवन, पक्षी-जीवन, जवाहरात आदि से ली गयी उपमाओं को समझने में कठिनाई होती है, क्योंकि जिन उपमाओं का विश्लेषण करना होता है उनका अस्तित्व केवल लेखक के मन में होता है। फिर भी शैली की इस कृत्रिम सजावट में, जिसे लाइली ने वड़े अध्यवसाय से प्राप्त किया था, वड़े गहन एवं स्वस्थ विचार भरे हुए है। आज

राबर्ट ग्रीन और टामस लाज

जान लाइली के प्रमुख शिष्य राबर्ट ग्रीन और टामस लाज (Robert Greene and Thomas Lodge) थे जो उसी की भाँति विद्वान्, वाक्पटु एवं चतुर मनुष्य थे और विविध प्रकार के विषयों पर उसी कुशलता से लिख सकते थे। कुछ बातों में उनकी कृतियाँ लाइली की कृतियों की अपेक्षा कहीं अधिक आधुनिक हैं, क्योंकि उनकी रचनाएँ ऐसे कथानकों पर आधारित हैं जिनका आदि, मध्य और अन्त निश्चित है और जो जीवन को उसकी प्रवृत्ति तथा बहाव की अवस्था में और घट-नाओं को होते हुए दर्शाती हैं। इस प्रकार का सजीव चित्रण नाटक ने कहानीकारों को सिखाया था। राबर्ट ग्रीन के रोमांसों में से पैन्डास्टो (Pandosto) सर्वप्रिय और फिलोमेला (Philomela) बहुत रोचक तथा मनोहर हैं। इन दोनों रोमांसों का कथानक अपनी पत्नी के प्रति एक पति के व्यर्थ और निरन्तर जलाने वाले डाह पर आधारित है। दोनों रोमांसों में पत्नी सबके सामने निर्दोष प्रमाणित होती है। पैन्डा-स्टो की कहानी में कई परिवर्तन करके शेक्सपियर ने अपने विन्टर्स टेल (Winter's Tale) में उसे अपना कथानक बनाया था। फिलोमेला के पति ने उसके पातिव्रत्य

की कड़ी परीक्षाएँ लीं किन्तु वह उन सबमें खरी उतरी और अन्त में उसके पति के सारे संशय दूर हो गये। फिलोमेला अपने पति की निर्दयता और अविश्वास को क्षमा कर देती है परन्तु इस क्षमा का उसके पति पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ता है कि दो घंटे के उपरान्त इस खुशी के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। एलिज़बेथ-काल के किसी और रोमांस में ऐसा पात्र नहीं मिलता जिसके चरित्र में इतनी कोमलता और मानवता प्रकट की गयी हो।

टामस लाज का रोज़ालिन्ड (Rosalynde) नामक वह रोमांस है जिसे साधारण पाठक जानते हैं। इस रोमांस के जानने का कारण यह है कि शेक्सपियर ने इसका कथानक लेकर अपना ऐज़ यू लाइक् इट (As you Like it) नामक सुविख्यात नाटक लिखा है। लाज का एक और रोमांस, मार्गेराइट आफ़ अमेरिका (A Margarite of America), जो उसने दक्षिण अमेरिका की यात्रा करते समय लिखा था, एक अमानुषिक दानव के निष्ठुर एवं निर्दयतापूर्ण कार्यों का वर्णन करता है, जो अन्त में आत्महत्या करके अपने पापों का प्रायश्चित्त करता है। ग्रीन और लाज दोनों रोमांसकारों की कहानियों में हमें बहुत से क्षेपक, स्वगत-भाषण तथा लम्बे-लम्बे वार्तालाप मिलते हैं, जैसे कि प्राचीन काल के रोमांसों में लिखे जाते थे। प्रेम तथा भावों की व्याख्या इन दोनों लेखकों की पुस्तकों का प्रिय विषय जान पड़ता है। किन्तु इनकी कहानियाँ संक्षेप में कही गयी हैं और इनके कथानक बड़ी कुशलता से सगठित किये हुए है। जो गीत और कविताएँ रोमांसों के बीच में आयी हैं वे पुराने रोमांसों की कविता की अपेक्षा बहुत सुन्दर हैं। यह विशेषता लाज के रोमांसों में बड़ी सुन्दरता उत्पन्न करती है और लेखक के कवित्व का परिचय देती है।

लोकप्रिय लेखक

उन लेखकों के अतिरिक्त, जो एलिज़बेथ के दरबार से सम्बन्ध रखते थे, अथवा जिन्हें दरबार के प्रभावशाली सामन्तों की सहायता प्राप्त थी, बहुत से अन्य लेखक इस काल में ऐसे भी थे जिन्होंने साहित्य को अपनी जीविका कमाने का साधन बना लिया था। ये लेखक बहुधा विश्वविद्यालयों की शिक्षा प्राप्त किये हुए परन्तु शिक्षित समाज से बहिष्कृत थे। इस प्रकार के लेखक बड़े इन्द्रियलोलुप, आवेशपूर्ण एवं असंयमित स्वभाव के व्यक्ति थे, जिन्हें सामाजिक तथा नैतिक मर्यादा की किंचित् परवाह नहीं होती थी। इन लेखकों में ये सारे अवगुण उनकी उस चेष्टा का परिणाम

थे जो वे अपने व्यक्तित्व की सत्ता स्थापित होने के लिए करते थे। अपने अव्यवस्थित जीवन के कारण अपकीर्ति एवं महान् दुःख उठाने से ये लोग ऐसी कहानियों के प्रमुख पात्र बन गये थे जो साहित्य में प्रसिद्ध दुःखान्त कथाएँ कहलायीं। इन्ही लेखकों में से एक मार्लो (Marlowe) था जो शराबखाने में झगड़ा करके छुरी के घाव खाकर मरा था। दूसरा लेखक जिसका नाम राबर्ट पील (Robert Peele) था, दुराचार का जीवन व्यतीत करने से क्षय रोग में ग्रस्त होकर बुरी मौत मरा। कहा जाता है कि ग्रीन (Greene) भी अधिक भोजन करने और बहुत शराब पीने के कारण अचानक मृत्यु को प्राप्त हुआ। कुछ ऐसे भी लेखक थे जो फ़ाके करते-करते खत्म हुए।

ये सभी लेखक अपनी जीविका के लिए पुस्तकें लिखते एवं बहुधा नाटक का सहारा लेते थे, जिनकी इस समय में बहुत माँग थी और जो अभिनय करनेवाली संस्थाओं के हाथ बेचे जा सकते थे। रोटी कमाने के काम के साथ-साथ इनमें से कुछ लेखक सुन्दर साहित्यिक रचना भी करते थे। ऐसे लेखकों ने बहुत सी जीवनियां, यात्राओं के वर्णन तथा कहानियाँ और विभिन्न विषयों पर निबन्ध तथा पुस्तिकाएँ लिखी थीं। ये लेखक नकल करने में बड़े कुशल थे और दूसरों की रचनाओं के आधार पर लिखकर पुस्तकें प्रकाशित करते थे। इनमें से कई को निन्दा करने में आनन्द आता था, कुछ वादाविवाद के शौकीन होते थे; बाज़ लेखक वास्तव में साहित्यकार भी होते थे जो स्वाभाविक ढंग से अपनी अनुभव की हुई और जानी हुई बातों को अपनी भाषा में लिखते थे। ये कृतियाँ कभी-कभी ऊँचे दर्जे के साहित्य के गुणों के कारण बिल्कुल अलग पहचानी जाती थीं और उनमें से बहुत सी आज भी जीवित है।

स्पेन के रोमांस

ये लेखक अपनी रचनाओं की सामग्री बड़ी दूर-दूर से प्राप्त करते थे और उसे प्रयोग करके अपने रोमांस, नाटक, उपन्यास आदि लिखते थे। एलिज़बेथ के राज्यकाल में विभिन्न प्रकार का साहित्य इन्ही लेखको के उद्योग से उत्पन्न हुआ था। आर्मेडा (Armada) की पराजय के पश्चात् स्पेन की ओर बहुत लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ। इस काल में स्पेन को लोग रोमांस का घर समझते थे। एमेडिस डिगाला (Amadis de Gaula) नामक वीरतापूर्ण रोमांस के कई प्रतिरूप इस समय फ्रांसीसी भाषा में बहुत दूर-दूर प्रचलित थे और बड़े चाव से पढ़े जाते थे, इस रोमांस में वेल्स का राजा लेसर ब्रिटेन के राजा की पुत्री से प्रेम करता है और इन

दोनो से एमेडिस नाम का एक पुत्र उत्पन्न होता है, जिसे नाव में रखकर बहा दिया जाता है। जब लोग उस बच्चे को नाव में से निकालते हैं तो उसका नाम "समुद्र का पुत्र" रख दिया जाता है। यह बालक बड़ा होकर बहुत पराक्रमी, वीर पुरुष निकला जिसने अपने कामों से देश में धूम मचा दी और वह अद्वितीय योद्धा समझा जाने लगा। एमेडिस को भी ग्रेट ब्रिटेन की राजकुमारी से प्रेम हुआ, जिसकी मँगनी पहले ही रोम के सम्राट् के साथ हो चुकी थी। एक विकट युद्ध के उपरान्त, जिसमें रोम का जहाजी बेडा नष्ट हो जाता है और रोम का सम्राट् मारा जाता है, एमेडिस राजकुमारी को छुड़ा लाता है। इसके उपरान्त एमेडिस और ग्रेट ब्रिटेन के राजा के सम्बन्ध अच्छे हो जाते हैं और कहानी हँसी-खुशी के वातावरण में समाप्त हो जाती है। इस रोमांस के कथानक पर विविध प्रकार के हेर-फेर करके बहुत से रोमांस लिखे गये जो लगभग एक शताब्दी तक लोकप्रिय रहे, यहाँ तक कि उनकी हँसी उड़ायी जाने लगी और सर वैन्टीज़ ने अपनी महत्त्वपूर्ण डान क्विग्ज़ाट नामक पुस्तक (Don Quixote) लिखकर रोमांस का सही अर्थ समझाया और यह बताया कि रोमांस किस प्रकार मनुष्य-जीवन को नैतिक सिद्धान्तों की कसौटी पर कसता है। इस पुस्तक का बहुत अच्छा प्रभाव हुआ और एमेडिस डीगाला के रूपान्तरों का ऐसा उपहास किया गया कि थोड़े ही वर्षो में वे ग़ायब हो गये। एमेडिस डीगाला (Amadis de Gaula) का सर वैन्टीज़ ने निरादर नहीं किया। डान क्विग्ज़ाट ने जहाँ अपनी आज्ञा से शिवैलरी के रोमांसों (Romances of Chivalry) की होली जलवायी थी वहाँ एमेडिस डीगाला को उसने अपनी ही आज्ञा से आनेवाली पीढ़ियों के अध्ययन के लिए सुरक्षित रखवाया था। कुछ दिनों के उपरान्त सर वैन्टीज़ ने गैलेशिया नामक दूसरे प्रकार का रोमांस लिखा, जो पुराने रोमांसों से किसी तरह कम अस्वा-भाविक नही था। गैलेशिया (Galatea) सैनाज़ारो के आर्केडिया नामक रोमांस के नमूने पर लिखा गया था। इसी आर्केडिया (Arcadia) ने इससे पहले माण्टीमियर (Montemayor) को डायना इनैमोराडा (Diana Enamorada) नाम का रोमांस लिखने को प्रेरित किया था। ये सब रोमांस पैस्टोरल रोमांस (Pastoral romance) कहलाते है और ये गद्य में लिखे गये है। इनके बीच-बीच में गीत और तरह-तरह की कविताएँ भी डाली जाती है जिसके कारण वातावरण चित्त-विक्षोभ करनेवाला हो जाता है। इनके कथानक में गड़रियों के आदर्श प्रेम का सुन्दर वर्णन किया जाता है। इस प्रकार के रोमांस इस समय इंग्लैण्ड में लोकप्रिय हो गये थे और कई लेखक स्पेन से प्रेरणा लेकर अंग्रेजी

ढंग से लिखते भी थे। सन् १५८० मे सर फिलिप सिडनी (Sir Philip Sidney) ने इसी प्रकार का जो रोमांस अपनी भगिनी के मनोरजन के लिए लिखा था, वह सब से उत्तम समझा गया था और वह आज भी अंग्रेजी साहित्य मे जगद्-विख्यात है।

सर फ़िलिप सिडनी

सर फिलिप सिडनी का जन्म १५५४ में एक ऊँचे घराने मे हुआ था। उसने आक्सफर्ड विश्वविद्यालय मे शिक्षा प्राप्त की थी और उस समय की रीति के अनुसार अपनी शिक्षा को पूर्ण रूप से सफल बनाने के लिए वह पेरिस, वियेना तथा इटली मे भ्रमण करने और मिलने-मिलाने के लिए गया था। इन देशों से लौट आने पर वह एलिजबेथ के दरवार मे सम्मिलित हो गया, जहाँ अपनी अवस्था से अधिक गम्भीर होने पर भी तथा बिना किसी भारी प्रयत्न के वह सब का प्रेमपात्र हो गया। राज-दरबार मे सिडनी की गणना उन व्यक्तियो मे की जाती थी जो उस समय के बहुत ऊँचे राजनीतिक विचारो के लिए प्रसिद्ध थे और जो प्रत्येक समस्या को स्वय हल करने का प्रयत्न करते थे। वह उन सारे विपयो पर अपने स्वतन्त्र विचार रखता था जो तत्कालीन समाज को कभी कभी कठिनाई मे डाल देते थे और जिनके बारे मे लोग बहुमत के अनुसार सोचते और काम करते थे। सिडनी की नियुक्ति कई राज-न तिक आयोगो मे की गयी और वह जर्मनी तथा आस्ट्रिया भेजा गया। वह इग्लैण्ड की नाविक शक्ति को बढाने का बहुत अच्छी तरह कायल था और वह स्वय ड्रेक के बेडे के साथ स्पेन के विरुद्ध आक्रमण मे भाग लेना चाहता था। सन् १५८५ मे वह अंग्रेजी सेना के साथ डच लोगो को स्पेन के आक्रमण से बचाने गया था और १५८६ मे जुटफेन (Zutfohen) के बचाव के लिए वह वालटियर की हैसियत से एक मोर्चे पर लडाई मे जखमी होकर मारा गया था। जब कि लड़ाई के मैदान मे वह जखमी होकर पड़ा था ओर उसके प्राण निकल रहे थे, तो उस समय उसने अपने पीने का प्याला दूसरे जखमी सिपाही को दे दिया और कहा—"मेरी जरूरत की अपेक्षा तुम्हारी आवश्यकता अधिक पीडा देनेवाली है।"

सर फिलिप सिडनी का नाम अंग्रेजो को उन राष्ट्रीय एवं व्यक्तिगत उच्च आदर्शों का स्मरण कराता है जो एलिजबेथ काल से सम्बन्धित समझे जाते है। जिन बड़े आदमियो का हाल हमे उन पुस्तको से मालूम हुआ है जो इस काल की है, उनमे एक भी सिडनी के बराबर गुणो से सम्पन्न नही दिखाई देता। किसी दूसरे व्यक्ति में वे गुण नही मिलते जिनके कारण सिडनी की इतनी अधिक प्रशंसा की जाती है

और उसे ऐसे प्रेम तथा सम्मान से याद किया जाता है। अंग्रेज़ी साहित्य के क्षेत्र में किसी दूसरे लेखक ने इतनी कम पुस्तकें लिखकर इतनी अधिक ख्याति प्राप्त नहीं की, जितनी सर फिलिप सिडनी ने। उसका जन्म ऐसे समय में हुआ था जब प्यूरिटन (Puritan) विचारों के प्रचार के साथ-साथ इंग्लैण्ड के साहित्यकारों में इस समस्या पर बड़ा मतभेद हो रहा था कि यूनान और रोम की प्राचीन प्रणाली पर अंग्रेज़ी साहित्य का निर्माण किया जाय या अपनी रुचि तथा अपनी विशेष जातीय संस्कृति के अनुसार अंग्रेज़ साहित्यकार उसका निर्माण करें। सिडनी ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर प्राचीन समय की प्रणाली के अनुकरण करने का विरोध किया और आधुनिक साहित्य को आधुनिक संसार से सम्बद्ध रखने का अनुरोध किया। उसने उस स्वतन्त्रता पर ज़ोर दिया जो नवयुग में मनुष्य ने बड़ी मुश्किलों से स्थापित कर पायी थी। सिडनी अच्छी तरह जानता था कि कुछ काल पहले जब यह वाद-विवाद उठाया गया था, तो कैसे उस रोमाण्टिक प्रवृत्ति के विकास में बाधा पड़ी थी जो चॉसर के बाद देश में उत्पन्न हुई थी। अपने मत के समर्थन के लिए सिडनी ने सन् १५७९ में डिफ़ेन्स आफ़ पोयसी (Defense of Poesie) नामक बड़ी महत्त्वपूर्ण पुस्तक लिखी और एक ओर उसने अंग्रेज़ी साहित्य को प्राचीन विदेशी प्रणाली से बचाया और दूसरी ओर उसने एलिज़बेथ के राज्यकाल के सुविख्यात शेक्सपियर जैसे लेखकों के लिए रास्ता साफ़ किया। डिफ़ेन्स आफ़ पोयसी के सिवा सिडनी ने कोई दूसरी पुस्तक प्रकाशित नहीं की थी। पहले तो उसने लिखा ही बहुत कम, फिर जो कुछ लिखा भी वह केवल अपने अथवा थोड़े से मित्रों के मनोरंजन के लिए लिखा और उन्हीं के बीच पाण्डुलिपि में वे पुस्तकें प्रचलित भी रहीं। पहले सन् १५९० में आर्केडिया (Arcadia) और फिर उसके एक वर्ष के बाद १५९१ में एस्ट्रोफ़ेल एण्ड स्टेला (Astrophel and Stella) प्रकाशित की गयीं और इन पुस्तकों ने सिडनी के व्यक्तित्व को तथा उसके उदात्त स्वभाव को भली-भाँति प्रकट किया। सिडनी की अनुपम प्रतिभा के साथ-साथ ये पुस्तकें एलिज़बेथ-काल के शिक्षण तथा शिष्टाचार के उस आदर्श को भी दर्शाती हैं जिसका वह स्वयं बड़ा सुन्दर उदाहरण था।

सिडनी की आर्केडिया

सन् १५८० में, जब सिडनी राज-दरबार से अलग होकर एकान्तवास कर रहा था, तब उसने अपनी बहिन का मनोरंजन करने को आर्केडिया (Arcadia)

लिखी थी। लेखन-कार्य में उसे भी बड़ी दिलचस्पी थी क्योंकि वह देखना चाहता था कि अंग्रेज़ी में किस प्रकार वैसे रोमांस लिखे जा सकते है जो उस समय स्पेन तथा इटली में लोकप्रिय हो रहे थे। इन रोमांसों की पृष्ठभूमि कोई मनोरम और हरी-भरी सुन्दर घाटी हुआ करती थी और इनका कथानक गडरियों के जीवन से लिया जाता था। इस प्रकार का क्षेत्र यूनान में आर्केडी के नाम से प्रसिद्ध था और वहाँ के निवासी अपने सन्तोष तथा आनन्दमय जीवन के लिए साहित्य में प्रसिद्ध थे। सिडनी ने अपनी पुस्तक का नाम उन्हीं लोकप्रिय रोमांसों के आवार पर रखा और दृश्य तथा पात्र ही नहीं, वल्कि सारा वातावरण सेनाज़ारो (Sennazaro) की आर्केडिया का-जैसा चित्रित किया। सिडनी की आर्केडिया मे विस्तृत हरी घास के मैदान है जिन पर ऊँचे वृक्ष सिर उठाये खड़े है और चारों ओर गुलाव तथा वायोलेट के फूल खिले है, जिनकी महक से सारा मैदान सुगन्धित हो रहा है। इस पृष्ठभूमि पर उसने प्रेम तथा त्याग और शिष्टाचार के उदात्त भावों से परिपूर्ण घटनाओं के चित्र खीचे है। आर्केडिया का कथानक वहुत पेचीदा है, जिसमे प्रेम और साहस की कहानी ऐसे सरल स्वभाव के लोगों के जीवन से सम्वन्ध रखती है जो अपने गुणों के कारण कविता में प्रसिद्ध रहे है। मूसीडोरस और पाइरोक्लीज (Musidorus and Pyroclis) की प्रेम-कहानी ठीक उसी प्रकार की है जैसी कहानियो की कल्पना डान क्विग्जाट (Don Quixote) को वहुत पसन्द थी। इस लम्वी कहानी के अन्तर्गत दूसरे पात्रों की कही हुई वहुत-सी कहानियाँ है और कहानियों के वीच-वीच वर्जिल (Virgil) और थियाक्रिटस (Theocritus) की जैसी अनेकों कविताएँ है, जिनके कारण कहानियों की रोचकता और भी वढ़ गयी है। इन कविताओं में गडरिये अपने सीधे-सादे ग्रामीण जीवन की प्रशसा करते है और प्रेम के गीत सुनाते हैं। इन लक्षणो के कारण सिडनी की आर्केडिया को नाइटहुड (Knighthood) के साहसिक रोमासो और गड़रियो के शान्तिमय प्रेम के रोमांसों के वीच समझना चाहिए। एलिजवेथ के काल मे तीन प्रकार के रोमास प्रचलित थे—शिवलरी के रोमांस (Romances of Chivalry), जैसे आर्थर और उसकी राउन्ड टेवल (Round Table) के नाइटों की वीरता की कहानियाँ; दूसरे साहसिक कृत्यों की कथाएँ जिनके कथानक में अनेको वाधाओं के कारण नायक और नायिका का निश्चित मिलन कुछ काल के लिए स्थगित हो जाता है और उनके प्रेम का उद्वेग वाधाओं और रुकावटों के कारण वढ़ता जाता है; तीसरे रोमास गडरियो के शान्तिमय जीवन की कथाओं के थे जिनमें नाइट लोग और उच्च स्तर की महिलाएँ

गडरियो का वेष धारण करके सुन्दर तथा मनोरम स्थानों में बैठकर ऐसे प्रेम की कहानियाँ कहते है जिनमें न तो नैराश्य है, न पराजय और जिसे किसी प्रकार के परिणाम का कभी भय नही होता। सिडनी की आर्केडिया इन तीनों प्रकार के रोमांसों की सन्धि है जिसमे शान्ति पर विशेष ध्यान दिया गया है। दरवार से अलग होकर इस समय सिडनी एकान्त-वास में था। उसका शान्तिमय जीवन उन सारी उलझनो और दौड़-धूप से मुक्त था जो दरवारी व्यापार से सम्बन्धित होती है और इसी कारण वह दोनो प्रकार के जीवन का भेद भी भली प्रकार समझता था। उसकी आर्केडिया एक प्रकार की सुन्दर तथा बड़ी-लम्बी-चौड़ी घाटी अथवा गुफा है, जिसमे वह ससार के झंझटो से मुँह मोड़कर शान्ति से अपना जीवन विता रहा है। ऐसे ही कुछ कारणों से एलिजवेथ काल में यह तीसरे प्रकार के रोमास सर्वप्रिय भी हुए थे। वल्कि या कहना चाहिए कि उन सभी देशों में जो अव नवयुग (Renaissance) की व्यग्र उत्तेजना तथा तीव्र साधना से कुछ थकने-से लगे थे, यह रोमास लोगो को अधिक पसन्द आने लगे थे। इन रोमासो के वातावरण मे शान्ति थी, जिसे वे ढूढते थे।

आर्केडिया का वातावरण तथा लेखन-प्रणाली

आर्केडिया के लिखने मे सिडनी के सामने एक कठिन समस्या थी। वह पैस्टोरल रोमास (Pastoral romance) लिखना चाहता था जिसकी कुछ अपनी ही विशेषताएँ थी। इस प्रकार के रोमांस में पात्र एक दूसरे को भली भाँति जानते और समझते थे, जिसके कारण उनके बीच न तो अविश्वास और न मिथ्या-वोध ही हो सकता था। दूसरी विशेषता यह थी कि ये स्त्री व पुरुप वड़ा स्वाभाविक और सरल जीवन व्यतीत करते थे तथा सहज प्रेरणा के अनुकूल उनका प्रेमालाप होता था और प्राकृतिक प्रवृत्ति से वे एक दूसरे को रिझाते तथा खिझाते भी थे। एलिजवेथ काल मे समाज तथा लोगो के तरीके वहुत कुछ वदल गये थे और मनुप्य का सभ्य जीवन अव चारो ओर से परिमित हो चुका था। सिडनी की समस्या यह थी कि वह किस प्रकार उस वातावरण को तथा स्थितियों को अपनी कल्पना द्वारा साकार करे कि अपने सोलहवी शताव्दी के पात्रों के लिए पैस्टोरल जीवन सुलभ हो जाय। इस जीवन को तथा उसकी घटनाओं को सम्भव के और असम्भव के वाद-विवाद से भी वचाना था और यह भी आवश्यक था कि कोई आकस्मिक घटना भी न लायी जाय, जिसके कारण भावों की वास्तविकता समाप्त हो जाय। इन्ही

विचारों के वश में सिडनी को एक मायावी संसार की पृष्ठभूमि उत्पन्न करनी पड़ी, जिसकी सारी वस्तुएँ स्वप्न की जैसी अनिश्चित तथा मुन्दर हैं। साधारण वस्तुओं का आकार छिपाने के लिए उसे दृश्यों पर स्वच्छ और श्वेत चाँदनी छिटकानी पड़ी, जिससे स्थूल नित्य संसार को स्वर्गवत् सुखमय दिखाया जा सके तथा पात्रों को परियों अथवा अप्सराओं की-सी सुन्दरता दी जा सके। सिडनी को यह सब इसलिए करना पड़ा क्योंकि वह जीवन जिसमें सदा स्थिर रहनेवाला प्रेम तथा अमर मित्रता एवं निष्कलंक सतीत्व हो, ऐसे ही संसार में हो सकता है और उसे ऐसा ही जीवन आर्केडिया में चित्रण करके दिखाना था। मनुष्य-जीवन के वे आदर्श जिन्हें वह स्वयं भी प्रत्यक्ष करना चाहता था, ऐसे ही निर्मल संसार में सिद्ध हो सकते थे। और फिर ऐसे लोग जिनके जीवन के चित्र वह खींचना चाहता था, निराकृति होकर इसी प्रकार के स्वर्ग में रह भी सकते थे। सिडनी ने महाकाव्य की प्रणाली पर अपनी कहानी का आयोजन किया, जिसके कारण वह वहुत-सी प्रासंगिक उपकथाएँ उसमें सम्मिलित कर सका। ये उपकथाएँ रोमांसों की विशेषता होती थीं, क्योंकि इनके द्वारा रोमांसकार आवश्यकता के अनुसार ऐसे प्रसंग उठा सकता था जो असल कहानी के बाहर होने पर भी विषय पर प्रकाश डालते थे।

सिडनी अपने को नाटककार की भाँति घटनास्थल से दूर नहीं रखता, वल्कि अवसर पाते ही कभी अपनी सहानुभूति प्रकट करके, कभी अपना अविश्वास व्यक्त करके, कभी किसी सिद्धान्त पर विचार करके और कभी उपदेश देकर अपनी उपस्थिति को जताता रहता है। आर्केडिया में बहुत-सा लालित्य इस कारण उत्पन्न हो गया है कि सिडनी ने उसके कथानक का चिन्तन एक काव्य के रूप में किया था और फिर उसे गद्य में लिखा था। उसने शैली भी वह पसन्द की जो प्रगति की जैसी तीव्र भावना उत्पन्न कर सकती है और कल्पना को प्रत्यक्ष के बन्धन से मुक्त कराकर निराकार के दर्शन कराती है। यह रोमांस केवल उच्च कोटि की कविता की भाषा में लिखा जा सकता था, जिसका उसने प्रयोग किया। उसने अपने गद्य को कविता के अलंकारों से विभूषित किया और ऐसा करके आगामी सौ वर्ष के लिए अंग्रेजी भाषा की उन्नति का संचालन किया।

वास्तविकता की नयी प्रथा

एलिजवेथ के दरबार की महिलाएँ जो कुछ दिन पहले यूफ्यूइज़् की भाषा बोलती थीं, अब आर्केडिया के प्रभाव में आकर उसके रंग में रँग गयीं। नाटककार

आर्केडिया का रंग उड़ाने लगे और उसकी उपकथाएँ नाटकों के कथानक वन गयीं। नहीं मालूम कितनी कविता उसके दृश्यों तथा परिस्थितियों को लेकर लिखी गयी। शेक्सपियर ने भी उसकी भाषा का वहुत कुछ अनुकरण किया और वेष वदलकर स्त्रियों को पुरुष और पुरुषों को स्त्री के रूप में प्रस्तुत करने की तर्कीब सीखी। इन पैस्टोरल रोमांसों की अलंकृत भाषा का रिवाज समाप्त होने पर भी वहुत दिनों तक आर्केडिया से अंग्रेजी साहित्य प्रभावित रहा और सिडनी की भावुक तथा वैश्लेषिक रीति का अनुकरण उपन्यास लिखनेवालों ने उस समय भी जारी रखा जब अंग्रेजी गद्य ने कविता से सुन्दरता के गुण ग्रहण करना वन्द कर दिया। इस वीच में स्पेन से एक नये प्रकार की कहानियों का नमूना आकर देश में प्रचलित हो चुका था। यूफ्यूईज और आर्केडिया दोनों ही अभिजात वर्ग से सम्वन्धित थे, क्योंकि वे नाइटों तथा भद्र पुरुषों के सामर्थ्य और उनके सद्‌गुणों की याद दिलाकर उनकी रक्षा करते थे। जो कहानियाँ जनता में लोकप्रिय हो रही थीं वे इनके आदर्श से ठीक उलटे आदर्श को उनके सामने रखती थीं। ऐसी कहानियों के लेखक वे लोग थे जो विरादरी से निकाले हुए, विश्वविद्यालयों की शिक्षा प्राप्त करके साहित्य से रोटी कमाते थे। इन लेखकों ने नाटक के सहारे अपना साहित्य का व्यापार प्रारम्भ किया, परन्तु कहानी-साहित्य की ओर धीरे-धीरे खिंच आये। इन कलातरंगियों में से कई लेखक यूफ्यूईज और दूसरे रोमांसों के विरुद्ध आपवीती लिखकर लोकप्रियता प्राप्त कर रहे थे। रावर्ट ग्रीन (Robert Greene) जो इन्हीं कलातरंगियों में का एक लेखक था इस समय लन्दन के धूर्तों तथा ठगों की कुरीतियों पर छोटे छोटे निवन्ध और पुस्तिकाएँ लिख रहा था। उन पुस्तिकाओं में वास्तविक जीवन के अनेकों चित्र खींचकर धूर्तता को वस्त्रहीन करके दिखाया गया था और साथ ही कहानी-साहित्य में वास्तविक जीवन को किस प्रकार व्यवहार में लाया जा सकता है यह भी वताया गया था। लेखक को धूर्तों का पूरा ज्ञान था और वह उनकी ठगी के ढंगों को स्वयं देख चुका था। ग्रीन की पुस्तिकाएँ वड़ी सर्वप्रिय हुईं और उनके नमूने पर ग्रीन के मित्र टामस नैश ने अपनी कहानियों में लन्दन के वास्तविक जीवन का चित्रण आरम्भ किया।

टामस नैश और धूर्तता के रोमांस

टामस नैश (Thomas Nashe) का जन्म सन् १५६७ में हुआ था। केम्ब्रिज विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त करके उसने फ्रांस और इटली में ख़ूव

भ्रमण किया और इंग्लैण्ड लौटने पर वह प्यूरिटन (Puritan) सम्प्रदाय के विरुद्ध वादविवाद में पड़ गया। वह दूसरे कलातरंगियों (Bohemians) की भाँति साहित्यप्रेमी और लेखक था, जो बड़ा हँसमुख तथा उन्हीं लोगों जैसा असं-यमी भी था। उसे मोद-प्रमोद की कहानियों में बड़ी रुचि थी। उसका स्वभाव पत्रकारों (Journalist) जैसा था और वह अपने अनुभव किये हुए सामयिक विषयों पर व्यंग्यात्मक शैली में पत्रिकाएँ लिखता था। ये पत्रिकाएँ इस समय बड़े चाव से पढ़ी जाती थीं। टामस नैश का अंग्रेजी उपन्यास के इतिहास में विशेष महत्त्व इस कारण है कि उसने पहले-पहल कहानियों में एक नया नमूना प्रस्तुत किया था। यह नमूना नैश ने उन कहानियों से प्राप्त किया था जो इस समय स्पेन देश में प्रचलित हो रही थीं। इन कहानियों में भ्रमणशील नाइट, जो होली ग्रेल (Holy Grail) की खोज में अपने जीवन को विताते और सैकड़ों आपत्तियां सहते थे, पात्र नहीं बनाये जाते थे; बल्कि उनकी जगह पर ऐसे धूर्तों को पात्र बनाया जाता था जो अपनी चालबाज़ी और ठगी से काम निकालते और निर्वाह करते थे। इस प्रकार की कहानियों को पिकैरेस्क (Picaresque) कहते थे। स्पेन की भाषा में पिकेरो (Picaro) शब्द का अर्थ धूर्त है और इसी से ये कहानियाँ पिकैरेस्क कही जाती हैं। सोलहवीं शताब्दी के मध्य काल में लैज़ेरीलो डि टार्म्स की जीवनी The life of Lazarillo de Tormes नामक रोमांस प्रकाशित हुआ था। कुछ ही समय के उपरान्त माटिओ आलीमन (Mateo Aleman) ने उसकी नक़ल कर दूसरा गुज़मन डि अलफ़राशे (Gugman de Alfarache) नामक रोमांस लिखा, जिसका सन् १६२२ में अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद किया गया। ये दोनों रोमांस लेखकों को इतने पसन्द आये और इनकी सामग्री में उन्हें इतना महत्त्वपूर्ण अवसर मिला कि प्रति वर्ष कई ऐसे रोमांस लिखे जाने लगे। स्वयं सर्वान्टीज़ (Carvantes) ने भी ऐसे रोमांस को पसन्द किया और अपने नोवेलाज एग्ज़ेम्प्लेयरज़ (Novellas Exemplaras) में धूर्तता के बड़े सुन्दर तथा अर्थपूर्ण चित्र खींचे। लैज़ेरीलो डि टार्म्स में सालामाँका के निकट टार्म्स नदी के किनारे रहनेवाले एक पनचक्की चलानेवाले के लड़के की कहानी है, जो एक अंधे मनुष्य की नौकरी करता और उसे तरह-तरह के धोखे देता है। एक मालिक को वदलकर दूसरे मालिक की नौकरी करते हुए लड़के की जीवनी कहानी को विस्तार देती है। लेखक ने अपने समय के बहुत से विभिन्न स्तरों के लोगों के व्यंग्यात्मक चित्र दिये हैं। लड़के को मालिक भी खूब मिलते रहे और वह उन्हें

अच्छी तरह ठीक भी करता रहा। अन्त में लड़का टालेडो में ढिंढोरा पीटने की नौकरी कर लेता है। गुज़मन डि अलफ़राशे में वड़े हास्यप्रद रेखा-चित्र ऐसे लोगों तथा दृश्यों के दिये गये हैं जो तत्कालीन स्पेन में सामान्य हो रहे थे। गुज़मन भी वहुत से पेशे करता है और तरह-तरह की तरकीवें तथा चालाकियाँ काम में लाता है। वह अपना जीवन रसोईघर के वरतन माँजने के काम से प्रारम्भ करता है और अवसर के साथ-साथ अपना पेशा वदलता जाता है। वह कुछ दिन चोरी करता है, फिर भद्रपुरुष वन जाता है और वाद को भीख माँगने का पेशा करता है। हमारे सामने वह सिपाही की हैसियत से भी आता है और फ्रांस के राजदूत की नौकरी में भी। प्रत्येक जगह पर उसे अपनी प्रकृति अथवा वातावरण तथा मालिकों द्वारा धूर्तता और चालाकी से काम लेने को प्रेरित होना पड़ता है। कथावस्तु वहुत साधारण है किन्तु उसमें व्यक्ति और समाज का चित्रण करने का अवसर वहुत विस्तृत है।

दि अन्फ़ार्चुनेट ट्रैव्लर

टामस नैश ने इन धूर्तता के रोमांसों का अंग्रेज़ी में अनुसरण किया और सन् १५९४ में दि अन्फ़ार्चुनेट ट्रैव्लर (The Unfortunate Traveller) नामक पुस्तक लिखी। यह एक अंग्रेज़ लड़के के कृत्यों की कहानी है जो निःसहाय, यूरोप में अपना जीवन व्यतीत करने पर तुला हुआ है। हेनरी अष्टम के नौकरों में जैक विलटन नाम का एक युवक था, जव वह टूर्ने (Tournay) का अवरोध कर रहा था। यह युवक किसी प्रकार अपनी वुद्धिचातुरी से अपना निर्वाह करता और वात-वात पर पीटा जाता था। वचपन से ही उकत की सूझती थी और किसी न किसी को वह अपनी चालाकी का शिकार वनाता रहता था। वह किसी प्रकार मंस्टर जा पहुँचता है और वहाँ जान आफ़ लीडेन को फाँसी लगते देखता है। फिर वह सरे के अर्ल की नौकरी में इटली पहुँचता है जहाँ वह स्वयं को अर्ल आफ़ सरे (Earl of Surrey) वताकर एक इटैलियन वेश्या को लेकर भाग जाता है। एक अवसर पर अर्ल आफ़ सरे उसे पहचान लेता है किन्तु उसका भरम वनाये रखता है। विलटन प्लेग के समय रोम में रहता है और उस आपत्तिकाल में मनुष्यों की मानवता तथा चरित्र को परखता है। जो कुछ वह इस समय वहाँ देखता और सुनता है, उसका उसके हृदय पर वड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है और उसमें परिवर्तन होता है। भगायी हुई वेश्या से वह विवाह कर लेता है और भले आदमी की तरह जीवन विताने लगता है। टामस नैश ने अपनी कहानी की सामग्री में वहुत-सी वातें इस प्रकार लिख दी है जैसे उसने उन्हें होते देखा हो। वहुत-से लोगों का

वार्तालाप, बड़े बड़े लोगों से मुलाक़ातें और बहुत-सी घटनाओं का वर्णन जो इस रोमांस में दिया गया है सब काल्पनिक है। नैश एक पत्रकार (Journalist) था और यह उसका कर्तव्य था। इस पुस्तक को नैश की विशिष्ट रचना कहा जा सकता है इसकी शैली में बहुत-सी वे विशेषताएँ है, जो आगे चलकर अठारहवीं शताब्दी में डैनियल डिफों ने अपने उपन्यासों में प्रकट कीं। परन्तु यह कहना पड़ता है कि जिन पुस्तकों का उसने अनुसरण किया था उनसे वह नीचे रह गया। एक तो विलटन की कहानी व्यंग्य के कारण बोझिल हो गयी और दूसरे उन स्थानों पर जहाँ कहानी को तेज़ी से आगे बढ़ना चाहिए था वहाँ लम्बे लम्बे व्याख्यान दिलवाकर उसकी गति को सुस्त कर दिया गया है। बहुत-सा समय उन लोगों की हँसी उड़ाने में नष्ट कर दिया गया है जो इस समय विदेशी रीति-रिवाज पर चलते थे। इन व्याख्यानों के कारण कहानी नीरस और फीकी पड़ गयी है और अभागा बटोही एक नीति-उपदेशक बनकर रह गया है।

स्पेन के वे रोमांस जिनका अनुसरण नैश ने किया था, पाठकों के मनोरंजन के लिए लिखे गये थे। कहानी-साहित्य का यही प्रयोजन अन्य यूरोपीय देशों में भी माना जाता था। किन्तु एलिजबेथ काल के इंग्लैण्ड में यह आवश्यक समझा जाता था कि प्रत्येक पुस्तक कोई उपदेश दे अथवा कोई काम की बात सिखाये। इस काल में सबसे बड़ी काम की बात लोगों को यह सिखाने की थी कि वे संसार में अपना जीवन किस प्रकार सफल बनायें। लेखकों को सफल होने के लिए ये दोनों प्रयोजन अपने ध्यान में रखने होते थे और ऐसा कर सकना कुछ सुगम कार्य नहीं था। वे लोग भी जो कहानी-संग्रह निकालते थे इस बात का पूरा ध्यान रखते थे कि वे अपनी पुस्तक से उपदेश क्या दे रहे है। राबर्ट ग्रीन ने जब अपने पाठकों के मनोरंजन के लिए लन्दन के अपराधियों के वृत्तान्त लिखे तो उसने यह लिखना आवश्यक समझा कि क्यों उन अपराधियों का हाल जानना जरूरी है। "अपराधियों के जाल और फरेब को इसलिए जान लेना मुनासिब है कि आप उनसे ये बातें जानकर बच सकते है।" टामस नैश ने भी अपनी कहानी से उपदेश निकालकर लिखा—"जाओ, अपने घर जाओ, नौजवान! अपने पूर्वजों की कब्र में अपनी हड्डियों को शान्ति से रख दो! . . .याद रखो, पहला पथिक केन था. . . ईश्वर के पास इजराईलियों के लिए इससे कठिन कोई और शाप नहीं था—उसने उन्हें अपने देश से निकाल दिया और वे देश-विदेश गुलामों की भाँति भटकते फिरे।"

टामस डिलोनी

टामस नैश की पुस्तक का विषय चाहे कितना भी केन्द्रभ्रष्ट क्यों न हो, उसकी लेखनप्रणाली कैसी भी असमान तथा सनकयुक्त क्यों न हो, और उसका दृष्टिकोण अनोखा ही क्यों न समझा जाय, फिर भी वह एलिजवेथ काल के अन्तिम चरण के लेखकों और आगे आनेवाले उपन्यासकारों के वीच की कड़ी तो है ही। उसी के समीप की दूसरी कड़ी विलियम आफ़ रेडिंग (William of Reading) है, जिसका लेखक टामस डिलोनी (Thomas Delony) भी रावर्ट ग्रीन और नैश की भाँति व्यंग्यात्मक निवन्ध तथा रेखाचित्र लिखता था। डिलोनी अंग्रेज़ी साहित्य का प्रथम लेखक है जिसने इतिहास की सामग्री लेकर अपनी कहानियाँ लिखीं। ग्रीन और दूसरे कलातरंगियों की भाँति डिलोनी ने भी कविता लिखी और कहानी-गीत में अच्छी सफलता प्राप्त की। कथावस्तु के सुधारने और वर्णन के सँवारने में वह वड़ा कुशल था। समवेदना तथा कल्पना से कहाँ और कितना काम लिया जाय, वर्णनों में कहाँ और कैसे जान डाली जा सकती है, इन सव वातों का उसे अच्छा ज्ञान था। उसने लन्दन की मध्य श्रेणी के लोगों के रेखा-चित्रों में अपनी निरीक्षण-शक्ति दिखायी और उनमें हास्य रस खूव अच्छी तरह भरा। डिलोनी की विलियम आफ रेडिंग (William of Reading) नामक पुस्तक वड़े सुन्दर वर्णनों के साथ हमें वताती है कि लन्दन के वस्त्र वेचनेवाले अपने परिवार के साथ उस काल में कैसे जीवन-निर्वाह करते थे और उनकी क्या कठिनाइयाँ एवं समस्याएँ हुआ करती थी। वह स्वयं रेशम का कपड़ा वुनने का काम करता था और कपड़े के कारोवार करनेवालों के जीवन को खूव अच्छी तरह जानता था। जैक आफ़ न्यूवरी (Jack of Newbury) नाम की पुस्तक में उसने अपने पेशे के लोगों का वहुत सुन्दर चित्रण किया। उसकी तीसरी पुस्तक दि जेन्ट्ल क्राफ्ट (The Gentle Craft) उस कहानी के कारण वहुत प्रसिद्ध है जिसे लेकर टामस डेकर ने अपना दि शू मेकर्स हालिडे (The Shoemaker's Holiday) नामक नाटक लिखा था और जिसमें सवसे मनोरंजक पात्र साइमन आयर (Simon Eayre) है जिसकी कल्पना डिलोनी ने पहले पहल की।

उन्हीं कलातरगियों में से एक लेखक, जिनका उल्लेख पहले हो चुका है, टामस डेकर (Thomas Dekker) भी था, जिसके जीवन के सम्वन्व में कुछ नही मालूम हो सका है, यहाँ तक कि उसकी जन्म-तिथि भी ठीक निश्चित नहीं हो

सकी है। अनुमान किया जाता है कि वह सन् १५७० और १५७७ के बीच कभी पैदा हुआ होगा। गृह-युद्ध प्रारम्भ होने से कई वर्ष पहले ही डेकर कहीं तिरोहित हो गया था (१६४०) और युद्ध समाप्त होने पर भी उसका पता नहीं चला (१६६०)। कई कारणों से कहा जाता है कि उसका प्रसिद्ध नाटक १५९९ से पहले लिखा गया था। दि शू मेकर्स हालिडे के अलावा डेकर के रेखा-चित्र, मायावी कथा पुस्तिकाएँ, घटना-वर्णन, निबन्ध और विविध रचनाएँ मिलती हैं, जो उसे कलातरंगियों का राजा सिद्ध करती हैं। उसका अपना अलग व्यक्तित्व है और वह अपने समय का निश्चित प्रतिरूप कहा जा सकता है। उसका प्रसिद्ध नाटक एक छोटी तथा कोमल प्रेम-कहानी के चारों ओर बुना हुआ है, जिसका केन्द्र साइमन आयर तथा उसकी पत्नी का रेखा-चित्र है जो बड़ी सावधानी और मानवोचित सहानुभूति से खींचा गया है। यह नाटक लन्दन के उन युवकों का बड़ा अच्छा चित्रण करता है जो किसी पेशे को सीखते अथवा उसे प्रारम्भ करते थे। अपनी पुस्तिकाओं (Pamphlets) में भी उसने सैकड़ों इसी स्तर के चित्र दिये हैं जो कहीं कहीं रावर्ट ग्रीन तथा टामस नैश को भी मात करते हैं। अपनी सहानुभूति के कारण वह पाठकों पर गहरा प्रभाव डालता है और उनकी कल्पना-शक्ति को वैसे ही उभारता है, जैसे गोल्डस्मिथ और रिचर्ड स्टील अठारहवीं शताब्दी में किया करते थे। यह जरूर है कि डेकर के चित्रों के रंग अब फैशन बदल जाने से फीके पड़ गये हैं और उसका हास्यमय चित्रण हमें अब बहुत कुछ वाक्प्रपंच लगने लगा है, किन्तु आगामी काल की कहानियों को इन लोकप्रिय कलातरंगी लेखकों के कारण दृश्य तथा चरित्र-चित्रण में बहुत सहायता मिली। इन्हीं लेखकों ने यह भी सिखाया कि रोचक सामग्री के लिए कहानीकार को आकाश फाड़कर देखने की आवश्यकता नहीं, बल्कि सामने और अपने पैरों तले की वस्तुओं में निहित सौन्दर्य को देखने की जरूरत है। इसी बात को सत्रहवीं शताब्दी के नाटककारों ने न सीखकर जमीन और आसमान के कुलावे मिलाये और शेक्सपियर के किये-धरे को मेटकर रख दिया। अंग्रेजी उपन्यास ने अपने पाँव पृथ्वी पर ही जमाये रखे और धीरे-धीरे जहाँ से जो कुछ काम की वस्तु उसको मिली ग्रहण करता गया। किसी से कहानी का संक्षेप करना सीखा, कहीं से दृश्यों के चित्र व कहीं से चरित्रों के चित्र खींचना सीखा, और एक समय वह आया कि सारी सीखी हुई बातों को एकत्र करके एक चमत्कार दिखा दिया। डेकर ने ऐसे धूर्त और कपटी तथा दुराचारी मनुष्यों की आत्मा का अध्ययन किया जो औरों के लिए नये थे, परन्तु आगे चलकर

समाज के लिए उनके चित्र लाभदायक सिद्ध हुए। इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि डैनियल डिफ़ो ने डेकर के वर्णन पढ़कर ही लन्दन के प्लेग का वृत्तान्त लिखा था।

कैरेक्टर्स की पुस्तकें

इन पैम्फ़लेटियरों (Pamphleteer) तथा व्यंग्यात्मक निवंध के लेखकों के साथ ही साथ हमे उन विशेष लेखको की ओर भी ध्यान देना चाहिए जो १५६८ के वाद से लगभग सौ वर्ष पर्यन्त केवल मनुष्यों की विचित्रताओं, भेदों और चरित्र-परिवर्तन का अध्ययन करके कैरेक्टर्स (Characters) लिखते रहे। इन लेखकों की पक्ति में सब से प्रथम नाम टामस हार्मन (Thomas Harman) का आता है, जिसने १५६८ में कैवियेट फ़ार कामन कर्सीटार्स ओर वैगावोन्स (Caveat for Common Cursetors, or Vagabones) प्रकाशित की। यह पुस्तक चोरों, भिखारियों तथा आवारा लोगों पर लिखे हुए निवन्धों का संग्रह है। इन निवन्धों में ऐसे लोगों की वोल-चाल की गॅवारू भापा भी दी गयी है। डेकर ने अपनी वेलमन आफ़ लन्डन (Belmen of London) नामक पुस्तक में हार्मन की दिल खोलकर नकल की है और वैचेलर्स वैन्क्वेट (Bachelor's Barquet) मे उसके आधार पर वहुत मिलते-जुलते निवन्ध भी लिखे है। डेकर के अलावा वहुत-से अन्य लेखकों ने भी हार्मन की या तो सीधी नकल करके या उसकी पुस्तक के आवार पर, इस समय ऐसे निबन्धों की अंग्रेजी भाषा में भरमार कर रखी थी। इस प्रकार की पुस्तके अथवा निबन्ध लिखने की प्रेरणा आईजैक कसावाँ (Isaac Casaubon) के उस अनुवाद से मिली थी जो उसने १५९२ में थिओफ़ास्टस की पुस्तक का यूनानी भाषा से लातीनी में किया था। थिओफ्रास्टस ने जैसे स्वभाव-चित्र लिखे है वैसे विना मानवप्रकृति के गहरे निरीक्षण और ज्ञान के कदापि नहीं लिखे जा सकते। जिस समय कसावाँ का अनुवाद लोगों के सामने आया तो अंग्रेजी भापा मे इसी प्रकार के स्वभाव-चित्र लिखे जाने लगे, परन्तु थोड़े ही समय में लोगों को मालूम हो गया कि काम कितना कठिन है। एक-एक चित्र बीसों वार लिखा गया और वीसों लेखकों ने अपने-अपने ढंग से उसे लिखा, यहां तक कि स्वभाव-चित्र लिख सकना एक कसौटी समझा जाने लगा। फिर क्या था, बड़े से वड़ा और साधारण से साधारण लेखक अपने को उस कसौटी पर कसने लगा। वेन जान्सन (Ben Jonson) ने अपने एवी मैन आउट आफ़ हिज ह्यूमर (Every Man out of his Humour) नामक नाटक में, जो १६०० में लिखा गया था, अपने पात्रों के नाम

स्वभाव-चित्रों से दिये और इस प्रकार उसने साहित्य के इस नये अंग को विशिष्ट होने की सनद प्रदान की। थिओफ्रास्टस (Theophrastus) ने अपने स्वभाव-चित्रों में विविध प्रकार के दोषों का संक्षिप्त किन्तु स्पष्ट निरूपण किया है और उन्हे ऐसे कामों के उदाहरणों से समझाया है जो उन दोषों वाले मनुष्य करते हैं। यद्यपि चित्र जिस स्वभाव के व्यक्ति का है वह अलग पहचाना जाता है किन्तु उसका महत्त्व और विशेष गुण उसके व्यापक होने में है। कोई दो मनुष्य बिल्कुल एक-से नहीं होते, और वह चित्र जो किसी वर्ग का वर्णन करना चाहता है, व्यक्ति के चित्रण में किसी प्रकार सफल नहीं हो सकता। यही वह कठिनाई थी जिसने बहुतों को स्वभाव-चित्र लिखने से रोका और बहुत थोड़े लेखकों को सफल बनने दिया। व्यक्ति मूर्त तथा साकार है और वर्ग अमूर्त तथा सारांश, और इन दोनों के बीच की दशा या क्षेत्र स्वभाव-चित्र में दर्शाना इसलिए कठिन है कि लेखक पर दोनों ओर से रोक लगी हुई है, जिसमें उसे मध्यमान दशा या क्षेत्र से बाहर निकलने का अवसर न मिले। न तो वह गुणों के उस ब्यौरे को छोड़ ही सकता है जिसके बिना व्यक्ति-चित्रण असम्भव है और न वह उन्हें पूरी तरह ले ही सकता है, क्योंकि वे साकार से उसके मन को हटने नहीं देते। यद्यपि थिओफ्रास्टस-जैसी सफलता किसी को प्राप्त नहीं हो सकी, फिर भी अंग्रेज़ लेखकों को इस प्रयत्न में जो अनुभव प्राप्त हुए वे साहित्य तथा उपन्यास के विकास में बहुमूल्य सिद्ध हुए। वर्ग और व्यक्ति के चित्रण की सीमाएँ निश्चित हुईं और स्वभाव-निरीक्षण तथा चित्रण की शैली एवं प्रणाली हाथ आयी, और दोनों बातें उपन्यास लिखने वालों के बहुत काम आयीं।

जोज़ेफ़ हाल और उसके "कैरेक्टर्स"

इस प्रकार की साहित्यिक रचनाओं की वृद्धि तथा विकास मे जोज़ेफ़ हाल (*Joseph Hall*) की कैरेक्टर्स आफ़ वर्चूज़ एण्ड वाइसेज (Characters of Virtues and Vices) नामक पुस्तक जो १६०८ में प्रकाशित हुई थी, एक विशेष महत्त्व रखती है। हाल पादरी था और उसका पाण्डित्य दूर दूर तक विख्यात था। इस पाण्डित्य के कारण उसका चिन्तन तथा लेखन इतना दार्शनिक और अमूर्त था कि उसकी पुस्तकें साहित्य-कला के क्षेत्र में नहीं आती थीं। जब उसने स्वभाव-चित्र अथवा "कैरेक्टर्स" लिखने आरम्भ किये, तो उसे सद्गुणों और दोषों को मूर्तिमान् करना पड़ा, और इस प्रकार उसकी लेखनशैली साहित्यकला

के अनुरूप होने लगी। यदि उसके स्वभाव-चित्र नैतिक उपदेशों से इतने बोझिल न होते तो कदाचित् वे उच्चकोटि के साहित्य में गिने जाते। परन्तु हाल का तो उद्देश्य ही उपदेशक बने रहना था, जिसे पुस्तक लिखकर उसने पूरा किया। उसकी पुस्तक ने दूसरे लेखकों को रास्ता दिखाया और आगे के लिए स्वभाव-चित्रों को विशेष ध्वनि प्रदान की।

सर टामस ओवर्बरी और उसके स्वभाव-चित्र

हाल की ध्वनि ने जिन लेखकों को प्रभावित किया था उनमें से एक जेम्स प्रथम के दरबार का कवि तथा सभा-चतुर गद्य लेखक, सर टामस ओवर्बरी (Sir Thomas Overbury) था। सन् १६१४ में उसकी 'दि वाइफ़' नामक कविता निकली, जिसके साथ कुछ "कैरेक्टर्स" भी थे। ओवर्बरी की कृतियाँ वर्षों तक हस्तलिपि में ही दरबार में प्रचलित रहा करती थीं, तब कहीं वे छपती थीं। इस रीति के फलस्वरूप, कहा जाता है, ओवर्बरी के स्वभाव-चित्रों में उसके मित्र अपने लिखे "कैरेक्टर्स" भी सम्मिलित करते रहे और इस प्रकार उनकी गिनती बढ़ती रही। इस पुस्तक में लगभग बीस चित्र ऐसे हैं जिनमें विशेष लक्षण वर्णन किये गये है, बाक़ी के चित्र केवल वे बातें बताते हैं जो किसी पेशे या व्यवसाय से सम्बन्वित है और उन पेशों में गुण समझी जाती हैं या दुर्गुण। ओवर्बरी ने अपने जीवन में लोगों के आचार तथा ढगों का अच्छा अध्ययन किया था। शिष्टाचार और रीतियों को भी वह खूब जानता था। लोगों को देखते ही उनके तौर-तरीकों से उनकी प्रकृति तथा आर्थिक दशा और शिक्षा इत्यादि को समझ लेता था और इन्हीं बातों पर उसने अपने चित्रों की रेखाएँ खींची भी है। लोगों की भाषा, उच्चारण, कपड़े लत्ते, चाल-ढाल, उठना-बैठना, खाने-पीने के तरीके आदि को वह बहुत जल्द भाँप लेता था और इन्हीं के आधार पर उसने अपने चित्र लिखे हैं। परन्तु कोई मनुष्य इन सब चेष्टाओं के परे भी सभ्य अथवा असभ्य होता है इस पर उसने ध्यान नहीं दिया। नैतिक गुणों पर उसने अपने चित्रों में ज़ोर नहीं दिया, जिसका फल यह हुआ कि स्वभाव-चित्र बड़े जीते-जागते, विचित्रतापूर्ण और मनोरंजक तो हो गये परन्तु उनमें कोई गहराई नही आयी। चुभते हुए चुटकुले, लगते फ़िक़रे और तरह तरह के लतीफे तो उसके यहाँ बहुत मिलेंगे; परन्तु उस हास्य का, जो हिला दे और आँखों के सामने से परदे हटाकर रहस्यों को खोल दे, कहीं पता नही है। छोटी छोटी बातों पर जोर देकर व्यक्तित्व के गहरे भेदों तक पहुँचने की कहीं कोशिश नहीं की

गयी है। इस प्रकार के चित्रों से यह नतीजा नही निकालना चाहिए कि ओवर्बरी को दूसरा ढंग आता नहीं था। जब कभी वह अपनी दरबारी वर्दी उतारकर और सभाचातुर्य को भुलाकर स्वभाव-चित्र लिखता, तो अपने विषय की आत्मा को छू लेता था और ऐसा सच्चा हास्य रस उत्पन्न करता जिसमें समवेदना तथा सम्पूर्ण ज्ञानशक्ति भरी होती थी। ऐसे चित्र उसने बहुत नहीं लिखे परन्तु जो भी लिखे उनमें उसने कलम तोड़ दी है। "दि मिल्कमेड" (The Milkmaid), "दि फ्रैंकलिन" (The Franklin), "दि टिन्कर" (The Tinker) आदि ऐसे ही चित्र हैं जो "कैरेक्टर्स" के साहित्य की जान है।

जान अर्ल

इसी प्रकार के प्रशंसनीय स्वभाव-चित्र जान अर्ल (John Earle) ने भी लिखे जिन्हें १६२९ में उसने माइक्रोकास्मोग्राफी आर ए पीस ऑफ दि वर्ल्ड डिस्कवर्ड (Microcosmographe or a Peace of the World Discovered) के नाम से प्रकाशित किये। जान अर्ल (१६०१-१६६५) आक्सफ़र्ड का पढ़ा हुआ था और स्वभाव से ही प्रेक्षक तथा विचारशील था। वि० विद्यालय में ही उसने अपना कलाप्रेमी होना सिद्ध कर दिया था। जब उसने अपनी पुस्तक प्रकाशित की तो वह केवल अट्ठाईस वर्ष का था। कम उम्र का होते हुए और उस विवेक तथा गम्भीरता का जो आयुष्य से प्राप्त होती है, धनी न होते हुए भी अर्ल ने अपने "कैरेक्टर्स" में निरीक्षण से प्राप्त सामग्री का इतनी बुद्धिमानी से प्रयोग किया कि स्वभाव-चित्रों में जान पड़ गयी और वे प्रजातीय (generic) भी हो गये। उसके चित्रों से विदित होता है कि उसने मनुष्य की प्रकृति को कितनी गहराई में घुसकर देखा था। उसने न तो अपने चित्रों को तोड़-मरोड़कर उनमें से उपदेश निचोड़ने का प्रयत्न किया न, ओवर्बरी की तरह उन्हें चुटकुलों से भरा ही। अपनी नैसर्गिक प्रवृत्ति को काम में लाकर उसने पहले तो मनुष्य जीवन का गहराई में पैठकर निरीक्षण किया और फिर साहित्यकला के सिद्धान्तों के अनुसार सहज प्रवृत्ति से उस निरीक्षण में क्रम उत्पन्न किया। अर्ल के "कैरेक्टर्स" थिओफ्रैस्टस के "कैरेक्टर्स" से निकटतम हैं। उनमें उच्च कोटि का हास्य रस है और वे उन सूक्ष्म भेदों को प्रकट करते हैं जो कला व्यक्ति में और दर्शन जाति में समोते हैं।

"कैरेक्टर्स" लिखने का फ़ैशन रेस्टोरेशन काल तक चलता रहा, जिसके बाद

दूसरे उन फैशनों की भाँति, जो साहित्य में आते और जाते रहे हैं, यह भी समाप्त हो गया, या यों कहिए कि बदल गया। कई प्रकार की कविता में वह कुछ दिन सिसक-सिसककर जीवित बना रहा। इतने बन्धनों में वह जकड़ा हुआ था कि उसका इससे अधिक समय तक जीवित रहना सम्भव न था। ऐतिहासिक तथा मनोवैज्ञानिक कारणों से साहित्य में जो परिवर्तन हो रहे थे, उनके अनुक्रम की यह भी एक कड़ी थी, जो स्वयं बड़ा महत्त्व न रखते हुए भी आवश्यक थी। मनुष्य-जीवन में धीरे धीरे लोगों की दिलचस्पी बढ़ रही थी और वे उसकी गहराइयों तथा विस्तार का निरीक्षण कर रहे थे। प्राचीन रोमांसों तथा नावेलों में घटना पर जोर दिया जाता था और वही उनकी दिलचस्पी की विशेष बात होती थी। पहले तो पृष्ठभूमि उनमें दी ही नहीं जाती थी और यदि होती भी थी तो सजावट की तरह बँधी-टँकी एक ही सी वस्तुएँ वर्णन कर दी जाती थी। मनुष्य की प्रकृति अथवा चरित्र और व्यक्तित्व तथा विशेषता का उल्लेख नहीं होता था। समय के साथ मनुष्य की दिलचस्पी उन चीजों की ओर झुकने लगी जो उसके चारों ओर वर्तमान थी और अपने पड़ोसी को देखना तथा समझना रोमांस के दूरवर्ती क्षितिज पर ध्यान लगाने की अपेक्षा अधिक उपयोगी प्रतीत होने लगा। "कैरेक्टर्स", डायरियाँ, जीवनियाँ, तथा दूसरी इसी प्रकार की पुस्तके उसी दिलचस्पी का फल हैं जो धीरे धीरे साहित्य में आने लगीं; यहाँ तक कि डिफ़ो ने एक दिन वास्तविक जीवन को भी कहानी मे लिख दिया। उपन्यासकारों ने "कैरेक्टर्स" (स्वभाव-चित्र) का बडा फायदा उठाया और लक्षणों को चरित्र में देखना तथा उनके भेद को समझना सीखा। अर्ल तथा ओवर्बरी के बाद भी बदले हुए स्वरूप मे ये चित्र लिखे जाते रहे और एक दिन ऐडिसन ने सर राजर डि कवर्ली जैसा "कैरेक्टर" अंग्रेजी भाषा मे लिखकर उपन्यासकार के कार्य को आगे बढ़ा दिया।

अध्याय ४

सत्रहवीं शताब्दी में अंग्रेजी उपन्यास

आधुनिक युग के सामान्य पाठकों को एलिज़वेथ काल के उपन्यास अठारहवीं शताव्दी के उपन्यासों की अपेक्षा कुछ विशेष महत्त्व के नहीं मालूम होते। उस काल में भी उनको पढ़नेवालों की संख्या बहुत कम थी। पहले तो शिक्षित मनुष्य ही बहुत नहीं होते थे। दूसरे रहन-सहन की कठिनाइयाँ इतनी अधिक थी कि शिक्षित लोगों में भी पढ़ने-लिखने की आदत कम हुआ करती थी। विशेष कठिनाई सर्दी की थी जिसके कारण दिन के समय भी मकानों में बैठकर पढ़ना सम्भव नहीं था। जिस समय शीशे का आविष्कार हुआ तो खाते-पीते मनुष्यों के घरों में वायु से सुरक्षित स्थान बनाये जाने लगे, जहाँ बैठकर पढ़ने-लिखने की सुविधा हो गयी और स्त्री तथा पुरुष अपना समय इन कामों में लगाने लगे। बड़े घरों की महिलाएँ तथा उनकी सहेलियाँ उपन्यास पढ़ने में समय व्यतीत करने लगीं, किन्तु मध्यम श्रेणी के लोग उपन्यास पढ़ने को फिर भी बहुत समय तक बिना काम का धन्धा कहते रहे। अलावा इसके, जो लोग पढ़ते भी थे वे लाइली के यूफ्यूईज़ (Lyly's Euphues) और सिडनी की आर्केडिया (Sidney's Arcadia) के सुन्दर दृश्य-वर्णनों को ऐसा काल्पनिक एवं मायावी समझते थे कि जो न तो उनके जीवन से कोई सम्बन्ध रखते थे, न उनके किसी काम आ सकते थे। सामान्य पाठक इन उपन्यासों मे चित्रित संसार को मायावी संसार कहते थे, जिससे उनके जीवन में कोई प्रेरणा एवं सहायता नहीं मिल सकती थी। बहुत थोड़े लोग इन उपन्यासों को पूरी तरह समझते और उनकी कथावस्तु से सहानुभूति रखते थे। अधिकांश शिक्षित लोगों के पढ़ने के लिए ऐसे उपन्यास थे जिनमें वास्तविक जीवन का वर्णन प्रस्तुत किया जाता था, जिसे वे सुगमता से समझ लेते थे। इस प्रकार के उपन्यासों की माँग दिन-पर-दिन बढ़ती जाती थी और उनके लिखनेवाले बिना किसी रोक-टोक के उस माँग को पूरा करते जाते थे। उन लेखकों के सामने न कोई निश्चित प्रणाली थी, न नियत शैली। वे जैसा चाहते थे लिखते चले जाते

थे। जिस प्रकार वे अपने सामने की वस्तुओं को देखते थे, वैसे ही उन्हें वर्णन करते थे; उन्हें न किसी क्रम से मतलब था न अनुरूपता से; न किसी व्यवस्था का आदर था न किसी व्याधि का भय। ये उपन्यास विषयों के चुनाव तथा प्रतिपादन में वैसी सावधानी नहीं दिखाते थे जैसी उस समय के नाटकों में प्रायः दिखाई जाती थी।

इस पर भी, उपन्यास के इतिहास में एलिज़वेथ का काल विशेष महत्त्व इसलिए रखता है कि उसने उन सारी प्रवृत्तियों का आकलन किया, जो प्राचीन छन्दोवद्ध रोमांसों से प्रारम्भ होकर उस समय तक चली आ रही थीं और इस प्रकार अपने ढंग से उस रचनाप्रणाली की नींव की तैयारी की, जो सत्रहवीं शताब्दी के उपन्यासों में डाली गयी और जिस दृढ़ नींव पर अठारहवीं शताब्दी के उपन्यासों का निर्माण हुआ। इस दीर्घ काल में नाटक, वीरकाव्य इत्यादि जितने भी साहित्य के विभिन्न अंग विकसित हुए, उन सबसे उपन्यास को अपने विकास में कोई न कोई तत्त्व प्राप्त हुआ और इस तरह उसका सम्पूर्ण अंग तैयार हो गया।

पुनरुत्थान काल के प्रारम्भ में यूनानी तथा लातीनी भाषाओं का अध्ययन जो इंग्लैण्ड में बड़े उत्साह से किया गया था, उससे उपन्यास के विकास में कोई विशेष सहायता नहीं मिली, क्योंकि साहित्य के समस्त अंगों में से अकेला उपन्यास ही वह अंग है जिसकी यूनानियों ने कोई खास उन्नति नहीं की और जिसके विकास के लिए उन्होंने कोई कला-सिद्धान्त नहीं दिये। गद्य के कहानी-साहित्य को उन्होंने कोई महत्त्व नहीं दिया। यूनानियों को जब कहानी कहनी होती तो वे उसे पद्य में लिखकर महाकाव्य का रूप दे देते थे। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, महाकाव्य लिखने की परम्परा कम होती गयी और आधुनिक काल में तो उसका लोप हो गया और कहानियाँ सीधे-सादे गद्य में लिखी जाने लगीं। कई श्रेष्ठ उपन्यासकारों ने इस परम्परा को स्वीकार करते हुए अपने उपन्यासों को महाकाव्य कहा है। स्पेन के श्रेष्ठ लेखक सर्वाटीज़ (Cervantes) और इंग्लैण्ड के फ़ील्डिंग (Fielding) नामक लेखक, जो दोनों उपन्यासकार थे, अपनी रचनाओं को गद्य में लिखे हुए महाकाव्य कहते है। इसके विपरीत, जार्ज मेरिडिथ (George Meredith), जो अंग्रेजी भाषा में काव्य तथा उपन्यास लिखता था, उसकी परम्परा सुखान्त नाटक से चलाता है। इसमें कोई संदेह नही कि उपन्यास को प्रौढ़ता प्राप्त करने में नाटकों से पर्याप्त सहायात मिली है, चाहे वे सुखान्त थे या दुःखान्त। इस मतभेद को ठीक ठीक समझने के लिए

यह जानना भी उचित है कि उपन्यास लिखने से पहले सर्वाटीज़ तथा फ़ीलिंडग दोनों ने नाटक लिखकर साहित्य-जीवन प्रारम्भ किया था और अपने उपन्यासों में नाटक की रीतियों तथा उस सारी प्रणाली से लाभ उठाया था जो नाटक के लिए आवश्यक होती हैं। यही नही, वल्कि इन लेखकों ने अपने उपन्यासो की रचना में साहित्य के उन सब दूसरे अंगों से लाभ उठाया जो उनके समय तक उन्नति कर चुके थे और जिनसे उपन्यास के विकास में सहायता मिल सकती थी। फीलिडग के उपन्यासों की वनावट में "कैरेक्टर्स" और "निवन्ध" एवं वे दूसरे अंग जो साहित्य में प्रतिप्ठित थे, सम्मिलित हैं। जिस प्रकार जीवन मे यह ज्ञान कि जाति तथा व्यक्ति की धमनियों में कैसे-कैसे पूर्वजों का रक्त दौड़ रहा है, वुद्धिमानी है, उसी तरह साहित्य में भी यह जानना जरूरी है कि लेखक जिस कला का प्रयोग कर रहा है, उसके विकास में साहित्य के किन-किन प्ररूपों ने भाग लिया है। इस दृप्टिकोण से देखने पर यह मालूम होता है कि साहित्य मे मौलिकता क्या होती है। वास्तव में कोई भी लेखक अकेला और अनाथ नही होता, उसकी कला तथा प्रतिभा मे न मालूम कितने प्रतिप्ठित पूर्वजों के अश होते है, जो उसके निरूपण मे योग दिये रहते हैं। इसी ज्ञान की प्राप्ति के लिए साहित्य का इतिहास लिखा और पढ़ा जाता है।

सत्रहवीं शताव्दी

जिस शताव्दी के उपन्यास के विकास का अध्ययन हम अव प्रारम्भ कर रहे हैं वह काल अनिश्चित तथा परिवर्तनशील था, चाहे हम उसे राजनीति के क्षेत्र में देखें चाहे सामाजिक जीवन की दृप्टि से उसे देखें। साहित्य के क्षेत्र में भी हमें वही अस्थिरता दिखाई देती है। पार्टियों का आपस का विरोध बढ़ता जाता था। एक ओर राजा का पक्ष लेनेवाले और दूसरी ओर पार्लिमेन्ट को वल देनेवाले थे; एक पार्टी गिरजे और पादरियों की सहायक और दूसरी व्यक्ति को धार्मिक बन्धनो से मुक्त करानेवाली थी। जीवन की प्रत्येक समस्या पर मतभेद था और दिन पर दिन लोगों में विरोध वढ़ता जाता था, यहाँ तक कि चार्ल्स प्रथम के राज्यकाल मे गृह-युद्ध आरम्भ हो गया। एलिजवेथ के काल को जिन उच्च विचारों तथा धारणाओं ने गौरव प्रदान किया था वे सव शिथिल होकर लुप्त हो गये। इनमें से एक धारणा वह थी जो इस सांसारिक जीवन तथा पारलौकिक कर्तव्यो के वीच एक आदर्श समन्वय स्थापित करती थी। सिडनी (Sidney) और एडमन्ड

स्पेन्सर (Edmond Spenser) ने इसी समन्वय को अपनी रचनाओं में व्यक्त करके लोगों को पूर्ण रूप में विकसित मानवता के दर्शन कराये थे। उन उच्च विचारों तथा धारणाओं के स्थान पर इस सत्रहवीं शताब्दी में एक ओर दुराचारी कवेलियर (Cavaliers) हैं तो दूसरी ओर वे प्यूरिटन (Puritans) हैं जो बड़े प्रभावशाली होते हुए भी नितान्त असहशील हैं। ये दोनों विरोधी वर्ग दो विपरीत सिद्धान्तों पर चलनेवाले थे। उच्च विचारों के अभाव में मनुष्य की आकांक्षा और चरित्र में न तो पहले जैसा समन्वय रह गया था न वैसा तेज अथवा प्रताप। लोग स्वाभिमानी तथा अनोखे हो गये और निर्बलता एवं क्षुद्रता की ओर झुकने लगे। इन अभावों के साथ कुछ क्षतिपूरक प्रतिफल भी प्राप्त हुए। यदि कल्पना सो गयी और स्वर्णपूर्ण काल्पनिक प्रदेश (Eal-Dorado) लोगों की आँखों से ओझल हो गया तो इधर वाणिज्य में बढ़ती हो गयी और विज्ञान में श्लाघनीय उन्नति दिखाई देने लगी। यथार्थ की खोज में लोग वास्तविकता पर ध्यान देने लगे, जैसा कि इस युग के नाटकों से विदित होता है। अब जीवनियों के लिखने की प्रथा चल पड़ी। एलिज़बेथ का काल प्रकाश और प्रसन्नता, साहस तथा आत्म-विश्वास का समय था और लोग इस लोक एवं परलोक में दृढ़ विश्वास रखते थे। अब जो समय आया उसमें चारों ओर अन्धकार सा छा गया, लोगों का उत्साह समाप्त हो गया और हृदयों पर मलिनता आ गयी। पिछले काल से निकलकर इस युग में प्रवेश करना एक हरे-भरे प्रकाशमय मैदान को पार करके किसी धुँधले तथा मन को मलिन करनेवाले अरण्य में जाना-सा प्रतीत होता है।

सत्रहवीं शताब्दी का साहित्य

इन दोनों युगों का अन्तर उनके साहित्य से भली भाँति प्रकट होता है। इस युग के साहित्य में भयानक दृश्यों की बहुतायत है और प्रेम के स्थान पर मृत्यु का अधिक स्थान है। मनुष्यों के जीवन में रोमांस का बहिष्कार हो गया है और उसके स्थान पर नवीनता की खोज तथा नित्यप्रति के जीवन में उत्तेजित करने वाले अनुभवों को पाने की चेष्टा का प्राधान्य है। लगभग रेस्टोरेशन (Restoration, १६६६) तक, पचास वर्ष के समय में, लोगों ने न कोई रोमांस ही लिखे, न कहानी-साहित्य की कला में कोई उन्नति की। इस अर्ध-शताब्दी काल में या तो आर्केडिया (Arcadia) की फीकी सी नक़ल की गयी, या चोर तथा डाकुओं के जीवन के कुछ रेखाचित्र लिखे गये। कभी कभी तत्कालीन फ्रेन्च भाषा में लिखे

गये रोमांसों की भद्दी नकल प्रकाशित हो जाती थी। बस इसी प्रकार की पुस्तकें इस काल का सारा साहित्य था। जब गृहयुद्ध की उत्तेजना लोगों के मन को व्याकुल कर रही थी उस समय जो पुस्तकें प्रकाशित हुई वे यूफ्यूईज (Euphues), रोजालिन्ड (Rosalynde), या कभी-कभी राबर्ट ग्रीन की ग्रोटस्वर्थ आफ़ विट (Robert Greenes' Groatsworth of Wit) के नये संस्करण थे। सन् १६४२ में जब हैम्पडेन का मुकदमा हुआ, उस समय अंग्रेजों ने कहानी-साहित्य का लिखना और उसका पढ़ना बिलकुल बन्द ही कर दिया। इस लम्बे काल में लिखा हुआ किसी अर्थ का रोमांस अगर गिनाया जा सकता है तो वह सन् १६२१ का प्रकाशित जान बार्कले (John Barclay) का आर्जेनिस (Argenis) है जो उसने लैटिन भाषा में लिखा था और जिसका अनुवाद अंग्रेजी मे चार्ल्स प्रथम की आज्ञा से १६२९ में किया गया था।

जान बार्कले और उसका आर्जेनिस नामक रोमांस

जान बार्कले किसी देश-विशेष का व्यक्ति नहीं माना जाता। उसका जन्म लोरेन (Lorraine) में हुआ था और वह सन् १६०३ में, जब उसकी उम्र बीस वर्ष की थी, इंग्लैण्ड आया, जहाँ बारह वर्ष बिताने के बाद वह १६१६ में रोम में जाकर रहने लगा था। उसकी माता फ्रेन्च और पिता स्काट कहे जाते है। इस प्रकार वह अपने समय की सार्वदेशिक सभ्यता का प्रतिरूप तथा सामाजिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधि था। इंग्लैण्ड छोड़ने के पहले उसने लैटिन भाषा में एक "पिकैरेस्क" उपन्यास लिखा था जो जेसुइस्ट (Jesuist) सम्प्रदाय पर व्यंग्य था। उसका आर्जेनिस (Argenis) नामक रोमांस वास्तव में सिडनी की आर्केडिया की बहुत कुछ नक़ल है, जिसमें वेष बदलना, समुद्री लुटेरे, जहाजों का डूबना—सभी कुछ दिखाया गया है और विशेष लाक्षणिक रूपक के ढंग से सामयिक इतिहास का चित्रण किया गया है। वह उस समय के बहुत-से उत्तेजित करनेवाले विषयों को अपने रोमांस में लाता है और तत्कालीन इतिहास की सामग्री का प्रयोग करता है, किन्तु ऐसे ढंग से कि वे सब बातें कल्पित कहानी-जैसी प्रतीत होती हैं। उस समय के बहुत-से बड़े आदमियों को उसने अपनी कहानी में स्थान दिया है और इस प्रकार राजनीति तथा धर्म सम्बन्धी सामयिक समस्याओं ने कथावस्तु को एक प्रदेश में स्थिर कर दिया है। यूरोप के कई देशों में रोमांस का लैटिन संस्करण लोकप्रिय हो गया और धीरे-धीरे उसका अनुवाद बहुत-सी भाषाओं में भी हुआ।

चार्ल्स प्रथम उस समय तक अधीर रहा जब तक यह अंग्रेजी में अनूदित होकर उसके पास नहीं पहुँच गया। अपने विषय के कारण यह रोमांस बहुत दिलचस्प रहा होगा, क्योंकि लोग उसे सर वाल्टर स्काट के समय तक पढ़ते आये थे। स्काट ने उसे "बड़ा सुन्दर प्राचीन रोमांस" कहा है और ब्रिटिश म्यूज़ियम में जो आवृत्ति है उस पर राबर्ट सदी (Robert Southey) और कूलरिज के हाथों की लिखी टिप्पणियाँ हैं। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध काल के यूरोपीय इतिहास को बार्कले ने रूपक से कुछ ऐसा छिपाया है कि बड़े चतुर पाठकों के सिवा कोई भी रोमांस के पात्रों तथा स्थितियों को ठीक समझ नहीं पाता। पाठकों को धोखे में डालने और भुलावा देने के लिए बार्कले बहुत-से ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर रखता है और बीच-बीच में यूनान तथा रोम के दृश्य एवं देवी-देवता ले आता है और अपने पात्रो से अपोलो (Apollo) एवं जूपिटर (Jupiter) के भजन गवाता है।

"पराक्रमी रोमांस"

जान बार्कले ने आर्जेनिस लिखकर फ्रांस में रोमांस लिखनेवालों के लिए रास्ता खोल दिया और सन् १६२५ से लेकर पचास वर्ष तक उसके नमूने के रोमांसों का ताँता लग गया, जो कई यूरोपीय देशों में प्रचलित रहे। ऐसे रोमांसों में मैडिलीन डि स्कूडेरी (Madeline da Scuderi) और मैडाम डि ला फाइयेट (Madame de la Fayette) के रोमांस लोकप्रिय हुए। ये रोमांस किसी न किसी वीर पुरुष के कृत्यों को लेकर लिखे जाते थे, किन्तु "पिकेरेस्क" उपन्यासों के जैसे अशिष्ट अथवा भद्दे नही होते थे। इनका विशेष दोष अरोचकता का होता था, जो ऐतिहासिक सामग्री की अधिकता और उसे तोड़-मरोड़कर छिपाने की तरकीबों से उत्पन्न होती थी। इन रोमांसों के नायक का बहुत श्रेष्ठ मनुष्य होना आवश्यक था और उसके जीवन में "रोमैन्टिक" पराक्रम से भरे कार्यों का ऐसा क्रम भी जरूरी होता था जो अलौकिक कहे जा सकें। इन "पराक्रमी" रोमांसों में प्रेम का बड़ा जमा-खर्च होता था और लम्बे-लम्बे व्याख्यानों में नफ़ीस बातें सुन्दर भाषा में कही जाती थी। इन रोमांसों की कथावस्तु एवं प्रणाली कुछ इस प्रकार की होती थी कि लिखने मे वे लम्बे होते जाते थे, क्योंकि इनमें न तो विषयों की कोई सीमा बाँधी जाती थी और न भावुक वर्णनों पर कोई रोक-टोक लगायी जाती थी। इस कारण रोमांसों की लम्बाई बढ़ती चली जाती थी।

मैडिलीन डि स्कूडेरी और उसका "दि ग्रैन्ड साइरस" रोमांस

शताब्दी के मध्यकाल में मैडिलीन डि स्कूडेरी (Madeline de Scuderi) के रोमांसों की बड़ी धूम थी। उसका दि ग्रैन्ड साइरस (The Grand Cyrus) नामक रोमांस मोटी-मोटी दस जिल्दों में प्रकाशित हुआ था, जिसमें युवक साइरस की प्रेमकहानी कही गयी है। साइरस मिडिया के राजा का पौत्र है जो वेष बदलकर मन्डेन (Mundane) नामक राजकुमारी के प्रेम में सैकड़ों पराक्रम के कार्य करता और अच्छी ख्याति प्राप्त करता है। साइरस के साहसिक कार्य इस प्रकार वर्णित किये गये है कि उसके और समकालीन योद्धाओं के वीच सादृश्य उत्पन्न हो गया है। प्रसिद्ध तथा प्रमुख सैनिकों के ऐसे काम, जो उनकी वीरता एवं महत्ता सिद्ध करते हैं, रोमांस में साइरस से कराये गये है, जिसका वृत्तान्त ऐसी चतुर रीति से दिया गया है कि पाठकों को तुरन्त समकालीन सैनिकों की याद हो आती है। इसी प्रकार रोमांस की महिलाओं के चरित्र और स्वभाव के चित्र भी तत्कालीन समाज की उन स्त्रियों के सदृश दिये गये हैं जिन्हें मैडिलीन स्कूडेरी अच्छी तरह से जानती थी। उसका विशेष गुण तथा चातुर्य अपने चारों ओर के सामाजिक दृश्यों को देख-समझकर उनके चित्र खीचने और अपने परिचित स्त्री तथा पुरुषों को जैसे का तैसा अपने रोमांसों में पात्र वनाने में प्रकट होता है। उसे सुन्दर वार्तालाप का वड़ा शौक था और वह लिखती भी खूव थी। उसके पात्र वड़ी चतुराई और नफ़ासत से वात-चीत करते हैं। कहा जाता है कि जिन महिलाओं को उसके रोमांसों में स्थान मिलता था वे अत्यन्त प्रसन्न होती थीं, क्योंकि वह उनके रूप-रंग और स्वभाव का तो चित्रण करती थी, किन्तु कामों को छोड़ देती थी। उनका वार्तालाप वड़ी सुन्दरता और सावधानी से लिखा जाता था। मैडिलीन डि स्कूडेरी लिखती है--"अच्छे वार्तालाप का गुर यह है कि तुच्छ से तुच्छ वात को शिष्टता से कहा जाय, ऊंची एवं गहरी वात को सफ़ाई से कहा जाय, विना हर्षोन्माद के और विना किसी वनावट या दिखावे के।" एक और प्रसंग में वह कहती है—"इसलिए मानव-समाज में एक का दूसरे से सम्वन्ध वार्तालाप द्वारा स्थापित है, शिष्ट मनुष्यों को उस में सबसे अधिक आनन्द मिलता है, और वार्तालाप ही संसार में न केवल विनय तथा सुशीलता लाने का सबसे साधारण साधन है वल्कि सदाचार एवं धर्म तक मैं समझती हूँ कि साथ वैठनेवालों का इससे वड़ा सौभाग्य और कर्तव्य कोई नहीं हो सकता कि वे एक दूसरे की वातचीत पर ध्यान दें।"

मैडिलीन डि स्कूडेरी ने जो कुछ लिखा उस सबका उद्देश्य शिक्षा था, और यह उद्देश्य बहुधा उस समय के लेखकों का हुआ करता था। वह इतिहास को रोचक बनाने के लिए उसमें कहानी का पुट दिया करती थी और समझती थी कि ऐसा करने से वह कला को यथार्थ से मिलाती और इतिहास के तथ्यों की तह में पहुँच जाती है। कल्पना-शक्ति दुर्बल होने के कारण वह कथावस्तु तैयार करने में प्रचलित रीतियों का सहारा लेती और अपने अनुभव के नित्यप्रति-जीवन की घटनाओं को उनमें मिलाकर काम चलाती थी। वह कहा करती थी कि "असत्य की ठीक कला तथा चतुराई सत्य के सदृश होने में है। जब इतिहास हमारे सामने है जिसमें लोग विश्वास करते हैं, तो मनगढंत की क्या आवश्यकता है?" वह सदा विचित्र से विचित्र तथा अविश्वसनीय कथावस्तु को इतिहास की घटनाओं से मिलाने के हेर-फेर में रहा करती थी। चाहे कोई घटना हो चाहे कोई व्यक्ति हो, यदि तत्कालीन सामाजिक स्थितियों में उसकी खपत सम्भव हो सकती थी तो उसका विश्वास के योग्य होना और न होना कोई बाधा नहीं डाल सकता था। उसके लिए कहानी (fiction) और झूठ एक बराबर थे; सवाल केवल एक होता था—कैसे उस झूठ को सत्य करके दिखाया जाय?

मैडिलीन स्कूडेरी के रोमांसों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद हुआ और वे इंग्लैण्ड में भी खूब पढ़े गये। समय व्यतीत होने पर रेस्टोरेशन ट्रैजेडी (Restoration tragedy) में वार्तालाप की सुन्दरता एवं व्यंग्योक्ति के कारण उनके लम्बे-लम्बे टुकड़े मिला लिये गये और इस प्रकार धीरे-धीरे अंग्रेजी उपन्यास की धारा में उनके सजीव भाग लीन हो गये। इन रोमांसों ने इंग्लैण्ड के नाटक तथा कहानी-साहित्य को आकाश से उड़ना छोड़कर पृथ्वी पर साधारण चाल से चलना सिखाया, जो बहुत आवश्यक शिक्षा थी। इन रोमांसों ने लेखकों को अनुभव से कल्पना को पृथक् रखने और जीवन के वास्तविक तथ्यों को ठीक-ठीक वर्णन करने की रीतियाँ सिखायी। इसी समय में ड्राइडेन (Dryden) ने लोगों को चेतावनी दी और लिखा कि कल्पना-शक्ति इतनी उन्मत्त एवं जंगली होती है कि "उसकी गर्दन में उसी प्रकार के भारी बोझ लटकाने की आवश्यकता है, जैसे हम भाग जाने वाले कुत्तों को रोकने के लिए उनकी गर्दनों में लटकाते हैं। ऐसा न करने से कल्पना बुद्धि के आगे निकल भागती है।" किन्तु ड्राइडेन के इस विचार ने स्वयं उसके नाटकों को उन दोषों से नहीं बचाया, जो इस समय "पराक्रमी नाटकों" (Heroic plays) में भरे होते थे। सन् १६७१ में ड्यूक आफ़ बकिंघम ने अपने रिहर्सल

(Rehearsal) नामक नाटक में इस दोष की बड़ी हँसी उड़ायी थी और दूसरे लोगों ने मैडिलीन डि स्कूडेरी के सिद्धान्त का समर्थन किया था। इस लिए शताब्दी के समाप्त होते-होते "पराक्रमी रोमांस" लिखना बन्द हो गया, किन्तु "पिकैरेस्क" रोमांस जिसमें उसकी अपेक्षा मानवी तत्त्व कहीं अधिक होते थे, बराबर लिखा जाता रहा।

खास फ्रांस में मैडिलीन डि स्कूडेरी के दोषों को दूर करके बहुत से लेखकों ने रोमांस लिखे। पहले तो लोगों ने उनके मनोविज्ञान का बहुत कुछ संशोधन किया। फिर उस भ्रांति को दूर करने की चेष्टा हुई जो उसके रोमांसों ने यथार्थ को कल्पना से दबाकर उत्पन्न कर दी थी। ये दोनों काम बड़ी सफलता से मडाम डि ला फायट (Madam de la Fayette) ने किये और अपने ला प्रिन्सेस डि क्लीव्ज़ (La Princese de Cleves) नामक रोमांस में, जो १६७८ में प्रकाशित हुआ, दिखा दिया कि कहानी-साहित्य की सफलता के लिए कितनी अनुपात-बुद्धि (Sense of proportion) होनी चाहिए और कितना ठीक तथा सच्चा ज्ञान आत्मा अथवा अस्तित्व का होना आवश्यक है। इस रोमास का साहित्यकारों ने बड़ा स्वागत किया और उसके अध्ययन के उपरान्त अच्छे-अच्छे निबन्ध उसकी विशेषताओं पर लिखे गये, जिनमे कहानी-साहित्य की कला के मुख्य सिद्धांतों पर विवाद उठाये गये। सन् १६७८ के बाद से इस रोमांस की गणना कहानी-साहित्य में यूरोप की सर्वोत्तम रचनाओं में की जाती है। अस्तित्व का इतना सच्चा ज्ञान होने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्तिविशेष को जीवन में आनन्द प्राप्त हो। ऐसे आनन्द के अभाव में कोई व्यक्ति अपने मन की गति को भी नहीं जान सकता। और व्यक्ति का यह आनन्द तभी पूर्ण आनन्द हो सकता है जब वह मानव-जीवन मे गहरी दिलचस्पी रखता हो। सत्रहवी शताब्दी के चतुर्थ चरण में फ्रांस और इंग-लैण्ड दोनों देशों में बहुत-से कारणों से यह दिलचस्पी लोगों में खूब बढ़ गयी थी। यही दिलचस्पी अब से आगे के समय में तरह तरह से मानव-जीवन सम्बन्धी ज्ञान लोगों में बढ़ाती गयी और अठारहवी शताब्दी में यथार्थवाद तथा यथार्थवादी उप-न्यास के रूप में फलीभूत हुई।

जान बनियन और उसकी "दि पिलग्रिम्स प्रोग्रेस" नामक रचना

सत्रहवीं शताब्दी में लोगों को सबसे अधिक दिलचस्पी धर्म और धर्म सम्बन्धी विषयों में थी। साहित्य में भी उस काल में धर्म पर ही अधिक ध्यान था। इस

काल का सर्वप्रिय कहानी-साहित्य भी धार्मिक विषयों से ही ओतप्रोत है। कहानियाँ धार्मिक जीवन के अनुकूल होती थीं और कोई न कोई उपदेश देने के लिए लिखी जाती थीं। सन् १६७८ में जान वनियन की "दि पिलग्रिम्स प्रोग्रेस" नामक रचना प्रकाशित हुई थी, जिसमें तत्कालीन साधारण मनुष्यों की अभिलाषा तथा उत्कट इच्छा एवं उनका सारा जीवन-संघर्ष एक ऐसे रूप में प्रस्तुत किया गया था जो साहसिक रोमांस, परियों के किस्से तथा उपन्यास की जैसी रोचकता रखता था। वनियन (Bunyan, John) ने एक बटोही (Pilgrim) के जीवन-संघर्ष का चित्रण किया है जिसका नाम "क्रिस्टचन" (Christian) है और जो वास्तव में प्रत्येक मनुष्य का प्रतिरूप है। भ्रमणशील नाइट (Knight errant) अथवा स्पेन देश के "धूर्त" (Rogue) शठ के समान "क्रिस्टचन" सारे संसार में घूमता फिरता है। नाइट के समान उसके विचार बहुत ऊँचे और आदर्श परोपकारी मनुष्य के जैसे हैं, "धूर्त" के समान वह हर एक तरह के लोगों में हिल-मिल जाता और अपने भ्रमण में नये स्थान तथा नवीन रीति-रिवाज देखता है, जो उस काल में प्रचलित थे। इस पुस्तक को उपन्यास का अंकुर कहना अनुचित न होगा, क्योंकि उसमें केवल समकालीन संसार ही ज्यों का त्यों चित्रित नहीं है, बल्कि चलते-फिरते जो लोग "क्रिस्टचन" से मिलते हैं वे सब जान वनियन के समय के ऐसे लोग हैं जिन्हें वह स्वयं कहीं बाज़ार के दिन सड़क पर मिल सकता था—जैसे हृष्टपुष्ट और स्थूल मिस्टर दुनियादार, जो कदम-कदम पर दूरदर्शिता के चतुर विधिवाक्य बिखेरते जाते हैं; प्रमादपूर्ण आत्म-विश्वासी युवक श्री मूर्खाचार्य; भद्रता का लवादा ओढ़े महाराज डेमास; कभी न थकने वाले मधुर-भाषी धर्म को ओढ़ना-बिछौना बनाये मिस्टर पाइटी (Piety), आदि अनेक नमूनों के लोग पुस्तक में मिलते हैं। क्या मनुष्य क्या स्थान, सबका वर्णन ऐसे ठीक गुणवाचक शब्दों के साथ किया गया है कि एक बार पढ़ने के बाद कोई उसे भूलता नहीं। पुस्तक का पढ़नेवाला क्रिश्चन की यात्रा को अपने अनुभवों का वृत्तान्त समझता है और वर्णनों के यथार्थ को स्वीकार करता है। इस वास्तविकता के साथ-साथ इस आत्मकहानी में रोमांस-जैसा लालित्य भी है। यदि एक ओर वनियन की इस पुस्तक ने अठारहवीं शताब्दी के उपन्यास की नींव डाली तो दूसरी ओर उसने मध्यकालीन रोमांस को फिर से जीवित किया और "क्रिस्टचन" की प्राकृतिक एवं अलौकिक आपत्तियों से मुठभेड़ करायी। वनियन का कथापुरुष अपने इष्ट प्रदेश तक पहुँचने के पहले निराशा के विकट शरीरधारी दैत्य का मुकाबला करता है,

नीचा दिखानेवाली घाटी में होकर गुजरता है, झूठे अभिमान के बाजार से होता हुआ मृत्यु की घटा छायी हुई भूमि पर विचरता है, और सुहावने मैदानों, आनन्द-कर पहाड़ों, सुन्दर भवनों, सुखद स्थानों से होता हुआ दिव्य नगर में जा पहुँचता है। रास्ते में उसे भाँति-भाँति के भयानक शत्रु मिलते है जिन्हे वह परास्त करता है, कहीं-कहीं उसकी जान पर बन आती है, कही उसे सहायक मिलते है, कहीं कुमार्ग में ले जानेवाले। उसे साहस, दृढ़ता, धैर्य, सहनशीलता, सत्य, पराक्रम, सब ऐसे गुणों से काम लेना होता है जो मनुष्य के जीवन को सफल करते है। ये सब बातें कहानी को रोमांस की जैसी दिलचस्प बनाती है और उसे लोकप्रियता प्रदान करती हैं।

"दि लाइफ़ ऐण्ड डेथ आफ़ मिस्टर बैडमन" तथा "दि होली वार"

बनियन ने अपनी कहानी को रूपक इस कारण बनाया था कि प्यूरिटन (Puritan) सम्प्रदाय के लोग कहानी लिखने और पढ़ने से घृणा करते थे और कहानी को "मुलम्मा किया हुआ झूठ" कहते थे। बनियन भी उसी सम्प्रदाय का था और उसने अपनी पुस्तक कहानी समझकर नही लिखी थी। रूपक के ही ढंग पर उसने दो और पुस्तके लिखी थीं, दि लाइफ ऐण्ड डेथ आफ मिस्टर बैडमन (The Life and Death of Mr. Badman) और दि होली वार (The Holy War), जो उपन्यास के विकास में बड़ी महत्त्व की है। मिस्टर बैडमन की जीवनी अत्यन्त रोचक है और १६८० में जो समाज की दशा थी उसका अच्छा चित्र खींचती है। मिस्टर वाइजमन जीवनी सुनाते हैं और मिस्टर अटेन्टिव सुनकर टिप्पणी करते जाते है। कोई बुरा काम मिस्टर बैडमन से बचा नही मालूम होता और उन कामों की सजा भी ठीक मिलती जाती है। दि होली वार (१६८२) में भी इसी प्रकार पापों के जीवन और मृत्यु का वर्णन है। एक लड़का विभिन्न प्रकार के बुरे कामों से जीवन प्रारम्भ करके झूठा दिवाला निकालता है, वाणिज्य में धोखा देता है, मदिरा पीता है और बीसों अपराध करता है। ये दोनों ही कहानियाँ नैतिक शिक्षा देने के उद्देश्य से लिखी गयी थी और अपने समय का सच्चा हाल दिखाती है। जो वास्तविकता बनियन की इन कहानियों में पायी जाती है उसी के कारण बनियन को अठारहवी शताब्दी तथा डैनियल डिफ़ो (Daniel Defoe) के उपन्यास का अग्रगामी लेखक कहा जाता है।

रेस्टोरेशन के युग की विशेषताएँ

इसी वास्तविकता अथवा यथार्थवाद ने रेस्टोरेशन (The Restoration), राजतंत्र के पुनःस्थापन के युग को सत्रहवीं शताब्दी से पृथक् करके उसे विशेपता दी है। प्यूरिटन सम्प्रदाय के लोग अपना परलोक सुधारने में इतने व्यस्त रहा करते थे कि उनकी स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ वहुत कुछ दवाये जाने से विलकुल कुचल गयी थीं। इस लोक में सफल जीवन व्यतीत करने तथा यहाँ का सुख भोगने की ओर से वे लोग उदासीन हो गये थे और इस प्रकार उन्होंने पिछली शताब्दियों में पुनरुत्थान (Renaissance) का सारा किया-धरा समाप्त कर दिया था। प्यूरिटन आदर्शों की ओर वहुधा साधारण मनुष्यों का चित्त आकर्षित नहीं हो सकता था। दूसरों को देखकर सामान्य मनुष्य उन आदर्शों को अनुकरणीय तो समझते थे,और ऐसा समझने के कारण उनका कुछ प्रभाव भी पड़ता था, किन्तु यह स्वाभाविक था कि साधारण जनता कुछ काल के उपरान्त इतने कठिन आदर्शों की क़वायद से थक जाय और उस सम्प्रदाय से पृथक् हो जाय। जिस समय प्यूरिटन नेता स्वयं अपने आदर्श की असफलता स्वीकार करने लगे और अपनी त्रुटियों को मानकर उन्हें सुधारने लगे, तो जनता खुले वन्दों तथा वड़े चाव से सांसारिक सुखों की ओर लपकने लगी। अंग्रेज़ी साहित्य में सन् १६६० वड़े महत्त्व का इसलिए है कि उस समय से लोगों के विचारों में परिवर्तन आया और उन्होंने पुनरुत्थान का काम फिर से चलाना आरम्भ कर दिया। किन्तु पिछले पचास वर्षों ने अंग्रेज़ जाति की चित्तवृत्ति में वड़ा परिवर्तन कर दिया था। इस युग में वर्तमान तथा वास्तविक जीवन के साधनों पर विशेप वल दिया जाता था, पर उन साधनों को वढ़ाने तथा विस्तार करने पर ध्यान नहीं था, वर्तमान जीवन की वास्तविक सुविधाओं से ही काम लेने की धुन थी। सामने की वातों से लोग वहुत प्रभावित होते थे, यथार्थवाद उनका सिद्धान्त हो गया था, और प्यूरिटन एवं एलिजवेथ के काल का-सा सर्वातिशायी (transcendental) सिद्धान्त वे छोड़ चुके थे। उनका यथार्थवाद राजनीति के क्षेत्र में सीमित होकर वर्तमान दशा में दिलचस्पी का रूप धारण कर चुका था, विज्ञान में सिद्धान्तों की खोज को छोड़कर छोटी-छोटी अनुभव की वातों का निरीक्षण करने लगा था। लगभग सभी वातों में लोग समभाव के स्थितिपालक हो गये थे। वे व्यक्ति के उत्साह से डर गये थे, इस कारण नियम तथा कानूनों के वन्धनों में व्यक्ति को जकड़ देना चाहते थे, तरह-तरह से व्यक्ति-जीवन को सीमित करते चले जाते

थे और बुद्धि एवं व्यावहारिक ज्ञान की कसौटी पर प्रत्येक बात की जाँच करते थे। जितने नियम और कानून थे उनका एक ही उद्देश्य होता था कि कैसे व्यक्ति की कोई भी विशेषता न रह जाय। नियमों तथा कानूनों से सब लोगों को एक जैसे कपड़े पहनने, एक रीति से व्यवहार करने, एक तरह लिखने पर बाध्य किया गया था। ऐसी दशा में व्यक्ति के लिए अपना अस्तित्व बनाये रखना और इन बन्धनों के होते हुए अपनी सत्ता को प्रकट करना एक समस्या हो गयी थी।

रेस्टोरेशन काल का साहित्य

रेस्टोरेशन युग के साहित्य में ये अभिप्राय तथा प्रवृत्तियाँ प्रतिबिम्बित हैं। सारे रेस्टोरेशन-साहित्य में दो विषयों को लिया गया है; एक तो समाज की व्यवस्था एवं राष्ट्र का संगठन इस उद्देश्य से हो कि व्यक्ति की उत्कट आकांक्षा को बन्धन में रखा जाय, दूसरा यह कि साधारण जनता को एक-दूसरे के साथ रहना सिखाया जाय। इस विषय की रचनाएँ नगर तथा कसबों के लोगों का चिन्तन करती हैं और पहनने-ओढ़ने की बातों तथा शिष्टाचार पर सारा बल देती हैं, जो वहाँ रहनेवालों के लिए आवश्यक होते हैं। किन्तु इस काल के साहित्य की विशेषता उस मौन अनुमति में पायी जाती है जो लेखकों ने उन सिद्धान्तों तथा नियमों का पालन करके दी थी, जो शैली एवं भाषा को सुधारने के लिए निश्चित किये गये थे। इस बात में यह काल एलिजबेथ के युग से विपरीत था, जब लेखक स्वतंत्रतापूर्वक अपने बनाये नियमों पर रचना करते थे और अपने को किसी निश्चित शैली अथवा लेखन-प्रणाली को स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं समझते थे।

फ्रांस के साहित्यिक सिद्धान्तों का प्रभाव

दोनों युगों की इस विभिन्नता में फ्रांस का बड़ा प्रभाव था। अधिक संख्या ऐसे अंग्रेज़ों की थी जो साहित्य से प्रेम रखते और अंग्रेज़ी भाषा में रचना करते थे। वे चार्ल्स प्रथम के परिवार के साथ १६४९ में इंग्लैण्ड से भागकर फ्रांस में रहने लगे थे, और उस देश के साहित्यिक सिद्धान्तों से प्रभावित होकर वहाँ की शैली तथा प्रणाली को उन्होंने ग्रहण कर लिया था। सन् १६६० में जब चार्ल्स द्वितीय के साथ वे इंग्लैण्ड लौटे तो वे फ्रांस के कला-सिद्धान्तों से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने अंग्रेज़ी भाषा और साहित्य में भी उनका प्रचार करना प्रारम्भ किया और बहुत-से सुधार भी किये। साहित्य के कई अंगों की

प्रणाली में परिवर्तन होने लगा और भाषा-प्रयोग के नियम भी बनाये गये। सारे साहित्य में एक नयी जान पड़ने लगी, जिसने पिछले पचास वर्षों की शिथिलता को धीरे-धीरे दूर कर दिया। अंग्रेज़ी नाटक पर मोलियेे (Moliere) का गहरा प्रभाव पड़ा, जिसने सुखान्त नाटकों की काया पलट दी। शेक्स-पियर के सुखान्त नाटक रोमैन्टिक प्रवृत्ति के थे; यद्यपि उनमें मनुष्य-जीवन की बड़ी-बड़ी समस्याएँ प्रस्तुत की गयी थीं, और मानव-प्रकृति का गहरा निरी-क्षण किया गया था, फिर भी उनमें वास्तविक नित्यप्रति के जीवन की स्थितियों से कोई सरोकार नहीं रखा गया था। बेन जान्सन (Ben Jonson) और मिडल्टन (Middleton) के नाटकों में, विशेष कर शर्ली (Shirley) के नाटकों में सामाजिक अवस्था एवं घटनाओं के दृश्यों का वास्तविक वर्णन होता था। रेस्टोरेशन काल के नाटक, कहने को तो इन्हीं के नमूनों पर लिखे जाते थे, किन्तु मोलिये के प्रभाव में जीवन की बाहरी बातें, जैसे तत्कालीन रीत-रिवाज, फैशन, शिष्टाचार तथा रुचियाँ, विशेष उत्साह के साथ दिखायी जाती थीं और उनके सम्बन्ध में बड़ी चुभती बातें कही जाती थीं। बहुधा रेस्टोरेशन काल के नाटकों का संसार घर की बैठक, काफी-हाउस, लन्दन नगर के बाज़ार की सड़कें एवं गलियाँ और लन्दन के बाग़ हुआ करता था। इन नाटकों के पात्र बहुधा फैशन वाले मर्द और औरतें हैं, कथावस्तु अक्सर प्रेमकहानी होती है जिसमें तरह-तरह की गुत्थियाँ पड़ी होती है और जो फ्रेंच भाषा की पुस्तकों में से ली हुई होती है। कथावस्तु सदा बड़ी सुन्दर तथा चतुराई से लिखे हुए वार्तालाप द्वारा आगे बढ़ायी जाती है, जो सदा से फ्रेंच भाषा और साहित्य की विशेषता रही है।

साहित्यिकों की गोष्ठियाँ—"पार्थेनिस्सा" नामक रोमांस

फ्रांस से लौटे हुए इन्हीं साहित्यिक लोगों ने फ्रांस की प्रथा के अनुसार इंग्लैण्ड में इस समय वे छोटी-छोटी पाठकों की गोष्ठियाँ भी स्थापित की थीं, जो अंग्रेज़ी में अनुवादित फ्रेंच कहानी-साहित्य को पढ़तीं और उस पर विवाद करतीं थीं। इन गोष्ठियों में बहुत-से लेखक भी थे जो फ्रेन्च भाषा की पुस्तकों का जल्द से जल्द अनुवाद करते और उन्हें अंग्रेज़ पाठकों के सामने प्रस्तुत करते थे। ऐसे भी कुछ लेखक थे जो फ्रेन्च रोमांसों के आधार पर अंग्रेज़ी में रोमांस लिखते और अपनी गोष्ठी से उन्हें प्रकाशित करते थे। इन गोष्ठियों में सबसे प्रसिद्ध गोष्ठियाँ वे थीं जिनकी प्रमुख सदस्या कैथरिन फिलिप्स (Katherine Philips) और मार्गरेट, डचेस आफ़ न्यूकास्ल (Margaret, Duchess of Newcastle) थीं।

इन गोष्ठियों का प्रकाशित सबसे पहला पार्थेनिस्सा नामक रोमांस १६५४ में राजर बोआयल (Roger Boyle) ने लिखा था। पार्थेनिस्सा (Parthenessa) मैडिलीन स्कूडेरी के रोमांसों का अनुकरण करते हुए लिखा गया था और उसमें बार्कले के आर्जेनिस (Barclay's Argenis) की तरह एक ही पात्र कई-कई मनुष्यों का काम करता था और विभिन्न देशों तथा युगों की स्त्रियाँ और पुरुष एक ही साथ सामने आते थे। जितने भी रोमांस गोष्ठियों से प्रकाशित हुए वे सब किसी न किसी ऐसे रोमांस की नक़ल थे जो स्वयं दूसरे की नकल में लिखा गया था। गोष्ठियों के लेखक किसी न किसी प्राचीन रोमांस का वातावरण तथा स्थितियाँ फिर से उपस्थित करने की चेष्टा करते और कभी-कभी प्राचीन लेखकों की प्रणाली एवं शैली की भी नकल करते थे। यदि एक लेखक लाइली (Lyly) के यूफ्यूईज (Euphues) की अलंकारयुक्त शैली का चर्वा उड़ाता, तो दूसरा सिडनी की आर्केडिया (Sidney's Arcadia) के वातावरण का फिर से पाठकों को अनुभव कराता था। वे लेखक भी जो वास्तविकता पसन्द करते थे और धूर्तता की कहानियाँ लिखते थे, पुरानी सामग्री का सहारा लेकर और पुरानी कथावस्तु को कतर-ब्योंतकर एलिज़बेथ काल की पुस्तिकाओं (Pamphlets) की जैसी कहानियाँ बनाते थे। पुरानी कथावस्तु को तत्कालीन आवश्यकता के लिए फिर से सजीव करके नयी रचना में बदल देने की रीतियाँ उन्हें खूब मालूम थीं। वे अपनी कहानियों के प्रसंगों को रोचक बनाने के लिए डाकुओं, चोरों तथा जेब कतरनेवालों के वास्तविक अनुभवों का ब्यौरेवार वर्णन करते थे और इस प्रकार वे कहानियों को आपबीती-जैसी प्रमाणता प्रदान करते थे। अपने साहसिक कार्यों को यथायोग्य पृष्ठभूमि देने के लिए वे कहानियों में पूर्व देशों के दृश्य वर्णन किया करते थे, जिससे बहुत-सी काल्पनिक बातें विश्वास के योग्य हो जाती थी। इस प्रणाली की सफलता यहाँ तक थी कि पाठक उनकी कहानियों को यथार्थ वर्णन समझते और चाव से पढ़ते थे। उपन्यास के कोई गुण उनमें नहीं पाये जाते थे, न उनमें जान थी न विविधता, न वे किसी देश या काल की जान पड़ती थीं, न विचारों तथा सिद्धान्तों के प्रयोजक होने से वे किसी सभ्यता की सूचक हुआ करती थीं। उनमें एक गुण यह था कि उन्होंने लोगों में कहानी-साहित्य की माँग जीवित रखी और कुछ हद तक उसे पूरा भी किया। जहाँ तक उनके थोड़े होने का सवाल है, नाटक लिखने पर इस समय बहुत ज़ोर था, और जैसे-जैसे नाटक की उन्नति होती जाती थी, रोमांस का क्षय होता जाता था। इस काल की प्रवृत्तियों से और सामाजिक दशा से सिद्ध होता है कि

प्रणाली में परिवर्तन होने लगा और भाषा-प्रयोग के नियम भी बनाये गये। सारे साहित्य में एक नयी जान पड़ने लगी, जिसने पिछले पचास वर्षों की शिथिलता को धीरे-धीरे दूर कर दिया। अंग्रेजी नाटक पर मोलियेर (Moliere) का गहरा प्रभाव पड़ा, जिसने सुखान्त नाटकों की काया पलट दी। शेक्सपियर के सुखान्त नाटक रोमैन्टिक प्रवृत्ति के थे; यद्यपि उनमें मनुष्य-जीवन की बड़ी-बड़ी समस्याएँ प्रस्तुत की गयी थी, और मानव-प्रकृति का गहरा निरीक्षण किया गया था, फिर भी उनमें वास्तविक नित्यप्रति के जीवन की स्थितियों से कोई सरोकार नही रखा गया था। बेन जान्सन (Ben Jonson) और मिडल्टन (Middleton) के नाटकों में, विशेष कर शर्ली (Shirley) के नाटकों में सामाजिक अवस्था एवं घटनाओं के दृश्यों का वास्तविक वर्णन होता था। रेस्टोरेशन काल के नाटक, कहने को तो इन्ही के नमूनों पर लिखे जाते थे, किन्तु मोलियेर के प्रभाव में जीवन की बाहरी बातें, जैसे तत्कालीन रीत-रिवाज, फैशन, शिष्टाचार तथा रुचियाँ, विशेष उत्साह के साथ दिखायी जाती थीं और उनके सम्बन्ध में बड़ी चुभती बातें कही जाती थी। बहुधा रेस्टोरेशन काल के नाटकों का संसार घर की बैठक, काफी-हाउस, लन्दन नगर के बाजार की सड़कें एवं गलियाँ और लन्दन के बाग हुआ करता था। इन नाटकों के पात्र बहुधा फैशन वाले मर्द और औरतें हैं, कथावस्तु अक्सर प्रेमकहानी होती है जिसमें तरह-तरह की गुत्थियाँ पड़ी होती है और जो फ्रेंच भाषा की पुस्तकों में से ली हुई होती है। कथावस्तु सदा बड़ी सुन्दर तथा चतुराई से लिखे हुए वार्तालाप द्वारा आगे बढ़ायी जाती है, जो सदा से फ्रेंच भाषा और साहित्य की विशेषता रही है।

साहित्यिकों की गोष्ठियाँ—"पार्थेनिस्सा" नामक रोमांस

फ्रांस से लौटे हुए इन्ही साहित्यिक लोगों ने फ्रांस की प्रथा के अनुसार इंग्लैण्ड में इस समय वे छोटी-छोटी पाठकों की गोष्ठियाँ भी स्थापित की थीं, जो अंग्रेजी में अनुवादित फ्रेंच कहानी-साहित्य को पढ़तीं और उस पर विवाद करती थी। इन गोष्ठियों में बहुत-से लेखक भी थे जो फ्रेन्च भाषा की पुस्तकों का जल्द से जल्द अनुवाद करते और उन्हें अंग्रेज पाठकों के सामने प्रस्तुत करते थे। ऐसे भी कुछ लेखक थे जो फ्रेन्च रोमांसों के आधार पर अंग्रेजी में रोमांस लिखते और अपनी गोष्ठी से उन्हें प्रकाशित करते थे। इन गोष्ठियों में सबसे प्रसिद्ध गोष्ठियाँ वे थी जिनकी प्रमुख सदस्या कैथरिन फिलिप्स (Katherine Philips) और मार्गरेट, डचेस आफ़ न्यूकास्ल (Margaret, Duchess of Newcastle) थीं।

इन गोष्ठियों का प्रकाशित सबसे पहला पार्थेनिस्सा नामक रोमांस १६५४ में राजर बोआयल (Roger Boyle) ने लिखा था। पार्थनिस्सा (Parthenessa) मैडिलीन स्कूडेरी के रोमांसों का अनुकरण करते हुए लिखा गया था और उसमें बार्कले के आर्जेनिस (Barclay's Argenis) की तरह एक ही पात्र कई-कई मनुष्यों का काम करता था और विभिन्न देशों तथा युगों की स्त्रियाँ और पुरुष एक ही साथ सामने आते थे। जितने भी रोमांस गोष्ठियों से प्रकाशित हुए वे सब किसी न किसी ऐसे रोमांस की नक़ल थे जो स्वयं दूसरे की नकल में लिखा गया था। गोष्ठियों के लेखक किसी न किसी प्राचीन रोमांस का वातावरण तथा स्थितियाँ फिर से उपस्थित करने की चेष्टा करते और कभी-कभी प्राचीन लेखकों की प्रणाली एवं शैली की भी नकल करते थे। यदि एक लेखक लाइली (Lyly) के यूफ्यूईज (Euphues) की अलंकारयुक्त शैली का चर्वा उड़ाता, तो दूसरा सिडनी की आर्केडिया (Sidney's Arcadia) के वातावरण का फिर से पाठकों को अनुभव कराता था। वे लेखक भी जो वास्तविकता पसन्द करते थे और घटना की कहानियाँ लिखते थे, पुरानी सामग्री का सहारा लेकर और पुरानी कथावस्तु को कतर-ब्योंतकर एलिज़बेथ काल की पुस्तिकाओं (Pamphlets) की जैसी कहानियाँ बनाते थे। पुरानी कथावस्तु को तत्कालीन आवश्यकता के लिए फिर से सजीव करके नयी रचना में बदल देने की रीतियाँ उन्हें खूब मालूम थीं। वे अपनी कहानियों के प्रसंगों को रोचक बनाने के लिए डाकुओं, चोरों तथा जेब कतरनेवालों के वास्तविक अनुभवों का ब्यौरेवार वर्णन करते थे और इस प्रकार वे कहानियों को आपबीती-जैसी प्रमाणता प्रदान करते थे। अपने साहसिक कार्यों को यथायोग्य पृष्ठभूमि देने के लिए वे कहानियों में पूर्व देशों के दृश्य वर्णन किया करते थे, जिससे बहुत-सी काल्पनिक बातें विश्वास के योग्य हो जाती थीं। इस प्रणाली की सफलता यहाँ तक थी कि पाठक उनकी कहानियों को यथार्थ वर्णन समझते और चाव से पढ़ते थे। उपन्यास के कोई गुण उनमें नहीं पाये जाते थे, न उनमें जान थी न विविधता, न वे किसी देश या काल की जान पड़ती थीं, न विचारों तथा सिद्धान्तों के प्रयोजक होने से वे किसी सभ्यता की सूचक हुआ करती थीं। उनमें एक गुण यह था कि उन्होंने लोगों में कहानी-साहित्य की माँग जीवित रखी और कुछ हद तक उसे पूरा भी किया। जहाँ तक उनके थोड़े होने का सवाल है, नाटक लिखने पर इस समय बहुत ज़ोर था, और जैसे-जैसे नाटक की उन्नति होती जाती थी, रोमांस का क्षय होता जाता था। इस काल की प्रवृत्तियों से और सामाजिक दशा से सिद्ध होता है कि

कहानी-साहित्य में नाटक की उन्नति रोमांस का अवसाद होता है, जैसा आगे चलकर सिद्ध हुआ कि उपन्यास का आगम एवं वृद्धि नाटक का क्षय है।

नाटक तथा उपन्यास में संघर्ष—अफ़रा बेन

यह तथ्य कि उपन्यास की उन्नति नाटक की अवनति है, रेस्टोरेशन काल के ऐसे लेखकों की रचनाओं से सिद्ध होता है जो या तो कहानी-साहित्य के इन दोनों अंगों में रचना करते थे या नाटक से प्रारम्भ करके उपन्यास लिखने लगे थे अथवा उपन्यास को छोड़कर नाटककार हो गये थे। वे लेखक जो गोष्ठियों के सदस्य थे, बहुधा कई अंगों में रचना करते थे और धीरे-धीरे एक अंग को पसन्द करके अपनी रुचि के अनुसार उसी में लिखने लगते थे। इस अदल-बदल का अच्छा उदाहरण हमें अफरा बेन, (Aphra Behn १६४०-८१), की रचनाओं में मिलता है। उसने अपना साहित्यिक जीवन नाटक से प्रारम्भ किया और १६७१ से १६८९ तक के समय में पन्द्रह नाटकों की रचना की। इसी बीच में उसने उपन्यास की ओर ध्यान दिया और सन् १६७८ के लगभग आरूनोको (Oroonoko) नामक उपन्यास की रचना की, जिसमें उसने एक गुलाम के पकड़े जाने और फाँसी पाने का वास्तविक वर्णन किया है। यह अंग्रेज़ी में प्रथम उपन्यास था जिसमें नीग्रो जाति के दुःखों पर सहानुभूति प्रकट की गयी थी। अफ़रा बेन ने कुछ समय सूरीनाम (Surinam) में बिताया था और अफ़रीका की कई जातियों के नित्यप्रति के जीवन का उसे ज्ञान था। रेस्टोरेशन के समय के पाठकों को पुस्तक इसलिए रुचिकर हुई थी कि उसमें रोमांस की रीति से एक सदाचारी नीग्रो का प्रेम तथा उसके सद्‌गुणों का वर्णन और उसकी मुसीबतों का हाल दिया गया था। एक ओर तो कहने को असभ्य जाति का मनुष्य जीवन के ऊँचे आदर्शों का नमूना है, दूसरी ओर सभ्य गौरांग जाति की क्रूरता तथा अन्याय है। अफ़रा बेन ने प्राकृतिक मानवता की "सभ्यता" की शिष्टता से तुलना की है और ऐसा करके उसने मनुष्य मात्र के प्रेम का पहला उपन्यास इंग्लैण्ड को दिया है। साथ ही उसने "पराक्रमी रोमांस" का भी अच्छा नमूना प्रस्तुत किया जो सर्वप्रिय हुआ। आरूनोको (Oroonoko) में रोमांस की सी आहें और लपटें भरी है, जो इसलिए कि ईसाई संसार को गुलामी की क्रूरता तथा अन्याय का रूप दिखाकर जगाना मंजूर था। पुस्तक में उन भयानक अनुभवों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है जो नीगरो को सभ्य गौरांग जाति के लोगों के कारण हुए थे। यद्यपि कला की दृष्टि से इस उपन्यास

का कोई महत्त्व नही है, तिस पर भी न वह केवल एलिज़वेथ काल की सी पुस्तिका (Pamphlet) ही है, न मनवहलाव के लिए कोई कहानी। कथावस्तु में कोई पेचीली वात नहीं है और न वार्तालाप में कोई लालित्य, किन्तु इस पर भी यह उपन्यास साहित्य के इतिहास में इसलिए ऊँचा स्थान पाता है कि इसमें कई ऐसे गुण है जो आगे चलकर उपन्यास में लाये गये और जिनके कारण उपन्यास साहित्य का प्रतिष्ठित अंग हो गया।

अफरा वेन ने इस प्राथमिक उपन्यास में वे गुर वताये हैं जिनका प्रयोग अन्य देशों के उपन्यासकार करते थे। उसने उपन्यास को प्रारम्भ करने की विधि वतायी कि जिससे वहुत जल्द पाठक का मन आर्कपित होकर कथावस्तु के मध्य की घटना तथा स्थिति की ओर चला जाय और उसका ध्यान इधर-उधर न भटके। ये विधियाँ अव हमें वड़ी साधारण-सी प्रतीत होती है, किन्तु उपन्यास के विकास में उनका जानना किसी अन्वेषण से कम न था। दूसरी वात जो अफ़रा वेन की रचना से मालूम हुई, वह तथ्य और कल्पना का सम्वन्ध है जिसके जाने विंना कथावस्तु का सँवारना असम्भव है। कल्पना द्वारा तथ्य का सामग्री में परिवर्तन करना आवश्यक है, क्योंकि विना इसके कोई तथ्य उपन्यास अथवा नाटक की सामग्री नही हो सकता। यदि उपन्यास को रोमांस की भाँति चलाना मजूर नही है तो विशेप प्रकार से दृश्यों, चरित्रों, विचारों को कथावस्तु में रखना होता है, जिससे वह उद्देश्य सफल हो जो उपन्यासकार ने अपने सामने रखा है। अफरा वेन ने वार्तालाप पर कोई ध्यान नही दिया; इसलिए कि वह विशेपता नाटक की समझी जाती थी। जब दूसरे लेखकों ने अफरा वेन के रोमांसों तथा उपन्यासों को नाटकों के रूप में लिखा और वार्तालाप को सुधारा तो उनके गुण और भी चमक उठे।

रोमांस और उपन्यास

कथावस्तु एवं वनावट में किस विधि से रोमांस की सामग्री उपन्यास की सामग्री में परिवर्तित हो रही थी, इसे समझने के लिए अफ़रा वेन के नाटकों तथा उपन्यासों और विलियम कांगरीव (१६७०-१७२९) एवं जार्ज फ़ार्खार (१६७८-१७०७) की रचनाओं का अन्तर जानना आवश्यक है। कांगरीव (Congreve) का इनकागनिटा (Incognita) और फार्खार (Farquhar) का ऐडवेन्चर्स आफ़ कोवेन्ट गार्डेन (Adventures of Covent Garden), दोनों की ही कल्पना पहले नाटकों के रूप में की गयी थी और दोनों षड्यन्त्र अथवा

कूट प्रवन्ध पर निर्भर हैं। चरित्र-चित्रण सरल अथच अवैयक्तिक है और स्थितियाँ सामान्य प्रकार की, जैसी सिडनी की आर्केडिया या किसी अन्य कहानी में हुआ करती थी। अनहोनी घटना का होना भी सम्भव हो जाता है। इन सब बातों के होते हुए भी दोनों लेखकों की रचनाएँ अज्ञान में नया काम करती हैं और जो व्याख्या इन रचनाओं के साथ इन लेखकों ने प्रकाशित की, उसमें रोमांस और उपन्यास का भेद बताया गया है। कांगरीव ने लिखा है—"रोमांसों में बहुधा वीर पुरुषों, वीर स्त्रियों, राजाओं तथा रानियों के अचल प्रेम एवं अजेय पराक्रम का वृत्तान्त होता है; जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है वह बड़ी ओजस्विनी होती है; अलौकिक घटनाएँ तथा असम्भव कार्य उसके पाठक को उत्तेजित तथा विस्मित करते है और वह आनन्द में ऐसा निमग्न हो जाता है कि चेतने पर उसे क्षोभ और पश्चात्ताप होता है कि कैसे और क्यों उसने अपने संसार को भुलाकर दूसरों के प्रेम तथा दुर्गति और दुर्भाग्य में अपने को लीन कर दिया, जब कि वह भली भाँति जानता था कि वह सिर से पाँव तक झूठ प्रपंच है। उपन्यास कहीं अधिक सामान्य तथा परिचित संसार के होते हैं। वे हमारे जीवन की समस्याओं एवं गुत्थियों और कपटप्रवन्ध के चित्र देते हैं, अकस्मात् घटनाओं तथा अनोखी बातों से हमे प्रसन्न करते हैं, किन्तु ये अनोखी बातें न तो हमारी बुद्धि से परे की होती हैं न अनहोनी, और इस कारण कि हम उनमें विश्वास रखते हैं, वे हमें प्रसन्नता देती हैं। रोमांस आश्चर्य और विस्मय देते हैं, उपन्यास हमें सुख तथा प्रसन्नता देते हैं।"

इस काल में लोग रोमांस और उपन्यास का अन्तर जानने की चेष्टा करते थे और जैसे-जैसे समय बीतता गया दोनों के लक्षण और विशेषताएँ लोगों की समझ में आने लगी थी। कुछ लोगों को उपन्यास के उस रूप का भी आभास हो गया था जो अठारहवी शताब्दी में उसने धारण किया। कांगरीव ने साधारण एवं स्वाभाविक वार्तालाप को वर्णनात्मक शैली में लिखने की कल्पना की थी और अफर बेन (Aphra Behn) की प्रणाली ने दूसरे गुणों को चमकाया था, किन्तु आधुनिक उपन्यास-कला तक पहुँचने के पहले कई रास्तों पर चक्कर लगाना आवश्यक था, जो रेस्टोरेशन काल में ही प्रारम्भ हो गया।

पत्र और चिट्ठियाँ एवं लिखित विचार—दि डचेस आफ न्यूकास्ल

कांगरीव तथा फ़ार्क्वार के रंगीन और काल्पनिक रेखाचित्र उस सामग्री पर आधारित थे जो इस समय पाठकों और लेखकों की गोष्ठियों से प्रकाशित होतीथी।

गोष्ठियों के सदस पत्रों अथवा चिट्ठियों एवं लिखित विचारों के द्वारा अपने अविवाहित आध्यात्मिक प्रेम (Platonic love) तथा निष्कलंक सतीत्व और शुद्धता (immaculate chastity) के झंडे उड़ाया करते और अपने आपको लाक्षणिक ढंग अथवा रूपकों के पीछे छिपाये रखते थे। उन सब लेखकों में प्रसिद्ध और कांगरीव तथा फ़ार्खार की इन रचनाओं से कुछ ही पहले के प्रकाशित सोशेब्ल लेटर्स (Sociable Letters) थे, जो डचेस आफ़ न्यू कास्ल (१६२४–१६७८) ने लिखे थे। इन्हें चिट्ठियाँ न कहकर यदि हम "दृश्य" कहें तो अधिक ठीक होगा। इन रचनाओं में मनुष्यों के मन की भावनाएँ तथा प्रवृत्तियाँ और करतूतें एक स्त्री अपनी सहेली को लिखती है और सहेली उत्तर देती है, और दोनों खूब-खूब पते की बातें बड़ी रोचक रीति से एक-दूसरी को बताती हैं। दि डचेस आफ़ न्यूकास्ल (The Duchess of Newcastle) ने एक और पुस्तक नेचर्स पिक्चर्स (Nature's Pictures) नाम की इसी उद्देश्य से लिखी थी (१६६४), जो सर्वप्रिय भी हुई थी। इस पुस्तक में छोटे-छोटे दृश्य तथा चुटकुले हैं जिनमें वार्तालाप का लालित्य एवं चरित्र-चित्रण का चमत्कार है। भाषा सीधी-सादी और बोल-चाल की उन दार्शनिक विवादों की भी है जो मौके और बेमौक़े उठाये जाते हैं और गड़बड़ मचाते हैं। किन्तु शैली पानी की तरह बहती चली जाती है, जिसके कारण पाठक का मन उलझन में नहीं पड़ता और जल्द से जल्द सम्पूर्ण चित्र तथा चुटकुला उसके हृदय में उतर जाता है। डचेस आफ़ न्यूकास्ल के नाम से भी जो लोग घबराते थे, वे भी उसकी रचनाओं के गुणों को स्वीकार करते थे। डचेस प्रतिभाशाली मनुष्यों की भाँति अनोखी और स्पष्टवक्ता थी और प्रत्येक विषय पर अपने निजी विचार तीखेपन के साथ प्रकट भी करती थी। फिर भी, जहाँ तक उपन्यास के विकास का वास्ता है, वह मार्ग-दर्शक एवं इस युग की अग्रसर लेखिका थी, जिसने दो सौ से अधिक पत्रों में लन्दन का जीवन तथा दृश्य वर्णन करके उपन्यासकला की उन्नति में योग दिया। अंग्रेज़ लेखकों को इन पत्रों से यह मालूम हुआ कि सर्वथा काल्पनिक अभिप्रायों के लिए पत्र-व्यवहार की प्रणाली कैसे प्रयोग में लायी जा सकती है।

पत्रों की दूसरी पुस्तकें

पत्र-व्यवहार की प्रणाली में कुछ परिवर्तन के साथ सन् १६७८ मे पोर्चगीज़ लेटर्स (Portuguese Letters) नामक पुस्तक प्रकाशित हुई, जो फ्रेन्च भाषा

से अनुवादित, एक त्यागी हुई स्त्री की जीवनी है। वहुत वर्षों तक यह पुस्तक इंग्लैण्ड मे पढी जाती रही और पाठकों ने अपनी ओर से लिखकर वहुत-से पत्र उसके प्रत्येक नये सस्करण में सम्मिलित कर दिये और इस प्रकार पुस्तक की कहानी और भी अधिक रोचक होती गयी। यह पुस्तक सर्वप्रिय हो रही थी, जव इसी प्रकार की चिट्ठियों की लेटर्स आफ इलोयसा ऐण्ड एविलार्ड (Letters of Eloisa and Abelard) नामक पुस्तक फ्रेन्च भाषा से अनूदित होकर प्रचलित हुई। इन पत्रों मे पुरुष की स्वार्थिता तथा स्त्री के आत्मसमर्पण का वडा हृदय-ग्राही चित्रण किया गया है और एविलार्ड के समय (१०७९–११४२) की सामाजिक दशा वड़े सुन्दर ढग से वर्णित की गयी है। इसी परिपाटी की दूसरी पुस्तके और भी प्रकाशित होने लगी और पत्रो तथा चिट्ठियों के विश्वस्त ढंग से आत्मीय ज्ञान एवं अनुभवों का प्रदर्शन करने लगी। वहुत से लेखकों ने ऐसी पुस्तकों की नकल करना, उनके आधार पर दूसरी पुस्तके लिखना तथा उन्हे तोड़-मरोडकर उनसे भिन्न विषयों पर लिखना प्रारम्भ कर दिया। इसी समय में पत्रों की एक पुस्तक किसी अज्ञात लेखक ने लेटर्स आफ लिण्डामायरा (The Letters of Lindamira) नामक प्रकाशित की, जिसमे एक उच्च श्रेणी की महिला की कहानी उसी की ओर से एक मित्र को लिखी गयी थी। लेखक का उद्देश्य "दोषों का निरावरण करना, गुणो को प्रतिफल देना, अहंकार को निराश करना और दृढता को सफलता देना" था। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए लेखक लिण्डामायरा (Lindamira) को घोर कष्ट देता है ओर अन्त मे उसकी इच्छा के अनुसार विवाह करा देता है। इन्ही वेजान तथा फीकी कहानियों को पढ़कर रिचर्डसन जैसे-उपन्यासकारों ने पत्रों तथा चिट्ठियो की प्रणाली से काम लेना सीखा था और अपनी प्रतिभा से कला को जगाया था।

जीवनियाँ और उपन्यास—वनियन की आत्मकहानी

किन्तु इसने पहले यह प्रणाली और वेजान सामग्री उपन्यास-कला के प्रयोगो से दूर साहित्य के एक अगविशेष से अनुशासित होने को थी, जिसके विना आधुनिक उपन्यास का पूर्णता प्राप्त करना कठिन था। कहा जा चुका है कि सत्रहवी शताब्दी के वातावरण मे जीवनी लिखने तथा पढने की रुचि उत्पन्न हो गयी थी। सन् १६४० मे आइजैक वाल्टन (Isaak Walton) की जीवनियों की पुस्तक प्रकाशित हुई थी और उस समय के वहुत से श्रेष्ठ लेखक वाल्टन का अनुकरण करके

जीवनियाँ लिखने लगे थे। कुछ लेखकों ने स्वयं अपनी जीवनियाँ भी लिखीं। जीवनी लिखने के लिए उन्हें जिन गहराइयों में घुसकर जिस पूर्ण सहानुभूति के साथ जीवन का निरीक्षण करना पड़ा, उसने लोगों के दुःख और सुख, खेद और आनन्द का आन्तरिक ज्ञान प्राप्त करने का अवसर दिया और उनके वर्णनों को कभी कभी कविता के ऊँचे स्तर तक पहुँचा दिया। तथ्यों से इस प्रकार व्यवहार करने का फल यह हुआ कि लेखक कल्पना द्वारा दूसरों के अनुभवों को समझने लगे और इस तरह वे कहानी-साहित्य के मूल तत्त्व को प्राप्त कर सके। इन जीवनियों की बहुत कुछ सामग्री उन दैनंदिनियों अथवा रोज़नामचों से प्राप्त होती थी जो लगभग सभी बड़े आदमी रखा करते थे। दैनंदिनी लिखनेवाला (या अपनी जीवनी लिखनेवाला) वही मनुष्य हो सकता है जो अपने जीवन में बहुत दिलचस्पी रखता हो; और यह दिलचस्पी बहुत जल्द तथा अज्ञात रीति से बड़ी सुगमता के साथ मानवजीवन की दिलचस्पी में परिवर्तित हो जाती है और इसी दिलचस्पी का प्रत्यक्ष प्रमाण अठारहवीं शताब्दी के उपन्यास हैं। उपन्यास को जीवनी की सहायता पहुँचाने में बनियन की ग्रेस अबाउर्न्डिग (१६६६) ने विशेष कार्य किया था। ग्रेस अबाउर्न्डिग (Grace Abounding) जान बनियन की लिखी अपनी जीवनी है, जो व्यक्ति से कहीं अधिक महत्त्व मानवजीवन को देती है और अनुभवों का बड़ा सुन्दर विश्लेषण करती है। इस पुस्तक ने उपन्यासकार को वह सामग्री प्रदान की जिस पर मनुष्य के स्वभाव तथा चरित्र के अध्ययन की नींव डाली जा सकती थी। उसमें न कोई बनावट है न कोई बात घटा-बढ़ाकर कही गयी है और शैली एवं भाषा इतनी सादी है कि उसमें ईमानदारी की बात के सिवा कोई दूसरी बात कहना असम्भव है। तथ्यों तथा घटनाओं से इस प्रकार का व्यवहार करना, चाहे वे तथ्य काल्पनिक हों या ऐतिहासिक, उसी दशा में सम्भव होता है जब वर्णन में यह योग्यता हो कि लिखने अथवा कहने में कहानी यथार्थ हो जाय और पाठक सत्य और असत्य का प्रश्न न उठा सके, बल्कि उसके मन में भाव ही एक हो।

टेल्स और स्वभाव-चित्र—रिचर्ड स्टील और जोज़ेफ ऐडिसन की रचनाएँ

साहित्य के जिस दूसरे रूप ने इस समय यह गुण और भी अधिक चमकाया और उपन्यास के विकास में ऐसा उत्कट सहायक हुआ, वह रिचर्ड स्टील (Richard Steele) तथा जोज़ेफ़ एडिसन (Joseph Addison) के लिखे "स्वभावचित्र" थे जो टैटलर और स्पेक्टेटर में प्रकाशित हुए थे। ये "स्वभाव-चित्र" वास्तव में

तत्कालीन रीति-रिवाज़, आचार-व्यवहार, व्यक्ति और समाज के चित्र हैं, जो रूपक तथा उपाख्यान और छोटे छोटे "टेल्स" एवं निवन्धों की शैली में लिखे गये हैं। इनमें कल्पना, हास्य, तर्क, भावुकता, व्यंग्य, करुणा सभी का प्रयोग करके हृदयग्राही ढंग से पाठकों को प्रोत्साहन दिलाने की चेष्टा की जाती है और उनके विचारों को उकसाया जाता है। दृश्यों का वर्णन भी वड़ा सुन्दर होता है। स्टील और एडिसन की रचनाएँ कहानी-साहित्य का निर्माण नहीं करतीं, किन्तु अलग अलग गुणों को सँवार-सुधारकर अपने समय से वहुत आगे की उन्नत दशा में पहुँचाती हैं और उपन्यास के लिए रास्ता साफ़ करती है। सारी रचनाएँ जीवन से ओत-प्रोत है और उनमे जो पात्र आते है वे इसी संसार के स्त्री और पुरुप हैं। रोमांस में पात्रों को नाम तो दिये जाते थे किन्तु उनका व्यक्तित्व कुछ नही होता था। "चेहरे" लगाकर नाइट आता था और सव सुन्दर स्त्रियां निश्छल होती थीं। कठपुतलियों के समान वे नियत किया हुआ कार्य करते थे जो आदि से अन्त तक एक ही रहता था। स्टील तथा एडिसन की रचनाओ में जो पात्र आते है वे प्रारूपिक अवश्य है पर किसी के प्रतिरूप नही। सर राजर डि कवर्ली (Sir Roger de Coverley) और उनके मित्र, यहाँ तक कि वह व्यक्ति जो दूर से सब कुछ देखता है और अपने को "मै" कहता है, इन सवका एक व्यक्तित्व है जो प्रत्येक पाठक पहचानता है; चित्र कितना ही धुँधला हो और उनके सामने आने के अवसर कितने ही कम हों। यह सवके सव नित्यप्रति के जाने पहचाने वही लोग हैं जिनसे हम इधर उधर मिलते रहते हैं और जो पुस्तक में भी वैसे ही साधारण व्यक्ति वने रहते हैं। एडिसन ने इनमें से किसी को न तो अनोखे साहसिक कार्यो के लिए नियत किया है न कोई अनोखे गुण ही दिये हैं।

"काफ़ी-हाउसेज़"

स्वाभाविक वात-चीत तथा विना रोक-टोक के जीवन और व्यवहार का केन्द्र काफी-हाउस (Coffee House) को वनाना स्टील का आविष्कार था। इस स्थान पर सव तरह के नागरिक, क्या व्यापारी, क्या ग्रामीण भद्रपुरुप जो इस समय वहुत जल्द जोर पकड़ रहे थे, अपने स्वाभाविक स्वरूप में दिखाई देते थे। यहाँ वे सव खुलकर अपने दिल की वात कहते थे। यहाँ उनकी असलियत मालूम होती थी, उनके शिष्टाचार और प्रवृत्ति का पता चलता था। समय वहुत वदल चुका था और अव केवल विश्वविद्यालय और राजदरवार ही सभ्य जीवन तथा शिष्ट

व्यवहार के केन्द्र नहीं रहे थे। प्यूरिटन शासकों का डर भी दूर हो चुका था। जो लोग काफ़ी-हाउसों में एकत्रित हुआ करते थे वे ही धीरे-धीरे राजनीति में भी अपना प्रभाव डाल रहे थे और शक्तिमान् होते जाते थे। इस नयी जनता को सभ्य बनाने और शिष्टाचार सिखाने की बड़ी आवश्यकता समझी जाती थी। उनकी ओर लेखकों और सुधार करनेवालों का ध्यान था। स्टील और एडिसन भी इसी नयी जनता के सुधार के लिए निबन्धों, तरह-तरह के किस्से-कहानियों, स्वभाव-चित्रों, वार्तालापों और विवादों के वर्णन लिखते और प्रकाशित करते थे। वे कल्पित क्लबों से चिट्ठियों के रूप में सुधारों के प्रस्ताव किया करते थे। इन कल्पित क्लबों के सदस्य विभिन्न विषयों का विशेष ज्ञान रखनेवाले व्यक्ति थे जो अपनी रचनाएँ उन क्लबों से पत्रिका को भेजा करते थे। स्टील ने इन "काफ़ी-हाउसेज़" की अलग अलग रुचि तथा ज्ञान निश्चित कर रखे थे; इसलिए जब उसे किसी विषय को उठाना होता था तो वह उसी क्लब से जो उस विषय का केन्द्र था, चिट्ठों के रूप में निबन्ध अथवा वर्णन लिखता था जो कुछ भी लिखा जाता था उसका कोई न कोई उद्देश्य होता था, जो घरेलू जीवन को सुधारने में काम आता था अथवा नित्यप्रति के जीवन से त्रुटियाँ दूर करने में योग देता था। उपन्यास के भी यही उद्देश्य इस प्रारम्भिक काल मे हुआ करते थे. जिन्हें शिष्टाचार के कारण कोई लेखक आडम्बर से विलग करने की चेष्टा नही करता था।

स्टील की स्त्रियों के प्रति श्रद्धा और उसकी हास्यजनक शैली—एडिसन

स्टील तथा एडिसन के दो विशेष नवीन प्रवर्तन थे जो उनकी रचनाओं द्वारा अंग्रेजी साहित्य में आये और जिन्होंने उपन्यासकारों को आगे चलकर आकर्षित किया। ये दोनों लेखक स्त्रियों की प्रकृति को खूब समझते थे और उनको प्रशंसनीय मानते थे। दूसरी नवीनता उनकी हास्यजनक शैली है। जैसा थैकरे ने लिखा है, "स्टील अंग्रेज लेखकों में प्रथम लेखक था जो वास्तव में स्त्रियों की प्रशंसा करता और उन्हें समझता था. . .वह पहला लेखक था जिसने उनकी अच्छाई को मर्द की तरह से सराहा और उनकी समझदारी की तारीफ़ की। उसने स्त्रियों की कोमलता तथा उनके सौन्दर्य की भी पुरुष की दृष्टि से देखकर प्रशंसा की।" स्पेक्टेटर (Spectator) को उन्हें शौकीनी तथा निन्दा करने के दोषों पर धिक्कारते समय भी खयाल रहता था कि स्त्री यदि चाहे तो कितनी अधिक श्रेष्ठ तथा आदरणीय हो सकती है। स्टील और एडिसन के विचारों तथा प्रतिपादन से स्त्री का जो आदर्श

हमारे सामने उपस्थित होता है, वह रोमांसकारों की झूठी खुशामद और "रोमैन्टिक" लेखकों की अनुचित प्रशंसा से कहीं ऊँचा है, और उस मूल्यांकन से कहीं अधिक ठीक है जो स्त्रियों को कभी तो गुलाम और कभी फरिश्ता अथवा गुड़िया मानकर उनसे व्यवहार करता है। स्टील ने उसी प्रकार स्त्रियों को समझा था जैसे कुछ समय बाद फील्डिंग ने समझा, और ये दोनों ही अपनी बीवियों के भक्त थे; एवं एडिसन की प्रकृति में स्त्री-तत्त्व अधिक मात्रा में होने के कारण उसके सारे "स्वभाव-चित्र" तथा दूसरे वर्णन स्त्री जाति को देवियाँ मानकर पक्षपातपूर्ण सम्मान देते थे। दोनों लेखकों को स्त्रियों तथा मनुष्य मात्र को समझने और उनसे व्यवहार करने में सहायता अपनी सुशीलता एवं आनन्दीवृत्ति से मिली थी, जो उनकी शैली तथा दृष्टिकोण से प्रकट होती है। यूफ्यूईज (Euphues) में लाइली ने चातुरी और बुद्धिविलास से चमत्कार उत्पन्न किया है, और सिडनी ने तो आर्केडिया (Arcadia) में शब्दों से खूब खेल खेले है, किन्तु उन लेखकों की दृष्टि मे अपने पात्रों की हरकतों पर मुस्कराना और दूसरों को हँसाना अथवा अपने दुष्टजनों का उपहास करना मानो किसी पवित्र वस्तु को दूषित करना होता। इसके विपरीत, सर राजर डि कवर्ली (Sir Roger de Coverley) को लोग जानते और उनसे प्रेम करते है केवल उनकी हास्यकर मूर्खता के कारण, जिसमें पाठक आनन्द लेते है। सर राजर की निष्कपट सनकी बातों तथा सनकी कामों के पीछे उनका शुद्ध हृदय चमकता है और उन्हे हमारा बड़ा भाई और प्रेम का पात्र सिद्ध करता है। इससे पूर्व शताब्दी के आरम्भ मे जैसे "कैरेक्टर्स" लिखे जाते थे, उनके हिसाब से सर राजर "एक वृद्ध देहाती नाइट" और विल हनीकूम्ब (Will Honeycomb) "एक नागरिक छैला" होते। स्टील और एडिसन, जो व्यक्ति को मनुष्य से अधिक प्यार करते थे और जो सनक तथा अनोखेपन को अपराध नहीं मानते थे, उस प्रकार के पवित्र और ठस "कैरेक्टर्स" नहीं लिख सकते थे। वे जानते थे कि इन छोटे दोषों तथा अनोखेपन और सनक से साहित्यिक स्वभाव-चित्रों में जान पड़ जाती है, और यदि इन सब को सुलझे हुए शिष्टतापूर्ण हास्य के वातावरण सहित इस नित्यप्रति के संसार में रख दिया जाय तो क्या सर राजर, क्या विल हनीकूम्ब, सभी कल्पित पात्र जीते-जागते मनुष्य हो सकते है। उन्होंने ऐसा ही कर दिखाया और उनके लिखे "कैरेक्टर्स" उपन्यास के छोटे छोटे टुकड़ों के समान दिलचस्प और जीवित चित्र हो गये।

स्टील और एडिसन ऐसे चित्र अपनी आनन्दीवृत्ति और उसके अनुरूप शैली के बिना नहीं लिख सकते थे। साहित्य में मनुष्य तथा संसार को इस प्रकार देखने

को "ह्यूमर" (Humour) कहते हैं, जिससे उनका वह स्वरूप सामने आ जाय जिसे देखकर लोगों के हृदयों में निष्कपट हास्य एवं हर्ष उत्पन्न हो। मन की यह शक्ति वास्तव में बुद्धि का एक रूप, अथवा बुद्धि की एक विशेष गति है, जिसके लिए बड़ी अच्छी सूझ-बूझ तथा ज्ञान होना आवश्यक होता है, और इन से भी कहीं अधिक आवश्यक वह सहानुभूति एवं समवेदना होती है जो मनुष्य मात्र को अपना ही जैसा समझे। स्टील और एडिसन दोनों जन्म से ही प्रेक्षक थे और मनुष्य एवं संसार को उन्होंने खुली आँखों से देखा था। उन्होंने अपनी रचनाएँ ऐसे पाठकों के लिए प्रकाशित की थीं जिन्हें "मानवजाति से सिवा उसे देखने के कोई और प्रयोजन नहीं है।" जैसा स्पेक्टेटर (Spectator) कहता है, ये पाठक वे लोग होते हैं जो "संसार को एक रंगभूमि मानते और उस पर अभिनय करनेवालों का ठीक मूल्य निरूपण करना चाहते हैं।" अभिनय देखनेवालों के मनोरंजन के लिए जो दृश्य, हर्ष उत्पन्न करने के अथवा करुणा जगाने के, स्टील और एडिसन ने जीवन-नाटक से चुनकर रखे हैं उनकी संख्या इतनी बड़ी है और वे इतने सुन्दर लिखे हुए हैं कि हमें बार बार खेद होता है कि उन्होंने कोई उपन्यास नहीं लिखा। सर राजर डि कवर्ली (Sir Roger de Coverley) को जन्म देनेवाले सत्रहवीं शताब्दी के अन्तिम दशकों के आचार-व्यवहार तथा चरित्र और शिष्टाचार का बड़ा ही सुन्दर उपन्यास लिख सकते थे। स्पेक्टेटर (Spectator) में प्रकाशित रचनाओं को जब हम पढ़ते हैं तो हमें जान पड़ता है कि एडिसन के पास कैसी प्रचुर सामग्री थी जिसे काम में लाकर वह बहुत सुन्दर तथा अर्थपूर्ण उपन्यास लिख सकता था। परन्तु अभी उपन्यास का समय नहीं आया था, उसके पढ़नेवालों की शिक्षा होनी बाकी थी और वे सारे अंश एकत्रित हो रहे थे जिनकी उसे आवश्यकता थी और यह काम स्पेक्टेटर तथा उसकी नकल करनेवाले कर रहे थे। प्रणाली और शैली दोनों तैयार हो चुकी थीं, केवल बिखरे हुए अंशों को एक स्थान पर लाना बाकी था, जो कार्य डैनियल डिफो ने आगे चलकर किया।

अध्याय ५

आधुनिक उपन्यास का उद्भव

रेस्टोरेशन (प्रतिस्थापन) काल में जो सामाजिक तथा साहित्यिक बल देश और जाति की स्थिति को परिवर्तित कर रहा था, वह अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक सक्रिय रहा। यह एक ऐसा युग था जिसमें कल्पना-शक्ति सोयी हुई थी और जिसमें सांसारिक जीवन की यथार्थता का लोगों को कदम कदम पर अनुभव होता था। समाज एवं सामाजिक संस्थाओं को उन्नत तथा सुदृढ़ करने में लोग लगे हुए थे। साहित्य मे यह युग इन्हीं पूर्व धारणाओं के कारण आलोचना पर अधिक बल देता था। माध्यम को सुधारने और नियम-बद्ध करने में बड़ी दिलचस्पी ली जाती थी और मौलिक विचारों को प्रकट करने से अधिक ध्यान इस बात पर दिया जाता था कि कैसे उन्हें लिखा जाय। रेस्टोरेशन के समय के बाद से लोग कलुषित व्यक्ति-जीवन को समाज-व्यवस्था का विरोधी समझने लगे थे और साहित्यकार अपनी रचनाओं की सामाजिक उपयोगिता का विशेष ध्यान रखने लगे थे। सन् १६९८ में नाटक तथा रंगमंच का विरोध करते हुए जरमी कोलियर (Geremy Collier) ने युग के नैतिक पतन पर बड़ी कड़ी बातें कही थीं, जो अब इस शताब्दी के लोग व्यक्तियों तथा संस्थाओं के गुण-दोष खोजने में दोहराते थे। साहित्यकार भी कोई न कोई उद्देश्य अपने सामने रखकर रचना करते थे और व्यक्ति एवं समाज की सेवा अपना धर्म समझते थे। उन पत्रिकाओं में, जिनसे वे सम्बन्धित होते थे, उन्होंने घोषित कर दिया था कि उनका उद्देश्य "मनुष्यों के जीवन पर अपने विचार प्रकट करना है, चाहे वे मनुष्य काम-काजी हों चाहे चैन करनेवाले।" इस समय की एक पत्रिका ने कुछ स्थान "अपवादक क्लब" की चेतावनियाँ छापने को निश्चित कर रखा था, जिसमें "प्रलाप, धृष्टता, पाप तथा व्यसन" का साप्ताहिक समाचार प्रकाशित होता था। इस युग की कार्यपरायणता की प्रवृत्ति ने कला के क्षेत्र को भी यथार्थ जीवन की समस्याओं में बाँध दिया था और इन्हीं परिस्थितियों ने साहित्य के विषय को वास्तविक होने एवं विचारों के नैतिक होने की शर्त लगा दी थीं।

इस बन्धन तथा शर्त के कारण गद्य और पद्य की सामग्री एक-सी और दोनों की बहुत सी विशेषताएँ एक समान होती जा रही थीं। युक्ति और स्पष्टता (Logic and lucidity) पर विशेष ध्यान दिया जाता था। रेस्टोरेशन के समय से जिन नियमों का पालन करने पर भाषा में सुधार हुए थे, उन्होंने अंग्रेजी को आधुनिक भाषा बना दिया था। वाक्यों की लम्बाई कम हो गयी थी, भाषा सरल हो गयी थी और सरलता के साथ साथ उसमें लोच-लचक भी आ गयी थी। गहरे से गहरे विचार हल्की भाषा में बिना लैटिन का सहारा लिये व्यक्त हो सकते थे। विषयों के अनुरूप शैली में विभिन्नता और गति लाने के साधन निकाल लिये गये थे और भाषा मे ओज के साथ नरमी आ गयी थी।

अठारहवीं शताब्दी के प्रथम चरण की परिस्थितियों और प्रवृत्तियों के अनुरूप, नैतिक धारणाएँ रखनेवाले प्रेक्षकों की आवश्यकता को पूरा करने का साधन, साहित्य का एक नया अंग, दीर्घ काल के पालन-पोषण के बाद इस समय में प्रकट हुआ। कहानी-साहित्य की सारी उपलब्धियों का उनमें समुच्चय था और प्राचीन काल के छन्दोबद्ध रोमांसों से लेकर रेस्टोरेशन युग के 'टेल्स' तक कल्पना एवं निरीक्षण से प्राप्त मानव-जीवन का ज्ञान उसके स्वभाव में सम्मिलित था। किन्तु उसमें रोमांस के जैसे निःसार एवं अविश्वसनीय कृत्यों के वर्णन नहीं थे, जो न तो यथार्थ कहे जा सकते हैं न कल्पना के नियमों के अनुसार सत्य होते हैं। उसके वर्णनों में जिन कामों का चित्रण है वे मानवजाति की स्थायी प्रेरणा के फलस्वरूप आज भी सम्भव हैं। आर्थर के रोमांसों और फाब्लिआ (fabliau) से लेकर अब तक बराबर उनकी वृद्धि होती आयी थी और घटनाओं, स्थितियों, कथापुरुषों का एक बड़ा समूह एकत्रित हो गया था। सैकड़ों प्रकार की सामग्री से कथावस्तु तैयार करने की विधियों के अनुभव जिन रचनाओं में प्रस्तुत किये गये थे उनकी संख्या हजारों में थी। यह सब उस आधुनिक उपन्यास की परम्पराप्राप्त सम्पत्ति थी, जिसे अपने काम में लाकर वह फूला-फला और बहुत जल्द प्रौढ़ता को पहुँचकर आधुनिक काल के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने लगा। क्या यथार्थवादी क्या आदर्शवादी, सभी प्रकार के लेखक उसके माध्यम द्वारा अपने अनुभव और धारणाएँ व्यक्त करने लगे और अपने स्वप्नों के जीवन तथा संसार को चित्रित करने लगे। इस प्रौढ़ता को प्राप्त होने के साथ उपन्यास की आकृति में भी परिवर्तन हुआ और धीरे-धीरे वह वास्तविक जीवन के किसी पक्ष-विशेष के अध्ययन को आगे बढ़ाने लगा, या किसी आचरण अथवा व्यवहार का निरीक्षण करने लगा, जिसे असम्भव होते हुए भी हमारी कल्पना

किसी अवस्था में सम्भव समझती है। रोमांस की अवस्था से गुज़रने में जो शिक्षा उपन्यास ने प्राप्त की थी, उसके फलस्वरूप "घटना-प्रधान" उपन्यास (The novels of incident) का जन्म हुआ जिसने सारी दिलचस्पी को होनेवाली घटनाओं में केन्द्रित कर दिया। नाटक के निकट-सम्पर्क के कारण तथा उसके प्रभाव में आकर "चरित्र-प्रधान" उपन्यास (The novels of character) उत्पन्न हुआ और उसने स्त्रियों तथा पुरुषों के अगणित चित्र खींचकर साहित्य को भर दिया। आधुनिक अंग्रेजी उपन्यास जो अब प्रकट हुआ, वह न तो मध्यकालीन तथा स्पेन के उपन्यासों की भाँति कल्पना के घोड़े दौड़ाकर पाठकों का मनोरंजन करने को आया, न फ्रांस एवं सत्रहवीं शताब्दी के उपन्यासों की तरह वार्तालाप का लालित्य सिखाने को प्रकट हुआ। वह तो मनुष्यजीवन का चित्रण करने, चरित्रों का वर्णन करने, आचरण तथा व्यवहार के अच्छे नमूने देने और कृत्यों की प्रेरक शक्ति की भलाई और बुराई का निर्णय करने को प्रकट हुआ। शूर-वीरों के समय के आचार-व्यवहार कभी के लुप्त हो गये थे, और उन्हीं के साथ साथ वे रोमांस और पद्य में लिखे हुए ओजस्वी नाटक भी समाप्त हो गये थे जिनमें वे चित्रित थे। इसी प्रकार राजदरबार के शिष्टाचार और रीति-रिवाजों का भी लोप होता गया था और वे नाटक, जिनमें दरबारियों की दिलचस्पी की बातें होती थीं, अब गायब होते जाते थे। सभाचातुरी, तुरंत उत्तर देने की योग्यता, व्यंग्य, और बात में बात पैदा करने की बुद्धि अब कहीं दिखाई नहीं देती थी। समय के परिवर्तन के साथ अब मध्यवर्ग के नागरिकों की बढ़ती का युग आ गया था और नये आदर्श तथा आचार-विचार जीवन को नयी रीति पर व्यवस्थित कर रहे थे। निरीक्षण तथा नवीन नैतिक उद्देश्य आधुनिक उपन्यास को प्रौढ़ कर रहे थे। आशा की जाती थी कि उपन्यासकार युग की माँग पूरी करने में उचित उपदेशों के साथ साथ मुनासिब उदाहरण, तीव्र भावनाएँ और प्रबल तथा सप्रमाण प्रेरक शक्ति देंगे और इस प्रकार युग का निर्माण करने में योग देंगे।

इस समय पहले की अपेक्षा पाठकों की संख्या बहुत बढ़ गयी थी और इतनी दूर दूर फैली हुई थी कि नाट्यशाला द्वारा उन तक पहुँच सकना असम्भव हो गया था। एलिज़बेथ काल में शेक्सपियर तथा दूसरे नाटककार अपने नाटकों से शिक्षा दे सकते थे, क्योंकि पढ़े-लिखे लोग बहुधा लन्दन में ही रहते थे और नाट्यशाला में आकर अभिनयों को देख सकते थे। किन्तु अब लन्दन के बाहर दूर के कसबों और देहातों में भी शिक्षित लोग पहुँच गये थे, जो बड़े शहरों और लन्दन में आकर नाटकों के

में पड़ गया और कुछ समय के लिए उसे गायब हो जाना पड़ा। क्वीन ऐन (Queen Anne) के समय में डिसेन्टर्स (Dissenters) पर दुःख पड़ा और उन्हें पीड़ा दी जाने लगी तो १७०२ में डिफ़ो ने एक पुस्तिका लिखी, जिसमें उसने धर्म के विरोधियों को बहुत कड़ा दण्ड देने का प्रस्ताव किया। उसने ऐसी रीति से अपने को छिपाये रखा कि लोग उसकी पुस्तिका को टोरी ('डाकू'—राजा के पक्ष के मनुष्य) की लिखी हुई समझें। जब कुछ समय के उपरान्त पता चला कि उसका लेखक डिफ़ो था, जो व्हिग ('फटा दूध'—पार्लमेन्ट के पक्ष का मनुष्य) और गिरजे का विरोधी था, तो उसे काठ में ठोंक दिया गया और कई वर्ष कारागार में भी रखा गया। राजनीति में जब परिवर्तन हुआ तो डिफ़ो भी छोड़ दिया गया और उसे जासूस बनाया गया, जो काम वह कई मिनिस्टरों के समय में करता रहा। अब उसने दि रिव्यू (The Review) नामक पत्रिका निकाली जो १७१३ तक चलती रही। पत्रिका के बन्द हो जाने पर वह दूसरी पत्रिकाओं से सम्बन्धित रहा जिनके लिए उसने कई ऐसे लोगों की जीवनियाँ लिखीं जो उस समय प्रख्यात थे, जैसे पीटर दि ग्रेट (Peter The Great), जोनाथन वाइल्ड (Jonathan Wild), जो एक अपराधी था, और कैप्टेन ऐवरी (Captain Avery) जो समुद्री लुटेरा था। पत्रिकाओं के सम्बन्ध के कारण वह इन दिनों बहुत से धुन के पक्के साहसी लोगों से मिला और उनकी जीवन-कथा सुनकर उसे याद रखा, फिर कुछ वर्ष के व्यतीत हो जाने पर उन कथाओं को स्मरण करके पाठकों के लिए लिखा। जहाँ कहीं उसकी स्मरणशक्ति काम नहीं देती थी वहाँ वह कल्पना से काम लेता था। उस समय के पाठक कहानियों में यथार्थ ढूँढ़ते थे और कल्पना को मिथ्या समझते थे। डिफ़ो ने इस माँग को पूरा करने में अपनी कला द्वारा कल्पित बातों को भी इस प्रकार लिखा कि वर्णनों में वास्तविकता का रंग चढ गया और कल्पित बातें यथार्थ लगने लगीं।

डिफ़ो की वर्णन-प्रणाली और उसकी सफलता

जीवनियों और ऐतिहासिक वृत्तान्तों से हटकर डिफ़ो ने जिस लेखन-प्रणाली का अनुकरण करके कहानी-साहित्य की रचनाएँ आरम्भ कीं, वह १७२२ में लिखी हुई दि जर्नल आफ दि प्लेग इयर (The Journal of the Plague Year) नामक पुस्तक में भली भाँति देखी जाती है। इस पुस्तक की सामग्री बहुत कुछ प्रामाणिक एवं सत्य है, जिसे डिफ़ो ने कई मूल ग्रन्थों और दूसरे स्थानों से लिया था। यदि वह इतिहासकार होता तो वह इसी सामग्री और इन्हीं मूल ग्रन्थों पर अपने

वृत्तान्त को आधारित करके अपनी पुस्तक लिख देता। परन्तु वह उपन्यासकार था; उसे सारे तथ्यों को लिखने के पहले अपनी कल्पना द्वारा उपन्यास क सामग्री में परिवर्तित करना था, क्योंकि बिना ऐसा किये हुए कोई भी जीवन-तथ्य कहानी-साहित्य की सामग्री नहीं हो सकता। कहानी लिखने मे उसने एक काल्पनिक व्यक्ति से उसके निजी अनुभवों की भाँति ऐतिहासिक तथ्यों का वर्णन कराया, और यह काम ऐसे ढंग से कराया कि वर्णन करनेवाले के सत्यवादी होने में पाठक को तनिक भी संदेह न हो सके। पुस्तक में वर्णन करनेवाले का व्यक्तित्व सबसे अधिक प्रामाणिक प्रतीत होता है। हम प्लेग के समय की भयानक घटनाओं मे विश्वास करते हैं, क्योंकि हम उनके वर्णन करनेवाले के सत्यवादी होने का विश्वास करते है। यथार्थ का ऐसा पूर्ण एवं अखंड भ्रम उत्पन्न करने की इस अपूर्व क्षमता मे डिफो अनुवर्ती उपन्यास की ऐसी ही सफलता का अग्रणी है। पाठकों के हृदय मे भय उत्पन्न करने को बहुत से लेखकों ने ताऊन का प्रयोग किया है, किन्तु उनमे से कोई भी डिफो की सफलता नहीं प्राप्त कर सका, क्योंकि उसका एकमात्र ध्येय यथार्थ का वर्णन करना था और उसने किसी प्रकार का साहित्यिक प्रभाव डालने की चिन्ता नहीं की।

राबिन्सन क्रूसो और उसकी लेखन-प्रणाली तथा कला

जीवनी और कहानी के बीच के क्षेत्र में काम करते हुए डिफ़ो अलेग्ज़ैन्डर सेल्कर्क (Alexander Selkirk) नामक नाविक की आपबीती कहानी की ओर आकर्षित हुआ, जो प्रशान्त महासागर के एक छोटे-से द्वीप में जहाज डूब जाने के कारण कई वर्ष फँसा पड़ा रहा था। इस कहानी से प्रेरित होकर और इसी के आधार पर उसने राबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe) लिखा था, जो १७१९ में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक की भी कहानी काल्पनिक है, किन्तु संसार के सामने वह यथार्थ के रूप मे प्रस्तुत की गयी है। जो घटनाएं और परिस्थितियाँ उसने वर्णन की हैं वे सब ब्यौरेवार तथा सविस्तर लिखी गयी है; और यद्यपि वे अपना खुद का कोई महत्त्व नहीं रखतीं पर है वे सब ऐसी कि उन्हें याद रखना वर्णन करनेवाले के लिए अत्यन्त स्वाभाविक है। डिफ़ो की सारी कला-चातुरी इस बात में है कि वह सब बातों को कथापुरुष के ही दृष्टिकोण से देखता और कहता है, अपने आपको वह कहीं भी सामने नहीं आने देता। ऐसा जान पड़ता है कि वह अपने कथापुरुष के व्यक्तित्व में अपने को लीन कर देता है, और फिर जो कुछ उपन्यास में होता है केवल कथापुरुष ही उसका भागी होता है। डिफ़ो पूरी तरह

पर अपने को क्रूसो की दशा में रख देता है और उसी प्रकार सोचता-समझता है जैसे कि उसी का जहाज़ डूब गया हो और वही अकेला द्वीप में हो। वह उन सब खतरों को पहले से सोच लेता है जो ऐसे मनुष्य के सामने आ सकते हैं; पूर्व चिन्ता करके पहले से सारी तैयारी कर लेता है और सदा स्वाभाविक आशा की दशा में अपने दिन व्यतीत करता है कि किसी न किसी प्रकार उसे द्वीप से छुटकारा मिलेगा। इन परिस्थितियों के प्रभाव को और भी तीव्र करने के लिए वह बड़ी स्वाभाविक ग़लती करता है और इतनी भारी नाव बनाता है जिसे वह समुद्र में उतार नहीं सकता। एकाकी जीवन की छोटी-छोटी घटनाएँ और समस्याएँ उसे पूरी तौर से निमग्न रखती है। बालू पर मनुष्य के पांव का चिह्न देखकर वह भयभीत हो जाता है। डिफो ने अपने को क्रूसो में इतना मिला दिया था कि पुस्तक लिख चुकने के बाद वह उस नाविक के संघर्षों में स्वयं अपने जीवन के दुःखमय अनुभवों का रूपक देखने लगा था।

डैनियल डिफ़ो अन्तरात्मा की अपेक्षा बाह्य जीवन को अधिक अच्छी तरह जानता था और संसार की साधारण गति तथा रीति को व्यक्ति-विशेष के स्वभाव की विभिन्नता से अधिक अच्छी तरह से समझता था। वह बड़ा होशियार, वस्तुवादी, कार्यपरायण, व्यावसायिक बुद्धि का मनुष्य था। कला की अपेक्षा उसे तथ्यों में अधिक आनन्द आता था और उन्हें वह बिना नमक-मिर्च मिलाये वर्णन करना उचित समझता था। वह प्रभाव डालने के लिए तथ्यों को विशेष प्रकार के क्रम में रखना तथा उन्हे ठीक-ठाक करके प्रस्तुत करना अनुचित समझता था। इस विषय में वह इतिहास की विधि को उचित मानता था। उसने जिस प्रकार का उपन्यास लिखना आरम्भ किया, वह एक ऐसा वृत्तान्त है जो लगातार साहस एवं पराक्रम के कार्यों का वर्णन करता आगे बढ़ता चला जाता है। वर्णनात्मक शैली की विशेषता यही होती है कि वास्तविकता से वृत्तान्त निकटतम रहे। डिफ़ो अपनी सारी कला का प्रयोग करके पाठकों को ऐसा अनुभव कराता है मानो उसकी कल्पित घटनाएँ, जिनका वह वर्णन करता है, उसकी आँखों के सामने हुई हों। डिफ़ो के उपन्यासों की विशेषता यह है कि वे वास्तविक के सत्य होने का हमें आभास देते है। कार्य से ओत-प्रोत होने के कारण वर्णन ऐसी शक्तियों के विरोध की सूचना देता है जो लेखक को नाटकीय ढंग से लिखने को विवश कर देती हैं और वह स्वयं पीछे हटकर घटनाओं तथा पात्रों के मुख से उनका वृत्तान्त हमें सुनवाता है।

राबिन्सन क्रूसो की कथावस्तु ऐसी सरल थी कि डिफ़ो बड़ी सुगमता से अपनी

विशेष लेखनप्रणाली का प्रयोग कर सका और उसके गुणों को प्रकट कर सका। अपनी प्रकृति तथा स्वभाव के कारण वह प्राकृतिक दृश्यों को भाव उत्पन्न करने के लिए काम में नहीं लाया, और न अपने कथापुरुष की असहाय एवं अकेलेपन की दशा को समुद्र और आकाश की भयानक उथल-पुथल का वर्णन करके उसने तीव्र ही किया। उसकी दृष्टि में द्वीप क्रूसो का कारागार था जिसे एक कार्यपरायण व्यक्ति की भाँति साधनों को जल्द से जल्द काम में लाकर उसने सुख से जीवन व्यतीत करने का स्थान बनाने की चेष्टा की। पुण्यशीलता के अतिरिक्त क्रूसो के मन में कोई चिन्ता नहीं है, और यह विषय वह सीधा उस बाइबिल (Bible) के अध्ययन से लेता है जो जहाज़ में से उसने बचायी थी। वह अपने मन तथा कल्पना को धर्म के विषयों में प्रवेश करने का अधिकार नहीं देता। क्रूसो की एकमात्र चिन्ता द्वीप में सुख से जीवन व्यतीत करना और अपने छुटकारे के लिए ईश्वर की मर्ज़ी पर निर्भर रहना है। जो नैतिक धर्म डिफ़ो की पुस्तक में मिलता है वह उसके समय में मध्यवर्ग की जनता का धर्म था और उस पर चलने से सामाजिक सफलता मिलती थी। इस सदाचार में साहस, पराक्रम, धैर्य, युक्ति और कल्पना-शक्ति विशेष गुण समझे जाते थे, क्योंकि इन्हीं गुणों के कारण मनुष्य ने सभ्यता का निर्माण किया और उन्नति की। यही वे गुण थे जिन्हें इस समय का साहित्य जनता को सिखाने की चेष्टा कर रहा था।

डैनियल डिफ़ो की दूसरी रचनाएँ

राबिन्सन क्रूसो की इन विशेषताओं ने उसे कहानी-साहित्य में एक नया युग प्रारम्भ करने का सौभाग्य दिया और युवकों के लिए संसार की सर्वोत्तम पुस्तकों में उसकी गिनती करायी। युवकों की स्वाभाविक कार्यपरायणता को उसने उत्तेजना दी और उनके विशेष गुणों को उभारा। पुस्तक लोकप्रिय हुई, जिससे प्रोत्साहित होकर डैनियल डिफो ने 'दि फर्दर ऐंडवेन्चर्स आफ राबिन्सन क्रूसो' (The Further Adventures of Robinson Crusoe) और 'दि सीरियस रिफ़लेक्शन्स आफ़ राबिन्सन क्रूसो' (The Serious Reflections of Robinson Crusoe) नामक दो और पुस्तकें लिखी, जिन्होंने उसकी ख्याति को दूर दूर तक फैला दिया। अगले कई वर्षों तक वह एक के बाद दूसरी पुस्तक प्रकाशित करता रहा, जिनमें से 'कैप्टेन सिंग्लटन' (Captain Singleton), 'मोल फ्लैन्डर्स' (Mol Flanders), 'कर्नल जेक्स' (Colonel Jacques) और 'राक्सोना' (Roxona) बहुत प्रसिद्ध हुई। ये सब रचनाएँ पिकारेस्क (Picaresque) उपन्यासों के ढांचे पर लिखी गयी हैं और

इनकी सामग्री भी अपरावों तथा दुराचारों से ली गयी है। कथापुरुष ही अपने मुँह से अपनी जीवनी वर्णन करता है, और यही सब अलग अलग कहानियों में संयोग तथा ऐक्य उत्पन्न करता है। कहानियों के दूसरे पात्र अपने अवसरों पर आते और चले जाते हैं किन्तु वे कथावस्तु में किसी प्रकार का भाग नहीं लेते। इन कहानियों में भी डिफ़ो का व्यक्तित्व प्रकट नहीं होता। केवल उस उद्देश्य से हम लेखक के नैतिक विचारों का अनुमान कर सकते है जो प्रत्येक कहानी का होता है।

डिफ़ो ने कहानियाँ प्यूरिटन लोगों की संतान के लिए लिखी थीं, और ये लोग वे थे जिन्हें आचरण तथा नैतिक विद्या में काफ़ी दिलचस्पी थी। इन रचनाओं के कथापुरुष दुराचार के कार्यों में भी उन गुणों का उपयोग करते हैं जो जंगली और असभ्य जातियों में भी पाये जाते है और इन्हीं गुणों के द्वारा वे कथापुरुष पश्चात्ताप करके अपने आचरणों को अन्त में सुधार लेते हैं।

"प्लाट" अथवा कथावस्तु और कलह या संघर्ष

डिफ़ो की कहानियों में एक ऐसे तत्त्व का अभाव है जो आधुनिक उपन्यास में बड़े महत्त्व का समझा जाता है। "प्लाट" (Plot) अथवा 'कथावस्तु' यों तो प्रत्येक कहानी में आवश्यक है, क्योंकि बिना ऐसी युक्ति के कहानी के विभिन्न अंगों में ऐक्य नही हो सकता, और यह ऐक्य "प्लाट" ही उसे दे सकता है। किन्तु आधुनिक उपन्यास में जो तत्त्व "प्लाट" (कथावस्तु) कहलाता है उसमें घटनाओं की ऐसी व्यवस्था होती है जिसमें पात्रों का जीवन व्यतीत होता है और वे काम करते हैं, और जिसमें सारी घटनाओं के क्रम केन्द्रित होते हैं। गाई फ़ाक्स (Guy Fawkes) और उसके साथियों के इंग्लैण्ड की पार्लमेन्ट के भवनों को बारूद से उड़ा देने के प्रयत्न को "गनपाउडर प्लाट" कहा जाता है। इस प्रकार के "प्लाट" में 'साज़िश' का अंश होता है जिसे एक दल या पार्टी के दूसरे दल या पार्टी से 'झगड़ा या कलह' के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। दूसरा अंश ऐसे "प्लाट" में उस 'काम' का होता है जो 'साजिश' करने पर किया जाता है। "कलह" या "झगड़ा" (conflict) "प्लाट" का सार या निष्कर्ष है, चाहे वह किसी प्रकार का प्लाट हो। "गनपाउडर प्लाट" (Gunpowder Plot) के साथ जो तीव्र भावना जगाने का अभिप्राय समझा जाता है, वह उपन्यास की कथावस्तु (प्लाट) में दोष होता है। ऐसी तीव्र भावना साहित्य उत्पन्न नहीं करता। इन्द्रियों को उत्तेजित करना या उन पर आघात करना ऊँचे दर्जे के उपन्यासों का गुण नहीं होता।

"प्लाट" या उपन्यास की कथावस्तु में संघर्ष या कलह का होना आवश्यक है, चाहे वह संघर्ष दो व्यक्तियों के विभिन्न संकल्पों में हो, चाहे व्यक्ति और परिस्थिति के बेमुरेपन का परिणाम हो। जिस संघर्ष पर उपन्यास की कथावस्तु निर्भर होती है उसमें दो शक्तियों का होना आवश्यक होता है; ये दो शक्तियाँ दो व्यक्ति अथवा दो दल या समूह हो सकते हैं, एक व्यक्ति अथवा एक दल और उसके विरुद्ध कोई अदृश्य शक्ति, जैसे भाग्य अथवा वंशपरम्परा या सामाजिक जीवन की परिस्थितियाँ हो सकती हैं। यह संघर्ष या कलह आन्तरिक और बाह्य शक्तियों में भी हो सकता है। एक व्यक्ति या समूह कुछ चाहता है और उस इच्छा को पूरा करने में उसे किसी विरोध का सामना करना पड़ता है और इस प्रकार संघर्ष या कलह उत्पन्न होने की सम्भावना हो जाती है। संघर्ष करनेवाली दोनों शक्तियों को कथावस्तु में इस प्रकार नियोजित किया जाता है कि पाठक का मन संघर्ष का परिणाम जानने को सचेत तथा उत्सुक बना रहे। क्रिया और प्रतिक्रिया के क्रम के द्वारा उन घटनाओं के द्वारा जो चुनकर संघर्ष में लायी गयी हैं, उपन्यास का मुख्य उद्देश्य तथा निहित प्रधान विषय विकसित होता है। इस क्रम एवं चुनाव में उपन्यासकार के उद्देश्य की प्रेरक शक्ति (motive) का पता चलता है। वह कितनी भी चेष्टा अपने को छिपाये रखने की क्यों न करे, कथावस्तु अथवा "प्लाट" में यह प्रेरक शक्ति बिना प्रकट हुए नहीं रहती, और इसी से उपन्यासकार का आत्मप्रकाशन होता है। संघर्ष निष्क्रिय नहीं होता; कथावस्तु में उपन्यासकार घटना-क्रम का वर्णन नहीं करता बल्कि उसे पात्रों की जीवन-घटना बनाकर नाटककार की भाँति हमारे सम्मुख प्रस्तुत करता है, और ऐसा करने में कथावस्तु अथवा "प्लाट" के द्वारा उसकी प्रेरक शक्ति प्रकट हो जाती है।

सैमुएल रिचर्डसन

अंग्रेज़ी उपन्यास के इतिहास में प्रथम लेखक, जिसने ऐसी प्रेरक शक्ति के अधिकार में एक उद्देश्य से परिचालित उपन्यास लिखा, वह सैमुएल रिचर्डसन (Samual Richardson) था, और उसकी वह रचना 'पैमिला, ऑर वर्चू रिवार्डेड' (Pamela, or Virtue Rewarded) थी। रिचर्डसन का जन्म १६८९ में हुआ था। उसका पिता बढ़ई का काम करता था। कुछ दिनों एक स्कूल में शिक्षा पाने के बाद वह लन्दन में एक छापेखाने में नौकर हो गया और काम सीख जाने पर जल्द से जल्द उसने अपना छापाखाना खोल दिया वह अपनी कार्यकुशलता तथा

ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध हो गया। सन् १७३२ में रिचर्डसन के छापेखाने से हाउस आफ कामन्स (House of Commons) की कई पत्रिकाएँ और पार्लमिन्ट की रिपोर्टें निकलती थी। लड़कपन और तरुण अवस्था में वह अपने घर के निकट रहनेवाली युवतियों का कृपापात्र था। इनमें से कई युवतियाँ उसे अपनी प्रेम-कथाएँ सुनाया करती थी और कभी-कभी प्रेमपत्रों के ऐसे खाके उससे बनवा लेती थीं जिन्हें अपनी आवश्यकता के अनुसार भरकर वे भेज सके। कभी कोई युवती अपने प्रेमी को किसी अपराध के लिए बुरा-भला कहना या फटकारना चाहती, किन्तु भावुकता से उसकी बातो का अर्थ कुछ का कुछ निकलता तो उस युवती का पत्र लिखना रिचर्डसन के लिए कविता से भी कठिन हो जाता। ऐसा पत्र लिखने के लिए स्त्री की प्रकृति और उसके स्वभाव का ज्ञान होना आवश्यक था, और साथ ही भापा पर पूरा अधिकार होना चाहिए था कि ऐसे कोमल विचार तथा मिश्रित भाव प्रकट किये जा सके। इन पत्रो के लिखने मे रिचर्डसन को ऐसे विचारों, भावों तथा मनुप्य की प्रेरणाओ का अच्छा ज्ञान हो गया और कई वर्ष के अभ्यास के कारण उसकी भाषा भी पर्याप्त रूप से सक्षम हो गयी। इन योग्यताओं से उसने उपन्यास लिखने मे पूरा लाभ उठाया। जिस समय उसके मित्रों ने उससे एक ऐसी पुस्तक लिखने को कहा जिसे पढ़कर साधारण जनता को कुछ आवश्यक बातों का ज्ञान भी हो जाय और वे पत्र लिखना सीख जायें, तो उसने एक सुनी हुई कहानी के चारों ओर शिष्टाचार, सद्व्यवहार एवं अच्छे जीवन के नमूनों का संसार निर्मित कर दिया। जैसे-जैसे पत्रों की सख्या बढ़ने लगी, कहानी अधिकाधिक रोचक होती गयी और पत्रों का भी ढग बदलता गया, यहाँ तक कि पत्र-व्यवहार कई दिशाओं से होने लगा और इस तरह कहानी कहीं से कहीं पहुँचकर पुस्तक का प्रधान अंग बन गयी। जैसे-जैसे पुस्तक का विस्तार होता गया, रिचर्डसन को निश्चय होता गया कि उसने एक नयी लेखन-प्रणाली का आविष्कार किया है, जो उसकी समझ में प्राचीन रोमांसों तथा दूसरी कथाओं से कम रोचक न होते हुए उनसे कहीं अधिक स्वाभाविक एव शिक्षाप्रद है।

रिचर्डसन की नैतिकता

रिचर्डसन के घर के वातावरण में और उसकी शिक्षा में नीति और सदाचार पर बहुत बल दिया जाता था। इस समय देश भी दुराचार को समाज का द्रोही समझने लगा था और लोग तत्कालीन नाटक का इसलिए विरोध करते थे कि उसका

प्रभाव समाज पर बहुत बुरा पड़ रहा था। यद्यपि युग के लगभग सभी श्रेष्ठ लेखकों ने नाटक से अपना साहित्यिक जीवन प्रारम्भ किया था, फिर भी उन्हें जनता को अच्छे और बुरे नाटकों का भेद बताने मे कठिनाई इसलिए होती थी कि रेस्टोरेशन काल के कुछ बुरे नाटक लोगों को इस समय भी रुचिकर थे। पादरियों को नाटकों से ही नहीं बल्कि सारे साहित्य से घृणा हो गयी थी। वे तत्कालीन साहित्य को सदाचार का मुख्य शत्रु समझते थे। यही कारण था कि रिचर्डसन बिना जाने और बिना प्रयास के अपनी कहानी मे नैतिकता एव सदाचार पर इतना बल देता चला गया था।

पैमिला (Pamela) की कहानी का निरूपण अछूती कल्पना में और ऐसे काल में हुआ था जब मौलिकता का उदय हो रहा था। रिचर्डसन कहानी की मनोहरता के कारण उसे भावुक बनाकर कहना चाहता था, किन्तु उसकी प्रेरक शक्ति का संचालन उसकी नैतिकता के हाथ मे था, इसलिए कहानी का विस्तार उसके न चाहने पर भी नीतियुक्त ही रहा। उपन्यासकार ने गुणों और दोषों को उनकी उत्पत्ति में देखा और कलुषित विचारों का उनकी क्रमिक बढती के साथ-साथ निरीक्षण किया, सदाचार के संकल्पों को छोटी-छोटी बातो के द्वारा दृढ़ होते देखा, तरह-तरह के प्रलोभनों के बल और प्रकृति पर ध्यान दिया, साथ ही उन प्रलोभनों के अवरोध तथा प्रतिबन्धों की शक्ति एव प्रतिक्रिया पर भी विचार किया, और यह सब कुछ करने के उपरान्त मनुष्य-जीवन के नैतिक सघर्षो तथा आन्तरिक कलह को शान्त करने के उपाय निकालने की चेष्टा भी की। इन समस्याओं पर वह जितना अधिक विचार करता गया, विरोधो को मिटाने का प्रयत्न करता गया, उतनी ही उसकी नीति दुनियादारी और चतुराई में परिवर्तित होती गयी। उत्कंठित भावो को बीसों हेर-फेर देकर उसने जितनी चेष्टा की, उतनी ही कथावस्तु उलझती गयी और भावुकता अथवा रसिकता को दूर रखना कठिन होता गया, यहाँ तक कि उपन्यास आहों और सिसकियों से भर गया।

आधुनिक उपन्यास का पहला नमूना—पैमिला

पैमिला (Pamela) एक पन्द्रह वर्ष की युवती है जिसे उसके माता-पिता ने धर्म और नीति के वातावरण में पाला-पोसा और इतना बड़ा किया है। वह एक बड़े घर में नौकरी करती है जहाँ उसकी मालकिन के देहान्त के बाद उसका मालिक उसे प्रलोभन देता और उसके सच्चरित्र पर आघात करता है। युवती बड़ी हिम्मत

से काम लेती है और जब उससे कुछ और बन नहीं पड़ता तो नौकरी छोड़कर चली जाती है। किन्तु उसके युवक मालिक को उससे प्रेम हो गया था, अतः वह उसे राजी करता है और अन्त में दोनों का विवाह हो जाता है। यही वह कहानी है जिस पर रिचर्डसन ने पत्रों का क्रम केन्द्रित किया था और एक व्यक्ति के दूसरे के प्रति प्रेम के विषय को उपन्यास का प्रेरक बनाया था। उसका एकमात्र उद्देश्य उन युवकों तथा युवतियों को सदाचार सिखाना था जो पैमिला की जैसी अवस्था मे हो सकते हैं। युवती के पत्र, जिनमें उसने अपनी मुसीबत का हाल अपने माता-पिता आदि को लिखा है, रिचर्डसन ने विस्तार देकर दो मोटी जिल्दों में भर दिये। इन पत्रो मे पैमिला को साधुता से पूर्ण मेमने-जैसा दिखाया गया है। वह सबको प्यार करती है और उसे सब चाहते हे। उसमें न तो किसी प्रकार का घमण्ड है न तीखापन, बल्कि वह सीधी-सादी, निष्कपट, स्पष्टवक्ता और विनीत युवती है जो सदा अपनी आँखे नीची किये रहती है। जब उसका मालिक ज़बरदस्ती उसका चुम्बन करने की चेष्टा करता है तो उसे बड़ा आश्चर्य होता है, किन्तु वह यह नही समझती कि दुनिया खराब है। वह अपने घर जो पत्र भेजती है उसमें लिखती है--"इस भद्र पुरुष ने एक नौकर को इतनी आजादी देकर अपने को नीचे गिराया है . . . मैं तो उसके शब्दों को सुनकर भौचक रह गयी. . . .और मूर्ख की तरह रो पड़नेवाली ही थी कि झट उसे प्रणाम करती हुई वहाँ से हट गयी और शर्म के मारे मेरा चेहरा लाल हो गया।" कोई भी अत्याचार उसे इतना नाराज नही करता कि वह अपनी नम्रता या शिष्टाचार छोड़ दे। "श्रीमान् जो चाहे कहे, मैं क्या कह सकती हूँ सिवा ईश्वर से आपके भले के लिए प्रार्थना के।" उसका मालिक, जिसका नाम मिस्टर बी० है, बीसों प्रकार के दबाव उसके ऊपर डालता है; भय, आश्चर्य, अकेलापन, धन, नम्रता, तरह-तरह के प्रभाव उसके ऊपर आजमाता है, परन्तु वे सब व्यर्थ जाते हैं। पाठकों को दु:खी करनेवाली और उन्हें युवती का भाग्य जानने के लिए उत्सुक रखनेवाली बात यह है कि वह मन ही मन में गुप्त रीति से अपने मालिक से प्रेम रखती है। वह अपने को धोखा नही देती, उसे वास्तव मे प्रेम है, यदि वह ईश्वरभक्त तथा धर्म को माननेवाली न होती तो आत्महत्या करके इस स्थिति को समाप्त कर देती। उसके सीधेपन में उसकी प्यूरिटन धर्मनिष्ठा उसे अपनी रक्षा के लिए शक्ति देती है। वह कहती है--"मेरी आत्मा किसी राजकुमारी की आत्मा से कम नही, यद्यपि मेरी सासारिक दशा एक गुलाम से भी गयी गुजरी है।" ईश्वर-भक्ति, न कि वे नियम और प्रथाएँ जिन पर लोग अपने

जीवन को आधारित करते थे, और यह विश्वास कि संसार का संचालन एक नैतिक शक्ति करती है और उसे न्याय स्थिर रखता है, पैमिला के आधार थे,—और यही वह बल था जो रेफार्मेशन (Reformation) ने अंग्रेज जाति को सोलहवीं शताब्दी में दिया था, और जो उसी समय से जाति के आत्मबल एवं गौरव को बढ़ाता तथा उसे सफल करता आया है।

'पैमिला आर वर्चू रिवार्डेड' (Pamela or Virtue Rewarded) प्रकाशित होते ही (१७४०) लोकप्रिय हो गयी। फ्रेंच भाषा में उसका तुरन्त अनुवाद हो गया, डाक्टर शर्लाक ने गिरजे में उसकी प्रशंसा की और दूसरे धार्मिक उपदेशकों ने अपने व्याख्यानों में उसको धर्म और नीति के विचार फैलाने तथा जीवन में सुधार करने का यन्त्र कहा। रसिक तथा भावुक पाठकों ने अपनी रुचि के अनुसार उसकी प्रशंसा की। रिचर्डसन को कुछ लोगों ने मानव प्रकृति को समझने और जीवन को ठीक रास्ते पर लगाने के लिए सराहा, परन्तु उसी समय के दूसरे लोगों ने उस भावुकता को उत्तेजित करने के अपराध के लिए बुरा कहा, जो जीवन की कमजोरी होती है। साहित्यिक लोगों में भी मतभेद हुआ और डाक्टर जान्सन ने रिचर्डसन को उपन्यास में इसलिए असफल कहा कि उसने उत्कंठा तथा भावना को सद्गुणों के इशारे पर चलाया।

आठ वर्ष व्यतीत हो जाने पर १७४८ में रिचर्डसन ने क्लैरिसा हार्लो (Clarissa Harlowe) नामक उपन्यास सात जिल्दों में प्रकाशित किया। यह एक युवती की कहानी है जो लवलेस (Lovelace) नामक व्यक्ति के चंगुल में फँसकर तरह-तरह के कष्ट उठाती है। क्लैरिसा (Clarissa) पहले तो लवलेस के प्रति उदासीन रहती है। फिर कुछ समय के बाद अपने भाई और लवलेस के बीच का झगड़ा मिटाने के लिए वह उससे मेल-जोल बढ़ाती है। क्लैरिसा के सम्बन्धी इस उद्देश्य को नहीं समझते और दूसरे अर्थ लगाते हैं, यहाँ तक कि वे सोम्स (Solmes) नामक एक व्यक्ति को उससे प्रेम करने के लिए घर में ले आते हैं जिसे वह घृणा की दृष्टि से देखती है। यह व्यापार क्लैरिसा को इतना पीड़ित कर देता है कि वह घर छोड़ कर एक मित्र का आश्रय लेने पर तैयार हो जाती है। इस मुसीबत के समय लवलेस उसकी सहायता करता है और जब वह उसके जाल में फँस जाती है तो वह उसे भगा ले जाता है और इसके उपरान्त सैकड़ों कष्ट देकर उसका सर्वनाश कर डालता है। जब क्लैरिसा की मृत्यु हो जाती है तो उसके नातेदारों को अपने अन्याय का पश्चात्ताप होता है, और उपन्यासकार मनोव्यथा को

लवलेस और उनके वीच तरके (विरासत) के समान वड़ी समझ-बूझ के साथ वाँट देता है।

रिचर्डसन की लेखन-प्रणाली

लवलेस के चंगुल में पड़ने के स्थान से लेकर अनिवार्य अन्त तक कहानी को पहुँचाने में रिचर्डसन ने जो होशियारी और समझ-बूझ दिखायी है वह कहानी-साहित्य में अपूर्व है। उपन्यासकार को अपने विषय का पूरा ज्ञान है, जिसके कारण वह जिस प्रकार चाहता है तथ्यों तथा भावों को हृदय पर प्रभाव डालने के लिए पाठक के सामने रखता है। अपनी प्रणाली के विशेष गुणों को पाठक के सम्मुख खोलकर रख देता है और घड़ी के पु जो की भाँति प्रेरक शक्ति के प्रयोग से लेकर समय के व्यतीत होने तक का अनुमान कराता है। क्लैरिसा के कष्टों की संख्या वढती जाती है, उसका दुःख धीरे-धीरे असह्य होता जाता है, किन्तु मुसीवतों के घटाटोप के नीचे उसका धैर्य, सहनशीलता, सामर्थ्य और सदाचार अन्त तक चमकता रहता है और दिन पर दिन चमक वढ़ती ही जाती है। उपन्यास का पाठक वहुत पहले से क्लैरिसा के अन्त को जान लेता है, परन्तु उपन्यासकार उसे जल्दी नहीं चलने देता, वल्कि उसकी गति को जितना भी धीमा कर सकता है करता रहता है और निकटवर्ती अन्त को देर से देर में पहुँचता है। वह क्लैरिसा से अपनी अन्तिम यात्रा की तैयारी धीरे-धीरे विना किसी घवराहट के कराता है। उत्तर-क्रिया तक के सम्वन्ध की छोटी से छोटी वातों को वह विना जल्दी किये तय करती है। इस धीमी गति में हमें उपन्यासकार के आत्मसंयम तथा शक्ति का पता चलता है। रिचर्डसन का यही ढंग लवलेस की मृत्यु के वर्णन में भी रहता है। क्लैरिसा की निर्मलता तथा विरक्तता, लवलेस के चरित्र एवं शिष्ट व्यवहार, और इसी प्रकार की वातों में रिचर्डसन से हमारा मतभेद हो सकता है। हमारे विचार कहानी-साहित्य की सीमाओं के सम्वन्ध में भी उसके विचारों से भिन्न हो सकते है—कहाँ तक और किस प्रकार वह दुःखमय अनुभव जो कविता का प्राण और सारी कलाओं का लालित्य होता है, उपन्यास में व्यक्त होता है—किन्तु हमें उसके चरित्र-चित्रण की पूर्णता तथा सूक्ष्मदर्शिता और उसका वह उत्साह जिससे वह नैतिक गुणों को दर्शाता और सराहता है, स्वीकार करना पड़ता है। उपन्यास में वहुत-सी अनहोनी वातें आती हैं जिन पर भावुकता का कोहरा छाया हुआ है। हम किसी प्रकार कोहरे के वाहर निकलते हैं और उसे तुरन्त भूलकर उन प्रभावों की सराहना करते हैं जो

लेखक हमारे ऊपर डालता है। इसी गुण ने रिचर्डसन को इंग्लैण्ड और फ्रांस में लोकप्रिय बनाया था और इन्हीं गुणों के कारण वह आधुनिक उपन्यास में एक प्रथा स्थापित कर सका था, जिसका भविष्य में बड़ा आदर हुआ।

पैमिला और क्लैरिसा दोनों उपन्यास पत्रों के रूप में लिखे गये है। जैसा पहले कहा जा चुका है, रिचर्डसन को यह प्रणाली संयोग से मिल गयी थी, किन्तु क्लैरिसा के लिखने में उसने जान-बूझकर उसका प्रयोग किया था। मैत्री अथवा आत्मीयता का जो उत्साह और कोमल भाव पत्रों में प्रकट किये जा सकते हैं, वे अकर्तृक शैली में नहीं किये जा सकते। कहानी को पात्रों के ही शब्दों में लिखने से उपन्यासकार अदृश्य, किन्तु सर्वदर्शी रहता है, और यद्यपि वह हर एक स्थान तथा प्रत्येक हृदय में प्रवेश पाता है, फिर भी उससे कोई यह नहीं पूछ सकता कि वे घटनाएँ जिनका वह वर्णन करता है, उसे कहाँ से मालूम हुई।

यह लेखन-प्रणाली कवियों एवं नाटककारों की हुआ करती थी। वे कहानी को ऐतिहासिक घटना की तरह लिखते थे और ऐसा वर्णन करते थे मानो पाठक की आँखों के ही सामने सब कुछ हो रहा है। प्रारम्भिक काल के उपन्यास में ऐसी प्रणाली का प्रयोग नहीं किया गया था, क्योंकि उपन्यासकार कवि के समान कल्पना के परों से आकाश में उड़ता नहीं था, और न नाटककार के समान वह लोगों के हृदय में या उनके घरों में 'क्या हो रहा है' जानने की चेष्टा करता था। और फिर उपन्यासकार के पास वह रंगमंच भी नहीं था जिस पर घटनाएँ प्रत्यक्ष की जा सकतीं और जीवन के चित्र सजीव किये जाते। उसके लिए सबसे अच्छी रीति कथापुरुष से आपबीती करके कहानी कहलाना था, जैसा डैनियल डिफ़ो ने राबिन्सन क्रूसो में किया था।

इस रीति से लिखने के कुछ विशेष लाभ भी थे। एक तो उन घटनाओं में, जो वर्णन की जाती थीं, कथापुरुष के अपने अनुभव से ऐक्य उत्पन्न हो जाता था, दूसरे उस अनुभव में वे घटनाएँ जीवित भी हो जाती थीं। फिर भी इस रीति में कुछ असुविधा तथा हानि भी है, क्योंकि कथापुरुष के जीवन का एक बड़ा भाग वर्णन में नहीं लाया जा सकता और कहानी में किसी को चरित्र पर अपना मत प्रकट करने का अवसर नहीं मिलता। पत्रों की शैली में लिखने से कहानी में नाटक के गुण उत्पन्न हो जाते है और कहानी के पात्रों तथा पाठक के बीच सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। रिचर्डसन उपन्यास को विस्तृत नाटक मानता था। क्लैरिसा हार्लो (Clarissa Harlowe) को वह "नाटकीय वर्णन" कहता है, और यह ठीक

भी है, क्योंकि इस उपन्यास में नाटक की भाँति एक निश्चित विपत्ति (catastrophe) है जिसकी ओर पात्रों के चरित्र और सारी परिस्थितियाँ कहानी को लिये जाती हैं और उसी आपत्ति में फलीभूत होती हैं। शैली और प्रणाली नाटकीय आवश्यकता के अनुरूप है और पाठक के मन में गहरी से गहरी वातों के भावों को जगाती हैं। रिचर्डसन यह वात अच्छी तरह समझता था। पत्र-व्यवहार की प्रणाली का समर्थन करते हुए उसने क्लैरिसा हार्लो की प्रस्तावना में लिखा है--"उन लोगों की शैली कहीं अधिक प्रभाव डालने वाली और भाषा कहीं अधिक जीवित होती है जो मुसीबतों को सहते हुए अपनी दशा का वर्णन करते हैं। उनका मन संदेह और अनिश्चित भावों से पीड़ित होने के कारण, जिस आत्मीयता के साथ वे अपनी दशा का वर्णन करते हैं, वह पत्रों में जितनी अच्छी तरह व्यक्त होती है उतनी किसी दूसरी तरह नहीं होती। शुष्क, वेजान शैली, जिसमें सहे हुए दुःखों या खतरों का वर्णन किया जाता है, पाठक को उत्तेजित नहीं करती, क्योंकि लेखक खुद उत्तेजित नहीं होता।"

इस पर भी रिचर्डसन ने अपने पाठकों से सम्पर्क बनाये रखने के लिए पृष्ठ के नीचे टीका करके कहानी पर अपनी राय बहुत जगह दी, और पाठकों को उसे समझाने के लिए व्याख्या भी की है। इस टीका की तत्कालीन पाठकों को आवश्यकता भी थी, क्योंकि चरित्र-चित्रण की जो बारीकियाँ रिचर्डसन ने बतायी हैं वे आधुनिक उपन्यास के लिए भी नयी थीं। क्लैरिसा और लवलेस दोनों का ही चरित्र पेचीला और मिश्रित है, जिसे समझना कठिन और उसके चित्रण से मतभेद सहल है। यह बात क्लैरिसा के सम्बन्ध में बिलकुल ठीक है।

रिचर्डसन मर्दों की अपेक्षा औरतों को ज़्यादा अच्छी तरह समझता था। स्त्रियाँ उसकी प्रथम श्रोता और प्रथम प्रशंसक थीं। वे उसे खूब चाय पिलाती थीं और उसकी चापलूसी भी करती थीं। पैमिला के ही समय से वह एकान्त वास पसंद करता था और धीरे-धीरे समाज से पृथक् जीवन व्यतीत करने का उसे अभ्यास हो रहा था। कुछ दिनों में अकेले रहने की उसे ऐसी आदत हो गयी कि वह अपने छापेखाने के अफसरों से भी पत्र-व्यवहार करके काम लेने लगा। अकेले रहने के कारण उसके उपन्यासों में व्यापकता तथा नवीनता की कमी है और उनका संसार बहुत छोटा है जिसमें क्षुद्र एवं साधारण घटनाएँ, तुच्छ बातों में शंकाएँ, प्यूरिटन लोगों के अच्छे और बुरे के झगड़े, जिनके तय करने में अन्तःकरण का बहुत जमा-खर्च हो, तथा स्त्रियों की सी सूक्ष्मदर्शिता और शुद्धता, जो उठने-बैठने एवं घरेलू

हाथ नहीं डालती और नैतिक समस्या पर विवाद किये वगैर कोई काम नहीं करती। तीसरे उपन्यास में भी सर चार्ल्स मिस वाइरन के प्रेम में अपने सारे मामले ठीक किये विना कदम नहीं वढ़ाता। रिचर्डसन ने अपने कथन को, कि उसका उद्देश्य सदाचार की शिक्षा देना है, अपने उपन्यासों में सिद्ध कर दिखाया।

रिचर्डसन के इस अभिमान से अप्रसन्न होकर और भाव-प्रदर्शन से रसिकता उत्पन्न करने की रीतियों से घृणा करके हेनरी फ़ीलिंडग (Henry Fielding) नामक एक समकालीन लेखक ने पैमिला की हँसी उड़ाने के लिए उसके अनुसरण में उपन्यास लिखकर प्रकाशित किया।

हेनरी फीलिंडग

हेनरी फीलिंडग का जन्म १७०७ में रिचर्डसन से ऊँचे घराने में हुआ था, उसकी शिक्षा भी उच्चकोटि के स्कूलों में हुई थी, जहाँ से कानून पढ़ने के लिए वह लीडेन भेजा गया था। सन् १७२७ में वह लन्दन लौटा और नाटक लिखकर अपना जीवन निर्वाह करने लगा। जव लाइसेंन्सिग ऐक्ट १७३७ में वना और व्यंग्यात्मक नाटकों पर निषेध लगाया गया, तो फीलिंडग का काम वन्द हो गया और वह फिर कानून के अध्ययन में लग गया। जीविका के लिए उसने पत्रिकाओं में विभिन्न प्रकार की रचनाएँ लिखना जारी रखा। कुछ समय के उपरान्त उसे लन्दन में पुलिस मजिस्ट्रेट की नौकरी मिल गयी। कहा जाता है कि इस नौकरी में उसने वहुत अच्छा काम किया और १७५४ में स्वास्थ्य खराव हो जाने के कारण वह नौकरी समाप्त करके पुर्तगाल गया। इस यात्रा का उसने वाएज टु लिसवन (Voyage to Lisbon) नामक पुस्तक में दुःखमय वृत्तान्त लिखा जो पढ़ने योग्य है। उसी वर्ष उसका लिसवन में ही देहान्त हो गया।

फीलिंडग का पहला उपन्यास, जोजेफ़ एण्ड्रूज़ (Joseph Andrews) सन् १७४२ में प्रकाशित हुआ था। जोजेफ़ एण्ड्रूज़ पैमिला का भाई था जिसे फ़ीलिंडग ने उसी प्रकार के प्रलोभन उसकी मालकिन से दिलवाये, जैसे पैमिला के मालिक ने दिये थे। पैमिला की भाँति जोजेफ़ उन प्रलोभनों का प्रतिकार करता है, किन्तु वह घर से वाहर निकाल दिया जाता है और घूमता-घामता अपने मकान पर देहात में पहुँच जाता है। पैमिला में जो मिस्टर वी० हैं वे यहाँ मिस्टर वूवी हो जाते हैं और फीलिंडग पैमिला की भी हँसी उड़ाता है। रिचर्डसन के उथले नैतिक विचारों तथा उसके जीवन सम्वन्वी संकीर्ण आदर्शों की हँसी उड़ाने के वाद, जहाँ से जोज़ेफ

की नौकरी समाप्त हो जाती है, उपन्यास का कथापुरुप बदल जाता है और उसका उद्देश्य भी रिचर्डसन के उपन्यास से कोई सम्बन्ध नही रखता। पार्सन ऐडम्स (Parson Adams) जो सर टामस बूबी के घराने के पुरोहित है, जोज़ेफ को एक सराय में मिलते हैं, जहाँ से वे दोनों साथ-साथ यात्रा करते है और तरह-तरह के हँसी के अनुभवों के उपरान्त उपन्यास के सब पात्र एक स्थान पर मिलते है। फील्डिग उस समय के इंग्लैण्ड की दशा का बड़ा सुन्दर वर्णन करता है जब न सड़के थीं न रेल, लोग घोड़ागाड़ियों में यात्रा करते थे, सराय में ठहरते थे, देहात मे बड़े आदमियों के मकान होते थे। घटनाएँ अलग-अलग है और पात्र अपने जाने हुए स्त्री और पुरुप हैं, जो फील्डिग की जानकारी का अच्छा परिचय देते है। जो चित्र उसने दिये हैं वे बहुधा हास्यजनक और हँसी उडाने के उद्देश्य से दिये है। कथावस्तु की ओर फील्डिग का बिलकुल ध्यान नही है। पार्सन ऐडम्स और जोजेफ़ के अनुभव कहानी को आगे नहीं बढ़ाते, दूसरे पात्र भी केवल अप्रस्तुत बोल-चाल के लिए कहानी में लाये गये हैं और उपन्यास का अन्त अकस्मात् सुखद बातो को एकत्र करके किसी तरह कर दिया गया है। फिर भी वास्तविक और यथार्थ को फील्डिग ने हाथ से कहीं भी जाने नही दिया है और ऐसे चित्र दिये है जो जीते-जागते तो हैं ही, किन्तु रिचर्डसन के संकुचित ससार को ऐसे विस्तृत जगत् मे परिवर्तित कर देते हैं जिसमें बहुत-से धर्म और कई दृष्टिकोण सम्भव है।

फील्डिग का दूसरा उपन्यास जानेथन वाइल्ड (Jonathan Wild), जो उसने १७४३ में प्रकाशित किया, उस चोरों के सरदार के कृत्यों पर आधारित था जिसकी जीवनी डैनियल डिफ़ो ने १७२५ मे लिखी थी। फील्डिग का विशेप उद्देश्य ऐश्वर्य और सद्गुण का अन्तर दिखाना था जो बहुधा जीवनी लिखने वाले स्पप्ट नहीं करते, जिससे सामान्य जनता को धोखा होता है। एक चोर या डाकू अपने काम में ऐश्वर्य इस कारण प्राप्त कर सकता है कि वह सबसे बड़ा चोर या डाकू है, किन्तु उसे कीर्ति इस कारण नही मिल सकती कि उसमे सद्गुण नहीं है। फ़ील्डिग ने अपने अन्तिम दो उपन्यासों में कथावस्तु पर जोर दिया और इस प्रकार आधुनिक प्रणाली की नींव डाली।

टाम जोन्स

टाम जोन्स (Tom Jones) नामक पहले उपन्यास में, जो १७४९ में प्रकाशित हुआ, वह कथापुरुप के बचपन से कहानी प्रारम्भ करता है और उसके अनुभवों

की डोरी में सारी बातों को बाँधकर उनमें एकता उत्पन्न करता है। यह उपन्यास अठारह 'पुस्तिकाओं' में विभाजित है और प्रत्येक 'पुस्तिका' के पहले एक निबंध है जिसमें कहानी के संबंध में किसी न किसी विषय पर लेखक ने अपने विचार प्रकट किये हैं। यह उपन्यास लोकमत के अनुसार फील्डिंग की सर्वोत्तम रचना है और इन निबंधों में उसके गद्य के सबसे सुन्दर नमूने हैं।

टाम जोन्स को एक रात कोई चुपके से मिस्टर ओलवर्दी के पलंग पर सुला गया था जिसका उन्हें पता नहीं चला। वे एक धनाढ्य, दयालु, सदाचारी व्यक्ति हैं। उन्होंने बच्चे को अपने घर में रखकर पाला-पोसा और शिक्षा दिलवायी, किन्तु कुछ समय के बाद वे उससे कई कारणों से असन्तुष्ट हो गये और उसे अपने घर से निकाल दिया। मिस्टर ओलवर्दी के ही पास उनका भानजा ब्लिफिल (Blifil) रहता था, जो नीच प्रकृति का छिछोरा युवक था और जिसने टाम के विरुद्ध उनके कान भरे थे। टाम एक उदारचित्त, पुरुषार्थी युवक है जिसमें मानवता कूट-कूटकर भरी है। टाम का एक अपराध यह था कि वह मोली सीग्रिम (Molly Seagrim) से हँसी-मजाक़ करता था, जो मिस्टर ओलवर्दी (Mr Allworthy) के पहरेदार की कन्या है। इसके अलावा, टाम का दूसरा अपराध यह था कि वह एक पड़ोसी स्क्वायर वेस्टर्न (Squire Western) की पुत्री सोफ़िया (Sophia) से प्रेम करने लगा था, जिसका विवाह किसी युवक के साथ होने को था और जिससे ब्लिफिल भी प्रेम करता था। ब्लिफिल ने डाह के कारण ही टाम की शिकायत करके मिस्टर ओलवर्दी को नाराज़ कर दिया था। घर से निकाले जाने पर टाम पार्टरिज (Partridge) नामक सीधे-सादे अध्यापक के साथ लन्दन की ओर प्रस्थान करता है और रास्ते में इन दोनों को खूब-खूब अनुभव होते हैं और साहस के कार्य भी करने पड़ते हैं। कई प्रलोभनों में टाम फँस भी जाता है और लन्दन पहुँचकर भी कुछ दिन तक वह कई झगड़ों में पड़ा रहता है। उधर सोफ़िया को टाम के चले जाने का बहुत रंज होता है। वह ब्लिफिल से विवाह नहीं करती और घर छोड़कर लन्दन भाग आती है जहाँ उसे टाम मिल जाता है और उसके पिता भी उसे ढूँढ़ते हुए आ पहुँचते हैं। यहाँ सब लोगों को टाम के माता-पिता का हाल मालूम होता है और ब्लिफिल की धूर्तता का पता चलता है। मिस्टर ओलवर्दी यह जानकर कि वह अनाथ नहीं बल्कि उन्हीं की बहिन का लड़का है, बहुत प्रसन्न होते हैं और टाम को फिर से अपना लेते हैं। सोफिया टाम के सारे अपराध क्षमा कर देती है और उन दोनों का विवाह हो जाता है।

इस सारे व्यापार में कहानी की एकता केवल कथापुरुष के अपने अनुभवों के कारण है जो आदि से अन्त तक उसे विभिन्न परिस्थितियों में होते हैं। बहुत-सी घटनाएँ कहानी के उलझे हुए सूत्रों को सुलझाने के लिए करायी जाती हैं और उपन्यास के बहुत-से पात्र जिन्हें कथापुरुष अपने चारों ओर एकत्रित कर लेता है, अन्त तक घटनाओं में हिस्सा लेते रहते हैं। इन सब विशेषताओं के साथ उपन्यास में महाकाव्य की जैसी बंधनमुक्त अव्यवस्थित प्रणाली का प्रयोग किया गया है और उपन्यासकार अपने पाठकों से बराबर अपना सम्बन्ध स्थापित किये रहता है। इसके विरुद्ध, रिचर्डसन के उपन्यासों में, खास कर क्लैरिसा हार्लो में, नाटक का जैसा आकार कहानी को बन्धनों में से निकलने नही देता।

अपने सिद्धान्त के अनुसार तथा रिचर्डसन से विरुद्ध फील्डिंग अपने उपन्यास के बीच-बीच मे पाठकों को निबंधों में कहानी-कला एव जीवन के सम्बन्ध में अपना मत बताता चलता है। फीलिंडग के मत से अग्रेज़ उपन्यासकार सहमत रहे हैं और इसी लिए अंग्रेजी उपन्यास टाम जोन्स के नमूने पर बराबर लिखा जाता रहा है। फ़ीलिंडग पाठकोंको क़दम-क़दम पर बताता है कि उसके उपन्यास का कथापुरुष एक सामान्य अंग्रेज़ युवक है, जिसमें न तो आदर्शवादी प्रेरणा है न किसी प्रकार की निराशावादी रुकावट है, जो जीवन के प्रवाह में प्राकृतिक शक्तियों के आवेग से बहता चला जाता है और अपनी मानवता के बल से इन शक्तियों पर साधारण मनुष्यों की भाँति प्रभाव डालकर अपने जीवन को सफल करने की चेष्टा करता है। टाम जोन्स के पढ़ने से हमें स्पष्ट हो जाता है कि फीलिंडग का मुख्य उद्देश्य विवरण अथवा स्पष्टीकरण है। वह एक ऐसा कहानी कहने वाला है जो अपने विषय को भूमि अथवा प्रदेश समझता है, जिस पर वह एक उद्यान लगाना चाहता है और उसके प्रत्येक टुकड़े को विशेष प्रकार के फूलों या फलों के लगाने के लिए ठीक करता है जिसको ब्यौरेवार पाठकों को समझाता है।

एमिलिआ

फीलिंडग का तीसरा उपन्यास एमिलिआ (Amelia) था जो उसने १७५१ में प्रकाशित किया। यह एक सदाचारी गृहिणी की कहानी है जो बीसों प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करके अपने सतीत्व की रक्षा करती है। विलियम बूथ फ़ौज में अफ़सर था, किन्तु फ़ाक़ेमस्त और बिलकुल अधर्मी, कच्ची बुद्धि की युवतियों पर प्रभाव डालकर उन्हें बुरे रास्ते पर लगाने में निपुण था। उसने एमिलिआ पर भी

अपने झूठ-सच से कुछ ऐसा प्रभाव डाला कि वह अपनी माता की मर्जी के विरुद्ध वूथ के साथ घर से भाग गयी और उसके साथ विवाह कर लिया। निर्धनता का जीवन, कैप्टेन वूथ की मूर्खता एवं दुराचार और उसकी पत्नी की सुन्दरता; यह सब मिलकर दम्पति के लिए वे मुसीवतें पैदा करते है जिनका फीलिंडग वर्णन करता है और जो इस उपन्यास की कथावस्तु निर्माण करती हैं। ऐसे पति की पत्नी ऐसे ही दूसरे मनुष्यों के लिए शिकार का काम करती है और समाज उसे वचाता नही। एमिलिआ का आत्मवल और सहनशीलता वीसों आपत्तियों को टालते हैं और उसके गुण समाज की आँखें खोलते है। एमिलिआ को वह तरका (विरासत) मिल जाता है जिससे वंचित रखने की उसकी वहिन ने कोशिश की थी।

चरित्र-चित्रण के वड़े सुन्दर नमूने इस उपन्यास में मिलते हैं जिससे फीलिंडग की निरीक्षण शक्ति का पता चलता है। पुस्तक का वहुत वड़ा भाग सामाजिक दुर्गति को दर्शाता है और संस्थाओं के दोपों की ओर ध्यान आकर्पित करता है। इस उपन्यास से फीलिंडग की कई दुर्वलताएँ प्रकट होती हैं। वह प्रेक्षक तो था, किन्तु आविप्कार वहुत नही कर पाता था और मौका पड़ने पर विना रोक-टोक के अपने लिखे को दोहराता था। एक से ही प्रलोभन को वार-वार प्रयोग में लाता है। टाम जोन्स में व्लिफ़िल के प्रसंग को वदलकर एमिलिआ के तरके का प्रसंग रचा गया है, जिसके कारण उपन्यास का सुखद अन्त हो सका। वह प्रसिद्ध दृश्य जिसमें एमिलिआ और उसके वच्चे कैप्टेन वूथ के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं और वह नही आता है, कई वार दूसरी पुस्तकों में आया है। यही नहीं, पात्र भी एक दूसरे की पुनरावृत्ति मालूम होते हैं, जैसे वूथ वड़ी अवस्था का टाम जोन्स है जो वुद्धि में अव भी कच्चा है, या एमिलिआ विलकुल सोफिया वेस्टर्न है जो अधिक व्यौरे के साथ चित्रित है। फ़ीलिंडग की श्रेप्ठता अपने उपन्यासों में तरह-तरह के स्त्री और पुरुप वास्तविक संसार से लाकर उपस्थित करना है। वह लोगों को देखता और उनकी आकृति से मोहित हो जाता था। उसे उन प्रेरणाओं से प्रयोजन नहीं था जो स्पप्ट रीति से सामने नही लायी जाती; वह प्रणाली भी महाकाव्य की सी पसन्द करता था, क्योंकि वह सीधी-सादी रीति से कहानी को आगे वढ़ाती चली जाती है। फीलिंडग के पात्रों के जीवन का संचालन करने वाली शक्ति उनकी साधारण तथा स्वाभाविक आवश्यकता अथवा प्राकृतिक प्रेरणा होती है, जिसे वह अच्छी तरह जानता और समझता है। शारीरिक वल तथा पौरुप उसका वह विशेप गुण था जो उसकी इन्द्रियों को उत्सुक एवं उत्तेजित रखता था। इन्द्रियाँ ही उसे जीवन के प्रधान

मौलिक तथ्यों के समझने और सचाई से उन्हें स्पष्ट करने में सहायता तथा शक्ति देती है।

इन्द्रियों की इसी उत्सुकता और सूक्ष्म चेतना ने फीलिंडग के यथार्थवाद को जन्म दिया। यह यथार्थवाद अपनी इस उत्पत्ति के कारण कुछ स्थूल-सा प्रतीत होता है, किन्तु युग की परम्पराओं के वह अनुरूप है और अलेग्ज़ैण्डर पोप (Alexander Pope) तथा जानेथन स्विफ्ट (Jonathan Swift) जैसे प्रधान साहित्यिकों ने उसे स्वीकार भी किया था। जिन तथ्यों के ऊपर इस यथार्थवाद की नींव रखी गयी थी, वे न तो आध्यात्मिक थे न हमारे नित्यप्रति के संसार से परे थे। इसी स्थूल प्रकार के यथार्थवाद के प्रभाव में फीलि्डग की नैतिकता के प्रति जो उदासीनता थी उसे भी समझना चाहिए। वह ससार की सारी वस्तुओं को उनके अंकित मूल्य पर अंगीकार करता था। अठारहवी शताब्दी के बहुत-से साहित्यकार जिस मनभावती नैतिकता को बड़े आडंबर के साथ अपनी रचनाओं में लाकर दिखाया करते थे, उसे फीलि्डग स्वीकार करने को तैयार नही था। सारी बनावट-दिखावट को हटाकर वह उपन्यासों में मनुष्य का वैसा ही चित्र देता है जैसा वह देखता और पाता है, किसी प्रकार का न तो उसके मुँह पर चेहरा ही लगाता है न काट-छाँट होती है। वह यह भी नही भूलता कि उन्हीं मनुष्यों में से एक व्यक्ति मैं भी हूँ। इस स्वाभाविक सहानुभूति का ही फल उसके उदार चित्त और सहन-शीलता को समझना चाहिए जो हम सदा उसके आचरण एवं सांसारिक व्यवहार में देखते है। जीवन तथा मनुष्य के प्रति अपने भाव को वह कभी-कभी व्यंग्य और हँसी उड़ाकर प्रकट करता है, परन्तु द्वेप अथवा निन्दा से काम नहीं लेता। वह हँसता जरूर है, किन्तु उसकी हँसी डीन स्विफ्ट (Dean Swift) की हँसी की तरह की क्रूर एवं निर्दय नही होती, बल्कि वह सदा इस टोह में रहता है कि और कैसे हँसी को दया एवं कोमलता मे परिवर्तित कर दे।

फीलिंडग का स्वभाव

फीलिंडग जीवन का सब से बड़ा दुःख तथा दुर्भाग्य इसको मानता है कि क्रूरता एवं धोखेबाज़ी और दुष्कर्मों से भरे संसार में साधु प्रकृति के और सदाचारी मनुष्य उत्पन्न होते है। इस दुर्भाग्य एवं दुःख को वह सदा अत्यन्त सरल और शुद्ध भाव से साफ़-साफ़ कहता है और उसके प्रभावों का सुन्दर चित्रण करता है। फीलि्डग के अन्तिम उपन्यास का वह दृश्य, जहाँ एमिलिआ भोजन तैयार करने के बाद बूथ के

लौटने की राह देखती है, और जब वह बहुत रात बीते तक नहीं लौटता तो, एक चौअन्नी बचाने के लिए मेज़ पर से शराब हटाकर रख देती है और खुद नहीं पीती—बूथ इस समय जुए में बैठा बीसों रुपये हार रहा था!—यह सीधा-सादा दृश्य क्लैरिसा के पेचीले दुःखों की अपेक्षा कहीं अधिक प्रभाव डालने वाला है। यही वह मानवता और भलमनसी है जो उपन्यासकार का मुख्य गुण और लक्षण होता है, और जिसके बड़ी मात्रा में उपस्थित होने से फील्डिग की रचनाएँ दिलचस्प रहेंगी और आनेवाली पीढ़ियों को प्रभावित करती रहेंगी।

उपन्यास के दो रूप—महाकाव्य का नमूना और "कलात्मक" नमूना

हेनरी फील्डिंग ने उपन्यास के दो विभिन्न रूपों के बीच में अपने उपन्यासों का एक मध्यमान स्थापित किया। उपन्यास का एक रूप सागा (Saga) अथवा महा-काव्य की प्रणाली पर जीवन का विस्तृत विश्वचित्र देता था, जो नाटक की सीमित रंगभूमि पर देना असम्भव था; उसके दूसरे रूप में जीवन का कोई ऐसा भाग चुनकर लिया जाता था जो चरित्र तथा स्वभाव को उस सीमित अनुभव के द्वारा दर्शा सकता था। इस दूसरे रूप के उपन्यास "कलात्मक" कहलाते थे और किसी निश्चित एवं परिमित विषय को लेकर उद्देश्य को उसी संकुचित्र अनुभव की दुनिया में पूरा करने की चेष्टा करते थे। "कलात्मक" उपन्यास (art novel) पूर्णता की अपेक्षा अमिश्रित तथा शुद्ध प्रभाव की गहरी छाप को अधिक महत्त्व देता है। कथावस्तु का प्रबन्ध दोनों रूपों में एक-जैसा नहीं होता। उपन्यास की कथावस्तु के प्रबन्ध से ही उसके सारे विधान अथवा उस ससार तथा वातावरण और परिस्थितियों का पता चलता है, जिसमें उसके पात्र जीवित रहते और कार्य करते है। सागा अथवा महा-काव्य के नमूने पर लिखे हुए उपन्यास में मनुष्य-जीवन के अनेक रंग-रूप, उसकी शक्ति और पराक्रम, उसकी विस्तृत दिलचस्पियाँ बड़ी सुगमता से दिखायी जाती हैं। "कलात्मक" उपन्यास मे कर्मक्षेत्र सीमित होने के कारण बड़ी सावधानी से सूक्ष्म सकेतों और कोमल वार्तालाप के इशारों से गहरी बातें कहनी होती है, जो लेखक की सूक्ष्म चेतना की सूचक होती हैं। इन गुणों को उत्पन्न करने की चेष्टा में जो विभिन्नता दोनों नमूनों के उपन्यासों में देखी जाती है, वह वैसी ही है जो रंगमंच के बाहरी परदे और किसी बारीक कलम से छोटे हाथीदांत पर बनायी हुई तस्वीरमें होती है।

फील्डिंग ने एक स्थान पर लिखा है कि उपन्यास एक प्रकार का हास्यजनक अथवा आनन्दमय गद्य मे लिखा हुआ महाकाव्य होता है, जो होमर (Homer) के

ढंग से आधुनिक विषयों का विस्तार से वर्णन करता है और उन्हें मनुष्यो की जीवन-समस्या बनाकर सजीव कर देता है। फील्डिग का दावा है कि उपन्यासकार होने के नाते वही अपने युग का सच्चा सामाजिक इतिहास लिखता है, और उसके उपन्यासों में उन लोगों की पुस्तकों की अपेक्षा कही अधिक सच्चा वृत्तान्त है जो इतिहासकार कहे जाते है। वह "सामाजिक" शब्द का प्रयोग अठारहवी शताब्दी के अर्थ मे करता है, जब उस शब्द में आचार-व्यवहार, रीति-रिवाज, चाल-ढाल, सभ्यता, लोकाचार और सारे वे कार्य आ जाते थे, जो समाज मे रहकर मनुष्य के जीवन को पुष्ट तथा प्रकाशित करते है। जैसा कि फील्डिग हमे बताता है, उसके उपन्यासो का विषय अपने युग के वातावरण मे मनुष्य की प्रकृति का अध्ययन करना था। इस अध्ययन मे उसने महाकाव्यों-जैसी स्वच्छन्दता से काम लेकर अपने उपन्यासो मे वैसी ही उपकथाएँ तथा प्रासंगिक वार्ता का भी प्रयोग किया, किन्तु घटनाओ की विविधता होते हुए भी, कथावस्तु के प्रबन्ध मे प्रत्येक विवरण को उसने ऐसा सँभाल-सुधारकर रखा कि उसके उपन्यासों मे "कलात्मक" उपन्यास की नीव पड़ गयी और उस नयी प्रणाली का लोगों को पूर्व ज्ञान मिल गया। उदाहरण के लिये यदि हम टाम जोन्स (Tom Jones) की मुख्य कहानी की घटना पर विचार करे तो हमें मालूम हो जायगा कि उसकी छोटी से छोटी बात भली-भाँति निर्दिष्ट है। उपन्यास का पहला तिहाई भाग टाम के बचपन और शिक्षा तथा दूसरे पात्रो के अतीत जीवन का विस्तार से चित्रण करता है। इस नीव के पड़ जाने के उपरान्त निश्चित क्रम के अनुसार पात्रों की कार्यशीलता आरम्भ हो जाती है जिसमे समय का हिसाब ठीक-ठीक रखा जाता है। इतनी सम्यक् व्यवस्था के होते हुए भी उपन्यास की कहानी बिना किसी रुकावट के पानी की तरह बहती चली जाती है। कथावस्तु कभी दुरूह नही होती और न पाठक के मस्तिष्क पर कोई बोझ ही डालती है।

फील्डिग की लेखन-प्रणाली तथा दृष्टिकोण

फील्डिग के पात्रों की जनसंख्या से एक नगर बसाया जा सकता है, किन्तु उनमे से प्रत्येक का स्वभाव तथा चरित्र ऐसी विधि से दिखाया गया है कि हम किसी पात्र से दूसरे का धोखा नही खा सकते। अपनी आवश्यकता के अनुसार शैली को वह सुगमता से बदल सकता है। सीधे-सादे वर्णन से लेकर सजीव नाटकीय शैली तक कोई ऐसा ढग नही है जिसका वह प्रयोग न करता हो और गहरे से गहरा प्रभाव न डाल सकता हो। उसके क्रियाशील पात्र हमारी आँखो के सामने होते है, पर स्वय

फील्डिग उनके वीच में दिखाई नहीं पड़ता, किन्तु हमें उसकी आवाज़ सुनाई देती है। जो जीवन-नाटक वह हमारे सामने खेलता है वह उसके भीतर भी होता है और वाहर भी। उसका कथन है कि कोई लेखक किसी की मुसीवत का अच्छा चित्र नहीं खीच सकता; जब तक चित्रण के समय वह लेखक उस मुसीवत को स्वयं न भुगते। अपने वारे में एक स्थान पर वह लिखता है—"मैं अपने पाठक को कभी दिल खोल कर हँसा नही सकता; यदि मैं खुद उस प्रसंग को लिखने में खूब हँसा नहीं हूँ।" निस्संदेह, फील्डिंग का यह कथन क्रोचे के अनुयायियों (Croceaus) और नियोक्लासिकल (Neo-classical) समालोचकों को जूड़ी चढ़ा देगा, किन्तु सरल स्वभाव के साधारण मनुष्यों को उस उपन्यासकार से अवश्य सहानुभूति होगी जो अपने पात्रों के सुख-दुःख से इतना सामंजस्य रखता हो। सरवैन्टीज ने यही किया था और उन्नीसवीं शताब्दी में सर वाल्टर स्काट यही करने को था। यही वह मुख्य कारण है जो हम इन सवके उपन्यासों में एक शाश्वत आत्मीयता पाते है।

कथावस्तु के सुलझाव (resolution) में भी फील्डिंग वहुत अच्छी चतुराई से काम लेता है। प्रत्येक अवसर पर वह हमारे विचार को विगत की ओर कुछ इस प्रकार घुमाता है कि हमें उन वातों की याद आ जाती है, जिनका परिणाम पहले से ही वही होना निश्चित था जो अन्त को हुआ या होनेवाला है। ऐसी ही वातों से मालूम होता है कि वह पहले से कहानी का एक दृढ़ खाका वनाकर उपन्यास लिखना प्रारम्भ करता था और इसी कारण कथावस्तु का प्रत्येक अंग तथा सारे पात्र कुछ भी क्यों न हो घूम-फिर कर नियत स्थान या घटना पर एकत्र होकर निश्चित अन्त के भागी हो जाते हैं। किन्तु हम कहीं भी उस चतुराई को पकड़ नहीं पाते और न वह तरकीव जान पाते है, जिसके द्वारा उपन्यासकार यह सव करता है। जव कथावस्तु की सारी गुत्थियाँ सुलझ जाती हैं तव हमें फील्डिंग की चातुरी का पता चलता है, किन्तु हम उसकी तरकीवों को फिर भी इसलिए बुरा नहीं कहते, कि वे उपन्यास की स्वाभाविक गति को किसी प्रकार विगाड़ती नहीं और हमें कभी ऐसा मालूम नहीं होता कि हमारे साथ कपट का व्यवहार हुआ है। इस गुण में फील्डिग की तुलना शेक्सपियर से की जा सकती है, क्योंकि दोनों लेखक अपनी कथा-वस्तु के प्रवन्ध में पूर्वनिश्चित घटनाओं को पात्रों की प्रकृति और स्वभाव का फल दिखाते है। फील्डिग में ऐसा कर सकने की योग्यता उसको मनुष्य का प्रेरक वल सम्वन्धी ज्ञान होने के कारण प्राप्त हुई थी, और इस गुण में वह वहुधा उपन्यास-कारों में सर्वश्रेष्ठ था।

फीलि्डग के उपन्यासों में कुछ तत्त्व ऐसे हैं जो आजकल के पाठकों की रुचि के विरुद्ध होते हैं। जिस समाज या जिन परिस्थितियों का वह चित्रण करता है, उसे वे केवल ऐतिहासिक मानते हैं किन्तु कोई महत्त्व नहीं देते। उसकी बोल-चाल का ढंग उन्हें प्राचीन और अप्रचलित लगता है। उसका हास्य अब बहुत कुछ नीरस-सा हो गया है। यह सब कुछ इसलिए है कि फीलि्डग आधुनिक काल का मनुष्य नहीं है। परन्तु उसके उपन्यास कला के सिद्धान्तों से भरे पड़े हैं, और इसके अलावा उनमें कई ऐसे गुण हैं जो इन सारी त्रुटियों को भुला देते हैं। जोज़ेफ़ एण्ड्रूज़ (Joseph Andrews) की सारी कमियों को पूरा करने के लिए एक पार्सन ऐडम्स (Parson Adams) काफ़ी है। जोनाथन वाइल्ड (Jonathan Wild) में लेखक ने व्यंग्य से कमाल कर दिये हैं। एमिलिआ (Amelia) में सूक्ष्म विश्लेषण और भावनाओं का सजीव चित्रण इतना सुन्दर है कि हमारा मन उसकी त्रुटियों की ओर तब ही जाता है जब हमें उपन्यास पढ़ना नहीं आता। जार्ज मेरिडिथ के कथन के अनुसार टाम जोन्स (Tom Jones) में विनोद की आत्मा व्यापक है और उपन्यास की गति को अपने वश में किये हुए है। फीलि्डग इस उपन्यास में समाज को महाकाव्य लिखने वाले कवि की दृष्टि से देखता और विनोदी (comic) कवि की भाँति उसपर खूब हँसता है। उसके हृदय में क्रोध नहीं है, बल्कि वह लोगों पर तरस भी खाता है। एक कवि की भाँति वह ऊँचाई से जीवन-क्षेत्र को देखता है। यह ऊँचाई उसे अपनी अपूर्व बुद्धि अथवा कल्पनाशक्ति से प्राप्त हुई है और उसके लिए आवश्यक भी है, क्योंकि कवि की भाँति उसे यह जानना है कि मनुष्य की निर्बल चेष्टा और अज्ञान पर स्वर्ग में देवता कैसे हँसते है। ऊँचाई पर पहुँचने के लिए जिस शक्ति तथा जिन परों की आवश्यकता है वे उसे प्राप्त हैं। बिना परों के उड़ना अपनी हड्डी-पसली तोड़ना है। फीलि्डग ने टाम जोन्स लिखकर सिद्ध कर दिया कि वह देवताओं के साथ बैठकर उन्हीं की भाँति हँस सकता है। उस ऊँचाई पर पहुँचकर, विनोदी कवि (comic poet) की भाँति, फीलि्डग ने देश और काल की परिधि में समकालीन अंग्रेज़ समाज को आगे-पीछे दूर तक देखा और चासर की तरह जो कुछ नज़र आया, लोगों की चीख-पुकार, बात-चीत, हँसी-मज़ाक, उनके चेहरों की बनावट और रहन-सहन के दृश्य, इन सबकी सामग्री को लेकर उसने एक सुन्दर कलानिकेतन का निर्माण किया, जिसे उसके बाद आनेवाली पीढ़ियाँ अब तक आदर एवं प्रेम से देखती आयी हैं।

की कठिनाइयों का साहस से सामना करना पड़ता है, जिनके सम्वन्ध में स्मालेट को मनुष्यों एवं उनके जीवन की परिस्थितियों के वर्णनों के सुन्दर अवसर प्राप्त होते हैं। यह उपन्यास समकालीन जीवन तथा शिष्टाचार के बड़े सुन्दर दृश्य देता है, अनेकों प्रकार की समस्याओं पर अर्थ-सूचक टीका करता है और सैकड़ों रोचक वातों का सविस्तर वर्णन करता है। इस कारण यह वड़ी दिलचस्प पुस्तक है। स्मालेट ने इस उपन्यास में जिस सहानुभूति तथा कोमलता से चीजों एवं मनुष्यों को देखा और दयाभाव से उन पर सोचा है, वे दूसरे उपन्यासों से इसको विल्कुल अलग करते हैं।

स्मालेट की न्यूनताएं तथा दोष—'ह्यूमर' (परिहास) की कमी, कर्कश स्वभाव

अठारहवी शताव्दी में जितने लेखकों ने उपन्यास के विकास में योग दिया है उन सवमें स्मालेट ही वह उपन्यासकार है जिसकी पुस्तकों की ओर सवसे कम ध्यान दिया गया है। लोग उसके वारे में दो तरह की वातें कहते आये हैं, एक यह कि वह वहुत कर्कश तथा कठोर है, और दूसरी यह कि उसमें विनोद-प्रियता नही है। इसमें संदेह नही कि स्मालेट के उपन्यासों के कथापुरुष क्रूर तथा कठोर हैं, विशेषकर प्रारम्भिक उपन्यासों के, और वे कभी सहानुभूति का भाव नहीं दिखाते, न किसी अच्छी वात पर उत्साहित होते है। उसकी नायिकाएँ गुड़ियों के समान नीरस होती है, जिनके हृदय में भी सहानुभूति नहीं होती। कुछ जंगली तथा भयंकर प्रकार की क्रीड़ा और हाथापाई ज़रूर होती है, और घटनाओं में कितनी ही निर्दयता से भरी हुई ऐसी हँसी की वातें है, जिनका परिणाम वहुत वुरा होता है। इन सव वातों को जानकर पाठकों को अनुमान होता है कि जो लेखक ऐसी दिलचस्पी रखता है वह जरूर निष्ठुर तथा असभ्य प्रकृति का मनुष्य रहा होगा। फिर जव वे देखते हैं कि ऐसी क्रूर तथा निर्दयता की वातें कथावस्तु से कोई सम्वन्ध नहीं रखतीं वल्कि व्यर्थ दिल दुखाने को लायी गयी है, तो कोई सन्देह नहीं रहता कि स्मालेट कठोर और निष्ठुर मनुष्य था।

रही स्मालेट की विनोदप्रियता (Humour) अथवा परिहास की कमी, तो 'हयूमर' (परिहास) एक ऐसा शब्द है जिसकी परिभाषा देना वहुत कठिन काम है। साहित्य में "हयूमर" या परिहास मनुष्यों तथा वस्तुओं को इस प्रकार देखने के ढंग को कहते हैं, जिससे उनका वह रूप या आकृति सामने आ जाय जो देखने

वालों मे ऐसा हास्य उत्पन्न करे, जिसमे आनन्द के अतिरिक्त कोई दूसरा भाव न हो। यह बुद्धि की एक ऐसी गति है जिसके लिए बडा तीव्र तथा कोमल परिज्ञान जो सहानुभूति से ओत-प्रोत हो आवश्यक है। जिस उपन्यासकार मे यह हास्य उत्पन्न करने की योग्यता नही होती, जिनमे सहानुभूति का अभाव अथवा न्यूनता होती है, वह कितनी भी सफलता क्यो न प्राप्त करे, उसकी रचनाएँ अन्धकारमय, ज्ञानरहित, सकुचित, नीरस और उदास करने वाली होगी।

समवेदना द्वारा दूसरों की अवस्था को जान लेने की योग्यता सब श्रेष्ठ उपन्यासकारों में पायी जाती है, पर यही योग्यता स्मालेट मे बहुत कम है। इस योग्यता का दूसरा नाम कल्पना है, जिसके द्वारा उपन्यासकार व्यक्तित्व को ध्यान में लाता, उसके अर्थ समझता, और मनुष्यो तथा ऐसी स्थितियो के प्रति न्याय करता है जो उसके अनुभव से बाहर है। स्मालेट की 'कल्पना शक्ति' चाक्षुष सामर्थ्य है जो घटनाओं के स्पष्ट चित्र जिन्हे वह शब्दो मे प्रकट करता है उसकी आँखों के सन्मुख लाती है। उसकी कल्पना उस श्रेणी की नही है जो समवेदना द्वारा चरित्र का ज्ञान करा सके और प्रत्यक्ष करने मे सहायक हो सके। यही कारण है कि स्मालेट के अच्छे से अच्छे पात्र वे स्त्रियाँ ओर पुरुष हे जो एक गुण तथा एक अनोखी बोल-चाल की भाषा से पहचाने जाते हैं, और जो भी व्यवहार उनके साथ किया जाता है, वे एक ही तरह पर प्रतिवाद और प्रतीकार करते है।

हम्फ्री क्लिकर (Humphrey Clinker) मे भी, जो उसका सब से अच्छा उपन्यास है, पात्रो का यही ढग है। मैथ्यू ब्रैम्ब्ल (Matthew Bramble), जो कर्कश वेल्श है, और जिसे "मानस गन्ध आया करती है"; उसी की "सदा कुमारी बहिन जिसका नाम टबीथा (Tabetha) है; विन जेन्किन्स (Win Jenkins) जो अंग्रेजी भाषा के शब्दो को अशुद्ध लिखकर अपना सारा हास्य समाप्त कर देता है; इसी प्रकार के पात्र है। दूसरे उपन्यासो मे भी ऐसे ही स्त्री और पुरुष हैं जिनमे से प्रत्येक व्यक्ति शरीर के किसी न किसी दोष के कारण पहचाना जाता है। स्मालेट की विशेषता यह थी कि उसने अंग्रेजी उपन्यास का क्षेत्र विस्तृत किया और समुद्र का नया विषय उसको दिया। इस प्रकार पात्रो तथा दृश्यों एव परिस्थितियो और घटनाओ का एक बडा ससार उसने उपन्यास लिखने वालों के सामने खोल दिया।

आधुनिक अंग्रेजी उपन्यास ने अठारहवी शताब्दी के उत्तरार्ध मे किन-किन सीढ़ियों पर चढ़कर और किन स्थितियो को पार करके उन्नति की, इसे जानने

के पहले यह आवश्यक है कि हम साहित्यिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण से उपन्यास के ऐतिहासिक महत्त्व को समझ लें। उपन्यास की लोकप्रियता को तथा उसके लोक-प्रचार को, सामयिक निवन्ध-पत्रिकाओं की प्रसिद्धि के समान, जो उन्हें कुछ समय पहले से प्राप्त हो चुकी थी, उस पँचमेल पाठक-समुदाय पर निर्भर समझना चाहिए जिसकी वृद्धि इस युग में शीघ्रता से हो रही थी। इस पाठक-समुदाय में स्त्रियों की संख्या अविक शीघ्रता से बढ़ रही थी और उनका प्रभाव भी अविक प्रवल होता जाता था। साहित्य के दूसरे अंगों की अपेक्षा उपन्यास विल्कुल इसी शताव्दी की उत्पत्ति और नया अंग कहा जाता था। उसकी उन्नति को इस वात का प्रमाण समझा जाता था कि अंग्रेजी साहित्य अव प्राचीन यूनान तथा रोम के साहित्यों के संकीर्ण वन्वनों से वाहर निकलता जा रहा है। लोग महाकाव्य और नाटक में प्राचीन साहित्य के प्रभाव तथा प्रभुत्व से वाहर होना असम्भव मानते थे, किन्तु उपन्यास में लेखकों पर कोई ऐसी रुकावटें नहीं थीं कि वे अपनी वात अपनी शैली तथा प्रणाली द्वारा न लिख सकें। जो कुछ प्राचीन साहित्यों से सिद्धान्तों के रूप में कहानी-साहित्य को मिला भी था, वह उसकी स्वतन्त्रता को सीमित न कर के उसके लिए सहायक हुआ। उपन्यास की स्वतन्त्रता की यह भावना इंग्लैण्ड में गणतन्त्र की उन्नति एवं पुष्टि के साथ-साथ आई और प्रवल हुई। दुःखान्त नाटकों के समान रोमांसों का वातावरण तथा उनके पात्र और उनकी दिलचस्पी का मंडल ठाटवाट वालों के जीवन एवं कृत्यों से सम्वन्ध रखता था। डैनियल डिफो तक ने रोमांस की परम्परा का परित्याग करते हुए भी अपने उपन्यासों में नित्यप्रति के सामाजिक जीवन को आने नहीं दिया। प्रत्येक अवसर पर उसने रोमांस के पात्रों तथा वातावरण को अस्वीकार करते हुए भी आर्केडिया के गड़रियों और रोमांस के राजकुमारों एवं सरदारों के स्थान पर अपराधियों अथवा साहसिक कार्य करनेवालों को अपने उपन्यासों में रखा।

उपन्यास का व्यापक क्षेत्र, पात्रों के चरित्र-चित्रण में स्वतन्त्रता का व्यवहार, छोटे और वड़े मनुष्यों के जीवन तथा कृत्यों का वर्णन, और विशेषकर मध्यम श्रेणी एवं वहुत नीची श्रेणी के लोगों के जीवन की दशा के दृश्य देना और उनसे सहानुभूति प्रकट करना, ये सारी वातें इसकी साक्षी है कि वह लोक-साहित्य हो गया था। आवुनिक उपन्यास का ऐसे समय में जन्म लेना——जव इंग्लैण्ड सर रावर्ट वालपोल (Sir Robert Walpole) के कड़े शासन में युद्ध की उत्तेजना के उपरान्त स्थिरता प्राप्त कर रहा था, जव व्यवसाय तथा वाणिज्य में उन्नति

हो रही थी, जब जागीरदारों की प्रतिष्ठा शीघ्रता से घट रही थी और मध्यम वर्ग के लोगों की सामाजिक एवं राजनीतिक शक्ति दिन पर दिन बढ़ती जा रही थी,—कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। इसके अलावा एक और विशेष बात यह भी थी कि प्रेरकों (Motives), चेतनाओं, आवेगों और अन्तरात्मा की जीवन-घटनाओं के व्यक्त करने की सुविधा तथा अवसर नाटक की अपेक्षा उपन्यास में अधिक होने के कारण प्रारम्भ से ही उसे अन्तरवलोकन एवं विश्लेषण करने वाले आधुनिक संसार ने अपना विशेष लाक्षणिक साहित्य बना लिया।

लारेन्स स्टर्न—ट्रिस्ट्रम शैण्डी तथा सेंटिमेंटल जर्नी और उनका प्रभाव

अब तक जितने उपन्यासों का उल्लेख किया गया है, उन्हें दो श्रेणियों में रखा जा सकता है; एक वे जो पहले के उपन्यासों की भाँति जीवनी की प्रणाली पर लिखे जाते थे और जिनकी कथावस्तु में ऐक्य केवल कथापुरुष के एक होने से अखण्ड बना रहता था, और दूसरे वे जो उस प्रणाली को छोड़कर आगे बढ़ गये थे। अब हम जिस महत्त्वपूर्ण पुस्तक के प्रभाव तथा उसके प्रतिभाशाली लेखक के साहित्यिक पद का निरीक्षण करने जा रहे हैं, वह बहुत ही रोचक है। इस पुस्तक में ढाँचे को उतना भी व्यवस्थित नहीं किया गया है जितना जीवनी की प्रणाली के उपन्यासों में होता था। इस प्रसिद्ध पुस्तक का नाम ट्रिस्ट्रम शैन्डी (Tristram Shandy), है जिसकी प्रथम दो जिल्दें १७६० में प्रकाशित हुई थीं। इस पुस्तक का लेखक लारेन्स स्टर्न (Laurence Sterne) एक पादरी था जिसने, जैसा कि वह कहता है, "उसे किसी विशेष आशय से, या यह समझकर कि वह समाप्त होने तक कैसा रूप धारण करेगी, नहीं लिखा था; मेरा उद्देश्य केवल लोगों को धक्का पहुँचाना और अपना मन बहलाना था।" यह व्यवस्थाहीन पुस्तक स्टर्न के अव्यवस्थित जीवन का परिणाम थी। उसका पिता अंग्रेजी सेना में एक छोटा अफ़सर था और एक छावनी से दूसरी छावनी में स्थान परिवर्तन करता रहता था। लारेन्स स्टर्न (१७१३–१७६८) का जन्म भी छावनी में हुआ था और अपने पिता के साथ वह भी घूमता फिरा था। केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त करके वह पादरी के पद पर यार्कशायर में रहने लगा था, जहाँ, वह लिखता है, "पुस्तकें पढ़ना, सारंगी बजाना, चित्रकारी करना तथा शिकार खेलना मेरे मनोविनोद थे।" ट्रिस्ट्रम शैन्डी ने उसे ख्याति दी और लन्दन में लोग उसकी आराधना तथा चापलूसी करने लगे। पेरिस में उसकी बड़ी आवभगत होने लगी और सारे यूरोप में उसका डंका पिट

गया। गिरजे में भी उसका पद ऊँचा कर दिया गया। सात वर्षो तक एक जिल्द प्रति वर्ष के हिसाव से पुस्तक प्रकाशित होती रही और स्टर्न जो कुछ जिस समय मन में आया उसमें लिखता रहा। शैन्डी समाप्त होने के पहले ही उसका स्वास्थ्य बिगड़ा और उसे सर्दी से वचने के लिए फ्रांस के दक्षिण प्रान्त में जाकर रहना पड़ा। इस यात्रा के कुछ अनुभवों को उसने शैन्डी की सातवीं जिल्द में १७६७ में प्रकाशित किया और शेप को दि सेन्टिमेन्टल जर्नी (The Sentimental Journey) नामक पुस्तक में लिखकर १७६८ में दो जिल्दों में प्रकाशित किया। उसी वर्ष उसका देहान्त भी हो गया।

लारेन्स स्टर्न अंग्रेज़ी साहित्य के इतिहास में एक अद्‌भुत व्यक्ति हुआ है, उसका मुख्य उपन्यास, ट्रिस्ट्रम शैन्डी, समकालीन जीवन के साथ-साथ उसकी सनक और उसका रसिक एवं परिहासजनक व्यक्तित्व भी प्रकट करता है। उपन्यास की साधारण परिभापा में शैन्डी को लाना कठिन है, क्योंकि पात्रों और घटनाओं के होते हुए भी उन्हें परस्पर सम्बन्धित करनेवाली कोई कथावस्तु की जैसी व्यवस्था उसमें नहीं है। पुस्तक विना आदि और अन्त या मध्य अथवा विना आगे वढाये और विना किसी प्रवन्ध के लिखी गयी है। उसकी चौथी जिल्द में उसका कथापुरुप इस वात पर विलाप करता है कि यद्यपि लिखना आरम्भ करने के वाद से उसकी उम्र एक वर्प और वढ़ गयी है, किन्तु वर्णन जीवन के प्रथम दिवस से आगे नही वढ़ा है। लेखक अविहित ढंग से एक पात्र के सम्बन्ध में लिखते-लिखते दूसरे पर लिखने लगता है, वीच में ही वार्तालाप आरम्भ कर देता है और उसे रोककर ऐसे पाण्डित्य से भरा हुआ निवन्ध लिखने लगता है जिसका कोई ओर-छोर नहीं; और निवन्ध के समाप्त होने से पहले कहानी कहने की तैयारी करता है, परन्तु कहता नही, वल्कि पात्रों के जीवन के दृश्यों का वर्णन आरम्भ कर देता है जिसे भी समाप्त नहीं करता। एक स्थान पर वह एक विधवा से पाठक का साक्षात् कराता है, जिससे ट्रिस्ट्रम का चाचा प्रेम करता है और उसके वाद पुस्तक के पन्ने को कोरा छोड़ देता है, जिसमें पाठक स्वयं जैसा दृश्य चाहे उस पर लिख ले।

शैली और भापा अनोखी युक्तियों से भरी पड़ी है, जिसमें सैकड़ों व्यंग्य तथा वक्रोक्तियाँ और गुत्थियाँ है, जिन्हें समझना कठिन हो जाता है। स्टर्न की शैली में वह क्रम नही पाया जाता जो रेस्टोरेशन काल में ड्राइडन (Dryden) ने चलाया और अठारहवीं शताब्दी में प्रचलित हो रहा था। सुन्दर और तीव्र वार्तालाप की भाँति उसकी शैली संकेतों तथा इशारों में वे वातें प्रकट कर देती है जो स्पष्ट

भाषा नहीं कह पाती। लेखक के जीवन की तरह ट्रिस्ट्रम शैन्डी भी उत्तेजित चपलता का प्रतिरूप है। स्टर्न अपने स्वभाव तथा चित्तवृत्ति के वश में जो कुछ और जैसे चाहता था लिखता था और चेतना एवं आत्मीयता को प्रकट करना वह लेखक का सारा करतब समझता था। आवेग को जीवन का तथ्य मानकर वह अपनी पुस्तक में उसे स्थान नहीं देता, बल्कि इस लिए कि आवेग से स्वयं उसको प्रेरणा और पाठकों को उत्तेजना मिलती थी। इसी प्रकार उसका उपहास भी संसार की रंगभूमि पर सुखान्त नाटक को देखने से उत्पन्न नहीं होता था, बल्कि उस असम्बद्धता के संकेत से जो स्वयं उसे साधारण और सीधी-सादी एवं दुःखपूर्ण परिस्थितियों में मिलता था। मेरी नाम की एक पागल, निर्धन स्त्री के निकट बैठा हुआ स्टर्न रो रहा है। मेरी बार-बार कभी अपने बकरे की ओर, कभी उसकी ओर देखती है। "क्या तुम दोनों चेहरों में कोई सादृश्य देखती हो?" वह मेरी से पूछता है। स्टर्न किसी दुःखपूर्ण दशा से प्रभावित होकर आँसू नहीं बहाता, बल्कि इसके विपरीत, वह ऐसे अवसरों की खोज में रहता है जो उसे रुला सकें। उसकी करुणा किसी बलवान् तथा समर्थ मनुष्य की सहानुभूति नहीं जो उसे रुलाये क्योंकि वह दुःखी है, बल्कि एक प्रकार की रसिकता है जो भावुकता उत्पन्न करके संतुष्ट हो जाती है। ऐसे स्वभाव के कारण लारेन्स स्टर्न अंग्रेज़ी साहित्य में "सेन्टिमेण्टलिस्ट" (Sentimentalist) कहलाता है, और उन लेखकों मे मुख्य समझा जाता है जो संसार का वास्तविक चित्रण करने को पुस्तकें नहीं लिखते, बल्कि इस लिए कि उन्हें पुस्तकें लिखने में भावुकता एवं विशेष प्रकार की चेतना प्राप्त हो सके। कुछ काल तक अंग्रेजी साहित्य में ऐसी बनावटी भावुकता तथा चेतना की रीति चली थी, उस समय लेखकों को ट्रिस्ट्रम शैन्डी में उनके मतलब के नमूने और आदर्श मिले थे और वह लोकप्रिय हो गयी थी।

लारेन्स स्टर्न के पात्र और उसका चरित्र-चित्रण का ढंग

किन्तु इससे कहीं अधिक प्रबल कारण एक और था जिसने स्टर्न के प्रभाव को अंग्रेजी उपन्यास में इतना व्यापक तथा स्थायी बनाया था। स्टर्न अपने पात्रों को सच्ची मानवता के गुण प्रदान करने की योग्यता रखता है, जो बहुत से उपन्यासकारों के लिए दुर्लभ है। उसके पात्र कितने भी झक्की अथवा केन्द्रभ्रष्ट क्यों न हों, वे कैसे भी विषम एवं विलक्षण जगत् में रहते हों, स्टर्न के अद्भुत चित्रण में कहीं न कहीं से उनकी मानवता झाँकने लगती है। वह उपन्यास लिखनेवालों

के ढंगों तथा उनकी साधारण प्रकार की सामग्री को अपने काम में नही लाता; वह मनुष्यों के मनोरथों, आवेगों, धार्मिक तथा राजनीतिक धारणाओं, सामाजिक संसर्गो, उनकी सफलता या न्यूनता का अपने उपन्यासों में प्रयोग नही करता। उसके पात्र अपनी अलग दुनिया में रहते हैं, अपनी अलग दिलचस्पियाँ रखते हैं। कम से कम तीन मनुष्य तो उसके पात्रों में से अमर हो गये है; एक "माई फ़ादर" (My father, the elder Shandy) अर्थात् ट्रिस्ट्रम का पिता, दूसरा "माई अंकल टोबी" (My Uncle Toby) अर्थात् ट्रिस्ट्रम का चाचा जिसका नाम टोबी है, और तीसरा "कार्पोरल ट्रिम" (Corporal Trim) जो सेना की नौकरी से पेन्शन लेकर उनका काम करता और साथ रहता है। ट्रिस्ट्रम का पिता विचित्र वातों की खोज में सदा लगा रहता है और जो किसी को मालूम न हो वह वताता रहता है। उसे ऐसी वातों पर विचार करने का बहुत शौक है जिनमें लोगों को दिलचस्पी नही होती। ट्रिस्ट्रम का चाचा "अंकल टोबी" अपने वगीचे मे कार्पोरल ट्रिम की सहायता से उन युद्धों तथा महासरों (Sieges) के नाटक करता रहता है, जिनमें कभी उन्होंने भाग लिया था या जिन्हे देखा था। इन कार्यो में व्यस्त होने पर भी स्टर्न इनकी मानवता दिखाता और जीवित करता है। ये तीनो पात्र अंग्रेजी उपन्यास में इस लिए चिरजीवी हो गये है कि स्टर्न ने अपनी पुस्तक में इनकी मानवत। को इनकी बात-चीत, इनकी शकल-सूरत, इनके भाव तथा सकेत, इनके विचार करने एवं काम करने के ढंगों से ऐसी चतुराई और समझ-बूझ के साथ चित्रित किया है कि एक वार इनसे मिलने के वाद हम इन्हें भूल नही सकते। पुस्तक के सबसे अच्छे भाग वे है जिनमें शैन्डी बड़ा पाण्डित्य दिखाकर किसी समस्या पर अपनी अन्तिम और दूसरों को चुप करा देने वाली वात कहता है और अंकल टोबी बड़े प्रेमभरे शब्दों में उसको काट देता है, और कार्पोरल ट्रिम उनके सामने हाथ बाँधे खड़ा हुआ अपने नीचे की जमीन देखता है। स्टर्न जो अपने अस्तित्व को जानता और दूसरों को भी जताता रहता है, एक स्थान पर लिखता है "आपने देखा कि "माई अंकल टोबी" का चरित्र-चित्रण वरावर धीरे-धीरे होता रहा—चित्र की वे लकीरे नही जो उसके सारे चरित्र को सीमित करती है, क्योंकि ऐसा करना असम्भव है—मै छोटी तथा हलकी लकीरों से उसके जाने हुए साधारण उतार-चढ़ाव को दिखाता रहा और कभी यह भाग, कभी दूसरा भाग, इसी प्रकार थोड़ा थोड़ा करके आपके ध्यान में लाता रहा, जिसके फलस्वरूप आप अब अंकल टोबी को पहले की अपेक्षा बहुत

अच्छी तरह जान गये है।" इस ढंग से स्टर्न अपने पात्रों को यथार्थता देता है और उनके व्यक्तित्व में वह आकर्षण उत्पन्न करता है जो हमारी मानवप्रकृति को उनकी ओर खीचता है और हम उनसे ऐसे मिलते है जैसे भाई भाई से। स्टर्न के पात्र, सरवैन्टीज तथा शेक्सपियर के पात्रों के समान, क्विग्ज़ोट एवं फाल्सटाफ की भाँति, कला के अति सुन्दर स्वरों में अपनी श्रेष्ठता की घोषणा करते है। और कहते है कि हम साहित्य संसार की "सृष्टि" है।

लारेन्स स्टर्न का चरित्र और स्वभाव, उसकी साहित्य-सेवा

स्टर्न के चरित्र के सम्वन्ध मे कुछ लिखना सम्भव नही, क्योंकि वह वहुधा चरित्रहीन कहा जाता है। यह कहना सम्भव है कि वह न तो क्रूर था न नीच, यद्यपि वह अपने को वहुधा व्यसनी पुरुष के रूप में प्रगट करता था, पर इतना वुरा न था जितना कि वलहीन। यद्यपि वह पादरी के पद पर नियुक्त था किन्तु वह ईसाई नही था और जिस प्रकार वह जीवन व्यतीत करता था उससे दूसरे पादरियों को लज्जा आती थी। फिर भी यह सव कुछ कहने के वाद, स्टर्न अंग्रेज़ी साहित्य से निकाला नहीं जा सकता, जव तक उसके पढ़नेवाले विल्कुल पाखण्डी न हो जायँ। उसे तीक्ष्ण और सूक्ष्म वुद्धि मिली थी और जीवित तथा तीव्र कल्पना भी, जो वड़े सुन्दर चित्रों में उसके विचारों को साकार करती थी। और गम्भीर एवं वहुदर्शी विनोदी स्वभाव मिला था, जो उपहास में भी विवेक को नहीं छोड़ता था। उसने दो उत्तम रचनाएँ की और किसी में भी कोई चिड़चिड़ा शव्द नही लिखा। इन रचनाओं में उसने पात्रों के निर्माण में एक भी दयाशून्य विचार अपने मन मे नही आने दिया। कहा जाता है कि उसने "सेन्टीमेन्टल" शव्द वनाया था और साहित्य में "रसिकता" भर दी थी, किन्तु अठारहवी शताव्दी के वातावरण में स्टर्न की रीति चल न सकी, क्योंकि उस समय की कला को ज्ञानप्रवान साहित्य और वनावटी जीवन से संघर्ष करना पड़ा। यद्यपि उसका वनाया हुआ शव्द अंग्रेजी में अव भी जीवित है, किन्तु जो भाव तथा कोमल चेतना उसके अर्थ से वह समझता था, उस संघर्ष को झेल न सकी और कुछ ही काल मे घृणित समझी जाने लगी। स्टर्न विषयासक्त, एपिक्यूरस (Epicurus) का अनुयायी था। वह जितेन्द्रिय नही था और न वैरागी ही, फिर भी अपनी रचनाओं में प्रवृ-त्तियों तथा भावों के चित्रण में उसने मनुष्यजाति के स्थायी गुणों को वल दिया। यही कारण है कि साहित्य-प्रेमी आज भी उसकी रचनाओं को आदर से पढ़ते

है। उसकी ठेठ और सरल भाषा ने, जो सुशिक्षित जनों की वार्ता की भाँति विचार प्रकट करती है, अंग्रेज़ी को वे गुण प्रदान किये हैं जिनके विना उपन्यास अपने पाठक से गहरी और गम्भीर बातें नित्यप्रति की हल्की-फुल्की भाषा में नहीं कह सकता। स्टर्न अपने पाठक से आत्मीयता के ढंग पर दया, सहानुभूति तथा विवेक-सूचक शब्दों में इस प्रकार वार्तालाप करता है मानों बोल-बोल कर सोच रहा हो और पाठक अलग बैठा उसके विचारों की आवाज़ सुन रहा हो। स्टर्न अपने पाठकों को हँसने के तो हजारों अवसर देता है परन्तु ऐसा अवसर कभी नहीं देता जब उन्हें अपनी मानुषिक निर्बलता पर लज्जित होना पड़े।

मैकेन्ज़ी का दि मैन आफ़ फीलिंग; अनुकरण की प्रथा से उपन्यास का पतन

लारेन्स स्टर्न की चेतना द्वारा तत्क्षण प्रभावित करने की रीति का बहुत-से उपन्यासकारों ने अनुकरण किया और इस चेष्टा में उन्होंने उस रीति के विशेष दोषों को खोलकर रख दिया। इस प्रकार के अनुकरणों का सबसे अच्छा उदाहरण हेनरी मैकेन्ज़ी (Henry Mackenzie) के दि मैन आफ़ फीलिंग (The Man of Feeling) नामक उपन्यास में हमें मिलता है, जो १७७१ में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास का विषय "मनुष्य के हृदय की सूक्ष्म चेतनाओं तथा कोमल आत्मीय अनुभवों का दृष्टान्तों द्वारा स्पष्ट करना" है। किन्तु स्टर्न में जो उपहास की योग्यता थी, 'या जो मानवता के दूसरे गुण थे, जिन्होंने ट्रिस्ट्रम शैण्डी को मानवता का प्रमाण-पत्र बना दिया था, वह योग्यता एवं वे गुण मैकेन्ज़ी में नहीं थे और न किसी दूसरे अनुकरण करनेवाले में थे। इस अभाव के कारण मैकेन्ज़ी के दृष्टान्त केवल निर्बल भावुकता होकर रह गये, जिसका जीवन में कोई महत्त्व नहीं होता। चित्त-क्षोभ यदि कार्यान्वित न हो सका तो कोरी भावुकता बनकर कलात्मक साहित्य का प्रेरक नहीं होता। फिर मैकेन्ज़ी का दूसरा दोष यह भी था कि उसने स्टर्न की व्यवस्थाहीन कथावस्तु का भी अनुकरण ठीक समझा था, जिसने उसके उपन्यास को विभिन्न दृश्यों की एक माला बना दिया और इस तरह उसके उद्देश्य को नष्ट कर दिया। इस उपन्यास को लिखने के पहले मैकेन्ज़ी निबन्ध, नाटक तथा समालोचना के क्षेत्रों में प्रसिद्ध हो चुका था और लोग उसे "स्काटलैण्ड का एडिसन" कहते तथा एडिनबरा में साहित्य का संरक्षक समझते थे। उपन्यास में उसकी असफलता को महत्त्व इस लिए नहीं दिया गया कि दूसरे प्रसिद्ध लेखक भी उसी

की भाँति अनुकरण में असफल हो रहे थे। 'पैमिला' और 'ट्रिस्ट्रम शैण्डी' के बीच के समय में जिस किसी लेखक ने रिचर्डसन, फील्डिंग, स्मालेट या स्टर्न का अनुकरण करने की चेष्टा की वही असफल रहा था, और उस समय का कदाचित् कोई भी अच्छा लेखक ऐसे अनुकरण से बचा भी न होगा। लेखकों की इतनी बड़ी संख्या इन चार श्रेष्ठ उपन्यासकारों के अनुकरण में चरित्र-चित्रण, ऐतिहासिक घटनाओं के वर्णन तथा साहसिक अन्वेषणों के वृत्तान्त लिखती थी, और अनुकरण करने में ऐसी विनोदहीन सामग्री को लेकर उसमें से लालित्य निचोड़ने की चेष्टा करती थी कि अठारहवी शताब्दी के तीसरे चरण में उपन्यास को बहुत लोग "साहित्यिक रचनाओं में सबसे गयी-गुजरी तथा सस्ती रचना" समझने लगे थे। बहुत से घरों में "उपन्यास" का नाम लेना भी पाप समझा जाता था। उपन्यास पढ़ने की रुचि की पत्र-पत्रिकाओ मे और नाटको के रगमचों पर हँसी उड़ायी जाती थी। समालोचक इन उपन्यासों के सम्बन्ध में जहाँ और बहुत से दोष दिखाते वहाँ यह भी लिखा करते थे कि निरी भावुकता और उत्तेजक वाग्वितण्डा किस प्रकार पाठकों की बुद्धि पर अधिकार जमाकर उन्हें ऐसा निकम्मा कर देता है कि वे विचार-शक्ति के साथ-साथ काम करने की शक्ति भी खो बैठते है। साहित्य के दृष्टिकोण से भी ये उपन्यास कोई प्रशंसनीय गुण नही रखते थे; न तो वे मूल लेखकों की प्रणाली को ही मानकर कथावस्तु की व्यवस्था करते थे, न चरित्र-चित्रण में ही कोई बात पैदा करते थे। इन उपन्यासो मे श्रेष्ठ कहे जाने वाले वे ही थे जिनमें वे विषय लिये गये थे जो किसी ने न लिये थे और बहुत ही विलक्षण थे। अधिकांश उपन्यासों पर लेखक का नाम नही होता था और वे बहुधा पिकैरेस्क प्रणाली पर स्मालेट के ढंगों का अनुकरण करते थे।

उपन्यास से नाटक और रोमान्स का क्षय

यद्यपि उपन्यास के विकास में इन अनुकरणों का कोई महत्त्व नहीं, तो भी अंग्रेजी साहित्य के इतिहास में इनकी लोकप्रियता ने जो काम किया था उसका प्रभाव उपन्यास के भविष्य पर बहुत गहरा पड़ा। इन उपन्यासो की संख्या पाठकों की बढ़ती हुई माँग को पूरा कर रही थी और सामान्य जनता को उसकी रुचि की सामग्री दे रही थी। जिस समय ये उपन्यास सस्ते मूल्य पर लोगों को मिलने लगे, तो नाटक को ज़ोर का धक्का लगा और नाट्यशालाएँ खाली रहने लगीं। अठारहवीं शताब्दी के मध्यकाल में ही नाटक लिखनेवाले इस बुरे दिन के आने

को रोकने की कठिन चेष्टा करने लगे थे। उन्होंने राजाओं तथा रानियों के आवेग छोड़कर सामान्य मनुष्यों तथा मध्य वर्ग के साधारण जीवन की दशा एवं उसकी समस्याओं पर नाटक लिखने आरम्भ कर दिये थे, और समय के परिवर्तन के साथ-साथ अपने दुःखान्त नाटकों से त्रास एवं अपने सुखान्त नाटकों से बुद्धि-विलास तथा हास्य निकाल डाले थे। साम्यवादी विचारों के फैलने के उपरान्त उन्होंने नाटकों में नित्यप्रति के जीवन की छोटी-छोटी आपत्तियों अथवा पीड़ाओं पर ध्यान देने और उनके प्रभाव से सामान्य लोगों के "भाग्य" के बनने और बिगड़ने का भी चित्रण करना प्रारम्भ कर दिया था। तत्कालीन माँग को पूरा करने की चेष्टा में नाटककारों ने अपनी गति को बहुत मद्धिम कर दिया था और अब वे उपन्यास-कारों की भाँति व्याख्या तथा सूक्ष्म-परीक्षा भी करने लगे थे, तर्क करने तथा निश्चय कराने लगे थे; और यह सब करने में उन्होंने नाटक को वार्तालाप के रूप का विवरण अथवा उपदेशपूर्ण निबन्ध बना दिया था, जो रसिकता उत्पन्न करने की रीतियों पर उतर आता था। इस परिवर्तन का फल यह हुआ था कि लोग अब नाट्यशाला में अभिनय देखने की जगह नाटक पढ़ते थे और उसकी उपन्यास से तुलना करते थे, जिसके कारण दिन पर दिन नाटक अपनी विशेषताएँ खोकर नष्ट-भ्रष्ट होता गया। साथ ही साथ, उपन्यास पढ़ने की उसी रुचि ने, जिसकी नाटकों और नाट्य-शालाओं में हँसी उड़ायी जाती थी, लोगों का ध्यान नित्यप्रति की घटनाओं तथा परिस्थितियों पर ऐसा जमा दिया कि उन्हें रोमांस की ओर से बिल्कुल ही अरुचि हो गयी और इस प्रकार फिर से सिसकते हुए रोमांस को भारी धक्का लगा साहित्य के इन दोनों प्रतिष्ठित अंगों की पराजय का उपन्यास ने पूरा लाभ उठाया और दोनों की शक्ति का अपने भीतर संयोग करके योग्य लेखकों के हाथों में वह खूब फूला-फला।

आलिवर गोल्डस्मिथ—दि विकार आफ़ वेकफील्ड

लारेन्स स्टर्न ने मनुष्यजीवन का जैसा प्रदर्शन किया, उससे कहीं अधिक स्वास्थ तथा आनन्दकारक आलोकन उसी समय की एक ऐसी पुस्तक में मिलता है, जो ट्रिस्ट्रम शैन्डी से किसी प्रकार कम प्रसिद्ध नहीं हुई और जो उसके छै वर्ष के उपरान्त प्रकाशित हुई। उस पुस्तक का नाम दि विकार आफ़ वेकफ़ील्ड (The Vicar of Wakefield) है (१७६६) और जिसका लेखक आलिवर गोल्ड-स्मिथ (Oliver Goldsmith) था। गोल्डस्मिथ का जन्म सन् १७२८ में आयर-

लैण्ड में हुआ था और वहीं डब्लिन में उसकी शिक्षा प्रारम्भ हुई थी। डब्लिन विश्वविद्यालय से निकलकर चिकित्सा-शास्त्र के अध्ययन के लिए वह एडिनबरा गया, किन्तु १७५४ में वह अपने अशान्त स्वभाव की प्रेरणा के कारण लिडेन जा पहुँचा और वहाँ से एक ही वर्ष के भीतर यूरोप में भ्रमण के लिए निकल गया। दो वर्ष यों ही घूमने के बाद १७५६ की फरवरी में वह लन्दन पहुँचा और कुछ दिन लड़कों को पढ़ाने की नौकरी करके धीरे-धीरे साहित्यिक मण्डलियों तथा प्रकाशकों के सम्पर्क में आया और दूसरे रोटी कमानेवाले लेखकों की भाँति पत्रिकाओं में लिख-कर किसी प्रकार जीवन-निर्वाह करने लगा।

गोल्डस्मिथ की दो मुख्य विशेषताएँ थीं; एक भोलापन अथवा सरलता और दूसरी सूक्ष्म चेतना, जिन्हे जीवन की नर्मी-गर्मी से भी सामाजिक चतुराई तथा कठोरता से वह बदलने में असमर्थ रहा और कष्ट उठाता रहा। इसी भोलेपन की ओर संकेत करके वालपोल ने गोल्डस्मिथ को स्फूर्तिमान् मूर्ख कहकर उसका उपहास किया था, और इसी सूक्ष्म चेतना के कारण वह डाक्टर जान्सन की उप-स्थिति में बहुधा चुप ही बैठा रह जाता था तथा अपने फड़कते हुए वाक्य को मन में ही रहने देता था, जिस पर वास्वेल जानबूझकर ईर्ष्या से व्यंग्य करता और प्रसन्न होता था। सारे दोषों के होते हुए भी, हृदय की मधुरता, भावों की कोमलता और उन गुणों के लिए जिनसे सुन्दर चरित्र का निर्माण होता है, गोल्डस्मिथ अंग्रेजी साहित्य के श्रेष्ठ लेखकों में सबसे अधिक प्रेम करने योग्य व्यक्ति हुआ है और आज तक ऐसा ही समझा जाता है। जिन गुणों के कारण उसका जीवन इतना दुःखपूर्ण रहा था, उन्हीं गुणों ने उसे ख्याति दी और वे ही उसका आकर्षण है। समकालीन उपन्यासकारों से कहीं अधिक मात्रा में, रिचर्डसन और स्मालेट से भी ज्यादा, गोल्डस्मिथ ने अपने अनुभवों से उन सारी रचनाओं में काम लिया, जो आज तक जीवित हैं और जिनकी रोचकता स्थायी है। उसने १७६० से १७६१ तक दि पब्लिक लेजर (The Public Ledger) नामक पत्रिका में वे निबन्ध लिखकर अपना साहित्यिक जीवन प्रारम्भ किया, जो 'दि सिटिज़ेन आफ़ दि वर्ल्ड (The Citizen of the World)" के नाम से प्रसिद्ध है, और जिन में एक चीनी के दृष्टिकोण से इंग्लैण्ड की दशा पर विचार किया गया है। गोल्ड-स्मिथ ने इसी समय में एक उपन्यास भी लिखा था, जिसे १७६४ में डाक्टर जान्सन ने एक प्रकाशक के हाथ साठ पौण्ड में बेचकर उसे मुसीबत से छुड़ाया था। इस उपन्यास का नाम दि विकार आफ़ वेकफ़ील्ड है जो १७६६ में प्रकाशित किया

गया था। उस समय के लोकप्रिय उपन्यासों से वह ऐसा अलग था कि पाण्डुलिपि मोल लेने के बाद प्रकाशक को छापने या न छापने का निर्णय करने में सोलह महीने लग गये। इस बीच में लेखक की पहली पद्य-रचना, दि ट्रैवलर (The Traveller), प्रकाशित होकर सर्वप्रिय हो चुकी थी। उसकी दूसरी पद्य-रचना, दि डेजर्टेड विलेज (The Deserted Village) १७७० में प्रकाशित हुई, जिसके पहले उसने नाटक लिखना प्रारम्भ कर दिया था और १७६८ में दि गुड-नेचर्ड मैन (The Good Natured Man) भी प्रकाशित कर चुका था। अपनी मृत्यु से एक वर्ष पूर्व, सन् १७७३ में उसने शी स्टूप्स टु कांकर (She Stoops to Conquer) भी लिख लिया था।

उदारचित्त तथा मुक्तहस्त होने के कारण और कुछ इस लिए भी कि उसे ससार में अटल विश्वास था, गोल्डस्मिथ का सारा जीवन सामाजिक अथवा आर्थिक कठिनाइयों मे व्यतीत हुआ। वह बच्चे के समान सरलस्वभाव और असावधान होने के कारण कभी भविष्य की चिन्ता नहीं करता था। जिस प्रकार निर्धन विद्यार्थी-जीवन में बाँसुरी बजाता हुआ वह यूरोप के देशों में भ्रमण करता था, उसी तरह बिना आगा-पीछा सोचे हुए अपना साहित्यिक जीवन भी व्यतीत करता था। इस विश्वास के पीछे मनुष्य-प्रेम था जो उसकी रचनाओं में भरा है और जिसने उसके दि सिटिज़ेन आफ दि वर्ल्ड को एडिसन के निबन्धों की अपेक्षा कहीं अधिक मात्रा में मानवतापूर्ण बना दिया है।

उसके उपन्यास दि विकार आफ़ वेकफील्ड में अंग्रेजों के घरेलू जीवन के साधारण सद्भावों का चित्रण किया गया है, जिसे चोट खाये हुए तथा मनुष्य-प्रेम से भरे हुए हृदय के बिना अनुभव कर सकना असम्भव है। यह एक ऐसी कहानी है "जिस पर स्वर्ग से अमृत की नन्ही बूँदें गिरी है जो ओस की भाँति आज तक चमक रही है।" विकार और उसके परिवार पर इन दिनों निर्धनता की मार पड़ी। उसकी पुत्री ओलीविया को एक कुपात्र प्रेमी बनकर बहकाकर ले गया, इस दुर्घटना ने उसकी मुसीबत को और भी दुःखद बना दिया। इसी दशा मे उसके घर में आग लग गयी और वह नष्ट हो गयी। इन मुसीबतों का आघात और भी असह्य हो जाता है जब पिता ऋण के कारण कारागार में बन्द कर दिया जाता है। इतना सब होने पर भी विकार का जीवन में दृढ़ विश्वास बना रहता है और वह इस संसार को सबसे सुन्दर समझता रहता है। अपने परिवार का प्रेम उसके हृदय को सहारा देता है और अन्त में उसी की विजय होती है। यह जरूर

है कि उपन्यास मे विकार ही एक पात्र कहा जा सकता है, विकार की पत्नी, उसके बच्चे, स्क्वायर थार्नहिल और उसका चाचा, सर विलियम थार्नहिल, जेन्किन्सन इत्यादि सबके सब छाया मात्र है, जिनको विकार का व्यक्तित्व कही-कही ज़रा चमक देता रहता है और जीवित रखता है। सारा उद्देश्य और पुस्तक की व्यापक आत्मा विकार ही है, जो हमे दु ख सहने और सिर ऊँचा रखने की रीति बताता है। गोल्डस्मिथ उस अर्थ मे वास्तविकता का कायल नही है जिसमे तत्कालीन लेखक वास्तविक बाते लिखते थे। लारेन्स स्टर्न के समान गोल्डस्मिथ को भी दृढ निश्चय के सिद्धान्त मे विश्वास नही है, और न वह जीवन या ससार को आँख से देखकर जैमा का तैसा नकल करके चित्रण करना चाहता है। उसका ससार एक आदर्श ससार है; दु ख तथा विपत्तिया वे डरावने काले बादल है जो घिर-कर जीवन को अन्धकारमय कर देने और मनुष्य के ऊपर मूसलाधार बरसने पर तुले होते है, अन्त मे स्थिर होकर वह उपजाऊ तथा ताजा करनेवाला मेह बरसाते है जिससे पृथ्वी हरी-भरी हो जाती है। गोल्डस्मिथ के विचार से पीडा या दु ख कोई कठिन विवाद-विषय नही, बल्कि एक कलायुक्त साधन अथवा प्रयोग है जिससे यह ससार अधिक सुन्दर मालूम होता है। गोल्डस्मिथ का आशावाद ऐसा प्रभाव डालनेवाला है कि उसके उपन्यास के पाठक ओलीविया के उस मनुष्य के साथ विवाह को भी स्वीकार कर लेते है, जो उसे प्यार नहीं करता और व्यसनी भी है, क्योकि जितनी मुसीबते सामने आती है उनका परिणाम अच्छा ही निकलता है, ओर हम समझते हे कि दुष्टता की प्रकृति बदल गयी है। विकार आफ वेकफील्ड के अट्ठाईसवे अध्याय के प्रारम्भ मे गोल्डस्मिथ लिखता है—"इस जीवन मे सुख और दु ख दूरदर्शिता के परिणाम होते हे न कि सदाचार के; ऐहिक सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य को ईश्वर बहुत तुच्छ समझकर उनके हिस्से-बॉट पर ध्यान नही देता।" यह ऊँचा विचार सिद्ध करता है कि गोल्डस्मिथ एक ऐसा नीतिज्ञ था, जिसने कहानी-साहित्य (fiction) तथा परिहास आर दु खद घटनाओ द्वारा अपना उपदेशपूर्ण अनुभव ससार के सामने प्रस्तुत किया और कथावस्तु एव घटनाक्रम अथवा उपन्यास-कला की प्रणाली पर ध्यान नहीं दिया।

प्राकृतिक दृश्य और गोल्डस्मिथ की सूक्ष्म चेतना तथा शैली

गोल्डस्मिथ ने आर्केडिया (Arcadia) जैसे ग्रामीण रोमासो की एक विशेषता का अपने उपन्यास मे ऐसा उपयोग किया कि वह उपन्यास के विकास मे उसका

अंशदान कहा जाता है। उसके पहले के उपन्यासकारों ने घर के वाहर के दृश्य पर ध्यान नही दिया था। रिचर्डसन ने वड़ी सावधानी तथा प्रवीणता से अपने उपन्यासों मे कमरे सजाये और नियत किये थे; फील्डिग (Fielding) ने कुछ वँधे-टँके से वर्णन जरूर दिये थे, किन्तु उसके उपन्यासों मे प्रकृति के दृश्यों को अठारहवी शताब्दी की रीति से सँवार-सुधारकर और व्यवस्थित करके रखा गया है, जिससे प्राकृतिक दृश्य वनावटी अथवा शिल्पनिर्मित हो गये है। गोल्डस्मिथ ने प्राकृतिक दृश्यो को अनुभव करके और चेतना सहित अपनी रचनाओं में रखा है, विशेप कर उपन्यास के प्रारम्भिक ग्रामीण जीवन के वर्णनों मे, जहाँ ये दृश्य शान्ति एवं आनन्द को और भी वढा देते है। उपन्यास मे आदि से अन्त तक जहाँ भी प्राकृतिक दृश्यो का वर्णन किया गया है, प्रकृति एक चिह्न अथवा प्रतिरूप है जो ससार की श्रेप्ठता की सूचक है, और यह एक और भी कारण है कि जीवन की सुन्दरता में विश्वास किया जाय। उसकी रचनाओं में सैकड़ों स्थानो पर ऐसे प्राकृतिक दृश्यों की झलक मिलती है जिनसे उसके प्रेम का पता चलता है और जिनके पीछे एक सच्चे कलाकार का हाथ दिखाई पड़ता है। वह सुन्दर शैली तथा चेतन भापा मे इसलिए लिख सकता है कि उसके हृदय में उन प्राकृतिक दृश्यों का गहरा प्रभाव है जिसे वह हमारे हृदय तक पहुँचाना चाहता है। ऐनिमेटेड नेचर (Animated Nature) नामक रचना मे प्रकृति की चेतनता के वड़े सुन्दर वर्णन है जिन्हे सीधे कविता मे परिवर्तित किया जा सकता है, क्योंकि उनमें वुद्धि-चमत्कार और भावना की प्रधानता ने वह जादूगरी का सा रहस्य भर दिया है जो हमारे विचारों को असीम विस्तार देता है।

गोल्डस्मिथ के दो विशेप गुणों ने उसे ऐसा योग्य लेखक वना दिया था कि उसने जो कुछ भी लिखा उसी ने उसे चमका दिया। डाक्टर जान्सन ने वड़ी ठीक और सुन्दर वात कही थी कि यदि गोल्डस्मिथ किसी हलकी तथा खिलवाड़ की वात को भी लिखता तो उसे भी सुन्दर और अर्थपूर्ण वना देता। यद्यपि वार्तालाप में वह फूहड़ और बेढगा सा लगता था और तुरन्त किसी वात का उत्तर देना उसके वश की वात विल्कुल थी ही नही, किन्तु उँगलियों में लेखनी लेते ही न जाने कहाँ से उसे भापा पर पूर्ण अधिकार मिल जाता था और शैली ऐसी स्पष्ट तथा मन को लुभानेवाली मिल जाती थी कि वह विना प्रयास कोमल से कोमल भाव और विचारो के सूक्ष्म से सूक्ष्म अन्तर व्यक्त करने लगता था। बहते हुए जल के समान स्वच्छ और सुरीला गद्य उमड़ता चला आता था, जिसमें स्वाभाविक

सरलता एवं लालित्य घुले होते थे। इन्ही सब गुणों के कारण कहा जाता है कि जिस किसी को प्रभावपूर्ण और सुन्दर अंग्रेज़ी भाषा सीखनी हो वह गोल्डस्मिथ के दि विकार आफ़ वेकफील्ड एवं दि सिटिज़ेन आफ दि वर्ल्ड के स्कूल में सीखे।

गोल्डस्मिथ का उपन्यास प्रकाशित होने के पहले ही उपन्यासों का विषय निश्चित हो चुका था। भावुक युवती, धूर्त पुरुष और युवती को फुसलाकर भगा ले जाना, जैसा रिचर्डसन ने अपने उपन्यास में दिखाया था, अनोखा साहसी पुरुष, दयालु एवं शिष्ट मनुष्य जो किसी कपट प्रबन्ध में फँसे हों, जिनका चित्रण फ़ील्डिग ने अपने उपन्यास में किया था, और वे हाथापाई करनेवाले नाविक जो स्त्रियों के सम्बन्ध में भोंडे मज़ाक़ करते थे, जिनके नमूने स्मालेट ने दिये थे—इन्हीं विषयों के हेर-फेर से उन उपन्यासों की सामग्री तैयार होती थी जो इन लेखकों के अनुकरण में लिखे जाते थे और जिनकी सख्या दिन दूनी बढ़ रही थी। कथावस्तु की व्यवस्था भी इसी प्रकार निश्चित सी हो गयी थी। पाठकों के धैर्य और उनकी आर्थिक दशा ने उपन्यासों की मुटाई को भी नियत-सा कर दिया था।

गोल्डस्मिथ ने अपने दार्शनिक विचारों के अनुसार तथा अपने मानव प्रकृति के ज्ञान को काम में लाकर नित्यप्रति के वास्तविक जीवन का कलात्मक पुर्ननिर्माण करके उपन्यास लिखा। वह कवि पहले और उपन्यासकार वाद को था, इसलिए उसने मनुष्यों एवं परिस्थितियों तथा घटनाओं को चित्रों के रूप में देखा और उन्हें व्यवस्थित किया। उसने बहुधा ऐसे सीधे-सादे ग्रामीण मनुष्यों को उपन्यास का पात्र बनाया जो गाँव में ही अपना कर्तव्य और सुख तथा आनन्द प्राप्त करते हैं। उसे ऐसे लोगों की स्वाभाविक भलमनसी में पूर्ण विश्वास था। वह उनके सरल आत्म-गौरव को सराहता और उसी के साथ उन छोटे-छोटे अवगुणों को भी देखता जिनकी वह प्रेम-भाव से इसलिए हँसी उड़ाता था कि उनकी मानवता दिखा सके।

जिस प्रकार की वास्तविकता इस समय के उपन्यासों में पायी जाती थी वह गोल्डस्मिथ के लिए असम्भव थी। उसने आजन्म और बराबर संसार को कल्पना के प्रकाश मे लाकर देखा था, जिसके कारण सारी विषमता एवं कठोरता दूर होकर जीवन एक सुखान्त नाटक बन गया था और कटु अनुभव एक नये सन्दर्भ में कुछ के कुछ होकर सहनीय जान पड़ते थे। कल्पना के उस प्रकाश में गोल्डस्मिथ ने देखा कि धूर्त मनुष्य के भीतर आत्मा कलुषित नहीं होती और इसलिए वह क्षमा के योग्य होता है; युवती को भगा ले जाना एक प्रकार का उन्माद है जो ग्रीष्म ऋतु में उत्पन्न होता है और ऋतु के साथ समाप्त हो जाता है और घाव का कोई चिह्न

नहीं छोड़ जाता। वह हमें बताता है कि उसके उपन्यास का विकार कर्तव्य जानता और अच्छी तरह समझता है, और व्याकुल कर देनेवाले अनुभवों के होते हुए भी उसमें इतना साहस है कि अपने सिद्धान्तों पर जीवन को चला सके। दि विकार आफ़ वेकफील्ड के पढ़नेवाले को जीवन का ऐसा प्रदर्शन और संसार का यह चित्रण अतिरंजित नही जान पड़ता; और यद्यपि गोल्डस्मिथ वास्तव का इस प्रकार आदर्श रूप में चित्रण करता है, उसके उपन्यास के पात्र जितना सच्चा चित्र ग्रामनिवासियों का देते है वैसा अग्रेजी उपन्यास में इससे पहले किसी लेखक ने नहीं दिया था।

"फिक्शन" अथवा "कथा-साहित्य" और उसका मूल-सिद्धान्त

इस प्रकार के कल्पित पात्रों तथा घटनाओं के क्रमानुकूल व्यवस्थित वर्णन को कथा-साहित्य (fiction) कहा जाता है। यही सामग्री है जिसे कई प्रकार के साँचों में ढालकर विविध रीतियों से कलाकार मूर्तिमान् करता है। इस अर्थ में "फिक्शन" अथवा "कथा-साहित्य" लेखक के लिए वैसी ही वस्तु है जैसा मूर्तिकार के लिए संगमरमर। यद्यपि यह नाम वहुधा गद्य में लिखे हुए वर्णनों को ही दिया जाता है, जैसे उपन्यास और कथा, किन्तु महाकाव्य और नाटक भी, जो जीवन के तथ्यो का कल्पित पात्रों तथा घटनाओं द्वारा वर्णन करते हैं, "फिक्शन" हैं। सारे वर्णनों की कच्ची सामग्री "फिक्शन" है जिसे उपन्यासकार, महाकाव्य लिखने-वाले और नाटककार अपने-अपने साँचों में ढालते हैं। इस कल्पित सामग्री और उससे वने हुए उपन्यासों तथा नाटकों आदि का मिथ्या एवं असत्य से कोई सम्वन्ध नही होता, क्योंकि "फिक्शन" झूठा नहीं हो सकता। "फिक्शन" या "कथा-साहित्य" इतिहास के वास्तविक तथ्य से भिन्न हो सकता है; "फिक्शन" की घटनाएँ सम्भव है कभी हुई न हों, उसके पात्र संसार में कभी जीवित न रहे हों, किन्तु उनका उस जीवन के सदृश होना आवश्यक है, जिसे जैसा हम जानते हैं, या उसके जैसे होने का हमें विश्वास है। उदाहरण के लिए किसी ऐसे मनुष्य से यदि हम मोटरकार का वर्णन करें जिसने वैल या भैंसा-गाड़ी के सिवा कोई और सवारी न देखी हो, तो वह मनुष्य अपने मन में मोटरकार का जो चित्र वनायेगा, उसकी नींव में वही वैल या भैंसा गाड़ी होगी जिसे वह जानता है। यदि वह मनुष्य कागज पर चित्र वनाकर किसी को मोटरकार दिखाना चाहे और सौ मील की गति एवं बैठने-वाले के आराम के प्रदर्शन के लिए पचास जोड़ा भैंसे या बैलगाड़ी में जोत दे और पचास मोटे-मोटे गद्दे गाड़ी में विछा दे, तो मोटरकार का ऐसा चित्र हमारी मोटरकार से

भिन्न होते हुए भी झूठा चित्र नही होगा। वह चित्र अनुभव किये हुए तथ्य को कल्पना द्वारा मूर्तिमान् किये हुए तथ्य मे मिलाकर साकार करता है, और वह मोटर-कार को ठीक वैसा ही उपस्थित करता है जैसी वह चित्रकार के मन में है, और जैसा वह जानता एवं विश्वास करता है।

"फिक्शन" अथवा "कहानी-साहित्य" जो इस प्रकार के जीवन-तथ्यों को मूर्तिमान् करता है, उन दार्शनिक तत्त्वों को साकार करके हमारे सामने प्रस्तुत करता है जो विज्ञान के निरीक्षण से तत्त्वज्ञान को प्राप्त होते हैं। यही कारण है कि श्रेष्ठ लेखक जो कल्पना के पथ पर अज्ञात के कोषगृह मे प्रवेश करने की चेष्टा करते है, विज्ञान तथा दर्शन से अनभिज्ञ नही होते। वे वैज्ञानिको की भाँति देखते, अनुभव करते, चिन्तन करते और अपने अनुभवों, भावनाओ तथा ज्ञान की सूक्ष्म परीक्षा करते, और उन प्राकृतिक एवं सारभूत नियमो को जानने तथा समझने की चेष्टा करते हैं जो मनुष्यजीवन के सारे व्यापार की तह में होते और सदा स्थिर रहते हैं। इन्हीं स्थिर और प्राकृतिक नियमों को लेकर श्रेष्ठ लेखक वे जीवन-सिद्धान्त निर्मित करते हैं जिन्हें वे अपनी रुचि के अनुसार अपनी प्रणाली एवं शैली द्वारा कथावस्तु में सजीव तथा साकार करते है। इस अर्थ में "फिक्शन" अथवा "कहानी-साहित्य" उन सब रचनाओं की सामग्री में होता है जिन्हें हम सर्जनात्मक कहते हैं और जो कल्पना से प्राप्त तथ्यों के वर्णनों पर बनी होती हैं।

इसी प्रकार का एक "कल्पित" वर्णन दि हिस्टरी आफ़ रैसेलस, प्रिन्स आफ़ एबिसीनिया (The History of Rasselas, Prince of Abyssinia) है, जो १७५९ में डाक्टर सैमुयेल जान्सन ने ट्रिस्ट्रम शैन्डी की प्रारम्भिक दो जिल्दों के प्रकाशन से कुछ महीने पहले और दि विकार आफ़ वेकफ़ील्ड से दो वर्ष पहले लिखा था। बास्वेल ने लिखा है कि जब जान्सन ने कहानी लिखने का विचार प्रकट किया तो गोल्डस्मिथ को उसकी सफलता में बहुत सन्देह था, क्योंकि "वह जरूर छोटी-छोटी मछलियों से ह्वेल की भाँति वार्ता-लाप करायेगा।" जान्सन ने कहानी लिखी और वह कहानी जान्सन के निराशावाद तथा अनुभवों की सच्ची कहानी हो गयी। रैसेलस (Rasselas) में मनुष्य-जीवन के सुख तथा आनन्द की समस्या का जान्सन बड़ी ईमानदारी और सचाई से निरीक्षण करता है। उसका निर्णय है कि जीवन में सुख नहीं के बराबर है; यदि मनुष्य दुःख से किसी उपाय से बच जाय तो उसे बड़ा सुखी समझना चाहिए। अपने जीवन में जान्सन ने कभी सांसारिक अनुभवों से मुँह नहीं छिपाया और न उन्हें कल्पना के द्वारा रंगीन बनाने की चेष्टा की।

उसने जीवन की गर्मी और सर्दी को पुरुषार्थ तथा साहस के साथ सदा झेला और अपने आत्मविश्वास को हाथ से जाने नही दिया। अपने पराक्रम तथा आन्तरिक वल के कारण, वाहरी दुष्टता एवं आन्तरिक दुर्वलता के सामने कभी सिर न झुकाने के कारण और सदा प्रयत्नशील रहने के कारण जान्सन ने जो ख्याति पायी, वह उसके योग्य था। जब ऐसा मनुष्य कोई कहानी लिखता है तो उसके विचार तथा सिद्धान्त, जो केवल कहने-सुनने के नही वल्कि जीने के आधार होते है, स्वाभाविक रीति से उस वर्णन में झलक आते है, जो मानव-प्रकृति के सारभूत अथवा मौलिक तथ्यों को मूर्तिमान् करता है।

रैसेलस

एविसीनिया के सम्राट् का रैसेलस नामक एक पुत्र, जो आनन्द की घाटी में रहता है और जिसका जीवन चारों ओर से सुख के साधनों से घिरा हुआ है, अकस्मात् अपने विश्रामपूर्ण एवं आनन्द-दायक जीवन की शान्ति तथा कोमलता से घवरा उठता है, और एक दिन अपनी वहिन निकाया और वृद्ध तत्त्वज्ञानी इमलैक के साथ मिस्र देश को निकल जाता है। मिस्र देश में भ्रमण करके ये लोग विभिन्न परिस्थितियो मे मनुष्य-जीवन की दशा का अध्ययन करते है और परिणाम यह निकालते है कि "कौन-सा जीवन अच्छा है इसका निर्णय वहुत कठिन है।" यह सोचकर कि कहीं तो आनन्दमय जीवन अवश्य होगा, राजकुमार अपनी खोज जारी रखता है और वहुत-से उद्यमों में लगे हुए लोगों के जीवन को देखता है, परन्तु कहीं भी आनन्द नही पाता। उसे पता चलता है कि ग्रामीण जीवन अज्ञान, असन्तोष तथा व्यर्थ के वैमनस्य के कारण पीड़ित रहता है; तत्त्वज्ञान की शिक्षा देनेवाले अपने दुःख नहीं सह पाते, सन्यासी तथा एकान्त में रहनेवाले न आनन्द पाते है न धर्मात्मा होते है, धनाढ्य लोग वलवानों के डर में रहते है और सभी मनुष्य सुलतान से भयभीत रहते हैं। "मैं नहीं कह सकता कि विवाह विपत्ति का एक रूप नहीं है।" और फिर, क्या जीवन का सुख मनुष्य के विचारों को भी आनन्दमय कर सकता है और समय को व्यतीत करा सकता है ? जीवन का वड़ा भाग फिर भी शून्य रहेगा और मन उचटता रहेगा। क्या सदाचार तथा धर्म का जीवन इस समस्या को हल करेगा ? सदाचार हमें मुसीवत सहन करने की शक्ति जरूर देगा, किन्तु सहन करने के विचार में भी तो कष्ट मिला हुआ होगा। जब इसी प्रकार जीवन की सारी अवस्थाओं और सब आदर्शो के गुणों तथा दोषों पर विचार करके उन्हें अस्वीकार कर दिया गया, तो

रैसेलस अपनी आनन्द की घाटी को लौट गया और निर्धनता के लिए अपने को तैयार करने लगा। यह सुन्दर कहानी एक उपदेश है जिसे ऐसे उत्तम ढंग से कथावस्तु के ढाँचे में रखा गया है कि घटनाएँ ठीक तरह पर व्यवस्थित हो गयी हैं और एक सुधरे हुए उत्कर्ष पर बढ़ती चली जाती हैं, जहाँ पहुँचकर एक पागल ज्योतिषी के इन्द्रजाल के अंधकार में उनको मृत्यु का जैसा मलिन चित्र मिल जाता है। इनलैक कहना है—"इस मनुष्य के जैसे ज्ञान को बहुत कम लोग प्राप्त कर सकते हैं, इनके जैसे सदाचारी भी संसार में बहुत नहीं होते किन्तु इनकी जैसी संकट की दशा सब की हो सकती है।"

इस पुस्तक का आकर्षण उसकी बुद्धिमानी और उसके दयाभाव में है। कहीं-कहीं पर उपहास भी बहुत अर्थपूर्ण प्रभाव डालता है और उदासी को दूर करता है। यह एक ऐसी नैतिक कहानी है जिससे अधिक अर्थपूर्ण और ऐसे ही साहित्यिक गुणों से सम्पन्न कहानी जो जीवन के तथ्य को कल्पना द्वारा मूर्तिमान् करती है, किसी दूसरी भाषा में नहीं लिखी गयी। यह कहानी ठीक अर्थ में 'क्लिसिक' है।

शताब्दी की उपन्यास-लेखिकाएँ

कदाचित् प्रगीत को छोड़कर उपन्यास ही साहित्य का वह अंग है जिसमें नारी लेखकों ने प्रशंसनीय सफलता प्राप्त की है। हम देख चुके हैं कि डैनियल डिफ़ो के समय से पूर्व कई लेखिकाएँ रोमांस लिखने में कैसी प्रसिद्ध थीं। अठारहवीं शताब्दी में फ़ील्डिंग की बहिन, मिस सैरा फ़ील्डिंग (Miss Sarah Fielding) ने एक उपन्यास, जिसका नाम डेविड सिम्पल (David Simple) था १७४४ में प्रकाशित किया था, जो लोकप्रिय इस कारण हुआ कि बहुधा पाठकों ने उसे फ़ील्डिंग की रचना समझा था। यद्यपि रिचर्डसन तथा फ़ील्डिंग दोनों ही सर्वप्रिय उपन्यासकारों ने उसकी प्रशंसा की थी, किन्तु वह बहुत दिन तक जीवित न रह सका। इस उपन्यास में रसिकता तथा चरित्र-चित्रण पर जोर दिया गया था, किन्तु उसकी "पिकैरेस्क" (धूर्तता) कथावस्तु से यह विशेषता एकरूप नहीं हो सकी और इसके अलावा, सांसारिक जीवन का ज्ञान बहुत कम होने के कारण धूर्तता की कथावस्तु में भी कोई नयी बात नहीं लायी जा सकी।

मिस फ़ैनी बर्नी और वास्तविकता का उद्धार

शताब्दी के चतुर्थ चरण में मिस फ़ैनी बर्नी (Miss Fanny Burney) ने

वास्तविकता की प्रणाली को, जो लारेन्स स्टर्न एवं आलिवर गोल्डस्मिथ की रचनाओं ने छोड़ दी थी, फिर से चलाया। मिस वर्नी (१७५२–१८४०) का प्रथम उपन्यास इवेलीना (Evelina), १७७८ में प्रकाशित हुआ, जिसकी डाक्टर जान्सन ने प्रशसा की। वह तुरन्त लोकप्रिय हो गया और मिस वर्नी की साहित्यिकों में गणना होने लगी। उसका दूसरा उपन्यास सेसिलिया (Cecilia), १७८२ में प्रकाशित हुआ, जिसके लिए उसे, इवेलीना से दसगुने, ढाई सौ पौन्ड मिले। मिस वर्नी ने वहुत वर्षो का वीच देकर दो उपन्यास और लिखे जिनका अव कोई नाम भी नहीं लेता। उसकी मृत्यु के उपरान्त उसकी डायरी (Diary) और चिट्ठियाँ (Letters) प्रकाशित हुई जिनमें १७७० से लेकर १८२० तक के वातावरण और लोगों की दिलचस्पियो का अच्छा वर्णन मिलता है।

इवेलीना और सिसीलिया

इवेलीना (Evelina) एक युवती के घर से वाहर के संसार में प्रवेश करने की कहानी है, जिसे स्वयं उस युवती ने उन चिट्ठियों में कहा है जो वह अपने संरक्षक को लिखती है। युवती एक साथ ही कई प्रेमियों की स्पर्धा में फँसी हुई है, जिससे सफलता पूर्वक छुटकारा पाना इस लिए कठिन होगया है कि उसकी उत्पत्ति में कुछ लोगों को सदेह है। युवती अपनी ओर से सदा सुचरित्र तथा सदाचार का ध्यान रखती है। इस विषय मे इवेलीना और सिसीलिया (Cecilia) दोनों ही उपन्यास रिचर्डसन अथवा मिस वर्नी से प्रभावित है और दोनों की नायिकाएँ, जिनके नाम पर उपन्यासों के नाम पड़े है, क्लैरिसा (Clarissa) की चचेरी वहिनें है, क्योंकि उसी की भाँति ये दोनों भी पाखण्डी तथा अत्यन्त सूक्ष्मग्राही एवं सचेत हैं। स्त्रियों के सदाचार के इन प्रतिरूपों मे नैतिक उपदेश भरे पड़े है जो पग पग पर समाज तथा संसार की बुराइयों की ओर ध्यान आर्कापित करते है। इवेलिना में मध्य श्रेणी के लोगों की भदेस वातें और उनके जंगली प्रकार के खेल-तमाशों का वर्णन है: सिसीलिया में समकालीन जीवन का अध्ययन और भी ब्योरेवार है। उस समय की प्रथानुसार वर्नी ने भी वात-वात पर आँसू निकाल देना खूब सीखा है, और वह भावुकता भी दिल खोलकर प्रकट करती है। इन उपन्यासों के दूसरे पात्र कहने को तो वास्तविक जीवन से और तत्कालीन समाज से लिये गये है, किन्तु वे किसी न किसी आवेग तथा चरित्र की विशेपता के प्रतिरूप है, किसी न किसी गुण या दोप को प्रधानता देकर कथावस्तु को व्यवस्थित करने में सहायक होते है। मिस वर्नी ने ऐसी व्यवस्था इस लिए रखी

क्योंकि उपन्यासों का उद्देश्य समय की खराबियाँ दूर करना था। उसने रिचर्डसन की भाँति उन दोषों को घृणित दिखाने के लिए किसी एक पात्र को चुनकर उसमें वह दोष प्रधानता से भर दिया और फिर उस पात्र को नष्ट बना दिया। इस प्रणाली पर लिखे जाने का फल यह अवश्य हुआ कि उपन्यास सामयिक दशा के चित्र हो गये किन्तु "फिक्शन" की हैसियत से श्रेष्ठ नहीं रहे। वास्तविक जीवन जैसा का तैसा कहानी को साहित्यिक तथा कलात्मक नहीं बनाता क्योंकि कला का कार्य परिवर्तन है। यही कारण है कि मिस बर्नी के उपन्यास सामाजिक इतिहास के अध्ययन की सामग्री हो गये हैं और आज भी पढ़े जाते हैं। उनमें आचार-व्यवहार, रीति-रिवाज, लोगों की आर्थिक दशा, आचरण की त्रुटियाँ और आदर्श का अभाव सब बातें बड़ी सूझ-बूझ के साथ दिखायी गयी है। पहले जिन उपन्यासों में सामाजिक जीवन के चित्र दिये गये थे वे पुरुषों के दृष्टिकोण से लिखे हुए थे। मिस बर्नी ने युवतियों के दृष्टिकोण से सब व्यवहार देखा और प्रवृत्तियों का नये ढंग से निरीक्षण किया।

मिस बर्नी की शैली पर जान्सन का प्रभाव है, जिसके कारण उसमें ऐसा भारीपन आ गया है जो उपन्यास में अनुचित जान पड़ता है, किन्तु उसके अपने गुण अलग से दिखाई देते हैं जो बड़े सुन्दर हैं। बिलकुल फील्डिंग या स्टर्न के समान सूक्ष्म बोध तथा गम्भीरता एवं परिहास को उसकी शैली सुगमता से व्यक्त करती है। शिष्टजनों के वार्तालाप में जो नफासतें और संकेत तथा हलका मजाक और गहरे विचार इधर से उधर होते रहते हैं, वे सब बातें मिस बर्नी की भाषा के बस की हैं, क्योंकि वह दूसरे श्रेष्ठ लेखकों के प्रभाव में सम्पन्न हो गयी है और उसकी सारी जरूरतों को पूरा करने की योग्यता रखती है। यद्यपि उपन्यास-कला के दृष्टिकोण से मिस बर्नी का बड़ा महत्त्व नहीं है, किन्तु आनेवाले उपन्यासकारों ने उसकी पुस्तकों से बहुत कुछ सीखा।

अठारहवीं शताब्दी के उपन्यास की उपलब्धि

रिचर्डसन से लेकर फैनी बर्नी तक के उपन्यासों में ऐसे साहित्य का निर्माण हुआ जो अठारहवीं शताब्दी के दृढ़ निश्चय और स्थूल तथ्य में विश्वास रखनेवाले स्वभाव के अनुरूप था। उपन्यास लिखने वालों की बहुधा यही चेष्टा रही कि मनुष्य तथा संसार का जैसे वे हैं वैसा ही चित्रण किया जाय, यद्यपि कुछ लेखक अपना उद्देश्य उन्हें सुधारना भी कहते रहे। यह कहना बिलकुल ठीक होगा कि लगभग

सब श्रेष्ठ उपन्यासकारों की पुस्तकें समकालीन जीवन की समालोचना हैं। इस कहानी-साहित्य के वहुमूल्य गुण तथा विशेपताएँ परिहास और नैतिक चेतना है, जिन्हें प्रयोग में लाकर लेखकों ने जीवन तथा समाज के सच्चे चित्र खींचे। निम्न श्रेणी के लेखकों के हाथों में उपन्यास धीरे-धीरे साहित्य का एक ऐसा अंग वनता गया जिसमें सभी कुछ लिखा जा सकता था। लोग सामाजिक, राजनीतिक तथा सद्व्यवहार सम्वन्धी विपयों में बड़ी दिलचस्पी लेते थे, इस लिए उपन्यास की कलात्मक प्रणाली पर अधिक ध्यान न देकर लेखकों ने अपनी पुस्तकों में व्यंग एवं उपदेश को अपना मुख्य उद्देश्य वनाना प्रारम्भ कर दिया और साधारण पाठकों में ऐसे उपन्यास लोकप्रिय होने लगे। नैतिक विवाद, विभिन्न व्यवसायों तथा वाणिज्य की प्रशंसा, समाज में स्त्रियों की अवस्था, राजनीति की समस्याएँ, कर्जदारों के कारागार, अनाथालयों की दशा—कौन सा ऐसा विषय है जो इन उपन्यासों में नहीं मिलता, या जिस पर उनमें विचार नहीं किया गया। साहित्य-कला की दृष्टि से ये पुस्तकें उपन्यास नहीं कही जा सकतीं, वे सर्वसाधारण लोगों की दिलचस्पी के विपयों पर कितने भी अच्छे लिखे हुए निवन्ध या विवाद-पत्रिकाएँ क्यों न हों। फिर भी, यह सव कुछ कहने के वाद और इन दोपों के होते हुए भी, अठारहवी शताव्दी का उपन्यास अंग्रेजी भापा तथा साहित्य में एक विलक्षण निर्माण से कम नहीं है।

किसी भी देश के इतिहास में अठारहवीं शताव्दी के सर्वोत्तम अंग्रेजी उपन्यासों से अधिक स्वस्थ और नफीस साहित्य मिलना कठिन है और इंग्लैण्ड में भी किसी दूसरी शताव्दी के साहित्य में इतने सुन्दर गद्य लिखनेवाले लेखक नहीं मिलते, जितने अठारहवीं शताव्दी के उपन्यास ने उत्पन्न किये हैं। लेखक जान चुके थे कि गद्य-साहित्य का कोई भी दूसरा अंग कल्पना को ऐसा अवसर एवं विस्तृत क्षेत्र नहीं देता जैसा कि उपन्यास में उन्हें मिलता है। वे यह भी समझते थे कि उपन्यास के वरावर कोई भी गद्य आविष्कार तथा सर्जनात्मक साहित्य के निर्माण में सहायक नहीं होता। उन्हें अनुभव हो चुका था कि निवन्ध एवं गद्य-काव्य की अपेक्षा उपन्यास में कहीं अधिक सुगमता से वे अपनी आत्मीयता और साहित्यिक आत्मश्लाघा को दर्शा सकते थे। लगभग सभी लेखक जानते थे कि उपन्यास लिखने के लिए भापा पर कैसा पूर्ण अधिकार होना चाहिए और शैली में कितना फैलाव एवं कितनी शक्ति तथा सामर्थ्य चाहिए। उपन्यास लिखनेवाले को ऐसी भापा और शैली की आवश्यकता होती है जो "उपहास को भोंडा वनाये विना, लक्ष्य तक पहुँचा सके,

जो सूक्ष्मचेतन संकेतों से शिष्ट जनों का मन बहला सके, शिष्ट रीति से उनकी त्रुटियाँ दिखा सके।"

इस शताब्दी के प्रधान लेखकों को व्यंग्य लिखना आता था, वे उच्चकोटि से लेकर सब श्रेणियों तक के लोगों के मजाक समझते थे और लिख सकते थे, उनमें दृश्यों तथा चरित्रों के वर्णन की वह योग्यता थी जो चित्रों को सजीव एवं साकार कर देती है और रोचक बना देती है। वे जानते थे कि वर्णन में कौन-सी बातें ली जायँ और कौनसी छोड़ी जायँ, कि थोड़े शब्दों में सारा दृश्य पाठक के सामने आ जाय। यद्यपि वे गद्य लिखते थे किन्तु कवियों की संकेतयुक्त भाषा की सारी जादूगरी को खूब समझते और अपने काम में लाते थे।

अध्याय ७

रोमैन्टिक रिवाइवल के समय में उपन्यास

अठारहवी शताब्दी के चतुर्थ चरण में अंग्रेजी उपन्यास का इतिहास उन सब कठिन जटिल समस्याओं में होकर गुजरता है, जो उस आन्दोलन सम्बन्धी वाद-विवाद में उठायी गयी थी, जिसे साहित्य मे "रोमैन्टिक मूवमेन्ट" (Romantic Movement) कहा जाता है। यह आन्दोलन केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं था बल्कि पूरे मनुष्य-जीवन पर छाया हुआ था। नवयुग (Renaissance) काल के समान इस शताब्दी के उत्तरार्ध में भी स्वतन्त्रता तथा मनुष्य के उद्धार के हेतु यूरोप के सब देशों में आन्दोलन चल रहा था। जिस किसी देश में कोई भी हलचल मचती तो वह अपने विशेष कार्य में चाहे सफल होती या न होती, परन्तु उसकी शक्ति से इस बड़े आन्दोलन को बल अवश्य प्राप्त होता। जान वीजली (John Wesley) ने इंग्लैण्ड में धर्म को पुनः जीवित करने की जो कुछ चेष्टा की उस सबको गिरजे के विरोधी दल ने उसी बड़े आन्दोलन को बल देने का साधन बना लिया। इसी प्रकार जर्मनी में इमैनुयल काण्ट (Emanuel Kant) के नये दार्शनिक विचारों के प्रयोग से मनुष्य की स्वाधीनता तथा उसके अधिकार की नींव को दृढ़ किया गया था। फ्रांस में सामाजिक उथल-पुथल ने ऐसी क्रान्तिकारी दशा उत्पन्न की कि वह अन्त में स्वाधीनता तथा समानता एवं बन्धुता की माँग में बदल गयी और सारे प्रयत्नों का आदर्श बन गयी।

"रोमैन्टिक मूवमेन्ट" मनुष्य की उस चेष्टा का फल था जो व्यक्ति समाज के बन्धनों तथा विविध प्रकार की रूढ़ियों से मुक्ति पाने के लिए करता चला आता था और जिसे प्राप्त करने के उसने अब दो रास्ते सोचे थे, एक बाह्य प्रकृति और दूसरा कल्पना। इस शताब्दी में सभ्य और असभ्य का बहुत जमा-खर्च रहता था और ग्रामीण सबसे बुरा विशेषण समझा जाता था। नगर का जीवन सभ्य जीवन समझा जाता था और सभ्य समाज में जिन वस्तुओं का प्रयोग होता था वे पहले काट-छाँटकर ठीक कर ली जाती थीं। कोई पशु, कोई पक्षी, बिना ऐसी काट-छाँट के सभ्य समाज के

योग्य नहीं होता था। नगर में लोगों के बागों में कोई वृक्ष अपनी प्राकृतिक दशा में नहीं रक्खा जाता था। साहित्य में भी व्यवस्थित होकर प्रकृति का प्रवेश हो सका था। कविता में साधारण शब्दों का प्रयोग न करके कवियों ने एक कृत्रिम अथवा वराऊ भाषा बना ली थी जिसमें सारे कवि मछलियों को "पक्षगण", चिड़ियों को "पत्रगण", सूरज को "फीवस", चाँद को "डायना" लिखने लगे थे। इस दशा मे बाह्य प्रकृति पर जोर देना सभ्यता का विरोध करना समझा जाता था, जिसे सभ्य समाज किसी तरह सहने को तैयार न था। कल्पना के रास्ते से लोगो के विचार अतीत की ओर तथा दूरस्थ देशों में ले जाये जाते थे जो साक्षात् कर्तव्यो के विरुद्ध समझा जाता था। साहित्य में ये दोनों रास्ते प्रगतिशील सिद्ध हो रहे थे और उनमे एक नवीन शक्ति का संचार कर रहे थे, जो आन्दोलन की सफलता की सूचक हो रही थी। "रोमैन्टिक मूवमेन्ट" के साथ मध्यकालीन संस्कृति ठीक उसी प्रकार मिली-जुली थी जिस प्रकार नवयुग (Renaissance) में यूनान और रोम की सस्कृति और साहित्य मिले थे। इन दोनों गतिविधियों में भेद केवल इतना था कि नवयुग मे प्रगति किसी सुधार के साथ बँधी हुई नहीं थी, परन्तु अठारहवी शताब्दी में दलितोद्धार की समस्या भी उसी के साथ थी। नवयुग में प्राचीन साहित्य से लेखकों को अनेक प्रकार की बहुत सी सामग्री और रचना-प्रणाली प्राप्त हुई थी। आधुनिक काल के आन्दोलन का एक आदर्श यह भी था कि ऐसी समाज-व्यवस्था बनायी जाय जो मनुष्य पर किसी प्रकार से रोक-रोट न लगाये, उसे उन्नति करने दे और अपने को ऊँचा उठाने का अवसर दे। इस आदर्श के कारण "रोमैन्टिक मूवमेन्ट" उस क्रान्तिकारी प्रवृत्ति का सहायक हो गया था जो अठारहवी शताब्दी के अन्तिम चरण मे प्रकट हो रही थी।

मनुष्य को आचार विधियों तथा रूढ़ियों के पंजे से छुड़ाने का यह प्रयत्न उन विचारशील लोगों ने किया जो प्रकृति से प्रेरणा लेना और प्राकृतिक जीवन व्यतीत करना आवश्यक समझते थे और संसार के कार्यों में सहज प्रभाव ढूँढते थे। ये लोग अपने जीवन में स्वाभाविक तथा सद्भावपूर्ण बातों को विशेष महत्त्व देते थे। इस काल में मनुष्य की स्वतन्त्रता का यह आन्दोलन दो ओर से चल रहा था; एक में बाह्य प्रकृति और दूर की अनोखी बातों पर जोर दिया जाता था, दूसरी मे जीवन की साधारण और सामने की छोटी से छोटी वस्तुओं तथा घटनाओं में तथ्य और सार समझने की बड़ी चेष्टा की जाती थीं। ये दोनों प्रवृत्तियाँ साहित्य के प्रत्येक अंग में अपना प्रभाव दिखा रही थीं। अंग्रेजी उपन्यास भी इस आध्यात्मिक शक्ति से प्रभावित

हो रहा था और समय के साथ-साथ बाह्य प्रकृति तथा आन्तरिक प्रेरणा को अपनी लेखन-प्रणाली में स्थान देता जा रहा था। उसने बड़े उत्साह से "रोमैन्टिक मूवमेन्ट" के दोनों रास्तों पर चलना आरम्भ कर दिया था। काल और देश दोनों के दूरत्व को उसने भली भाँति समझकर कहानी में स्थान दिया और उससे प्राप्त भावना से पूरा लाभ उठाया। भय तथा आश्चर्य से उत्पन्न आवेग से काम लेकर जो रोमास लिखे गये वे "गाथिक" कहलाते है। सामयिक विचारों एवं साहित्य में प्रकृति के प्रवेश के कारण उपन्यासों में दृश्यों का वर्णन आवश्यक समझा जाता था और साथ ही अतीत के प्रति जो दिलचस्पी इस काल में ली जाती थी और जिसने "गाथिक" को जन्म दिया था, वही उपन्यासों में अव इतिहास का रंग भी दे रही थी, जो आगे चलकर उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ऐतिहासिक उपन्यासों में लोकप्रिय हुआ। एक बड़े काल से उपन्यासों में व्यक्तिगत समस्याएँ प्रधानता पा रही थी और सारी दिलचस्पी भी व्यक्ति के समझने में ही केन्द्रित हो गयी थी। वहुधा उ.न्यासकार समाज और व्यक्ति के परस्पर विरोध में व्यक्ति का पक्ष लेते आये थे। वे उपन्यास जिनमें ऐसा किया जाता था, किसी विशेष पक्ष का समर्थन करते थे और उद्दिष्ट उपन्यास (Novels with purpose) कहलाते थे।

अठारहवी शताब्दी के चतुर्थ चरण में इन्हीं स्थितियों के कारण हमें तीन प्रकार के उपन्यास मिलते है, एक तो वे जो व्यक्ति और समाज के जीवन का वास्तविक चित्रण करते थे और जिनमें समय के रीति-रिवाज तथा शिष्टाचार विस्तार से वर्णित होते थे। दूसरे ऐसे रोमांस जिनमें प्रकृति और अतीत से सम्बन्धित आवेगों की सामग्री लेकर कथावस्तु तैयार की जाती थी, और तीसरे वे मानवप्रेम से भरे हुए उपन्यास जो बड़ी गम्भीरता से व्यक्ति को समाज के अन्याय तथा अत्याचार से बचाने के उद्देश्य से लिखे जाते थे। ये तीन उद्देश्य, अर्थात् जीवन का चित्रण, जीवन की कठिनाइयों से वचना एवं जीवन को उन्नति के मार्ग पर ले जाना, उन तीन प्रकार के उपन्यासकारों के विभेद वताते हैं जो यथार्थवादी रोमांसकार और व्रतसन्ध (Missionary) कहलाते थे और जो विविध प्रकार के विभाग-संकरों सहित आज तक उपन्यास में प्रवृत्त चले जाते है।

"गाथिक" उपन्यास—दि कास्ल आफ़ आटरैण्टो

इस शताब्दी के रोमांसों की लम्बी सूची दि कासल् आफ आटरैन्टो (The Castle of Otranto) से प्रारम्भ होती है, जो सन् १७६४ में हारेस् वालपोल

(१७१७–१७९७) (Horace Walpole) ने लिखा था। वालपोल उस लेखन-प्रणाली के अग्रसर समर्थकों में से था जो "गाथिक" कही जाती थी और जो उच्च कोटि के साहित्य की साधारण सरलता तथा शिष्टता की अपेक्षा विलक्षणता एवं निर्दय वर्बरता को अधिक आदर देती थी। वाल्पोल ने अपने उपन्यास में जागीरदारी (feudal) के काल के जीवन तथा आचार-व्यवहार और घरेलू जीवन के दृश्यों का चित्रण किया है। इस जीवन को लेखक ने साधारण दशा में नहीं देखा वल्कि उसे अलौकिक एवं प्रकृत्यतीत (Supernatural) शक्ति के आवेग के वश में ठीक उसी प्रकार देखा, जैसे कि उस काल के मूढ़विश्वासी लोग देखते रहे होंगे। इस वहाने से लेखक ने अपने उपन्यास में अलौकिक वातों को स्थान भी दिया और उसे उनका सत्य होना समझाने तथा मनवाने की चेष्टा करनी नहीं पड़ी।

उपन्यास में जिन घटनाओं का वर्णन किया गया है वे वारहवीं अथवा तेरहवीं शताब्दी की कही जाती हैं। मैन्फ्रेड (Manfred) आटरैन्टो का राजकुमार उस वलापहार करनेवाले का पोता है जिसने राज्य के अधिकारी राजा अलफान्जो को विष देकर मार डाला था। भविष्य वतानेवाले के कथन के अनुसार वलापहार करने वाले के वंशज उस समय तक राज्य करते रहेंगे जव तक उनके नर संतान होती रहेगी। जिस समय कहानी प्रारम्भ होती है तव मैन्फ्रेड के इकलौते पुत्र का विवाह होनेवाला है और वड़ी धूम-धाम हो रही है। नहीं मालूम कैसे, विवाह के पहले अकस्मात् लड़के की मृत्यु हो जाती है और यह रहस्य मैन्फ्रेड को वड़े संदेह में डाल देता है। इस भय से कि कहीं उसकी पत्नी को दूसरा पुत्र न हो, मैन्फ्रेड उसे तलाक देकर अपना विवाह उस लड़की से करना निश्चित करता है जो उसकी वहू होनेवाली थी। लड़की जिसका नाम इसावेला है, एक देहाती किसान की सहायता से भाग जाती है। इस किसान की शकल-सूरत अलफान्जो के चित्र से वहुत मिलती है। इस किसान पर मैन्फ्रेड के पुत्र की मृत्यु के सम्वन्ध में सन्देह भी किया जाता है और वह कारागार में डाल दिया जाता है। मैन्फ्रेड की पुत्री किसान को छुड़ाती है और उन दोनों में प्रेम हो जाता है। कई घटनाएँ होती हैं जिनमें वहुत अद्भुत, अलौकिक शक्ति काम करती है और मैन्फ्रेड अपनी पुत्री का वध कर डालता है। अलफान्जो का भूत, जो महल में ही वास करता है, इतना लम्वा और विशालकाय हो जाता है कि वह महल को तोड़कर वाहर निकलता है और सव लोगों को भयभीत कर देता है। मैन्फ्रेड अपने सारे अपराधों को स्वीकार करता है। अलौकिक एवं प्रकृत्यतीत शक्ति के कारण दीवार पर से एक प्राचीन चित्र स्वयं उतर आता है और इधर-उधर घूमता

है, एक संगमर्मर की मूर्ति की नाक से रुधिर बहने लगता है, एक बहुत बड़ा शिरस्त्राण खड़खड़ाता हुआ धमाके के साथ आँगन में आकर गिरा और अपने ऊपर की कलँगी हिला-हिलाकर घूमने लगा। इस प्रकार की बीसों अलौकिक घटनाएँ बिना किसी क्षमा-प्रार्थना के उपन्यासकार लिखता चला जाता है। केवल एक प्रयत्न वह वास्तविकता लाने का करता है, वह यह है कि पात्रों से वह स्वाभाविक वार्तालाप कराता है और अपने समय के रीति-रिवाजों का सीधे ढंग से वर्णन करता है। परन्तु इन बातों से वह असम्भव को सम्भव अथवा अलौकिक को प्राकृतिक बनाने में सफल न तो हो सकता था और न हुआ। उसकी सारी सफलता यह थी कि उसके पाठक उन डरावने तथा भयानक दृश्यों से, जिनका उसने चित्रण किया था, भयभीत होते थे।

हारेस वालपोल ने "गाथिक" उपन्यास को वे सारे तत्त्व प्रदान किये थे जिन्हें प्रयोग मे लाकर लगभग पचा र वर्ष तक लोग इस प्रकार के उपन्यास लिखते रहे। कथापुरुष उसने ऐसा प्रचलित किया, जो घृणित से घृणित अपराध बड़े सहज स्वभाव से कर सकता था और वीरांगनाएँ भी उसने ऐसी प्रस्तुत कीं जो अनेकों अत्याचार सहती चली जाती थीं। उसने किले का सा दृढ़ और बड़ा महल बनाया जिसमें सैकड़ों गुप्त रास्ते, बीसों प्रेतग्रस्त कमरे, दर्जनों अँधेरे कोने है, जहाँ दिन में भी भूत दिखाई देते है और तरह-तरह की अनहोनी तथा भयानक घटनाएं हुआ करती हैं।

वालपोल ने अपने उपन्यास में प्राचीन रोमांस को आधुनिक रोमांस से मिलाकर एक नया ढंग निकाला था, जिसमें कल्पना को पूर्ण स्वतन्त्रता थी कि वह कैसी भी मनगढ़न्त बातें, कथासामग्री में मिलाती चली जाय और जो भी भय उपजाने वाली बाते चाहे उसमें सम्मिलित कर दे। ये सब बातें जो प्राचीन रोमांसों की सी थीं, वालपोल ने अपने समय के उपन्यास के ढंग से वार्तालाप के द्वारा पात्रों को अनुभव करायी और इस प्रकार उनको स्वाभाविक बातों की भाँति पाठकों के सामने लाने की चेष्टा की। अलौकिक तथा प्रकृत्यतीत घटनाओं के समर्थन में वह शेक्सपियर की दुहाई देता है और अपने उपन्यास की प्रस्तावना में लिखता है--"मैं कह सकता था कि नये प्रकार का रोमांस ईजाद करने के बाद मैं उसके लिखने की नयी प्रणाली भी निकालता हूँ और उसके निकालने का अधिकार भी रखता हूँ। किन्तु मुझे तो इस बात का अभिमान है कि मैं ने इतने महान् लेखक का अनुकरण किया है, चाहे वह अनुकरण कितना ही फीका और असफल ही क्यों न रहा हो। यदि मुझ में

प्रतिभा एवं मौलिकता होती तो मेरा यह कहने का मुंह भी पड़ता कि मैंने यह प्रणाली अपने मन से निकाली है।

सच तो यह है कि वालपोल ने अलौकिक तथा प्रकृत्यतीत तत्त्व यों ही विना किसी कारण विशेष के अपने उपन्यास में प्रविष्ट कर दिये हैं और उनके स्वागत को पाठकों के चित्त में पहले से कोई भावना उत्पन्न नहीं की है, जिसका फल यह हुआ है कि वे तत्त्व केवल बाहरी भय-उत्पादक साधन होकर रह गये हैं। शेक्सपियर का यह ढंग कभी नहीं रहा, क्योंकि उसके नाटकों में प्रेत एवं अलौकिक घटनाएँ न तो कोरे धोखे होते हैं और न केवल छायाचित्र। शेक्सपियर के यहाँ ऐसे भाव सदेह पात्रों के द्वारा उत्पन्न किये जाते हैं और उनके स्वागत का पूरा प्रबन्ध किया जाता है। वालपोल ने जिस प्रणाली का अनुसरण किया है, उसे वह समझा नहीं था।

इस विषय को छोड़कर यह मानना पड़ता है कि वालपोल में साहित्यिक प्रतिभा अवश्य थी जो इस उपन्यास में भली प्रकार दिखाई देती है। उसने एक उपजाऊ एवं विस्तृत तथा रमणीय क्षेत्र का रास्ता दिखाया, जिसमें सामाजिक, ऐतिहासिक और साहित्यिक तथ्य भरे पड़े हैं और जिसकी ओर किसी का ध्यान नहीं था। बल्कि यों कहना चाहिए कि जिस क्षेत्र को बहुधा अच्छे लेखक खोज करने योग्य समझते ही नहीं थे, उसे वालपोल ने मथा और उसमें से बहुमूल्य वस्तुएँ खोज निकालीं। लेखकों के अतिरिक्त और लोगों का भी ऐसा ही विचार था, जिसके कारण शौर्य की सामग्री वाले रोमांस इस काल में न लिखे जाते थे और न पढ़े ही जाते थे। इस समय ज्ञानी तथा विचारवान् होने की पहचान यह हो गयी थी कि जीवन की रहस्यमय भावनाओं का उपहास किया जाय और सारे रहस्यों को मूढ़विश्वास कहकर उनकी ओर से मुंह मोड़ लिया जाय। सत्य की परख का साधन केवल इन्द्रिय-ज्ञान एवं विवेक-बुद्धि को समझा जाता था और इन्हीं दोनों साधनों का वालपोल ने अनादर किया। उसने एक ऐसे क्षेत्र की छान-बीन के लिए रास्ता साफ़ कर दिया जो अभी तक साहित्य और कला के लिए अँधेरी कोठरी था और बुद्धि के लिए जिस पर चलना वर्जित था। दि कास्ल आफ़ आटरैण्टो (The Castle of Otranto)' ने यह तो बता ही दिया कि यह संसार और मानव जीवन रहस्यों से घिरा हुआ है, जिनका खोलना अथवा जिनमें विश्वास करना किसी प्रकार भी मूढ़विश्वास भी नहीं कहा जा सकता।

हारेस वालपोल के अनुयायी—मिस क्लैरा रीव

यद्यपि हारेस वालपोल ने "गाथिक" उपन्यास का उद्देश्य नैतिक ज्ञान बताया था फिर भी जो रोमास उसके अनुयायियो ने लिखे और जिनमें उसके उपन्यास का अनुकरण किया गया, वे सब पाठको के मनोरजन के हेतु लिखे गये। जिन लेखको ने वालपोल के रोमास का अनुसरण किया उन्होने अपने गुरु को कोसो पीछे छोड-कर भय तथा आश्चर्य-उत्पादक तरीकों का कुछ इस प्रकार प्रयोग किया कि वे पहले से कही अधिक भदेस एव अप्राकृतिक हो गये। कारण यह था कि इस काल मे उपन्यासकार प्राकृतिक तथ्यो को इतनी अच्छी भाँति नही समझते थे कि वे उनमे और अलौकिक सत्य मे कोई सम्बन्ध स्थापित करके जीवन तथा संसार के रहस्यो को प्रकट कर सकते। यह कार्य रोमैटिक रिवाइवल के समय के कवियो ने करना आरम्भ कर दिया था और उनकी कविता मे दिन पर दिन यह अनुरूपता प्रकट होती जा रही थी, यहाँ तक कि सन् १७९८ मे कोलिरज और वर्डस्वर्थ (Coleridge and Wordsworth) रचित लिरिकल बैलेड्स (Lyrical Ballads) ने इस कार्य को कर दिखाया। वालपोल के अनुयायियो ने जीवन के रहस्यो का कल्पना द्वारा इस प्रकार मे अनुभव भी नही किया था कि वे प्रकृत्यतीत अथवा अलौकिक (Supernatural) के सत्य को समझकर अपने रोमासों मे उसे प्रकट कर सकते। वे तो केवल यह जानते थे कि वालपोल ने कहानी-साहित्य मे एक नयी प्रथा चलायी है, जिसने उसके "दि कासल् आफ आट्रैण्टो" (The Castle of Otranto) को लोकप्रियता दी है। उनको यह सन्देह तक नही हुआ था कि वह प्रथा विचारो को किस ओर लिये जा रही थी अथवा वालपोल किस कारण असफल रहा था। वालपोल के अनुयायियो मे से एक मिस क्लैरा रीव भी थी जिन्होने १७७७ मे दि ओल्ड इगलिश बैरन (The Old English Baron) नामक रोमास लिखा था। यह रोमास अनुकरण होते हुए भी वालपोल के दिये हुए नमूने से कई बातो मे भिन्न है और भली-भाँति सिद्ध करता है कि मिस रीव ने अपने गुरु की त्रुटियों तथा अपूर्णता को समझकर ही अपने रोमास मे "गाथिक" की प्रथा मे परिवर्तन किया था। मिस रीव का रोमास पन्द्रहवी शताब्दी की पृष्ठ-भूमि पर लिखा गया है और भय तथा आश्चर्य उत्पन्न करने के लिए अनहोनी अथवा अमानुषिक घटनाओ का प्रयोग नही करता। अलौकिक तत्त्व प्रकट करने के लिए एक ऐसे बैरन के प्रेत को रोमास का पात्र बनाया गया है, जिसका

कुछ काल पहले वध कर डाला गया था। मिस रीव का यह रोमांस लोगों को पसन्द नही आया ओर स्वय वालपोल ने उसकी कडी समालोचना करते हुए लिखा—"कहानी को इतनी सम्भव बनाने की चेष्टा की गयी है कि वह इतनी भी रोचक नही रह गयी है जितनी किसी मनुष्य-हत्या के मुकदमे की रिपोर्ट होती है।"

विलियम बेकफ़र्ड का कैलिफ़ वाथेक

मिस रीव के अतिरिक्त बहुत-से अन्य लेखको ने "गाथिक" रोमास लिखे परन्तु किसी को भी सफलता प्राप्त नही हुई ओर न उनमे से किसी का भी लिखा रोमास लोकप्रिय ही हुआ। इन रोमासो का व्यापक एव विशिष्ट गुण यह था कि वे सब इन्द्रिय-जनित ज्ञान पर जोर देते थे ओर उनके लेखक धार्मिक विचारों के विरुद्ध सदा यह सिद्ध करने की चेष्टा करते थे कि सारा ज्ञान इन्द्रियो द्वारा ही प्राप्त होता है और जो उनके द्वारा प्राप्त नहीं होना वह ज्ञान नही होता। यह ढेरों रोमास मालूम नही किस कूडेखाने मे पडकर साहित्य से विलुप्त हो गये। रोमैण्टिक कहानी-साहित्य मे जिस पुस्तक ने वालपोल के कास्ल आफ आट्रैण्टो (The Castle of Otranto) के समान कुछ प्रभाव डाला ओर जिसने नयी रीति भी चलायी, वह विलियम बैकफर्ड (William Backford) की लिखी हुई दि हिस्ट्री आफ कैलिफ वाथेक (The History of Caliph Vathek) थी। इस पुस्तक में अतीत की रोचकता के साथ दूरस्थ देशो की अद्‌भुत बाते जोड़ दी गयी थी और इस प्रकार रोचकना मे विशेप गुण उत्पन्न हो गये थे। मध्यकालीन मूढविश्वासों की मिथ्या बातो की जगह इस रोमास मे पूर्वी देशो की जादूगरी अथवा भूत विद्या का प्रयोग किया गया और कहानी मे इन्द्रियों से भोगने और आनन्द लेने की सामग्री द्वारा विलासिना का पुट देकर विशेप दिलचस्पी उत्पन्न की गयी थी।

यह पुस्तक पहले फ्रेन्च भाषा मे लिखी गयी थी, फिर कुछ समय के उपरान्त लेखक ने स्वय ही उसका अग्रेजी भाषा मे अनुवाद किया था (१७८४)। उसकी कथावस्तु उन कहानियो पर आधारित है जो हारूँनुलरशीद के सम्बन्ध मे दूर-दूर कही जाती थी। खलीफा वाथेक हारूँनुलरशीद का पोता था जो अपनी असीम जिज्ञासा के वश तथा अपनी जादूगरनी माता के प्रभाव मे आकर इबलीस का आज्ञाकारी दास हो गया था और जिसने अपनी अभिलाषा प्राप्त करने के लिए पचास बच्चो की बलि भी शैतान को दी थी। वाथेक इबलीस के खजाने की खोज

में भूमि के नीचे की गुफाओं में जाता है किन्तु वहाँ उसे केवल अहंकार तथा वृथा अभिमान के ढेर मिलते है, जो खजाने में दबे पड़े है और जिनके इधर-उधर अद्-भुत प्रकार की दारुण वेदनाएँ एवं यन्त्रणाएँ है, जिनका वह अपने अपराधों के कारण स्वयं शिकार हो जाता है। वेकफर्ड की लेखन-प्रणाली का चमत्कार उन स्थानो मे दिखाई पड़ता है जहाँ पुस्तक मे पाताल अथवा नरक के दृश्यों का वर्णन किया गया है और जहाँ वाथेक की पीड़ा तथा उसकी मृत्यु का निरूपण हुआ है।

जॉन मुअर का ज़िलूको नामक रोमांस

पूर्वोक्त रोमांस का बहुत से लेखको ने अनुसरण किया और भिन्नता के लिए कोई न कोई नयी बात अपनी पुस्तकों में उत्पन्न करने की चेष्टा की। कई लेखकों ने चरित्र-चित्रण करके भिन्नता उत्पन्न की और कई ने तत्कालीन विचारों तथा धारणाओ को लेकर कथावस्तु तैयार की। कुछ लेखकों ने समय की अवस्था एवं उससे उत्पन्न गुण और स्वभाव का चित्रण किया और ऐसे चित्रण द्वारा नैतिक शिक्षा भी देने का प्रयत्न किया। इन उपन्यासों में जान मुअर (John Moore) का सन् १७८६ मे लिखा हुआ जिलूको (Zeluco) नामक रोमास इस समय वहुत लोकप्रिय हुआ। जान मुअर ने जिलूको में एक ऐसे कथापुरुष के गुण और स्वभाव का चित्र खीचा है जो यूरोप में इस समय प्रचलित हो रहा था और जिसका चित्र गेटे (Goethe) ने १७७४ में अपने सारोज आफ़ वर्टर (The Sorrows of Werther) नामक रोमांस में दिया था। यह कथापुरुष तत्कालीन समाज की देन था और अनोखा होने के कारण मनोविज्ञान के अध्ययन की सामग्री हो रहा था। मुअर ने उसके गुण इस प्रकार गिनाये है—"वह अभिमानी, चिड़चिड़ा तथा निन्दाशील मनुष्य है, जिसके चेहरे से अवज्ञा एवं व्यतिक्रमण प्रकट होता है और जिसके हृदय मे दुःख तथा विपत्ति के भाव भरे हुए है, जो बदला लेने मे कभी चूकता नही, जिसे मानसगंध आती है और जो मनुष्यजाति से घृणा करता है; इस पर भी उसमें प्रगाढ़ प्रेम की क्षमता है और वह सारे संसार को अपने सीने से लगाकर गर्म रख सकता है।" यह अद्भुत प्रकार का कथापुरुष लेखकों का ध्यान आकर्षित कर रहा था। गेटे के रोमांस का अनुवाद अंग्रेजी और फ्रांसीसी भाषाओं में १७८० के लगभग हो चुका था और पुस्तक ने कई देशों में वड़ा प्रभाव डाला था। इस कथापुरुष को लेकर कई रोमास लिखे गये और कई लेखकों ने ऐसे चरित्र की व्याख्या की और समाज की उन त्रुटियों को भी वताया जिनके कारण ऐसे चरित्र

के पुरुष उत्पन्न होते हैं। इन रोमांसों में ऐसे लोगों की वकालत की गयी है जो अपने हृदय की प्रवृत्तियों के वश में होकर समाज-निर्मित व्यवस्था को तोड़ते हैं और अपने आचरण से सिद्ध करते हैं कि कृत्रिम नीति की अपेक्षा सहज व्यवहार में कहीं अधिक पुनीत एवं धर्मनिष्ठ जीवन होता है। इस प्रकार के रोमांस हृदय की प्रवृत्तियों को लेकर कथावस्तु तैयार करते थे, जिसके कारण रोमैण्टिक भावों को उन्होंने पुष्ट किया और उस परिवर्तन की जो इस समय साहित्य में बड़ी तेजी से हो रहा था गति को उत्तेजित किया।

मिसेज़ ऐन रैडक्लिफ़—दि मिस्ट्रीज़ आफ़ यूडाफ्लो

"गाथिक" रोमांस साहित्य में सब दूसरे लेखकों से सफल मिसेज ऐन रैड-क्लिफ़ (१७६४—१८२३) थीं, जिन्होंने अठारहवी शताब्दी के अन्तिम दशक में पाँच रोमांस पूरे विस्तार से लिखे थे। इन रोमांसों में से जगत्-विख्यात दि मिस्ट्रीज़ आफ़ यूडाल्फ़ो (१७९४) नामक रोमास था। इन्ही का दि इटैलियन (१७९७) नाम का दूसरा रोमांस भी लोकप्रिय हुआ। इन दोनों रोमासों में "गाथिक" प्रतिरूप के गुण और दोष दोनों ही मौजूद हैं। उनमें रहस्यमय घटनाएँ है जिनका बड़ी चतुराई से प्रयोग किया गया है और प्रयत्न किया गया है कि प्रत्येक रहस्यमय घटना तथा अलौकिक अनुभव की विवेकपूर्वक व्याख्या की जाय। उनकी कथा-वस्तु इतनी अच्छी तरह सँवार-सुधारकर ठीक की गयी है कि पाठक विचारते रह जाते हैं कि जितने ढंगों से व्याख्या की गयी है उनमे से कौन-सी व्याख्या माननीय है। प्रत्येक रोमांस में बड़े सुन्दर दृश्यों के वर्णन दिये गये है जिनमें इटली की प्राकृ-तिक सुन्दरता तथा उस देश का वातावरण सजीव करके दिखलाया गया है। परन्तु ये दृश्य और यह वातावरण कल्पित है और रोमैण्टिक भाव उत्पन्न करने के लिए विशेष स्थानों पर चित्रित है। जिन रीति-रिवाजों या सामाजिक सस्थाओं का वर्णन किया गया है वे भी कल्पित है और विशेष भाव उत्पन्न करने के लिए प्रयोग में लाये गये हैं। कहानी के पात्र भी या तो बिल्कुल ही कल्पित है या लौकिक रीति से जीवन बिताने और काम करनेवाले हैं।

लेखक को इटली का अनुभव न होने के कारण ये सारे चित्र ऐसे है जैसे कहानी में आवश्यक समझे गये हैं। कल्पना को इस प्रकार काम में लाने के कारण पात्रों में से कई एक गेटे के वर्टर की भाँति उन गुणों और दोषों के पुतले बन गये हैं जो इस समय प्रचलित हो रहे थे। मिसेज़ रैडक्लिफ ने एक विशेष ढाँचे के अनुसार चरित्र-

चित्रण किया है। जान पड़ता है कि उन्होंने कोई सूत्र अथवा नुसखा बना रखा था जिसके अनुसार विना किसी परिवर्तन के वे पात्रों को कठपुतली के समान अपनी कहानियों में रखती है।

दि मिस्ट्रीज़ आफ यूडाल्फो एक सुन्दर युवती की कहानी है जो माता-पिता की मृत्यु हो जाने के कारण अपनी चाची के रक्षण में रहती है। इस चाची को सामाजिक उन्नति की उत्कट आकांक्षा रहती है। युवती सामान्य आय के एक मनुष्य से विवाह करना चाहती है जिसे उसकी चाची स्वीकार नहीं करती। युवती को उसकी चाची ऐपिनाइन्स में ले जाकर एक पुरानी गढ़ी में बन्द कर देती है। गढ़ी में उसी प्रकार के अँधेरे कमरे, गुप्त रास्ते, छिपे हुए दरवाजे, खुलने वाली दीवारें आदि हैं जैसी "गाथिक" रोमांसों के सूनसान और भुतहरे घरों में होती है। अलौकिक अथवा प्रकृत्यतीत घटनाओं का भयभीत करनेवाला अन्धकार चारों ओर छाया हुआ है, जो मन में तरह-तरह की भावनाएँ उत्पन्न करता है। ऐसे वातावरण में और ऐसे भयानक स्थान में रहस्य से भरी घटनाएँ होती हैं जो भय से हृदय को हिला देती हैं और किसी की समझ में नहीं आतीं। कुछ समय तक गढ़ी में कैद रहने के उपरान्त युवती, जिसका नाम एमिली है, क़ैद से निकल भागती है और अपने पसन्द किये हुए पुरुप से अपना विवाह कर लेती है। कहानी केवल इतनी ही है, किन्तु ऐपिनाइन्स के पहाड़ी का दृश्य तथा एमिली की उदासी एवं चिन्ताकुल दशा और उसका निराधार जीवन, सन्विप्रकाश के लिए उसकी उत्कण्ठा, एकान्त और प्राकृतिक दृश्यों के प्रति उसका अनुराग, इन सबका सुन्दर वर्णन कथावस्तु के अनुरूप है और रोमैण्टिक आन्दोलन तथा उससे प्रभावित साहित्य के स्वर में लिखा गया है।

मिसेज़ रैडक्लिफ के ये सुन्दर वर्णन "रोमैण्टिक मूवमेण्ट" के लिए सहायक हुए। कहानी में जो कुछ होता है उसका प्रभाव तीव्र करने में पृष्ठभूमि के वर्णनों से सहायता मिलती है और बिना कहे वहुतसी बातों का ध्यान पाठकों को हो जाता है। जिस प्रकार इन रोमांसों के पात्र लेखक की कल्पना में उत्पन्न हुए, उसी प्रकार दृश्य भी घटना को भावपूर्ण करने के लिए उसके चारों ओर फैला दिये गये हैं। संकेत से इस प्रकार काम लेने में एक वस्तु की दूसरी से तुलना करना तथा उनका अन्तर बताना आवश्यक होता है। अपनी समानता से अथवा असमानता से हमारे मन में एक वस्तु दूसरी की सूचना देती है और इस प्रकार प्रत्यक्ष से कल्पित की सूचना मिलती है। उपन्यासकार जब पात्रों तथा दृश्यों को अपनी कहानी में

व्यवस्थित करता है तो इसी प्रकार प्रत्यक्ष से उनके विचार कल्पित की ओर जाते हैं और वह कहानी का संसार अपनी कल्पना में बना लेता है। इन कल्पित वस्तुओं का मूल्य अथवा माहात्म्य उनकी नवीनता पर निर्भर नहीं होता, अर्थात् उनका मूल्यांकन करने में यह नहीं देखा जाता कि वे प्रत्यक्ष से कितनी विभिन्न हैं; देखा यह जाता है कि उनमें और अनुभव किये हुए संसार की वस्तुओं में क्या सम्बन्ध है, क्योंकि प्रत्येक कल्पित वस्तु की नींव अथवा जड़ अनुभव में होती है, कँगूरे अथवा शाखाएँ कितनी ही ऊँचाई पर क्यों न पहुँच जायँ।

दृश्यों तथा पात्रों को इस प्रकार प्रयोग में लाने में मिसेज़ रैडक्लिफ़ ने काव्य-कला की प्रणाली को गद्य में प्रचलित किया और अपने पात्रों की चित्त-वृत्ति तथा उत्कण्ठा को सूर्य, चन्द्र एवं जलवायु के अधीन कर दिया। प्राकृतिक वस्तुओं में इस प्रकार से एकता (harmony) उत्पन्न करने में संवेदना तथा सहानुभूति का होना आवश्यक है, जिसकी मिसेज़ रैडक्लिफ में कोई कमी नहीं थी। उपन्यास के अन्य तत्त्व, अर्थात् विशेष स्थितियों में विशेष प्रकार के चरित्र का निर्माण, चरित्र-निर्माण में प्राकृतिक दृश्यों की सहायता, मनुष्य के अनुभव किये हुए संसार का कल्पना की आदर्श स्थितियों में निरूपण करना तथा उपन्यास में परस्पर के व्यवहार से मनोवैज्ञानिक तथ्यों को प्रकट करना; यह सब मिसेज़ रैडक्लिफ ने अपने रोमांसों में कर दिखाया और रोमैण्टिक आन्दोलन को बल देकर उसे प्रौढ़ता प्रदान की।

मैथ्यू ग्रेगरी लेविस और उसका 'मंक'

मिसेज़ रैडक्लिफ़ के रोमांसों का कोमल संसार और उसकी सूक्ष्म चेतना तथा उसकी निष्कपट आशंका बहुत समय तक शान्त नहीं रह सकी। त्रास उपजाने वाले उपन्यासों के सारे अस्त्र-शस्त्र लेकर मैथ्यू ग्रेगरी लेविस ने उस संसार पर आक्रमण कर दिया और लोग भयभीत हो गये। यह लेखक इस समय के अन्य साथियों में, कवि तथा हँसमुख होने के कारण, सर्वप्रिय हो रहा था और बड़ा साहित्यिक एवं रसिक समझा जाता था। उसे जर्मन साहित्य का अच्छा ज्ञान था और वह इस ज्ञान का अंग्रेज़ी साहित्य की उन्नति के लिए अच्छा प्रयोग करता था। उसने जर्मनी के रोमैण्टिक मूवमेण्ट से प्रभावित होकर कविता तथा उपन्यास में कुछ नयी बातें अंग्रेज़ी साहित्य को दीं जो आगे चलकर प्रयोग में आयीं। लेविस के ऊपर गेटे के सारोज़ आफ़ वर्टर का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा था, परन्तु शीघ्र ही

वह उसके सूक्ष्म बोध तथा अश्रुपूर्ण कोमलता के भावो की पहुँच के बाहर निकल गया। सन् १७९४ मे उसने वर्टर की हँसी उडाने के लिए एक छोटी पुस्तक भी लिखी जिसमे भावुकता को मनुष्य की दुर्बलता बताया तथा रोमासकारों को उन आपत्तियों की सूचना दी, जो भावुकता के घिनौने मार्ग पर चलनेवालो के सामने आती है। मिसेज रैडक्लिफ के रोमासो से प्रभावित होकर उसने ऐम्ब्रोजिओ ऑर दि मक (Ambrosio, or the Monk) नामक पुस्तक लिखी, जिसमे उसने वे सारे प्रतिरोध तोड दिये जो मिसेज रैडक्लिफ ने लगाये थे और ऐसे छायाचित्रों द्वारा आतंक उत्पन्न करने की चेष्टा की जो प्राकृतिक तथ्यो के विरुद्ध कभी-कभी भदेस भी हो गये।

लेविस कभी आतक की व्याख्या नही करता और न उन दुर्बोध आभासो के विस्तृत वर्णन ही देता है जो दुर्घटनाओ की भयानक छाया पहले से डालकर उन्हे और भी भयकर बना देते हैं। कभी-कभी वह इस छाया की आकृति दिखाकर ही अपना काम निकाल लेता है और घटना की आवश्यकता नही रहती। उसकी कल्पना नवीन प्रकार के आतक तथा नयी-नयी भयकर घटनाओ के निर्माण मे बडी निपुण है। अलौकिक बातो का वह अच्छा प्रयोग नही करता और न उनकी ओर सकेत ही करके काम निकालता है। भय तथा आतक उत्पन्न करने के लिए वह एलिजबेथ काल के प्रचलित विचारो से काम लेता है। यदि लेविस की लेखन-प्रणाली इतनी अच्छी न होती तो कदाचित् उसकी पुस्तक भी इसी प्रकार के सैकडो रोमासो की भाँति साहित्य से लुप्त हो गयी होती।

चार्ल्स राबर्ट मच्यूरिन—मेलमथ दि वाण्डरर

इस काल का वह लेखक जो मिसेज रैडक्लिफ तथा लेविस दोनो से ही इस प्रकार के उपन्यास लिखने मे बाजी मार ले गया, चार्ल्स राबर्ट मच्यूरिन (Charles Robert Maturin) था। उसका जन्म सन् १७८२ मे हुआ और पचीस वर्ष की अवस्था मे उसने अपना पहला उपन्यास 'दि फेटल रिवेज ऑर दि फैमिली ऑफ मोण्टोरियो' (The Fatal Revenge, or the Family of Montorio) लिखा था। उसका कथन था कि भावना का कोई भी स्रोत इतना प्रबल तथा सार्वलौकिक नही होता, जितना वह भय होता है जो अदृश्य कारण से उत्पन्न होता है। मच्यूरिन आयरलैण्ड का पादरी था और उन सब उपन्यासकारो का मार्गदर्शक कहा जाता है जो आतक की सामग्री लेकर अपनी कथावस्तु तैयार करते है। वह अपने जीवन मे उतना ही असफल रहा जितना ऐसे उपन्यास लिखने मे सफल

हुआ। उसे भय की सूचना (suggestion) देने की रीतियों का जैसा अच्छा ज्ञान था वैसा न तो मिसेज़ रैडक्लिफ को था न लेविस को। मानसिक अवस्थाओं का विश्लेषण करने की उसमें बड़ी क्षमता थी और अलौकिकता (The Supernatural) का जितना गम्भीर प्रयोग उसने किया है उतना किसी दूसरे लेखक ने नहीं किया। भयसूचक संकेतों से उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ इतनी तीव्र हो जाती है और वह ऐसा तन्मय होकर संकेतों से काम लेता है, मानो वह स्वयं उस आतंक से काँप रहा हो जिसका वह चित्रण करता है। उसे सुन्दरता भी वही पसन्द आती है जो भय के भावों को उत्पन्न करती हो। प्राकृतिक दृश्य तथा मनुष्य भी वह ऐसे लेकर अपनी कहानियों में रखता है जो सहज ही भय उत्पन्न करते है अथवा भयकर घटनाओं से सम्बन्ध रखते है।

मच्यूरिन की सबसे अच्छी पुस्तक मेलमथ दि वाण्डरर (Melmoth the Wanderer) है जो उसने सन् १८२० मे प्रकाशित की थी। इस उपन्यास में सत्रहवीं शताब्दी के एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो अपनी आयु बढाने के लिए आत्मा को शैतान के हाथ बेच देता है। वह संविदा केवल एक ही शर्त पर तोड़ी जा सकती थी और वह शर्त यह थी कि कोई दूसरा व्यक्ति उन्ही शर्तो पर अपनी आत्मा को बेच दे। यद्यपि यह संविदा सत्रहवी शताब्दी मे हुई थी किन्तु मेलमथ दि वाण्डरर उपन्यास लिखे जाने के काल में जीवित था। कथावस्तु कुछ इस प्रकार सँवारी-सुधारी गयी है कि उपन्यास मे काल और स्थान का कोई अर्थ नही रह जाता। संविदा की शर्ते मेलमथ ने बारी-बारी से कई दुःखी मनुष्यों के सामने रखी और उनके दुःख दूर करने का जिम्मा लिया, परन्तु किसी ने भी वे स्वीकार नहीं की। उपन्यास में उन दुःखी मनुष्यों की कहानियाँ है जिन्हें बारी-बारी से मेलमथ ने सविदा की शर्ते मनवाने की चेष्टा की थी—स्टैण्टन जो पागलखाने में बन्द पड़ा है, एलिवर मार्टिमर जिसके भयंकर अनुभव नरक के वर्णनो से अधिक रोमांचकारी है, वेलबर्ग जो अपने प्यारे बच्चों को अपनी आँखों के सामने भूख से तडपते देखता है, और मेलमथ की पत्नी इसीडोरा—सभी लोग अपनी आत्मा को शैतान के हाथ बेचकर संसार में सुखी होने से इन्कार कर देते है। मेलमथ का प्रस्ताव इन सब कहानियों को एक दूसरी से मिलाता है और उनको जीवन की घोर वेदनाओं की अपेक्षा अधिक घृणित बताता है। मच्यूरिन की कल्पना में प्राकृतिक सत्य का निर्वाह आवश्यक नहीं समझा जाता। आधी रात को मेलमथ और इसीडोरा का विवाह अनहोनी बातों के लिए साहित्य में प्रसिद्ध है।

मच्यूरिन ने जो दृश्य खीचे है उनमें अद्‌भुत वस्तुएँ एकत्रित कर दी हैं। हाहाकार मचानेवाली आँधियाँ जो एक-एक क्षण में गरम और ठण्डी होती है, जल के वहने की गरज जिससे कान-पड़ी आवाज सुनाई नही देती परन्तु जो दिखाई नहीं देता, भाँति-भाँति के पेड़-पोवे जिनका गहरा हरा रग और लिवलिवी चमक रात्रि के अँधरे मे दूर से दिखाई दे, आग की ऊँची लपटे जो कभी भयानक रूप धारण करके एक ओर लपके और कभी नीची होकर पृथ्वी पर फैल जायँ—इस प्रकार की अन-होनी घटनाएँ एक स्थान पर एकत्रित करके मच्यूरिन आतंक उत्पन्न करता है। ऐसे दृश्यो के वीच मे मेलमथ की पत्नी एक खिड़की में से चन्द्रमा की ओर देखती है "और अपने उस जीवन का स्मरण करती है जब वह आकाश नें विचरण करती और चन्द्रमा को अपना पिता तथा तारों को अपना वन्धु समझती थी।" मच्यूरिन छाया को काया से पहले देखता है और वे अदृश्य आत्माएँ जिनका प्रयोग वर्ड-स्वर्थ अपनी कविता मे करता है, कभी-कभी मच्यूरिन आतक उत्पन्न करने को अपने उपन्यासों मे वड़े तीव्र प्रभावों के सहित व्यवहार मे लाता है। कभी-कभी वह रहस्यों की ओर सकेत करके दृश्यों तथा अनुभवों की गम्भीरता वढ़ा देता है, जैसे "वह समुद्र जिसका विस्तार तथा जिसकी निस्तव्यता हृदय को शान्ति प्रदान करती है", "वह पहाड जिनकी सीधी चट्टाने तथा गहरी खोहे आश्चर्य के साथ मन में भय उत्पन्न करती है", "ऐसे जगल जिनकी घनी छाया गम्भीर एवं पवित्र विचारों द्वारा आत्मा को वल देती है।"

उपन्यास में सिद्धान्त-प्रचार—शिक्षाप्रद साहित्य

वालपोल के उस कथन के होते हुए भी, जो उसके कास्ल आफ़ आटरैन्टो की भूमिका में उसने किया था और जिसमें उसने "गाथिक उपन्यास" का उद्देश्य सदा-चार और पुण्यशीलता वताया था, हमे यह कहना पड़ता है कि मच्यूरिन तथा दूसरे इसी प्रकार के लेखकों के उपन्यास कोई ऐसा उद्देश्य पूरा नहीं करते। उनका एक मात्र उद्देश्य पाठकों का मनोरजन है। इसी काल में क्रान्तिकारी रोमैन्टिक लेखकों के एक संघ ने उपन्यास में गम्भीर विषयों का आयोजन प्रारम्भ किया और उससे वह अपने विशेष सिद्धान्तों के प्रचार का काम लेने लगा। धीरे-धीरे इन उपन्यास-कारों के हाथ में कथावस्तु और पात्र सामाजिक समस्याओं के अधीन होकर सुधार का काम करने लगे। व्यक्ति और समाज की बुराइयों की ओर उपन्यासों में ध्यान दिया जाने लगा और उन बुराइयों को दूर करने की रीतियों पर विचार किया जाने

लगा। जो उपन्यास इस उद्देश्य से लिखे जाते थे उनमें कलात्मक गुणों की अपेक्षा सिद्धान्तों के वादविवाद पर अधिक ध्यान दिया जाता था। जैसे-जैसे ये सिद्धान्त समाज में स्वीकार होते गये उनके प्रचार करनेवाले उपन्यासों को लोग भूलने गये, यहाँ तक कि शीघ्र ही ऐसा समय आ गया जब उनका नाम भी लोग भूल गये।

इन उपन्यासों में जिन सुधारों पर अधिक विचार किया गया वे बालकों तथा युवकों के लालन-पालन एवं उनकी शिक्षा से सम्बन्ध रखते थे। नवयुग में भी इन्हीं विषयों पर बहुत-सी पुस्तकें लिखी गयी थीं। उस समय की शिक्षाप्रणाली में प्राचीन साहित्य के अध्ययन पर विशेष ज़ोर था और जीवन को सफल बनाने के लिए उसी साहित्य से प्रेरणा ली जाती थी। इस काल में जिस शिक्षा-प्रणाली का प्रचार उपन्यासों द्वारा किया जाता था वह प्रकृति में केन्द्रित थी। प्राकृतिक प्रभावों के वश में व्यक्ति का स्वभाव बनता और बिगड़ता है, मनुष्य की प्रकृति उस क्रिया और प्रतिक्रिया का फल होती है जो व्यक्ति और समाज के बीच सदा एक बन्धन के रूप में व्याप्त होती हैं।

सन् १७६२ में रूसो (Rousseau) ने एमिली (Emily) नामक पुस्तक में अपने शिक्षा सम्बन्धी विचारों को प्रकट किया था। उसका मत था कि मनुष्य की सारी शिक्षा प्रकृति के नियमों के अनुसार होनी चाहिए। बच्चे की जिज्ञासा और कौतूहल को उत्तेजित करके, उसकी बुद्धि को प्रोत्साहित करके ज्ञान की ओर उसके मन को ले जाना चाहिए। कभी बच्चे से दूसरों के सोचे हुए विचारों को जबर्दस्ती मनवाने की चेष्टा नहीं करनी चाहिये। अठारहवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में शिक्षासिद्धान्तों को लेकर जितने उपन्यास लिखे गये उनकी तह में रूसो की यह पुस्तक किसी न किसी रूप में उपस्थित है और रूसो का यह सिद्धान्त कि जीवन की व्यवस्था प्रकृति के नियमों के अनुसार होनी चाहिए उन सारे उपन्यासों में व्याप्त है।

इस प्रकार के उपन्यासों में बहुधा दो बच्चों को लेकर एक को सामाजिक रूढ़ियों के अनुसार पाल-पोसकर प्रचलित प्रणाली द्वारा शिक्षा दी जाती है और दूसरे को प्रकृति के नियमों के अनुसार स्वतन्त्रता के वातावरण में बड़ा होने दिया जाता है और उसकी शिक्षा भी उन्हीं नियमों के अनुरूप होती है। उपन्यासकार उन बच्चों के बड़े हो जाने पर एक दूसरे की आपस में तुलना करता है और प्राकृतिक ढंग को उत्तम सिद्ध कर दिखाता है। इन शिक्षा सम्बन्धी उपन्यासों में हेनरी ब्रुक (Henry Brooke) का लिखा हुआ दि फूल आफ़ क्वालिटी (१७६६)

(The Fool of Quality) और टामस डे (Thomas Day) का सैण्डफ़र्ड एन्ड मर्टन (१७८६) (Sandford and Merton) तथा एलिज़बेथ इंचवाल्ड (Elizabeth Inchbald) का लिखा हुआ नेचर एन्ड आर्ट (१७९६) (Nature ard Art) बहुत प्रसिद्ध हुए और अब तक पढ़े जाते है।

विलियम गाडविन और उसका उपन्यास केलेब विलियम्स

फ्रेन्च रिवोल्यूशन के काल में व्यक्ति-जीवन तथा सामाजिक स्थितियों पर नया प्रकाश पड़ा और विविध रूपो मे उन्हें देखने की चेष्टा की गयी। उसी प्रवृत्ति से प्रभावित होकर उपन्यासों मे भी सारे मनुष्य-जीवन की समीक्षा की गयी और विवाह तथा वैयक्तिक सम्पत्ति एव शासनप्रणाली, सभी विषयों को नये दृष्टिकोण से विचारा गया और बड़ी स्वतन्त्रता से लोगों ने अपने विचार प्रकट किये। विलियम गाडविन (१७५६—१८३६)" इंग्लैण्ड में उन सब लोगों का नेता था जो क्रान्तिकारी रोमैन्टिक विचारों का अपने उपन्यासों मे प्रचार कर रहे थे और फ्रेन्च रिवोल्यूशन के सिद्धान्तों से सहानुभूति रखते थे। विलियम गाडविन (William Godwin) का लिखा हुआ केलेब विलियम्स (Caleb Williams) नामक उपन्यास इस समय बहुत प्रभावशाली और प्रसिद्ध हो रहा था। विश्वविद्यालयों के युवकों के लिए तो यह उपन्यास मानो बाइबिल हो गया था। गाडविन ने यह उपन्यास इग्लैण्ड की सांविधानिक रीति तथा सामाजिक व्यवस्था के दोष दिखाने के लिए लिखा था। उसने पुस्तक में यह सिद्ध करने की चेष्टा की थी कि समाज और व्यक्ति दोनों की दुर्गति का कारण अभिजातवर्ग के आदर्श तथा संघटन है। केलेब विलियम्स का कथापुरुष फ़ाकलैण्ड कठिन प्रकोप के वश एक मनुष्य का वध कर डालता है और अपनी बदनामी के डर से उस समय भी कुछ नही कहता जब एक ग़रीब किसान उस अपराध के लिए दण्ड पा जाता है। अपने सुयश की रक्षा मे वह घोर अन्याय हो जाने देता है और बिरादरी में भला बना रहता है। विधिवशात् फ़ाकलैण्ड का सेक्रेटरी केलेब विलियम्स इस गुप्त भेद को जान जाता है और उसके इस अपराध के कारण फ़ाकलैण्ड उसे नष्ट कर देना चाहता है। गाडविन ने उन ढगों का बड़ा प्रभावयुक्त वर्णन दिया है जिनसे फ़ाकलैण्ड और सारा अभिजातवर्ग अपने सामाजिक तथा कानूनी बल का प्रयोग करके निम्न श्रेणी के लोगों का सर्वनाश कर देता है। निम्न श्रेणी के ऐसे लोगों का भी बड़ा सुन्दर वृत्तान्त गाडविन ने दिया है जो इन ढंगों के शिकार होते है। इस वृत्तान्त से भी अधिक

प्रभावयुक्त वर्णन उस विध्वस का है जो ऐसे अन्याय करनेवालों का होता है। अभिजातवर्ग के उदारचित्त तथा शुभचिन्तक एव उन्नत व्यक्तियो के सर्वनाश का वृत्तान्त गाडविन ने बड़ी सहानुभूति के साथ लिखा है और बताया है कि किस प्रकार उनका वर्गीय पक्षपात तथा समाज का बल दूसरो को नष्ट करने के साथ-साथ उनकी आत्मा को भी घायल करता है और अन्त मे उन्हे भी नष्ट कर देता है। उपन्यास का अधम पात्र सुयश है जो हजारो झूठी बातो का मूल कारण होता है और इसी अधम पात्र के केलेब विलियम्स तथा स्वय फाकलैण्ड भी शिकार होते है। फाकलैण्ड के जीवन तथा उसके भाग्य से पाठको को क्या शिक्षा मिलती है, उसके सम्बन्ध मे गाडविन एक स्थान पर लिखता है—"मनुष्य की बुद्धि तथा चातुरी एव उनके गुण और सद्भावनाएँ भ्रष्ट समाज और दूषित वातावरण मे उसके काम नही आ सकते, चाहे वह किसी श्रेणी का मनुष्य क्यो न हो।"

अलौकिक अथवा प्रकृत्यतीत के यन्त्र तथा उपकरण का प्रयोग न करके भी गाडविन ने इस उपन्यास मे दिखाया है कि कैसे तत्कालीन समाज की रूढियो और कानून की क्रूरता को अनुभव करके आतकपूर्ण कहानी बनायी जा सकती है। केलेब विलियम्स (१७९४) की कथावस्तु एक दुःस्वप्न है जिसने एक प्रभावशाली लेखक के हृदय को व्याकुल कर दिया है। गाडविन का दृढ विश्वास था कि मनुष्य अपनी विवेक-बुद्धि के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता और अपने सब कार्य करता है; ऐसा न करना उसके लिए असम्भव है, कृपा और सुजनता का एकमात्र आधार तथा उद्गम विवेक-बुद्धि होती है। यही कारण है कि चेतन प्राणी बिना कानून और बिना समाज एव सस्था की व्यवस्था के जीवित रह सकता है। इस सत्य मे उसका ऐसा दृढ निश्चय था और तत्कालीन दुर्गति का इतना अच्छा अनुभव था कि उसकी कल्पना तथा तीव्र भावना ने मनुष्य-जीवन के आतक को सदेह उसके सम्मुख खड़ा कर दिया।

गाडविन से पहले के उपन्यासकार विशेष कर राबर्ट बेज (१७२८—१८०१) और टामस होलक्राफ्ट (१७४५—१८०९) क्रान्तिकारी युवको के कार्यो तथा अभिजातवर्ग के विरोध को अपने उपन्यासो मे दिखाते थे और इन दोनो वर्गो के विचारो की तुलना तथा समीक्षा करते थे। गाडविन ने अपने उपन्यासो मे मनुष्य के दुःखो का चित्र खीचा और अपने मुख्य पात्रो के जीवन को दुःस्वप्न के रूप मे देखकर उसकी भयकर दशा का वर्णन किया, विचारो पर से ध्यान हटाकर वास्तविक अनुभवों पर जोर दिया और अपने दूसरे सेन्ट लिओन (१७९९) नामक

उपन्यास में उसने क्रान्तिवाद को भी छोड़ दिया। मिसेज़ रैडक्लिफ़ के प्रभाव में आकर उसने समकालीन इग्लैण्ड की दशा पर से भी ध्यान हटाकर स्पेन देश की सोलहवी शताब्दी को पृष्ठभूमि बना लिया। अब उसने सायंकाल तथा सन्धि-प्रकाश और आँधी-पानी एवं काल कोठरियों और गुफाओं के दृश्यों का प्रयोग करना आरम्भ किया और इस प्रकार आतंकपूर्ण उपन्यास लिखने की चेष्टा की यह चेष्टा असफल इस कारण रही कि गाडविन बौद्धिक प्रवृत्ति का लेखक था और इस प्रणाली के लिए संवेदना तथा इन्द्रियग्राहिता की विशेष आवश्यकता होतीहै।। इसके बाद के उपन्यासों में गाडविन ने यह प्रणाली छोड़कर दूसरे नमूनों का अनु-सरण किया और साधारण जीवन, बल्कि नित्यप्रति की समस्याओं को लेकर पुस्तकें लिखी। उसके सामने मिसेज इचबाल्ड (Mrs Inchbald) की एक सिम्पल् स्टोरी (१७९१) का बड़ा अच्छा नमूना था, जिसमें लेखिका ने अच्छी शिक्षा का फल दिखाया है।

सन् १८०५ मे गाडविन ने फ्लीटवुड (Fleetwood) नामक उपन्यास लिखा, जिसमे वह अपने विचारों मे बहुत कुछ बदला हुआ जान पड़ता है। अति की ओर झुकते हुए विचार इस उपन्यास मे बहुत कुछ समभाव प्रकट करने लगे हैं और सुधार तथा परिवर्तन सम्बन्धी धारणा भी बदल गयी है। वह अब न तो अधीर है न व्यग्र, और भली प्रकार यह समझने लगा है कि सुधार की जड़ें जब तक समाज में दूर तक नहीं फैलायी जाती और उनमे से दूसरे पौधे नही निकलते, वह फलीभूत नही हो सकता। इस क्रम मे काफी देर लगती है जिससे अब वह घबराता नहीं। उपन्यास मे उसकी विशेष सफलता, आचारनीति को तीव्र भावना द्वारा कल्पना में उत्पन्न की हुई वस्तुओं तथा व्यक्तियों से एकरूप करके पाठकों के सामने लाने में रही है। इस सफलता के बड़े सुन्दर उदाहरण उन पुस्तकों में मिलते हैं जो गाड-विन ने बालकों तथा नवयुवकों के लिए लिखी है। इन्ही पुस्तकों में हमें उसका दृश्यों का सूक्ष्म बोध तथा उसकी तीव्र चेतना का भी पूरा ज्ञान होता है और उसकी बालकों के विचार एव भावना को समझने की शक्ति का पता चलता है। इन विचारों एव भावनाओं को उसने ऐसी अनुभवपूर्ण रीति से लिखा है जैसे कि वह अपनी बाल्यावस्था के अद्भुत काल को फिर से व्यतीत कर रहा हो।

उपन्यास में विभिन्न प्रणालियों का मेल

अठारहवी शताब्दी के अन्तिम दशक में विभिन्न प्रकार के पूर्वकालीन उपन्यास

एक दूसरे में ऐसे घुल-मिल गये कि उनकी विशेषताओं के कारण विविध नयी परिपाटियाँ उत्पन्न हो गयीं। शताब्दी के समाप्त होते-होते आचार-व्यवहार के उपन्यासों (The Novels of Manners) में सिद्धान्तों पर वाद-विवाद होने लगा और धीरे-धीरे उनमें मानवता तथा प्रकृति के ऐसे आदर्शों का भी प्रयोग किया जाने लगा जिनके तथ्यों को हाल में ही भावनात्मक उपन्यासों में स्वीकार किया जाने लगा था। इसके साथ ही आतंकपूर्ण उपन्यासों (Terror Novels) में प्राकृतिक दृश्यों को रसयुक्त तथा भावपूर्ण होना आवश्यक होता जाता था और पृष्ठभूमि ऐसी रची जाने लगी थी जो किसी सिद्धान्त को बीच में न लाकर भी मन में गम्भीर विचार उत्पन्न करने की क्षमता रखती हो। स्वयं गाडविन ने भी इस सम्मिश्रण के कार्य में योग दिया था और उसने आतंकपूर्ण उपन्यास के यन्त्र और उपकरण क्रान्तिकारी अभिप्राय सिद्ध करने के लिए अपनी पुस्तकों में प्रयुक्त किये थे। इस सम्मिश्रण का फल यह हुआ कि दिन पर दिन उपन्यास में पेचीदापन और उसकी कथावस्तु में विस्तार आता गया, यहाँ तक कि उसमें जीवन और उसकी जटिल समस्याओं के चित्रण की सामर्थ्य उत्पन्न हो गयी। कहानी-साहित्य के तीनों विभाग पहले की भाँति बने तो रहे, परन्तु जैसे-जैसे समय बीतता गया उनमें से प्रत्येक के प्रसार तथा अभिसीमा में विस्तार होता गया। क्या रोमांस, क्या आचार-व्यवहार के यथार्थ चित्रण करनेवाले उपन्यास और क्या सिद्धान्तवादी उपन्यास; सभी में समयानुसार ऐसा परिवर्तन हुआ। अतीत के ज्ञान में बहुत वृद्धि हो गयी थी और दूरस्थ देशों के बारे में जानकारी अधिक हो गयी थी, जिस कारण रोमांस के लिए प्रचुर सामग्री एकत्र थी, जिसका लेखकों ने अच्छा उपयोग किया। पाठकों की संख्या बहुत बढ़ गयी थी और लोगों में मानव-जीवन की विविध परिस्थितियों के जानने की उत्कण्ठा बहुत हो गयी थी, जिसके कारण यथार्थ चित्रण (Realistic Novels) के उपन्यासों के लिए भी संसार अधिक विस्तृत हो गया था।

इस शताब्दी के चतुर्थ चरण से पूर्व कहानी-साहित्य का संसार अति संकीर्ण था और उस संसार के स्त्री व पुरुष बहुधा वे लोग होते थे, जिन्हें रोटी कमाने की कोई आवश्यकता नहीं होती थी और जिनके जीवन में मनुष्यों के अतिरिक्त उपन्यासों के कुछ पात्र इन्हीं के आश्रित लोग भी होते थे, जो इनसे अलग नहीं किये जाते थे। ये सब लोग कथावस्तु के क्रम को आगे बढ़ाने के लिए ही मानो जीवित रहते थे, और कोई काम नहीं करते थे। अठारहवीं शताब्दी के समाप्त होते-होते ऐसे उपन्यास लिखे जाने लगे जिनमें किसी विशिष्ट जीवन तथा विशिष्ट व्यवसाय

अथवा किसी विशिष्ट स्थान की समस्याओं पर विचार एवं उनकी अवस्था का वृत्तान्त होता था।

उन्नीसवी शताब्दी का आरम्भ होते ही हमें समुद्री जीवन, सैनिक जीवन तथा अपराधियों के जीवन के उपन्यास मिलते है। वाणिज्य एवं राज्य-शासनपद्धति तथा खेल-कूद से सम्बन्ध रखनेवालों और गिरजे के कर्मचारियों तथा दूसरे परिश्रम करनेवालों के जीवन की सामग्री के भी उपन्यास मिलने लगते है। इन उपन्यासों मे इन सबके जीवन की विशेष कठिनाइयों, खतरों और प्रलोभनों का वास्तविक चित्रण है। जो उपन्यास किसी उद्देश्य को लेकर लिखे जाते थे उनमें भी परिवर्तन तथा उन्नति हुई और तत्कालीन गम्भीर विचारों को लेकर तथा उनके द्वारा जो सामाजिक परिवर्तन हुआ था, उसके ऊपर बड़े प्रभाव डालनेवाले और महत्त्वपूर्ण उपन्यास लिखे गये। शासन-पद्धति में सुधार की जो चेष्टा की गयी, अथवा श्रमिक वर्ग ने जो आन्दोलन किया और धर्म तथा साइन्स के बीच जो झगड़ा रहा, इन सब गम्भीर विषयों को लेकर बड़े महत्त्वपूर्ण उपन्यास लिखे गये, जिनका पाठकों पर बहुत गहरा प्रभाव पडा।

इस प्रकार जैसे-जैसे उपन्यास का संसार विस्तृत होता गया, कहानी-साहित्य के तीनो विभागों की विशेषताएँ समाप्त होती गयीं और उनके सम्मिश्रण के फलस्वरूप उपन्यास का महत्त्व बढ़ता गया। रोमांसकार यात्रा अथवा अपने अध्ययन से सामग्री प्राप्त करता, परन्तु उसका प्रयोग करते समय वास्तविकता तथा यथार्थ का पूरा ध्यान रखता; वास्तविक जीवन के चित्रण में उपन्यासकार छोटी से छोटी घटना और साधारण से साधारण अनुभव में रोमांस-जैसा ही लालित्य एवं रहस्य तथा सौन्दर्य पाता। साइन्स की उन्नति और उसके आविष्कारों में मायावी तथा आतंकपूर्ण तथ्यों को देखकर उपन्यासकार जो भय और अचम्भा पाठकों के मन में उत्पन्न करने में अब सफलता प्राप्त करता था, वह पहले के लेखकों को "गाथिक" यन्त्रों और उपकरणों के द्वारा उपलब्ध नही हुई थी। इसी प्रकार उद्देश्यपूर्ण उपन्यास (The novel with a purpose) में लेखकों को वास्तविकता के द्वारा कहीं अधिक गहरा प्रभाव डालने का अवसर मिला और उनके क्रान्तिकारी विचार पाठकों को स्वीकार होने लगे।

मिस एजवर्थ और उनके उपन्यास तथा बच्चों के लिए कहानियाँ

अठारहवीं और उन्नीसवी शताब्दी के उपन्यासों का सम्बन्ध मिस एजवर्थ

की पुस्तकों में भलीभाँति दिखाई पड़ता है। इन पुस्तकों को एक लम्बी जंजीर की सुन्दर तथा मजबूत कड़ियाँ समझना चाहिए। मिस एजवर्थ का जन्म सन् १७६७ में हुआ था। उनके पिता आयरलैंड के सुविख्यात शिक्षक थे जिन्होंने कई पुस्तकें शिक्षा के सिद्धान्तों पर लिखी हैं, जिनसे पता चलता है कि वे रूसो के सिद्धान्तों से बहुत प्रभावित थे। मिस एजवर्थ के घर का वातावरण अठारहवी शताब्दी के उथले सामाजिक सुधारों की माँग से गूँजता था। बचपन में ही उन्हें इंग्लैण्ड भेज दिया गया था जहाँ वे अपने पिता के मित्र टामस डे की रक्षा में बड़ी हुईं और शिक्षा पाकर सोलह वर्ष की अवस्था में आयरलैंड लौट गयी। शिक्षकों के सम्पर्क से उन्होंने बचपन से ही बच्चों की देख-रेख तथा शिक्षा पर विचार करना आरम्भ कर दिया था। आयरलैण्ड लौटकर उन्होंने मडाम डि जेनलिस के शिक्षा के विषय पर लिखे हुए पत्रों का अनुवाद किया और अपने पिता को प्रैक्टिकल एजूकेशन नामक पुस्तक (जो १७९८ में प्रकाशित हुई) लिखने में सहायता दी और अपनी पेरेन्ट्स असिस्टेन्ट (१८००) और अर्ली लेसन्स (१८०१) नाम की पुस्तकें लिखीं। उनके पिता के कथन के अनुसार ऐसा कोई समय नही था जब मिस एजवर्थ "पालने से लेकर कब्र तक की शिक्षा के बारे में सोचती और लिखती न रही हों।" इस पर भी उन्होने तत्कालीन आयरलैण्ड के लोगों के जीवन का निरीक्षण किया और क्या अमीर क्या गरीब, सभी श्रेणियों के साथ सहानुभूति का भाव रखा। सन् १७८७ में, जब उनकी अवस्था केवल बीस वर्ष की थी, उन्होंने पेट्रनेज (Patronage) नामक उपन्यास लिखा जो बहुत काल व्यतीत हो जाने पर सन् १८१४ में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास की भूमिका में उन्होंने अपना उद्देश्य बताते हुए लिखा कि वे उस ओछे तथा बनावटी काल में लोगों को सीधे-सादे एवं सदाचारी जीवन के गुण सिखाना चाहती थीं। सौ वर्ष पहले इसी उद्देश्य से एडिसन ने अपने सुन्दर निबन्ध लिखे थे, जो स्पेक्टेटर में प्रकाशित हुए थे। किन्तु मिस एजवर्थ का मन्तव्य इस से अधिक निर्णीत तथा निश्चित था, क्योंकि उनके उपन्यासों ने बहुत-सी बातों में उन्नीसवी शताब्दी के आरम्भ में ही आगे आनेवाले उपन्यासकारों का पथ-दर्शन कराया और बहुत से विषयों पर मत प्रकट किया जो आगे चलकर स्वीकार किया गया। उन्होंने आयरलैण्ड की सामाजिक दशा सुधारने के उद्देश्य को सामने रखकर अपने उपन्यास लिखे थे। सुधार की यह चेष्टा सदा उनके कामों और पुस्तकों की तह मे रही।

जबसे उन्होंने शिक्षा के विषय पर पुस्तकें लिखना आरम्भ किया, कभी उनका चित्त इस उद्देश्य से अलग नहीं हुआ और एकाग्रचित्त से विचारने के कारण उन्हें वे

बातें सूझीं जो इस से पहले किसी लेखक ने शिक्षा के सम्बन्ध में नहीं लिखी थीं। शिक्षा को समाज के वातावरण से अलग न करके उन्होंने व्यंग्यात्मक शैली द्वारा चरित्र की ऐसी सारी त्रुटियों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया जो बालकों की आत्मा को दूषित करती थी और बड़े होने पर उनके जीवन को अव्यवस्थित रखती थी। इस प्रकार शिक्षा के विषय को उन्होंने समाज के सुधार से मिला दिया और अपने उपन्यासों में समाज के चित्रों के साथ ही साथ जीवन को व्यवस्थित करने के सिद्धान्त भी दिये। उनके घर में रूसो के सिद्धान्तों का बड़ा मान था और सारे विचार उन्ही पर केन्द्रित हुआ करते थे। जब मिस एजवर्थ ने शिक्षा पर पुस्तकें लिखना आरम्भ किया तो उन्होंने उन सिद्धान्तों में आंशिक परिवर्तन तथा रूपभेद करके लड़कियों की शिक्षा के अनुकूल किया।

सन् १८०० में कासल् रैकरेन्ट (Castle Rackrent) और १८०१ में बेलिन्डा (Belinda) नामक उपन्यास लिखकर मिस एजवर्थ ने विस्तीर्ण पाठक-जनता को अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में आयरलैण्ड की सामाजिक दशा के चित्र दिये। इन दोनों उपन्यासों का बड़ा आदर किया गया और इनसे तत्कालीन लेखक बहुत प्रभावित हुए। कासल् रैकरेन्ट में उन्होंने एक ऐसे परिवार का वृतान्त दिया जिसकी आर्थिक दशा बिगड़ रही थी। थेडी क्वर्क (Thady Quirk), जिसके मुँह से कहानी कहलायी गयी है वह उस परिवार का पुराना नौकर है, जो बड़ा चतुर मनुष्य है और हँसी-हँसी में अपने सब मालिकों की मूर्खता बताता है—किसी को मुकदमे लड़ने का शौक है तो कोई नशेबाजी में पड़ा हुआ है, किसी के सर पर औरत का भूत सवार है तो कोई झूठी शान में रुपया-पैसा नष्ट करता है। यह उपन्यास उन जमींदारों का बड़ा सुन्दर चित्रण करता है जो अठारहवीं शताब्दी में दोनों हाथों से अपनी सम्पत्ति को लुटाकर अपनी दुर्दशा स्वयं कर रहे थे। यह उपन्यास साहित्य में इस कारण और भी प्रसिद्ध है कि इसी को पढ़ कर सर वाल्टर स्काट ने निर्णय किया था कि किसी समय अथवा स्थान-विशेष की वास्तविक दशा के वर्णन से वैसा ही प्रभावपूर्ण काम उपन्यास की पृष्ठभूमि तैयार करने में लिया जा सकता है जैसा कल्पना से और जीवन का ठीक तथा वास्तविक चित्र भी खीचकर कहानी में रोमैन्टिक दिलचस्पी उत्पन्न की जा सकती है। मिस एजवर्थ का दि ऐब्सेन्टी (The Absentee) नामक उपन्यास, जो उन्होंने सन् १८१२ में लिखा था, उपहासपूर्ण वृत्तान्त आयरलैण्ड के एक ऐसे जमींदार-परिवार का है, जिसके लोग लंदन की सोसायटी में फँसकर अपने को नष्ट कर देते है और अपने देश को बदनाम करते है।

जेन आस्टेन

मिस एजवर्थ के उपन्यासों का विस्तृत ससार जेन आस्टेन (Jane Austen) के संकीर्ण जगत् की विशेपताओं को वलपूर्वक पाठको के सामने प्रस्तुत करता है। जेन आस्टेन के उपन्यास इंग्लैण्ड के ग्रामीण जीवन का चित्रण करते है जिसमें अठारहवी शताब्दी की परम्परा अनवरत चली आ रही थी। उनका जन्म सन् १७७५ में हुआ था और उनके पिता हैम्पशायर के स्टीवेन्टन नामक गाव के पादरी थे, जहाँ जेन आस्टेन के जीवन के लगभग पच्चीस वर्प व्यतीत हुए थे और जहाँ रहकर उन्होने अपने प्रथम तीन उपन्यास लिखे। उनका जीवन घटना रहित और उनका साहित्यिक व्यवसाय इतना स्वच्छन्द था कि उपन्यासों की रचना के अतिरिक्त चरित्र सम्बन्धी कोई विशेप वात उनके वारे मे किसी ने नही लिखी। स्टीवेन्टन के एकान्त वास मे रहकर सन् १७९६ के अक्टूवर और सन् १७९७ के अगस्त मास के भीतर उन्होंने प्राइड एन्ड प्रेजुडिस (Pride and Prejudice) और उसके उपरान्त सेन्स एन्ड सेन्सिबिलिटी (१७९७) (Sense and Sens'bility) तथा अगले वर्प मे नार्थेजर ऐबी (Northanger Abbey, १७९८) नामक तीन उपन्यास लिखे।

सन् १८०१ में उनके पिता ने स्टीवेन्टन छोड दिया और लगभग आठ वर्प पर्यन्त वाथ और उसके समीप के कई स्थानो मे रहे, जिसके उपरान्त वे फिर एकान्त वास में चाटन जाकर वस गये। यहाँ मिस आस्टेन ने दूसरे वर्ग के तीन उपन्यास लिखे—एमा (१८१४), मैन्सफील्ड पार्क (१८१५) और परसुएशन (१८१६)—जो पहले तीनों उपन्यासों के समान ग्रामीण जीवन की पृष्ठभूमि पर लिखे गये है और अठारहवी शताब्दी के चतुर्थ चरण के सवसे सुन्दर फूल कहलाते है। ये उपन्यास लिखे जाने के वहुत साल वाद तक छपे नही, क्योकि सामयिक प्रणाली से उनकी प्रणाली इतनी भिन्न थी कि किसी प्रकाशक ने उन्हे छापना स्वीकार नही किया। सेन्स एन्ड सेन्सिविलिटी पहला उपन्यास था जो १८११ मे प्रकाशित हुआ था, जिसके दो वर्प उपरान्त १८१३ मे प्राइड एन्ड प्रेजुडिस मुद्रित हुई थी। नार्थजर ऐवी सन् १७९८ मे लिखी जाने के उपरान्त एक प्रकाशक के हाथ वेच दी गयी थी परन्तु उसके छपने की नौवत १८१६ तक नही आयी। परसुएशन (Persuation) के समाप्त करने पर मिस आस्टेन का स्वास्थ्य विगड़ने लगा और वे सन् १८१७ में इतनी वीमार हुई कि वर्प समाप्त होने के पहले ही उनका

देहान्त हो गया। "नार्थैंजर ऐवी" और "परसुएशन" उनके देहान्त के वाद प्रकाशित हुए।

मिस आस्टेन ने अपने जीवन में वह ख्याति नहीं प्राप्त की जो उनके वाद उनके उपन्यासों को मिली। उन्हें अपने उपन्यासकार होने का कोई गर्व नही था और न वे अपने काम को महत्त्व ही देती थी। जिस प्रकार वे अपनी वहिनों के वालकों को मायावी कहानियाँ सुनाती थीं उसी तरह पुस्तकें लिखकर अपने प्रौढ़ पाठकों को मानवजीवन का सुखान्त वृत्तान्त सुनाती थीं। अपने सुख-दुःख तथा विचारों एवं सिद्धान्तों को उन्होंने उपन्यासों में आने नहीं दिया और अपने धर्म तथा राजनीति अथवा सामाजिक सुधार की भावनाओं का उपन्यासों को माध्यम नहीं बनाया। शेक्सपियर तथा संसार के अन्य वड़े लेखकों के समान आस्टेन ने भी कलात्मक अव्यक्तित्व (artistic impersonality) की स्थिति धारण करके चरित्र तथा समस्याओं को देखा। उनकी वह प्रवृत्ति जो उन्हें वास्तविकता की ओर ले गयी, वहुत कुछ रोमैन्टिक अथवा भावुक विचारों से उनके विरोध की सूचक है। इसी विरोध की सूचना उनसे पहले फीर्लिडग और उनके वाद थैकरे की पुस्तकों में हमें मिलती है। इन तीनों उपन्यासकारों ने इस प्रवृत्ति को पहले परिहास द्वारा तथा हँसी उड़ाकर प्रकट किया।

मिस आस्टेन के पहले दो उपन्यास, नार्थैंजर ऐवी तथा सेन्स एण्ड सेन्सिविलिटी अपने विशेष ढंग से भावुकता का परिहास करते हैं। मिसेज़् रैडक्लिफ के उपन्यासों की अनहोनी घटनाओं तथा वनावटी आवेगों और भावनाओं के विरोध में मिस आस्टेन अपने उपन्यासों में हास्ययुक्त एवं सज्जनतापूर्ण चित्र वास्तविक जीवन तथा प्रेम के देती है। अपने एक मित्र को उन्होंने लिखा था—"मेरी समझ में उपन्यास की सामग्री के लिए तीन या चार देहात में रहनेवाले परिवार वहुत काफी है।" यह कथन उनके उपन्यासों का सार अथवा आत्मतत्त्व और उनकी कहानीकला की सीमा वताता है। अंग्रेजी उपन्यासों में कुछ काल पहले से अठारहवीं शताव्दी के ग्रामीण जीवन के चित्र दिये जाने लगे थे और इस जीवन की विशेपताएँ भी निश्चित हो गयी थीं। उस समय के ग्रामीण भद्रलोगों का सुखसाध्य जीवन विना किसी उद्देश्य के और विना किसी उत्कट आकांक्षा अथवा अभिलापा के सन्तोपपूर्वक व्यतीत होता था। न तो उन्हें किसी उद्यम से मतलव होता था, न किसी धन्धे से काम, और उनका मन किसी सिद्धान्त अथवा विचारधारा से विचलित भी नहीं होता था। मिस आस्टेन ने आरम्भ से ही इस जगत् के एक ऐसे कोने को अपने उपन्यासों

के लिए निश्चित कर लिया था जिसे वे भली-भाँति जानती और समझती थीं और जहाँ के समाज पर प्रभाव डालनेवाले साधनों का उन्हे पूरा ज्ञान था। उनका परिचय गाँव के परिवारों के अलावा पादरी लोगो और जहाजी अफसरो से था, क्योंकि उनके भाई तथा और दूसरे सम्बन्धी लोग जहाजी नौकरियाँ करते थे। इन सभी लोगो का ध्यान विशेष कर सामाजिक कर्तव्यो पर रहना था और शादी-ब्याह मे उन्हें बडी दिलचस्पी रहा करती थी। मिस आस्टेन ने इस दिलचस्पी और ध्यान को बहुत अच्छी तरह देखा और समझा था और इसी ससार तथा उसके साधारण जीवन को उन्होंने अपने उपन्यासो में स्थान दिया और उसका वास्तविक चित्रण किया। इस छोटे संसार के बाहर उन्होने कदम नही निकाला, बल्कि यो कहिए कि इस ससार में भी वे उसके छोटेपन पर ही विशेष ध्यान देती थी। जीवन की गम्भीर समस्याएँ, तीव्र भावनाएँ, नैतिक सिद्धान्त तथा सदाचार, ये है वे विषय जिनकी ओर कलाकार और प्रेमी सहज ही आकर्षित होते है, और जो छोटी से छोटी तथा बडी से बड़ी रंगभूमि पर एक-सी सुगमता से दिखाये जा सकते है, और जो गाँव एव कसबे की बिरादरी के वातावरण में उसी बहुतायत से पाये जाते है, जैसे शहरो के वातावरण मे ये सब बाते मिस आस्टेन के अनुभव मे नही आयी और न उनमे वह क्षमता ही थी कि कल्पना द्वारा वे उनके तथ्यों को समझकर अपने उपन्यासो मे दिखा सकती।

मिस आस्टेन की कुशलता किसी दीर्घकाल के अभ्यास से उत्पन्न नही थी बल्कि उनकी प्रकृति तथा मनोवृत्तियो के सतुलन का फल थी। उनका जैसा कोमलतापूर्ण उपहास, उनका जैसा परिज्ञान तथा चातुर्य केवल उसी व्यक्ति के लिए सम्भव हो सकता था, जो बचपन से ही उस ससार और उसमे रहनेवालो से पूरी तरह परिचित हो और जिसे उसके दुख-सुख से उन्ही के समान सहानुभूति भी हो। मिस आस्टेन अपने समाज का अन्दर से निरीक्षण करती है और यद्यपि उनकी आलोचना कडी होती है, फिर भी उसके पीछे किसी सुधार की धारणा नही होती। यह कहना असम्भव है कि वे देख-रेख एव शिक्षा को स्वभाव से अधिक महत्व देती है, किन्तु यह जरूर है कि वे छोटी सी छोटी बातो मे लोगो की भिन्नता देखती है और उसकी तह मे पहुँचने की चेष्टा करती है। जिस प्रकार उनका समाज उद्योग के उत्साह से दूर भागता है और कामकाजी जनता से सम्पर्क नही रखता, उसी तरह मिस आस्टेन भी शारीरिक एव मानसिक उत्साह तथा उत्तेजना से अलग रहती है। कवियों मे उन्हे कूपर (Cowper) और क्रैब (Crabbe) बहुत पसन्द थे और रिचर्डसन (Richardson) के उपन्यासो को वे बडे चाव से पढती

थीं, क्योंकि इन सबको वे स्वजातीय समझती थीं, अपना गुरु नहीं। अपने उपन्यासों को किसी प्रकार उनके प्रभाव के कारण बदलने का प्रयत्न नहीं करती थीं। यद्यपि उनकी संवेद्यता में मन्दगति नहीं तो भी वे रिचर्डसन् की भांति भावना-संघर्ष को तीव्र नहीं करतीं; यद्यपि वे प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रभावित होती हैं, किन्तु कूपर की तरह वे प्रकृति के गुण नहीं गातीं, और यद्यपि वे निर्धनता तथा उसकी गन्दगी और फटे हाल पर तरस खाती हैं, तो भी क्रैब की भाँति वे उसे उछालती या हर जगह लिये नहीं फिरतीं, बल्कि उसे अपने चित्रों में इस तरह पीछे रखती हैं कि आँख उठते ही उसकी झलक दिखाई दे जाय। यह मूकभाव उनको मिसेज रैडक्लिफ तथा उनके अनुयायियों से पृथक् करता है और दोनों प्रणालियों के भेद दर्शाता है।

मिस आस्टेन के यहाँ लम्बे लम्बे वर्णनों की नदियाँ नहीं बहतीं और न वे अपने उपन्यासों की नायिकाओं की सुन्दरता दिखाने के लिए नख-शिख का वर्णन करती हैं। उनके उपन्यासों में दूर देशों की यात्राएँ भी वर्णित नहीं हैं और न कोई ऐसे अन्वेपण होते हैं जिनका हाल पढ़कर पाठक चकित रह जाये। वे अंग्रेजी समाज का वैसा चित्रण नहीं करतीं जैसा आयरलैण्ड का मिस एजवर्थ ने अथवा स्काटलैण्ड का स्काट ने किया है। जिस समाज का चित्र वे खीचती हैं उसमें भी वे उन श्रेणियों के लोगों को छोड़ देती है जिनसे ग्रामीण व्यवसायों तथा खेती-बारी के कामों का पता चलता है। दृश्य चाहे किसी स्थान का हो, चाहे स्टीवेन्टन का वर्णन हो चाहे बाथ का, मिस आस्टेन के उपन्यासों के पात्र लगभग एक से ही होंगे। सेन्स एन्ड सेसिबिलिटी में वे लिखती हैं—"बुद्धि ही वह दृढ़ नींव है जिस पर सब अच्छाइयाँ स्थापित की जा सकती हैं।" बुराई के प्रति उनका दृष्टिकोण कुछ बहुत गहरी विचारधारा का पता नहीं देता। जान पड़ता है कि जीवन सम्बन्धी उनके विचार प्राइड एन्ड प्रेजुडिस के मिस्टर बेनेट के विचारों से भिन्न नहीं थे। मिस्टर बेनेट कहते हैं—"सिवा इसके कि हम अपने पड़ोसियों से अपना मजाक उड़वायें और बाद को हम खुद उन पर हंसे, हमारे जीवन का कोई सार नहीं।"

यद्यपि मिस आस्टेन की परिसीमा इतनी संकीर्ण थी परन्तु उस के भीतर कार्य करके उन्होंने बड़ा महत्व प्राप्त किया। अपनी सामग्री पर उन्हें पूर्ण अधिकार था, बाह्य जगत् के विघ्न उन्हें विचलित नहीं करते थे और उन्हें किसी ओर से अनिश्चय व्याकुल नहीं करता था। ऐसी मानसिक दशा में लिखे जाने के कारण उनके उपन्यासों का ढाँचा तथा संरचना गठी हुई एवं फ्रेन्च उपन्यासों के समान ठीक है। उनका आकार यथाप्रमाण और सुडौल है। इन सारी विशेषताओं का बहुत सुन्दर

उदाहरण प्राइड ऐन्ड प्रेजुडिस में मिलता है। इस उपन्यास मे कथावस्तु का ही विशेष महत्व है और वही दिलचस्पी का कारण है। यद्यपि कथावस्तु बिलकुल सीधी-सादी और सरल है परन्तु वह सारी पुस्तक पर छायी हुई है और प्रत्येक घटना को अपने वश में किये हुए है। स्वयं कथावस्तु अपने परिणाम अथवा फल के लिए मुख्य पात्रों के स्वभाव तथा उसकी वृद्धि और विस्तार एव प्रकाशन पर निर्भर है। इन पात्रों के चारों ओर प्रान्तीय संसार और वहाँ के लोगों का साधारण जीवन है जिसे मिस आस्टेन खूब जानती और समझती है और जिसका चित्रण उन्होंने बड़ी कुशलता से किया है। इस संसार के मुख्य पात्र, जिनके जीवन की यह कहानी है, अपने स्वभाव के अनुसार कार्य करते तथा उसे प्रकाशित करते हैं। प्रत्येक पात्र के स्वभाव में कोई न कोई ऐसी प्रवृत्ति है जिसकी उनकी प्रकृति मे प्रधानता है और जो किसी शारीरिक त्रिदोष से उत्पन्न हुई है। मिस्टर बेनेट निन्दाशील और चिड़-चिड़े है तो उनकी पत्नी कमजोर दिमाग की मूर्ख है; मेरी बेनेट गर्वपूर्ण, अपने सब कुछ जानने के मिथ्या अभिमान में चूर है तो लिडिया अपने चोचले दिखाती, प्रेम से खेल करती फिरती है; मिस्टर कालिन्स घमण्ड मे डूबे, अपना मियाँ मिट्ठू चेहरा लम्बा करके जग जीत लेना चाहते है तो सर विलियम लूकस दूसरी ओर आँखें फेर-फेरकर देखते, पर अपनी अस्पप्ट दशा में कुछ कर नही पाते है। ये प्रवृत्तियाँ उपन्यास में धीरे-धीरे वार्तालाप के द्वारा प्रकट की जाती है, जिसके लिखने मे बड़ी कुशलता से काम लिया गया है।

मिस आस्टेन ने प्रत्येक पात्र से वही बात उन्ही शब्दो में कहलायी है जो उसकी प्रवृत्ति की सूचक एवं मौके की है। केवल भाव को ही व्यक्त करके सन्तोष नहीं किया गया है, बल्कि भाषा तथा आवाज के उतार-चढ़ाव का भी ध्यान रखा गया है, और यह उन्हीं पात्रों के साथ नहीं किया गया है जो एक ही प्रकार सब मौके पर प्रतीकार करते है, उन दृश्यों में भी जिनमें वार्तालाप खूब गठा हुआ और अर्थपूर्ण है, जहाँ बात चीत करनेवाले भी ऊँचे स्तर के शिक्षित लोग है। मिस आस्टेन ने यही कुशलता दिखायी है और बड़े ऊँचे दर्जे के नाटकों की भाँति स्वभावों को सजीव करके दिखाया है। ऐसे दृश्यों में से एक वह दृश्य है जिसमें एलिजबेथ बेनेट अपनी वाक्पटुता से लेडी कैथरिन डि बरों को चपल पटेबाज की तरह इधर-उधर हेर-फेर करके परास्त कर देती है और लेडी कैथरिन अपने भारी अस्त्र-शस्त्र सभालती रह जाती हैं और उनकी तर्क-वितर्क की कुशलता कुछ काम नही देती।

इसी प्रकार अपने सभी उपन्यासों में मिस आस्टेन खूब गठी हुई कथावस्तु रखती

हैं और एक व्यक्ति के स्वभाव को दूसरे के स्वभाव से टकराकर चरित्र-बल को प्रकट करती हैं और उस समाज का भी चित्रण करती हैं जिसमें रहकर व्यक्ति का चरित्र-निर्माण होता है। ऐसा करने से कहानी में गति उत्पन्न होती है और वास्तविकता भी आ जाती है।

प्राइड एन्ड प्रेजुडिस की अपेक्षा बाद की लिखी हुई कहानियाँ अधिक लम्बी तथा ब्योरेवार हैं परन्तु अन्य कहानियों की भाँति ये भी शान्तिमय एवं शान्त मनुष्यों के बारे में शान्ति से लिखी गयी हैं। मिस आस्टेन के उपन्यास उन लोगों को पसन्द नही आते जो कहानियों में आँधी-तूफान चाहते हैं अथवा ऐसी तीव्र भावनाएँ अनुभव करना चाहते हैं जो वे अपने जीवन में नहीं भोग पाते। जो उपन्यास साधारण जीवन की सुन्दरता तथा सामने की वस्तुओं का रहस्य वर्णन करते है वे ऐसे पाठकों को पसन्द नही आते जो उपन्यासों में अनोखा जीवन और अद्भुत घटना ढूँढ़ते हैं। मिस आस्टेन का एमा नामक उपन्यास बड़े विस्तार से तथा ब्योरेवार देहाती जीवन का चित्र देता है और साधारण घटनाओं द्वारा उनका रहस्य दर्शाता है। न कोई भाग-दौड़ है, न कोई अनोखी घटना होनी है। साधारण लोग खेती-बारी के कार्यो में लगे रहते है, जिनसे लेखिका को कोई दिलचस्पी नहीं। इसी संसार में एक छोटी-सी बिरादरी ऐसे लोगों की भी है जिनकी दिनचर्या में नाचने-गाने, पढ़ने-लिखने, बात-चीत करने के अतिरिक्त और कोई काम नहीं रहता। दिन का अधिक समय एक-दूसरे के यहाँ जाने और शिष्टाचार के कार्यो में व्यतीत होता है। इस छोटी-सी बिरादरी में बनावट और दिखावा बहुत है। कई परिवार जिन्होंने कुछ कमाई कर ली है अब अपने रुपये-पैसे के बल पर कुलीन भी बन जाना चाहते हैं। इस संसार में आँसू बहाना बुरा नही समझा जाता परन्तु तीव्र भावना के वश में सिसकियाँ लेना निषिद्ध कर्म माना जाता है। उनके मन को कोई भय नहीं सताता और न वे किसी रहस्य से ही चकित अथवा असंतोष से पीड़ित होते हैं। उनके विचार में दुनिया बड़ी सुन्दर और यह जीवन अत्यन्त सुखदायी है। इस संसार में प्रेम की चर्चा बड़ी सावधानी से और धीरे से की जाती है और उसे बहुत गम्भीर विषय माना जाता है तथा उसके प्रभाव से जीवन को उथल-पुथल होने नही दिया जाता। प्रेम के साथ ऐसा उत्साहरहित बर्ताव तथा शादी ब्याह को साधारण घटना समझना इस संसार की मानसिक दशा को बताता है। मिस आस्टेन का भी विचार कुछ इसी से मिलता-जुलता है। वे जानती हैं कि दिल को हिला देने वाला प्रेम अनोखी बात है, और असाधारण लोगों को ही ऐसा प्रेम होता है; परन्तु शादी-ब्याह तो होते ही हैं और

लोग कुछ न कुछ एक दूसरे से प्रेम करते ही हैं। यही प्राकृतिक नियम भी है तथा यही मुनासिब भी है।

प्रेम तथा विवाह के प्रति इसी प्रकार के विचार वे अपने उपन्यासों की युवतियों के मुख से भी कहलाती हैं। उनके उपन्यासों में भावुकता को वह प्रधानता कभी नहीं दी जाती जो हमें अन्य उपन्यासकारों के यहाँ मिलती है, और यह अठारहवीं शताब्दी की विशेषता थी भी नहीं। यह तो उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ होने पर धीरे-धीरे लोगों के विचारों में परिवर्तन होने लगा था जिसके कारण साहित्य मे प्रेम सम्बन्धी विचारों में रसिकता तथा भावुकता की अधिकता हो गयी थी और कई प्रकार की गड़बड़ उत्पन्न हो गयी थी।

मिस आस्टेन के विचारों के पीछे उनका स्वभाव और वे सिद्धान्त हैं जिनके कारण उनके सुखान्त उपन्यासों की कथावस्तु विशेष साँचे मे ढली हुई होती है। जीवन की जटिल समस्याओं को दूर खड़े होकर दूसरों के हाथो उनका हाल देख सकना कोई सहल बात नही है और ऐसा करने की बुद्धिमानी मे कुछ भी सदेह करना मानो सत्य की कठिनाइयों का अनादर करना है। जब तक भावनाओं मे लेखक स्वयं फँसा हुआ है वह चरित्र तथा घटना का तथ्य नही पा सकता, भावना चाहे तीव्र हो अथवा धीमी। इसके अलावा, विस्तृत जीवनक्षेत्र का एक छोटा सा कोई कोना लेकर उसके गुप्त रहस्य को समझाने की चेष्टा इस प्रकार करना कि ससार का सारा रहस्य खुल जाय, यह कोई सरल कार्य नही है। दृष्टिकोण का ही सारा खेल है जिसके कारण एक लेखक से दूसरा ऊँचा होता है और उसकी पुस्तकें चिरजीवी होती हैं।

एमा एक ऐसी युवती की कहानी है जो प्राप्तावकाश होने के साथ आलसी है और अपनी दशा पर गर्व करती है। अपनी बुद्धि का उसे बडा अभिमान है। मन मे वह सदा कोई न कोई अनोखी धारणा बनाये रखती है जिसके अधीन कार्य करने के कारण उससे दूसरों को दुःख पहुँच जाता है और अपनी मानहानि भी होती है तथा बाद को पश्चात्ताप भी होता है। जिस समय एमा हमारे सामने आती है, हमें तुरन्त यह मालूम हो जाता है कि उसे दूसरों पर अपना प्रभाव डालने और काम कराने पर कितना अटल विश्वास है। वह हैरियेट स्मिथ नामक एक युवती को, जिसके पिता का कोई पता नहीं है और जिसे कोई विशेष शिक्षा भी नही मिली है, अपने प्रभाव में लाकर, अपने समान बनाकर बिरादरी में सम्मिलित करा देना चाहती है। उसे वह शुद्धता, विनय तथा शिष्टाचार सिखाती है और शीघ्र ही उससे उन्ही सब बातों

की आशा भी करने लगती है जो सभ्य समाज में होती है। एमा को पूर्ण विश्वास हो जाता है कि हैरियेट का जीवन बहुत सफल होगा और वह समाज मे बहुत ऊँचे पद को ग्रहण करेगी। इन विचारो के कारण तथा ऐसी भावना के वश मे होकर एमा उसका एक किसान के साथ विवाह नही होने देती, क्योंकि वह उस किसान को हैरियेट के योग्य केवल इसी लिए नही समझती कि वह किसान है। वह हैरियेट का विवाह मिस्टर एल्टन (जो गाँव के बड़े पादरी के पद पर नियुक्त होकर आये है) के साथ कराना चाहती है। परन्तु मिस्टर एल्टन उस दोगली लड़की का तिरस्कार करते है और एमा के साथ विवाह करना चाहते है। हैरियेट के मन मे और भी कई लोगों की ओर ऐसे ही विचार उत्पन्न होते है जिनके फलस्वरूप रोज कोई न कोई समस्या उठ खड़ी होती है और एमा को उसे सुलझाना पड़ता है। हैरियेट समझने लगती है कि उस से वे महाशय भी प्रेम करते है जिनसे एमा का विवाह होना लोग निश्चित समझते थे। इन्ही उलझनो तथा समस्याओ मे कहानी आगे बढती जाती है और लोगों की प्रकृति तथा चरित्र सामने आते जाते हैं। अन्त मे सब बातें ठीक हो जाती है और हैरियेट स्मिथ का विवाह उसी किसान के साथ होता है जिसका पहले उसने तिरस्कार किया था।

इस उपन्यास मे मिस आस्टेन की कुशलता का बड़ा अच्छा उदाहरण मिलता है और हमे पता चलता है कि जीवन के वास्तविक अर्थ को कैसी अच्छी तरह वे समझती है। इस उपन्यास मे चित्तवृत्ति, भावना तथा शिष्टता के एक लय होने से जो गति उत्पन्न की गयी है उसके कारण बड़ी सुन्दरता से कठिन से कठिन अवसरों पर महत्वपूर्ण सत्य प्रकट किये गये है और पुस्तक का सारा प्रभाव एक शान्तिमय अनुरूपता का हो गया है।

मिस आस्टेन के उपन्यास बड़ी अच्छी तरह से इस समय के यथार्थवादियों की प्रवृत्ति को प्रकट करते है, जिसके अधीन वे ससार को व्यंग्यात्मक रीति से अपना कर उससे अपना मनबहलाव करने की चेष्टा करते थे। वे ऐसी व्याकुलता को उपन्यासो में स्थान नही देती जो इस जगत् से परे कल्पना के क्षेत्र में जीवन की आकाक्षाएँ पूरी करना चाहती है और इस सामने के भूरे ससार से दूर एक रंगीन स्वप्नो की दुनिया बसाती है। ऐसा रगीन जगत् सर वाल्टर स्काट की रोमैन्टिक प्रवृत्ति ने वेवर्ली नामक उपन्यास लिखकर अब से कुछ ही काल के उपरान्त लोगों को दिया और ऐसा करके अग्रेजी उपन्यास के इतिहास मे एक नया युग चलाया।

अध्याय ८

वाल्टर स्कॉट और उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में अंग्रेजी उपन्यास

अंग्रेजी कथा-साहित्य के इतिहास में सर वाल्टर स्कॉट के वेवर्ली (Waverley) नामक उपन्यास का प्रकाशन एक बड़ी महत्त्वपूर्ण घटना है। सन् १८१४ में जब वह प्रकाशित हुआ तो लगभग पचास वर्ष के उस लम्बे काल का अन्त हुआ, जिसमें अंग्रेजी उपन्यास अपने उद्देश्यों तथा लेखन-प्रणाली के कारण विभिन्न वर्गों में विभाजित होता था। वेवर्ली के प्रकाशन के समय तक कथा-साहित्य के कई स्रोत तो बिलकुल सूख गये थे और कई धीमे पड़ गये थे। मिसेज रैडक्लिफ़ (Mrs. Radcliffe) ने बहुत वर्षों से उपन्यास लिखना बन्द कर दिया था और उनका अनुसरण करनेवालों ने भी कोई ऐसे उपन्यास नहीं लिखे थे, जिनसे उनकी परम्परा स्थायी होती अथवा आगे बढ़ती। विलियम गाडविन (William Godwin) जैसे क्रान्तिवादी लेखक ने पारिवारिक जीवन के रोमांस लिखना आरम्भ कर दिया था और ये रोमांस भी बड़ा अन्तर देकर प्रकाशित होते थे। लोगों के विचारों में क्रान्तिवाद की महिमा घट गयी थी और अब उसमें स्फूर्ति देने की शक्ति नहीं रही थी।

बेज (Bage) और हालक्राफ्ट (Holcroft) दोनों की मृत्यु हो चुकी थी। जेन आस्टेन का संक्षिप्त साहित्यिक जीवन समाप्त होने पर था और उनके थोड़े किन्तु सुयोग्य पाठकों की संख्या शीघ्रता से घटती जा रही थी। उनके उपन्यास समय की रुचि के विरुद्ध थे क्योंकि वे न तो रोमांनवादी ही थी न क्रान्तिकारी। उन्होंने मनुष्य जीवन को एक ऐसे नाटक के रूप मे देखा था जिसमें विचारों एवं भावनाओं के संघर्ष का अभिनय परिवार तथा समाज की पृष्ठभूमि पर होना है। जीवन को विशेष प्रकार से परखने और कला के प्रति ऐसी दृष्टि डालने के कारण उनके उपन्यास तत्कालीन प्रवृत्तियों तथा प्रगति के प्रवाह से बाहर रहे और उस पर कोई प्रभाव नहीं डाल सके।

इसी प्रकार की लेखिका मिस एजवर्थ भी थीं। मिस आस्टेन की भाँति वे भी उन लेखकों के मत का विरोध करती थीं जो प्राकृतिक तथ्यों की परवाह न करके एवं इतिहास का तिरस्कार करके अपने उपन्यासों में आतंक उत्पन्न करते अथवा अनहोनी घटनाओं पर अपनी कथावस्तु को स्थिर करते थे। मिस एजवर्थ (Miss Edgeworth) की एक विशेषता ने उनको उस उपेक्षा से बचा लिया जो उनके समकालीन लेखकों के प्रति की गयी थी। वह विशेषता केवल इतनी थी कि उन्होंने आयरलैण्ड के लोगों की वास्तविक दशा के चित्र अपने उपन्यासों में दिये थे। अठारहवीं शताब्दी के उपन्यासों में बहुधा आयरलैण्ड तथा स्काटलैण्ड के लोगों की निन्दा की जाती थी और उनकी हँसी उड़ायी जाती थी। मिस एजवर्थ ने अपनी कहानियों में अंग्रेजों को आयरलैण्ड के लोगों की आत्मा के दर्शन कराये और बताया कि वे लोग भी मानवता के सारे गुण रखते तथा सुख-दुःख भोगते एवं अच्छे और बुरे होते है, जैसे अंग्रेज या किसी दूसरे देश के निवासी। इन उपन्यासों ने आयरलैण्ड निवासियों के प्रति लोगों के हृदयों में सहानुभूति उत्पन्न की और मानवता के भाव तीव्र किये जिसका प्रभाव बहुत अच्छा पड़ा। इन्ही उपन्यासों से प्रभावित होकर सर वाल्टर स्काट ने अपने देशवासियों का ऐसा ही चित्रण करने का निश्चय किया। सन् १८२९ के संस्करण में अपने उपन्यासों की भूमिका में स्काट ने लिखा है—"मेरी सुयोग्य मित्र की रचनाओं में जो विपुल हास्य रस, करुण कोमलता और प्रशंसनीय युक्तियाँ है, उनका अनुकरण करने का साहस मैं नहीं करता, फिर भी मैं सोचता हूँ कि अपने लोगों के लिए भी कुछ उसी प्रकार का काम करूँ जो मिस एजवर्थ ने अपनी योग्यता तथा आयरलैण्ड के सौभाग्य से किया है। कैसा अच्छा हो जो मै भी अनुकूलता से अपने लोगों का ठीक परिचय उनके पड़ोसियों से करा सकूँ और उनके गुण-दोषों के प्रति हृदयों में सहानुभूति जगा सकूँ।" सर वाल्टर स्काट के इसी उद्देश्य ने वेवर्ली उपन्यासों को विशेष महत्त्व दिया और उन्हें लेखक के पद्य रोमांसों की गद्य में पुनरुक्ति होने से बचाया।

स्काट के पहले के "स्काच उपन्यास"

स्काट के वेवर्ली उपन्यासों के पूर्व कई लेखकों ने इसी उद्देश्य से स्काटलैण्ड और उसके निवासियों के स्वभाव दर्शाने की असफल चेष्टाएँ की थीं और "स्काच" उपन्यास लिखे थे। एलिज़बेथ हैमिल्टन (Elizabeth Hamilton) और मेरी ब्रण्टन (Mary Brunton) ने अठारहवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में

स्काटलैण्ड के पारिवारिक जीवन का चित्रण किया था और उपन्यासो में घरेलू दृश्य दिये थे, परन्तु उनकी पुस्तकें उपन्यास की हैसियत से बहुत सफल नही रही। सन् १७८९ में मिस सोफ़िया लीज (Miss Sophia Lees) ने रिसेस (Recess) नामक उपन्यास तीन जिल्दों में प्रकाशित किया और ऐतिहासिक सामग्री का मनोरंजन के लिए प्रयोग किया। इस पुस्तक ने ऐतिहासिक रोमास की नीव डाली थी। सन् १७९३ में मिस क्लैरा रीव (Miss Clara Reeve) ने प्लूटार्क की प्रणाली का अनुसरण करते हुए कुछ रेखाचित्र उन महापुरुषो के लिखे, जिन्होंने इंग्लैण्ड के निर्माण में योग दिया था और उनकी मानवता के गुणो को दर्शाया। साथ ही उन्होंने इस बात पर भी बहुत ज़ोर दिया कि उन लोगो की महानता उन लक्षणो पर निर्भर नहीं थी जो क्रान्तिवादी उपन्यासकारो ने बताये है।

जेन पोर्टर और स्काटिश चीफ़्स

जेन पोर्टर (Jane Porter) के रोमास उन सारे रोमासो से कही अधिक सफल रहे जिनमें इतिहास की सामग्री का काल्पनिक ढग से प्रयोग किया गया था। सन् १८०३ में उन्होंने थड्यूस आफ़ वार्सा (Thaddeus of Warsaw) नामक उपन्यास लिखा जिसमें पोलैण्ड के विभाजन से सम्बन्धित घटनाओं का ठीक उसी प्रकार से वर्णन किया गया है जैसे इतिहासकार लिखा करते है। लेखिका का अपना अंशदान उन घरेलू काल्पनिक दृश्यो के चित्रों मे मिलता है जो जगह-जगह पर दिये गये है और जिनसे निरीक्षण तथा भावुकता का पता चलता है। परन्तु इस प्रणाली के कारण कथानक बिगड़ गया है और उपन्यास बचकाना-सा हो गया है। लेखिका की दूसरी स्काटिश चीफ्स (Scottish Chiefs) नाम की पुस्तक अधिक सफल रही थी, क्योंकि इसकी सामग्री का उन्हें पूरा ज्ञान था और जिन पात्रों को उन्होंने कहानियों के लिए छाँटा था उनके बारे में जो परम्परागत कथाएँ प्रचलित थीं वे सब मालूम थी। इसके अलावा उन्होंने जिन स्थानों तथा दृश्यों का वर्णन किया है उन्हें अपनी आँख से देखा था। एलिजबेथ काल के रोमासों को उन्होंने खूब पढ़ा था और उनके जीवन-सत्त्व को अच्छी भाँति समझा था। यही कारण है जो उनकी कहानियाँ रोमांस के सत्त्व से भरी है और शौर्य की ध्वनि से गूँजती है। यह पुस्तक शीघ्र ही कई देशों मे सर्वप्रिय हो गयी और उसका अनुवाद कई भाषाओं में हुआ।

"स्काच" उपन्यासों की विशेपता थी कि वे स्वयं इतिहास को रोमैण्टिक करके

पाठकों के सामने प्रस्तुत करते थे, और ऐसा करने में वे वहुधा इतिहास को तोड़-मरोड़ देते थे। इस प्रणाली से ठीक उलटी प्रणाली उन ऐतिहासिक उपन्यासों की थी जो इसी काल में प्रकाशित हुए थे और रोमांस के तत्त्वों को इतिहास से पृथक् रखते थे। ऐसे उपन्यासों के लेखक पहले रोमैण्टिक कहानी वनाते थे और फिर उसे इतिहास की पृष्ठभूमि पर, वेल-वूटों की भाँति, काढ़ देते थे। जैसे-जैसे इतिहास की सामग्री लेकर उपन्यास लिखने की प्रथा प्रचलित होती गयी, लोगों में रोमांस तथा उपन्यास के बीच का भेद विवाद का विषय होता गया और थोड़े ही समय में स्वयं उपन्यासकार इस भेद को स्वीकार करने लगे, यहाँ तक कि एक की प्रणाली दूसरे की प्रणाली से भिन्न समझी जाने लगी। अपनी एक पुस्तक की भूमिका में मिस क्लैरा रीव ने इस भेद के सम्बन्ध में लिखा—"उपन्यास वास्तविक जीवन तथा उसकी रीतियों और तत्कालीन दशा का चित्रण करता है। रोमांस ओजपूर्ण भाषा में ऐसी घटनाओं का वर्णन करता है जो न कभी हुई है और न कभी हो सकती है। उपन्यास साधारण रीति से नित्य-जीवन की घटनाओं तथा अनुभवों का वर्णन करता है जो हमारे अथवा किसी मित्र के सामने होता है। वह उपन्यास अच्छा होता है जो पाठक के हृदय को ठीक उसी प्रकार प्रभावित करे जैसे वास्तविक घटना करती है और पाठक पात्रों के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझने लगे।" यह भेद "स्काच" उपन्यासों के सम्बन्ध में बहुत कुछ ठीक उतरता रहा परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही कई लेखकों ने इसे असत्य सिद्ध कर दिया और फिर जब वाल्टर स्काट के वेवर्ली उपन्यास सामने आने लगे तो उन्हें इन श्रेणियों में रखना समालोचकों के लिए असम्भव हो गया।

जोज़ेफ स्ट्रट का क्वीनहू-हाल

इस सम्बन्ध में जोज़ेफ़ स्ट्रट (Joseph Strutt) का लिखा हुआ क्वीनहू-हाल (Queenhoo-Hall) नामक ऐतिहासिक उपन्यास विशेष महत्त्व रखता है। जोज़ेफ़ स्ट्रट एक पौरातनिक लेखक था जो पुरातत्त्व-अन्वेषण के विषयों को सुगम करके लोगों तक अपना ज्ञान पहुँचाना चाहता था। उसके उपन्यास का यही उद्देश्य था कि शुष्क एवं निर्जीव तथ्यों को कैसे दिलचस्प बनाया जाय और उनमें जान डालकर पाठकों तक कहानी के रूप में पहुँचाया जाय। उसने पन्द्रहवीं शताब्दी के अंग्रेज़ों के शिष्टाचार, स्वभाव, आचार, व्यवहार, रूढ़ियों, खेल-तमाशों का जीता-जागता वृत्तान्त लिखा और उसके साथ बड़े सुन्दर दृश्यों, अभिनयों तथा

लीलाओं के वर्णन दिये। इन सब वृत्तान्तों तथा वर्णनों के लिखने में उसने केवल अपने ज्ञान एवं जानकारी से काम लिया, कल्पना द्वारा न किसी बात को बढ़ाया न घटाया, और इस प्रकार इतिहास को मिथ्या किये बिना इस पुस्तक में विगत के लालित्य से कहानी दिलचस्प बनायी गयी। यह पुस्तक अधूरी ही थी जब लेखक की सन् १८०२ में मृत्यु हो गयी। सर वाल्टर स्काट ने उसे समाप्त करके १८०८ में प्रकाशित किया और ऐसा करके मानो ऐतिहासिक उपन्यास की लेखन-प्रणाली तथा उसका कार्यक्रम निर्धारित किया।

वेवर्ली के प्रकाशन के बाद के काल में पहले से कही अधिक संख्या में उपन्यास लिखे गये। इन उपन्यासों में कलात्मक गुणों के साथ-साथ आविष्कार की समृद्धि बहुत श्रेष्ठ रही। इन सब उपन्यासों के पीछे की प्रेरक शक्ति स्काट की रचनाओं के नमूनों से प्राप्त हुई थी, जिन्होंने न केवल संख्या बढ़ाने बल्कि उस वातावरण के परिवर्तन में भी सहायता दी जिसमें उस समय तक उपन्यास लिखे जाते थे। स्काट ने इंग्लैण्ड में ऐतिहासिक उपन्यास की नीव डाली और उसके ऊपर की रचना के लिए अपने वेवर्ली उपन्यासों में ऐसे नमूने दिये जो "स्काच" उपन्यासों से बिलकुल पृथक् तथा भिन्न ही नही बल्कि सिद्धान्त एवं कला मे विपरीत थे। उनके सामने पहले के ऐतिहासिक उपन्यास, जैसे मिस रीव का "दि ओल्ड इंग्लिश बैरन (१७७७) (The Old English Baron)" और मिस पोर्टर का "स्काटिश चीफ्स (१८०९) (Scottish Chiefs)" बेजान और फीकी रचनाएँ मालूम होती थीं। स्काट के हाथ में ऐतिहासिक उपन्यास अर्थपूर्ण मानव प्रकृति की आलोचना के महत्त्व को पहुँच गया जिसने साहित्य में एक नया ही चमत्कार उत्पन्न कर दिया।

सर वाल्टर स्काट

वाल्टर स्काट का जन्म सन् १७७१ में एडिनबरा के एक प्रतिष्ठित तथा प्राचीन घराने में हुआ था। दुर्बलता एवं स्वास्थ्य अच्छा न होने के कारण प्रारम्भिक शिक्षा में देर भी हुई और वह क्रमहीन भी रही। युवावस्था आरम्भ होने पर उसने बड़े परिश्रम से इस कमी को पूरा किया और बैरिस्टरी के लिए अपने को तैयार किया। सन् १७९२ में वह स्काटलैण्ड के बार का मेम्बर बनाया गया। लड़कपन से ही उसे रोमांस की ओर बड़ी रुचि थी और उसने सैकड़ों रोमांस कथाएँ पढ़ डाली थीं। उसका पहला प्रकाशन गोटे के गोएज फ़ान बर्लीशिन्जेन (Goetz von-

Berlichingen) नामक नाटक का अनुवाद था, जिसमें सोलहवी शताब्दी के एक भ्रमणशील लुटेरे जर्मन नाइट के पराक्रम की कहानी है। स्काट ने यह अनुवाद १७९९ मे प्रकाशित किया था जब वह वकालत के कामों में व्यस्त रहता था। अनुवाद की सफलता के बाद से उसकी पुरातत्त्व सम्बन्धी रुचि तीव्र होने लगी और वह साहित्य की ओर अधिक झुकने लगा। अब उसके चित्त को काव्य ने भी आकर्षित किया और उसने प्रचलित गीतों तथा दन्तकथाओं एवं स्काटलैण्ड के इतिहास का, जो उनमे बिधा हुआ था, अध्ययन करना प्रारम्भ किया। स्काटलैण्ड की सीमा के लोक-गीतो का बहुत बड़ा सग्रह किया और उत्साह के साथ व्यक्ति-जीवन की सारी समस्याओ तथा लोगों की आदतों एवं रिवाजों का निरीक्षण किया। समकालीन बैरिस्टरो मे वह इन दिनो भी कहानी कहनेवालो का राजा कहलाता था। सन् १७९९ के जाड़े मे उसने कथा-गीत लिखना आरम्भ किया जो मैथ्यू लेविस (Matthew Lewis) की 'दि टेल्स आफ वण्डर' (The Tales of Wonder) नामक पुस्तक मे प्रकाशित हुए और जो उसके जीवन में पहले मोड़ के चिह्न कहे जाने चाहिए। इसी मैथ्यू लेविस के प्रभाव में आकर स्काट ने अपने पहले गद्य रोमांस का खाका खीचा और उसका कथानक निश्चित किया था। यह पहला रोमास 'दि कास्ल आफ आटरैण्टो' (The Castle of Otranto) की शैली पर लिखी हुई शौर्य की कहानी थी जिसमें स्काटलैण्ड के सीमाप्रदेश के सुप्रसिद्ध कई योद्धा आते है और अलौकिक घटनाएँ भी होती है। सन् १८०५ मे पहले पद्य रोमास की सफलता के उपरान्त स्काट ने फिर गद्य में लिखने की चेष्टा की, परन्तु ले आफ दि लास्ट मिन्स्ट्रेल (Lay of the Last Minstrel) के सामने उसका वह प्रयोग उसके मित्रो को इतना फीका लगा कि उन्होने अनुरोध करके उसे रोक दिया और इस तरह वेवर्ली उपन्यास के प्रारम्भिक अध्याय अधलिखे पड़े रहे और आठ वर्ष तक स्काट ने उनकी सुधि नही ली। इस बीच में स्काट ने दो पद्य रोमास मार्मियन (१८०८) (Marmion) और दि लेडी आफ दि लेक (१८१०) (The Lady of the Lake), प्रकाशित किये, जिन्होने कहानी-कला मे एक नया युग चलाया। इन दोनो की रोमैण्टिक कहानियाँ ऐतिहासिक सत्य पर निर्धारित है और कल्पना से केवल कविता के बनाने-सँवारने में काम लिया गया है। इन तीन काव्य ग्रन्थो के लिए स्काट को जितना रुपया मिला, उतना किसी लेखक को उस समय तक नही मिला था। इसी समय वह प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओ के एक समृद्धिशाली सार्थ में भागी बनाया गया, जिससे उसकी

आर्थिक दशा बहुत अच्छी हो गयी। उसने अब जायदाद खरीदकर मकान बनवाया और बारह वर्ष के परिश्रम के फलस्वरूप आनन्द का जीवन व्यतीत करने लगा।

फरवरी सन् १८१४ में किसी वस्तु को ढूँढ़ते हुए उसे अपने वेवर्ली उपन्यास के वे अध्याय मिले जो उसने आठ वर्ष पहले लिखे थे। कुछ ही समय में उसने आगे के अध्याय लिखकर उपन्यास को पूरा किया और बिना अपना नाम दिये उसे प्रकाशित किया। उपन्यास तुरन्त बिकने लगा और सर्वप्रिय हो गया। मित्रों तथा चतुर समीक्षकों ने लेखक का पता भी चला लिया और चारों ओर उसकी प्रशंसा होने लगी। सन् १८१४ से लेकर सोलह वर्ष तक बराबर बैलैण्टाइन प्रेस (Ballantyne Press) से वेवर्ली उपन्यास क्रम के अनुसार निकलते रहे। जिस प्रकार इन उपन्यासों के प्रकाशन की लन्दन में उत्सुकता से प्रतीक्षा की जाती थी, उसी प्रकार पेरिस और वेमर में उनके पहुँचने का इन्तज़ार होता था। इन उपन्यासों ने सारे यूरोप की बौद्धिक परिधि को विस्तार दिया तथा लगभग आधे दर्जन देशों में राष्ट्रीय उपन्यास लिखने का रास्ता दिखाया और इतिहास के अध्ययन तथा विगत के समझने का दृष्टिकोण बताया। सन् १८२६ मे वह सार्थ जिसमे स्काट भागी था, एक वाणिज्य-संकट में पड़कर दिवालिया हो गया, जिस कारण स्काट पर एक लाख सत्रह हजार पौण्ड की देयता आ पड़ी और उसका सारा सुख समाप्त हो गया। यूरोप और अमेरिका मे स्काट के प्रति सहानुभूति की लहर दौड़ गयी। क्या दूर क्या निकट, चारो ओर से सहायता के प्रस्ताव आने लगे परन्तु स्काट ने किसी से आर्थिक सहायता लेना स्वीकार नही किया। उसने केवल समय के लिए प्रार्थना की और लेखनी द्वारा उस भारी कर्ज को उतारने की प्रतिज्ञा की। कड़े परिश्रम ने उसके स्वास्थ्य को नष्ट कर दिया और उसकी आयु के न मालूम कितने वर्ष कम हो गये, परन्तु उसने इस ऋण का अधिकाश वेवर्ली उपन्यास लिख कर अपने जीवन-काल के अन्तिम छः वर्षों में चुका दिया। इस तीव्र उद्योग तथा आयास की दशा में उसने छः उपन्यास लिखे जिसके बाद डाक्टरों ने उसे दक्षिण यूरोप के देशों में रहकर स्वास्थ्य ठीक करने को अप्रैल सन् १८३२ में भेज दिया। वह इतना शक्तिहीन हो गया था कि तुरन्त ही उसे लौटा लाना पड़ा और उसी वर्ष के सितम्बर मास में उसकी मृत्यु हो गयी। उसकी पहले लिखी हुई पुस्तकों का अधिकारशुल्क बेचकर बाक़ी कर्जा चुका दिया गया।

स्काट का रोमैन्टिक स्वभाव तथा प्राकृतिक दृश्यों का प्रयोग

वाल्टर स्काट के जीवन में नूतन और पुरातन का मेल था। एक ओर तो वह सामन्त-तन्त्र का-सा जागीरदार था, दूसरी ओर आधुनिक व्यवसायी। उसकी यह दोनों प्रवृत्तियाँ बड़े अद्भुत प्रकार से उसके साहित्यिक जीवन से सम्बन्धित थीं। वह अपनी पुस्तकों में सामन्त-तन्त्र के उन आदर्शों का चित्रण करता और उन्हें सराहता है जिन पर वह अपना जीवन ऐबट्सफर्ड में व्यतीत करता था। पुस्तकें लिखकर वह धनोपार्जन भी करना चाहता और करता था क्योंकि जागीरदार के जीवन के खर्चे बहुत होते थे जिनके लिए धन आवश्यक था। अपने समय में ही जो उसे इतनी सफलता प्राप्त हुई और उसने इतना धन कमाया उसका कुछ तो कारण यह था कि उसकी सांसारिक दिलचस्पियाँ वही थी जो दूसरे लोगों की थीं और जिन्हें वे समझते थे। स्काट रोमांसवादी जरूर था परन्तु न तो कोलरिज (Coleridge) का-सा, न शेली का-सा, क्योंकि उसे न तो आध्यात्मिक स्वतन्त्रता की आकांक्षा थी, न रूढ़ जीवन और उसकी व्यवस्था की कठिनाइयों का कटु अनुभव। समाज तथा राजनीतिक संस्थाओं से उसे कोई कष्ट नहीं था और वह उन्हें बुरा भी नहीं समझता था। क्रान्ति की ओर कभी उसके विचार नहीं झुके थे और न वह क्रान्तिवाद से सहानुभूति ही रखता था। उसके हृदय में स्काटलैण्ड के लिए प्रचण्ड प्रेम और अपने देशवासियों के प्रति आत्मिक सहानुभूति थी। स्काटलैण्ड के विगत के प्रति उसके हृदय में अत्यन्त आकर्षण था। इन सब भावों के कारण स्काट का रोमांसवाद ऐसा था जिसे उसके पाठक साधारण रीति से स्वीकार करते थे और यही रोमैण्टिसिज्म (Romanticism) के साधारण तथा चिरस्थायी तत्त्व भी समझे जाते थे।

वे लोग जो वर्ड्स्वर्थ (Wordsworth) की अवहेलना करते थे और शेली का अपमान एवं विरोध करते थे, स्काट को रोमांसवादी लेखक स्वीकार करते थे। यही नहीं, उसे नये युग का पथदर्शक और नये साहित्यिक प्रयोग का नेता मानते थे। रहा प्राकृतिक दृश्यों का सवाल, जो रोमांसवादियों की विशेषता कही जाती थी, स्काट पहला उपन्यासकार था जिसने अंग्रेज़ी में पृष्ठभूमि ऐसे दृश्यों को लेकर रची जिन्हें वह अपनी आँख से देख चुका था और जिनके प्रभाव को अपने मन में अनुभव कर चुका था। ऐसी पृष्ठभूमि को उसने अपनी रचनाओं में प्रधान एवं आवश्यक अंग बनाया। यह ठीक है कि उसके प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन प्राचीन प्रणाली

पर लिखे गये हैं और हमारे विचार से अनावश्यक, लम्बे तथा छोटी-छोटी बातों से भरे हैं, किन्तु उनमें सजीव स्पष्टता तथा यथोचित वास्तविकता है जो पाठक के धीरज का अच्छा प्रतिफल देती हैं। अलावा इसके, स्काट के उपन्यासों में जो घटनाएँ आती हैं अथवा पात्रों के जीवन में जो कुछ होता है, उन सबका दृश्य और पृष्ठभूमि से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। स्थानविशेष में ही वैसी घटना हो सकती थी, वैसे अनुभवों के लिए वही दृश्य आवश्यक थे जो स्काट ने दिये हैं। दृश्यों के वर्णन सजावट के लिए नहीं हैं, न उन्हें अलग ही किया जा सकता है। वे नाटक के सजावटी परदे नहीं बल्कि जीवन-धारा के सजीव अंग हैं।

स्काट के उपन्यासों के पात्र

स्काट के उपन्यासों में प्राकृतिक पृष्ठभूमि से भी अधिक अर्थपूर्ण तथा विलक्षण चित्रण उन पात्रों का है जिनके जीवन और कृत्यों का वर्णन किया गया है। उसने सीमाप्रदेश और हाईलैण्ड्स में बहुत तथा बार-बार भ्रमण किया था और इस प्रकार उसको वहाँ के लोगों का वैसा ही निकट-ज्ञान था, जैसा देश की प्राकृतिक शोभा का। उसे अपने इस ज्ञान पर बड़ा भरोसा था और पहले ही उपन्यास से मालूम हो जाता है कि स्काच जनता के इन प्रारूपिक वर्गों की पूरी जानकारी को वह कितनी बड़ी शक्ति समझता था। वेवर्ली के प्रारम्भ में जरूर कुछ घबराहट है जिसे वह बहुत जल्द दूर करके अपने प्रमुख पात्र को स्काटलैण्ड भेज देता है और वहाँ ठेठ प्रकार के विभिन्न श्रेणियों के लोगों में उसे पहुँचा देता है और कहानी चल पड़ती है। स्थानीय विशेष लक्षणों तथा चरित्र और व्यक्तित्व को लेकर वह चलता है और उनके द्वारा मानवता के गुण-दोष दिखाता, हँसाता, रुलाता, व्यक्ति तथा समाज के परस्पर संघर्ष के दुःख-सुख का वर्णन करता चला जाता है। हम देखते हैं कि प्रकृति के बनाये स्वभाव पर मानवसंसार कैसे-कैसे प्रभाव डालकर किसको क्या बना देता है और फिर भी मनुष्य सैकड़ों आघात सहन करने पर भी अपनी दैवी प्रकृति को अकस्मात् प्रकट करके हमें चकित कर देता है। मनुष्य सब कुछ सहकर भी अपने को मिटाने को तैयार होता और छोटी-सी बात पर बड़े से बड़े बल का सामना करता है। सन् १७४५ के बलवे के उपरान्त, जिसमें एडवर्ड वेवर्ली भी सम्मिलित होकर आपे से बाहर हो जाता है और अपने को "नीचता की दुर्बल आकृति" सिद्ध कर देता है, उपन्यास जैसे-तैसे उसकी उत्साहरहित प्रेमकहानी के सहारे चलता रहता है किन्तु पाठकों का ध्यान आकर्षित करनेवाला पात्र, इवैन डू, जो हाईलैण्ड के जागीर-

दार का एक गरीब साथ देनेवाला है, अन्त तक इस ऐतिहासिक नाटक का नायक बना रहता है। जब उसके मालिक को मौत की सज़ा का हुक्म सुनाया जाता है तो वह बड़े उत्साह और पराक्रम के साथ सामने आकर उसके लिए अपनी तथा छः दूसरे साथियों की जान देने को प्रस्तुत होता है। उसकी दीन दशा देखकर अंग्रेज़ अफसर हँस पड़ते हैं जिस पर वह उत्तेजित होकर कहता है—"यदि सैक्सन भद्र पुरुष इस बात पर हँसते है कि मुझ जैसा ग़रीब मनुष्य अथवा मेरे फटेहाल छः साथी अपनी जान को विक आयेन वोर (Vich Ian Vohr) की जान के बराबर समझते हैं, तो वे भले ही हँस सकते हैं। परन्तु यदि वे यह विचार करके हँसते हैं कि मैं अपने वचन का पालन नहीं करूँगा और अपने मालिक को नहीं छुड़ाऊँगा, तो मैं यह कहूँगा कि वे न तो हाईलैण्ड के लोगों के हृदय को जानते हैं न भद्रता की प्रतिष्ठा को।" वाल्टर स्काट के उपन्यासों में ऐसे ही पात्रों के चित्रण पर विशेप बल दिया गया है। ऐसे ही लोगों के चरित्र का वर्णन करके विगत को जीवित किया गया है। 'ऐण्टिक्वेरी' (The Antiquary) में एडी ओकिलट्री (Edie Ochiltree), बेली जार्विस (Baillie Jarvis) 'राबराय' (Rob Roy) में, पीटर पीबल्स (Peeter Peebles), 'रेड गाण्टलेट' (Red Gauntlet) में, तथा इसी प्रकार के अन्य पात्र जिन्हें उपन्यासों में स्काट ने जिलाया है, स्काटिश जाति के पराक्रम के वे नमूने हैं जिनसे उस जाति के गुण प्रकट होते हैं। 'दि हार्ट आफ़ मिडलोथियन' (The Heart of Midlothian) नामक उपन्यास में स्काट ने केवल इसी बल तथा पराक्रम को लेकर कथावस्तु ठीक की और अभिजातवर्गीय नायिका को भी उसमें स्थान नहीं दिया, वल्कि निम्न श्रेणी की एक ऐसी स्त्री को नायिका वनाया जो अपने वच्चे का वध करने के अपराध में कारागार में पड़ी है। सन् १७३६ के वलवे की पृष्ठ-भूमि पर यह उपन्यास लिखा गया है।

"हार्ट आफ़ मिडलोथियन" एडिनबरा के एक कारागार का नाम था, जिसमें एफ़ी डीन्स बन्द है और जिस पर आक्रमण करके उसका प्रेमी उसे छुड़ाना चाहता है। एफ़ी कारागार से निकल भागने को तैयार नहीं होती और उसकी वहिन जियनी डीन्स झूठी गवाही देकर उसे छुड़ाने को राज़ी नहीं होती। एफ़ी को मौत की सज़ा होती है जिस पर उसकी वहिन जियनी डीन्स पैदल लन्दन जाती है और महारानी कैरोलीन के सामने इस अच्छे ढंग से अपनी बहिन का मामला पेश करती है कि उसको माफ़ी मिल जाती है। जियनी डीन्स की कहानी अत्यन्त हृदयग्राही तथा करुणामय है। कहाँ तक जियनी और एफ़ी ऐतिहासिक व्यक्ति हैं मालूम नहीं,

परन्तु स्काट ने उन्हें समय की घटनाओं से ऐसा मिला-जुला दिया है कि वे ऐतिहासिक हो गयी हैं। इसके अलावा, मानव प्रकृति का ऐसा अच्छा चित्रण किया गया है कि उपन्यास वास्तव में एक मानवी प्रमाणपत्र हो गया है। स्थानीय जनता के इस अद्‌भुत ज्ञान का प्रयोग स्काट ने रहस्यमय तथा भयानक प्रभावों के उत्पन्न करने के लिए किया है जो अलौकिक एवं मायावी घटनाओं से नहीं किया जा सका। मेज वाइल्ड फायर (Madge Wildfire), मेग मेरिलीज़ (Meg Merrilies), नार्ना आफ़ दि फ़िटफ़ुल हेड (Norna of the Fitful Head) ऐसे विचित्र तथा मायावी जैसे आकृतिहीन व्यक्ति है, जो भयानक हाईलैण्ड के स्थानों से उपजकर हमारे सामने आते और हमें बताते हैं कि मानव प्रकृति में ऐसे भी तत्त्व निहित हैं। ये तत्त्व वे रोमैण्टिक प्रभाव डालते है जो उपन्यासों में भूत और प्रेत लाकर उत्पन्न नहीं किये जा सकते।

अतीत की ओर वाल्टर स्काट का झुकाव

समकालीन स्काटलैण्ड से जो सामग्री वाल्टर स्काट को प्राप्त हुई उसे उसने प्राचीन काल की कथाओं तथा स्मारक चिन्हों के अध्ययन से बहुत कुछ बढ़ाया। बाल्यावस्था से ही उसे पुरातन वस्तुओं को देखने तथा उनके सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने में बड़ी रुचि थी। बहुत चाव से वह लोगों से प्राचीन काल की कहा-नियाँ सुना करता था और नहीं मालूम कितने टूटे-फूटे किलों, दुर्गों, स्तम्भों तथा अन्य हवेलियों का हाल सुन-सुनकर एकत्र करता था। बूढ़े लोगों से उनके समय का हाल सुनने का उसे बड़ा शौक था। अपनी माता का हाल लिखते हुए वह कहता है—"यदि मैं विगत का चित्रण करने में कुछ भी सफल हुआ हूँ तो वह उन्हीं पुस्तकों के अध्ययन से जो उन्होंने मुझे पढ़ायी थी।" आगे चलकर स्काट ने इस ज्ञान को जो उसने लोगों से प्राप्त किया था, पुस्तकों, प्राचीन समय के लोगों के पत्रों तथा रोज़नामचों के अध्ययन से पूरा किया। विगत की ऐसी जानकारी ने उसे अपने देशवासियों को समझने में सहायता दी और ऐतिहासिक लोगों के रेखाचित्रों के लिए सामग्री प्रस्तुत की। बहुत-सी प्रासंगिक कथाएँ और छोटी-छोटी घटनाएँ उसे मालूम हो गयीं, जिन्हें अपने वर्णनों में देकर वह अपने दृश्यों तथा पात्रों को वास्तविकता दे सका और उनको सजीव कर सका। अपनी कथावस्तु के ठीक करने में स्काट बहुधा असावधान रहता था जिस कारण कभी कुछ अंग छूट जाते थे अथवा किन्हीं बातों पर अनुचित ज़ोर पड़ जाता था। किन्तु वह अपनी कहानियों के पात्रों

को ऐसे दृश्यों के सामने और ऐसे वातावरण में रखने में सदा सफल होता था जिसमें सब कुछ सार्थक विदित होता था। दूसरी विशेषता जिसके कारण वह इतना बड़ा उपन्यासकार कहलाता है, पात्रों तथा दृश्यों के परस्पर संघर्ष से निर्मित कार्यसूत्र को अनिवार्य करके दिखलाने की है। इस विशेषता का बड़ा सुन्दर उदाहरण 'ओल्ड मारटैलिटी' (Old Mortality) में मिलता है। इस उपन्यास में मार्टन (Morton) बर्ले (Burley) से मिलने जाता है जो एक गुफा में रहता है। गुफा तक पहुँचने में एक बहुत गहरे दर्रे को, जिसके नीचे जलप्रपात है, एक गिरे हुए पेड़ के ऊपर चढ़कर पार करना होता है। मार्टन को दूर से ही वृद्ध कवेनैण्टर (Covenanter) के चीखने और चिल्लाने की आवाज सुनाई देती है। यह वृद्ध धार्मिक सन्ताप से पागल हो रहा था। कुछ आगे बढ़ने पर मार्टन को बर्ले की भयानक आकृति दिखाई देती है, जहाँ वह उन पिशाचों और दैत्यों से लड़ रहा था जो उसे घेरे हुए थे। इस दृश्य में डरावने स्थान तथा पागल मनुष्य की आकृति एवं चिल्लाहट के एकत्रित कर देने से बड़ा प्रभाव उत्पन्न हो गया है, विशेष कर उस मौक़े पर जब बर्ले पेड़ के तने को नीचे घाटी में ढकेल देता है और मार्टन के लिए सिवा गूँजती हुई घाटी में कूद पड़ने के कोई और तरीका जान बचाने का नहीं रहता।

स्काट के उपन्यासों में इतिहास का प्रयोग

स्काट के जन्म से पहले की शताब्दी उसका किला थी, जिसमें बैठकर वह अपनी जन्मभूमि तथा देशवासियों के पराक्रम और गौरव का प्रदर्शन करता था। इस काल का बहुत कुछ हाल उसने उन लोगों से सुना था जिनके पिता उस काल में जीवित रहे थे। इस काल के ऐतिहासिक लोगों का चित्रण एवं ऐतिहासिक घटनाओं तथा गतिविधि का वर्णन बहुत निश्चित और निर्णीत रूप में किया गया है जिसके कारण चित्र सजीव एवं घटनाएँ आँखों देखी मालूम पड़ती हैं। गतिविधि को स्काट ने व्यक्तिगत अनुभवों के रूप में प्रस्तुत किया है जिसके कारण ऐतिहासिक तथ्यों को वह साकार तथा सजीव कर सका है और कल्पना द्वारा उन्हें अर्थपूर्ण करके दिखा सका है। जब यह सामग्री समाप्त हो गयी या जब उसे अपने पाठकों को नवीन सामग्री देकर उत्तेजित करने की ज़रूरत मालूम हुई, तब उसने अन्य क्षेत्रों में प्रवेश किया और साधारण इतिहास से सामग्री प्राप्त करने लगा। जो उपन्यास इंग्लैण्ड के इतिहास पर आधारित है, जैसे 'आइवनहो' या 'केनिलवर्थ' (Kenilworth), या जिनकी पृष्ठभूमि यूरोप के देश हैं, जैसे 'क्वेण्टिन डरवर्ड' (Qentin Durward) या

'दि टालिस्मान' (The Talisman), उन उपन्यासों की सामग्री अध्ययन से प्राप्त की गयी है और वे साहित्यिक स्फूर्ति के प्रभाव मे लिखे गये है। यह अध्ययन अथवा साहित्यिक स्फूर्ति वह काम नहीं कर सकी जो स्काच उपन्यास लिखने मे स्कॉट की जानकारी तथा प्रत्यक्ष ज्ञान ने किया था। फिर भी 'टालिस्मान' में रिचर्ड के धर्मयुद्ध का वृत्तान्त या 'केनिलवर्थ' में एलिज़बेथ के हावभाव तथा चोचलों का वर्णन या 'क्वेन्टिन डरवर्ड' में चार्ल्स दि बोल्ड से लुई का झगड़ा इस बात के प्रमाण है कि स्काट साधारण इतिहास को लेकर अपनी कल्पना द्वारा पात्रो तथा घटनाओ को रोचक एवं अर्थपूर्ण करने की सामर्थ्य रखता था, या यो कहिए कि वह इतिहास से कहानी-कला का काम ले सकता था। वाल्टर स्काट के उपन्यासो मे इन सब गुणों के कारण, जैसा हैजलिट कहता है--"हमे मानव प्रकृति का नया संस्करण प्राप्त हुआ जिसे पाकर हम कृतार्थ हुए।"

रोमैन्टिक विषय, रोमांस कथा-उपन्यास और कविता

सर वाल्टर स्काट का साहित्यिक जीवन उस संघर्ष का द्योतक है जो पद्य और गद्य के बीच रोमैन्टिक विषयों को धारण करने के लिए बहुत पहले से चल रहा था। जब से "गाथिक" उपन्यास लिखे जाने लगे थे रोमैन्टिक विषय गद्य कहानी-साहित्य ने अपना रखे थे। कविता मे अलंकार तथा अमूर्त भाव का उपयोग किया जाता था और उसमें बनावट एवं उदासीनता कोई दोष नही माने जाते थे। यह संघर्ष बहुत कुछ उस संघर्ष का सा था जो इनसे पहले नाटक और उपन्यास के बीच उठाया गया था, जब सोलहवी शताब्दी मे उपन्यासकारो ने वास्तविक घटनाओं तथा चरित्रचित्रण पर ज़ोर देना आरम्भ किया था और इस प्रकार अनुचित रीति से नाटक की सुरक्षित भूमि में घुस पड़े थे। नाटक और उपन्यास के संघर्ष मे रिचर्डसन, फील्डिंग और दूसरे उपन्यासकारों ने विजय पायी थी। अब, रोमैन्टिक आन्दोलन के उठ खड़े होने के बाद से मनुष्य कविता का मुख्य विषय बनता जा रहा था और अठारहवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में, जब नयी प्रवृत्तियाँ बल पकड़ रही थी, ऐसा विदित होता था कि रोमैन्टिक विषय वास्तव में कवियो के ही व्यवहार मे आने चाहिए। नवीन चेतना और नयी गतिविधि जब साहित्य मे आयी तो मालूम हुआ कि गद्य उसे उचित तथा पर्याप्त रूप से उपन्यास मे प्रस्तुत करने की क्षमता नही रखता। सौन्दर्य और रहस्य को व्यक्त करने की सामर्थ्य केवल कविता में है। इन्हीं विचारों के अनुसार स्काट ने भी अपना साहित्यिक जीवन छन्दबद्ध

रोमांसों से आरम्भ किया और रोमैन्टिक विषयों को कथावस्तु में रखा। ये काव्य-रोमांस बड़े सफल रहे और लोकप्रिय हुए। परन्तु स्काट की मनोवृत्ति गद्यात्मक थी और उसकी वौद्धिक जड़ अठारहवी शताब्दी में दृढ़ता से जमी हुई थी। इसके अलावा, वह उन्हीं यथार्थवादी व्यंग्यात्मक लेखकों के वर्ण का भी था, जिन्होंने अंग्रेजी उपन्यास का निर्माण किया था। न वह रहस्यवादी था न भावुक, और विगत उसकी दृष्टि में आश्चर्यों का भंडार नहीं था वल्कि था ऐसा वर्तमान, जो आँखों से ओझल होकर भी विद्यमान रहता है। उसे वर्डस्वर्थ और कोलरिज जैसे रोमैंटिको के प्रति पूरी सहानुभूति थी और वह उन्ही की भाँति मनुष्य की प्रकृति को प्राकृतिक पर्यावरण से पृथक् करने का विरोधी था। मनुष्यजीवन के व्यतिक्रमों को वह अपनी व्यंग्यात्मक दृष्टि से देखता और व्यक्ति के संघर्ष से प्रसन्न होता था क्योंकि उसके विचार में सभ्यता उसी संघर्ष का फल थी।

स्काट ने छन्दवद्ध रोमांसों के लिखते समय अनुभव किया कि वह सर्वथा रोमैन्टिक कवि नही था, और जव ऐसे कवियों की तुलना में उसका ठहर सकना असम्भव सा हो गया तो उसने अपने लिए दूसरा रास्ता निकाला। उसने अपने कवित्व की दुर्वलता को दूर करने के हेतु वास्तविकता, हास्य, व्यंग्य तथा चिन्तन को वड़ी सुगमता से उसमे जोड़ दिया और इन सव गुणों को एकत्रित करके उपन्यास लिखना प्रारम्भ कर दिया। इन गुणों से सम्पन्न उपन्यास ने कविता पर विजय पायी और स्काट की पुस्तकें वाइरन जैसे लोकप्रिय कवि के मुकावले में पढ़ी जाती रहीं। स्काट के उपन्यासो ने सिद्ध कर दिया कि रोमैन्टिक विषय कहानीसाहित्य के गद्य में वैसे ही लिखे जा सकते है, जैसे पद्य में, उनके प्रवेश से उपन्यास को कोई हानि नही पहुँचती। इन उपन्यासो मे चित्रित सर्वसाधारण जीवन स्काट के मन तथा हृदय की उत्पत्ति है। उनमें एक उदार चेतना एवं उच्च आदर्श तथा उद्देश्य के लिए उत्साह पाया जाता है जो किसी दूसरे ऐतिहासिक रोमांस में नही मिलता।

सर वाल्टर स्काट की ख्याति तथा लोकप्रियता कुछ हद तक उन्नीसवीं शताब्दी के इंग्लैण्ड की मनोदशा पर निर्भर थी। शताब्दी का पहला चरण क्रान्तिकारी प्रवृत्तियो में वहा जा रहा था और विचारशील जनता प्राचीन अवशेषों को किसी प्रकार सुरक्षित रखने की चेष्टा कर रही थी। ऐसे समय में वाल्टर स्काट के उपन्यास जिनमें विगत को सजीव किया गया था, देशभक्ति उत्तेजित करते थे और प्राचीन अंग्रेज़ी सभ्यता के गौरव के चित्र प्रस्तुत करते थे। किन्तु नेपोलियन से युद्ध समाप्त होने पर समय में परिवर्तन हुआ और युद्ध के सन्निहित प्रभाव दूर

होने लगे। नये विचार जागे, नवीन कल्पनाएँ विकसित हुईं और अंग्रेजों की जीवन-धारा विस्तृत होने लगी। यह परिवर्तन उन लेखकों के उपन्यासों में दिखाई देता है जो स्काट की मृत्यु के उपरान्त प्रकाश में आये। इन उपन्यासों ने नये विचारों तथा नवीन आदर्शों के प्रभाव से वातावरण बदल गया था। यद्यपि इस समय के लगभग सभी लेखकों ने इतिहास की सामग्री का सदुपयोग किया, परन्तु लोगों की मनोवृत्ति बदल चुकी थी और उनकी आँखें भविष्य की ओर लगी हुई थी। इस कारण रोमैन्टिक तथा भयानक पक्षों के चित्रण को वह महत्त्व नहीं दिया जाता था जो यथार्थ अथवा वास्तविकता को मिलता था। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यकाल तक यही हाल रहा, जिसके बाद थैकरे और दूसरे उपन्यासकारों ने यथार्थवाद पर विशेष जोर देना आरम्भ किया और पाठकों की रुचि बदल दी।

जार्ज पेन रेन्सफर्ड जेम्स और वाल्टर स्काट के अनुयायी

वाल्टर स्काट के समय के पाठकों को प्रति वर्ष एक या दो उपन्यास मिल जाने के कारण वे लेखकों का इस बात से मूल्यांकन करने लगे थे कि स्काट ने उनको कितनी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। सन् १८२६ के बाद से कई वर्षों तक दो-दो और तीन-तीन उपन्यास स्काट ने प्रकाशित किये थे। जार्ज पेन रेन्सफर्ड-जेम्स (१८०१–१८६०) (George Payne Rainsford James) नामक एक लेखक ने १८२५ और १८५० के बीच एक सौ से अधिक उपन्यास तथा कहानियाँ प्रकाशित करके अपने समकालीन लेखकों को परास्त कर दिया था। अंग्रेजी साहित्य के इतिहास में आज यह लेखक इन उपन्यासों अथवा कहानियों के कारण नहीं, बल्कि उन परि-हास के कारण स्मरण किया जाता है, जो थैकरे ने उसके रिशेलू (Richelieu) नामक उपन्यास की नक़ल उतारते हुए किया था। जेम्स के लगभग सब उपन्यास एक ही ढाँचे या नकशे पर और एक ही प्रणाली का अनुकरण करके लिखे गये हैं। वे सड़क के किनारे की किसी सराय की बैठक से आरम्भ होते हैं जिसमें दो आदमी किसी गुप्त घटना पर चुपके-चुपके वार्तालाप करते हैं, या उनके प्रारम्भ में दो आदमी घोड़ों पर सवार किसी सुन्दर पहाड़ी रास्ते पर चले जा रहे हैं और आपस में बात-चीत कर रहे हैं। यहाँ से प्रारम्भ होकर जब कहानी आगे बढ़ती है तो धीरे धीरे एक या दो ऐतिहासिक व्यक्ति उसमें ले आये जाते हैं और उनका बड़ा ब्यौरेवार वर्णन किया जाता है। ऐसे लेखकों का न तो कोई ऐतिहासिक दृष्टिकोण ही था, न इतिहास का अच्छा ज्ञान। यही कारण है जो वे ऐसी कोई स्मरणीय रचना

चारों ओर एक विशेष प्रकार की चेतना का संचार हो रहा था, जिसके कारण जीवन में विस्तार आता जा रहा था। यह सारा परिवर्तन और विस्तार साहित्य और कला द्वारा अपने को स्पष्ट रूप में व्यक्त करने को व्याकुल हो रहा था। एडवर्ड वुल्वर-लिटन (१८०३–१८७३) और वेन्ज़ामिन डिज़रैली (१८०५–१८८१) इस समय के वे लेखक थे जिनकी पुस्तकों में यह विस्तृत जीवनधारा स्पष्ट रूप में दिखाई देती है। कालक्रम के अनुसार इन दोनों लेखकों की रचनाएँ शताब्दी के दूसरे चरण में आती है। ये दोनों लेखक राज्यकार्यों में कुशल एवं नीति और दूतकार्यों में चतुर थे। दोनों राजनीति के उस वर्तमान का विस्तार भविष्य में समझते थे जिसे वाल्टर स्कॉट ने विगत से ऐसा मिला हुआ देखा था कि उन्हें अलग करना असम्भव था। ये दोनों लेखक सुशिक्षित एवं वहुविज्ञ और अपने समय के वड़े विचारवान् लोगों में से थे। उनकी रचनाओं में वहुमूल्य समाज-समीक्षा मिलती है और सामयिक साहित्य के प्रवाह तथा उथल-पुथल का प्रतिविम्व दिखाई देता है।

एडवर्ड वुल्वर लिटन

एडवर्ड वुल्वर-लिटन (Edward Bulwer-Lytton) जो पहले पचीस वर्ष तक उपन्यासकार लिटन-वुल्वर के नाम से विख्यात रहा और इसके वाद, अगले पच्चीस वर्ष तक, वुल्वर-लिटन नामक राजनीतिज्ञ, सुवक्ता, नाटककार, निवन्धलेखक, कथाकार की हैसियत से मशहूर हुआ इंग्लैण्ड के एक प्रतिष्ठित घराने मे उत्पन्न हुआ था। उस घराने में तीन राज्य करनेवाली जातियों का खून था; स्कैन्डीनेविया के वाइकिंग, नारमंडी के नारमन और आयरलैण्ड के केल्ट। एडवर्ड जेनरल वुल्वर का पुत्र था जिनके हाथ में नेपोलियन के आक्रमण से इंग्लैण्ड को सुरक्षित रखने का सारा सैनिक प्रवन्ध था। उसकी माता, एलिज़वेथ वार्वरा, इंग्लैण्ड के इतिहास में प्रसिद्ध लिटन्स आफ़ नेववर्थ के वंश की उत्तराधिकारिणी थी। इस प्रकार जन्म एवं सम्पत्ति दोनों ओर से वह भाग्यशाली था। सन् १८०७ में पिता की मृत्यु हो जाने पर उसकी प्रारम्भिक शिक्षा माता ने अपने हाथ में ले ली और वाल्यावस्था से ही उसे साहित्य और कला की रुचि दिलायी। लड़कपन में ही उसे वहुत-से विषयों का ज्ञान हो गया था और दूसरे विषयों की ओर दिलचस्पी हो गयी थी। केम्ब्रिज से १८२६ में उसने डिगरी प्राप्त की और मूर्तिनिर्माण-कला पर एक कविता लिखकर चान्सलर का स्वर्ण पदक पाया। वीस वर्ष की उम्र के पहले से ही

उसने कविता और कहानी लिखना आरम्भ कर दिया था, जिनसे उसके भविष्य का पता चलता था। कालेज में वह बड़ा अच्छा वक्ता समझा जाता था। जिस केम्ब्रिज यूनियन के मेकाले और आस्टिन जैसे विवादकुशल मेम्बर थे, उसी यूनियन का वह अध्यक्ष तथा सभापति चुना गया था। विश्वविद्यालय छोड़ने के उपरान्त वह यूरोप के देशों में भ्रमण के लिए गया और कुछ समय के बाद लापता हो गया। कहा जाता है कि वह मानवप्रकृति तथा समाजव्यवस्था का अध्ययन करने के सिलसिले में भ्रमणशील, बिना घर-द्वार की जिप्सी जाति की एक टोली में जा मिला और उन्हीं में की एक युवती से विवाह भी उस जाति की रीति के अनुसार कर लिया। इस व्यवहार के कारण माँ-बेटे मे दुराव आ गया और बुल्वर को अपनी जीविका के लिए अपनी लेखनी का आश्रय लेना पड़ा। इस समय उसने बड़ा परिश्रम भी किया और बहुत शीघ्र लिखने की आदत डाल ली यहाँ तक कि उसने बिना संशोधन के अपनी पुस्तकों को छपने और प्रकाशित होने दिया। ऐसी दशा में रचनाओं के स्तर का गिरना अनिवार्य था। इस काल की जो रचनाएँ आगे चलकर दुबारा प्रकाशित हुई उनमें से 'वीड्स एन्ड वाइल्ड फ्लावर्स' (Weeds and Wild Flowers), जो फ्रांस में भ्रमण करते हुए लिखी गयी थी और जिसके साथ उसने विद्याभिमान से भरे ला राशिफुको (La Rochefoucauld) की शैली में लिखे कुछ सूत्र-वाक्य भी जोड दिये थे, अब भी पढी जाती है।

सन् १८२७ में 'फ़ाकलैन्ड' (Falkland) नामक उसका प्रथम उपन्यास प्रकाशित हुआ और कुछ ही महीनो के बाद 'दि रिबेल' (The Rebel) नाम का दूसरा उपन्यास लिखा गया। ये दोनों उपन्यास उस विशेष भावुकता से भरी, उन्नत शैली में लिखे हुए है, जो युवावस्था का पहला चिह्न होता है। प्रत्येक युवक भावुकता के ऐसे आधिक्य की दशा से उस समय पार होता है जब उसमे विचार करने की शक्ति उत्पन्न होती है और वह तत्त्व खोजना आरम्भ करता है। ऐसी अकारण विशिष्ट उदासी तथा अस्थिरता एव उदासीनता से भरे होने के कारण बुल्वर अपने पहले उपन्यास को अपना 'सारोज़ आफ़ वर्टर" कहता था। उसने विभिन्न विषयों पर निश्चित विचारों और निर्णीत दृष्टिकोण को रखकर उपन्यास लिखना आरम्भ किया था और उन विचारों को जितनी अच्छी भाषा मे उससे हो सकता था, व्यक्त करने की लालसा रखता था। जब वह विश्वविद्यालय में ही था, उसी समय उसने अपने विचारों और भावों को उचित आकृति देने के लिए उपन्यास को साहित्य के दूसरे नाटक आदि अंगों से अधिक उत्तम समझ लिया था। इस

निर्णय मे उपन्यास की वह स्वतन्त्रता, जो लेखक के विचारो तथा कल्पना को फैलने के लिए पर्याप्त अवसर देती, विशेष कारण हुई।

वुल्वर के सामाजिक उपन्यास और विचार

वुल्वर ने १८२८ मे लार्ड मैसी के पौत्र, सर फ्रैन्सिस मैसी की पुत्री से विवाह किया, जिससे १८३१ मे वह पुत्र उत्पन्न हुआ जो हिन्दुस्तान का वाइसराय बनाया गया। विवाह के वर्ष मे उसने पेल्हम (Pelham) नामक उपन्यास प्रकाशित किया जिसमे उसने जीवन की सफलता के वे सारे विचार प्रकट किये जो बार-बार उसके प्रारम्भिक काल के उपन्यासो मे उठाये जाते है। उसका ख़याल था कि योग्यता एव परिश्रम के फलस्वरूप मनुष्य सफल होता है और उसे यश मिलता है। इस सत्य मे उसे वैसा ही विश्वास था जैसा प्रकृति के नियमो मे। मनुष्य मे इतना साहस ओर इतना पराक्रम होना जरूरी है कि वह भाग्य पर हुक्म चला सके। यदि उसमे ऐसी शक्ति है तो उसको सफलता अवश्य मिलती है। अपने कई प्रारम्भिक उपन्यासो मे उसने यह सिद्धान्त प्रस्तुत किया है।

पेल्हम एक निपट स्वार्थी एव निर्लज्ज युवक है जो अपनी नीच प्रवृत्तियो को काम मे लाकर विरोधी शक्तियो को जीतना चाहता है। उसने अपनी सभाचतुर माता से दुनियादारी सीखी थी। अपने असीम अहकार तथा चित्त की अपार सावधानी के हथियारो को लेकर वह ससार को विजय करने मे अपनी बुद्धि का प्रयोग करता हे।

अपने सामाजिक उपन्यासो की कथावस्तु सँवारने मे लिटन मुख्य पात्रो को सीमित नही करता था इसलिए, प्राचीन काल के जादूगरो की भाँति, वे जो कुछ छूते थे सोना हो जाता था। उन्हे वह बुद्धिमानी देता था और उनकी दुर्दशा का कारण समाज की भ्रष्टशीलता को ठहराता था। ऐसा करने मे उसका विशेप प्रयोजन हुआ करता था। वह यह सिद्ध करना चाहता था कि समाज पर विजय पाने के लिए विद्रोह की आवश्यकता नही होती, क्योकि वह बडी सुगमता से परास्त हो जाता है। 'दि डिजोन्ड' (The Disowned) और 'डिवेरूज' (Devereux) नामक उपन्यास, जो १८२९–३० मे प्रकाशित हुए, इसी बात को दूसरे ढग से प्रस्तुत करते है। युवको तथा वृद्ध जनो के आचरणो एव प्रवृत्तियो को दिखाकर उन स्थितियो का वर्णन किया जाता है जिनमे उनके जीवन की विशेष समस्याएँ उत्पन्न होती हे। पेल्हम की लोकप्रियता ने सिद्ध कर दिया कि वुल्वर के ये विचार एव समाज के प्रति ऐसी भावनाए ठीक थी।

बुल्वर के अपराध सम्बन्धी रोमांस तथा उसका "रोमैंटिसिज्म"

बुल्वर ने इन उपन्यासों के बाद अपराध तथा अपराधियों के जीवन की सामग्री लेकर रोमांस लिखना शुरू किया और अपने नायकों को समाज के अत्याचारों के शिकार बताया। पाल क्लिफर्ड (१८३१) में, जिसका नायक एक ठग अथवा लुटेरा है, उसने इंग्लैण्ड की दण्ड-सम्बन्धित सस्थाओं के दो विशेष दोषों की ओर ध्यान आकर्षित किया। एक तो कारागारों का दुराचारी शासन और दूसरा क्रूर एवं खून का प्यासा दण्ड-विधान। अपराध की ओर समाज की अभिवृत्ति का उसने इस उपन्यास में व्यंग्यात्मक उपहास किया और अन्त में अपना विचार इन शब्दों में प्रकट किया—"मनुष्य के साथ इससे बुरा व्यवहार क्या हो सकता है कि उसे फाँसी दे दी जाय।" उसने उन सब साधारण विचारों का विरोध किया जो लोगों में अपराधियों तथा उनके प्रेरक स्वभाव के विषय में प्रचलित थे। अंग्रेजी भाषा में यह उन उपन्यासों में था जो पहले पहल लोकहित के लिए लिखे गये थे।

यूजीन ऐरम (Eugene Aram) में उसने यह दिखाने की चेष्टा की कि व्युत्पन्न एवं ज्ञानप्राप्त मनुष्य कैसे पतित होकर निर्दयता से हत्या कर डालता है और फिर उस दशा से निकलकर कैसे एक दुःखी तथा पश्चात्तापपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। यूजीन एरम एक असामान्य योग्यता का अध्यापक था जो अपनी सज्जनता और सौम्य स्वभाव के लिए प्रसिद्ध था। सन् १७५९ में क्लार्क नामक मनुष्य के वध का उस पर अभियोग लगाया गया और उसे फाँसी दे दी गयी थी। उपन्यास में वह एक "रोमैन्टिक" स्वभाव का मनुष्य दिखाया गया है जो निर्धनता की दीन दशा में हाउजमैन नाम के एक व्यक्ति की हत्या करने में साथ देता है। इस घटना के बाद उसे बड़ा दुःख एवं घोर पश्चात्ताप होता है और वह दूर एक गाँव में जाकर रहने लगता है, जहाँ उसे कोई जानता नहीं। इस गाँव में वह एक सौम्य, सदाचारी स्त्री से प्रेम करने लगता है। जिस समय इन दोनों का विवाह होने को था, हाउजमैन आ पहुँचता है और यूजीन एरम को विश्वासघात करके पकड़वा देता है और उसे फाँसी दे दी जाती है। इस घटना के आघात से उस स्त्री की मृत्यु हो जाती है। प्रकाशित होते ही इस पुस्तक ने शिक्षित संसार का ध्यान आकर्षित किया और बुल्वर दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गया। परन्तु थोड़े ही समय के बाद उसकी आचारनीति पर विवाद उठाया गया और उसके विरुद्ध समीक्षा होने लगी।

मन एवं आत्मा की प्रेरणा के सम्बन्ध में उसे असाधारण कौतूहल था और

इस विषय पर लिखने की बड़ी उत्सुकता रहा करती थी। यह कौतूहल अपराध को परिणाम तक पहुँचाने से शान्त नहीं होता था और साधारण अपराधियों की मनोवृत्ति का निरीक्षण भी उसको सन्तुष्ट नहीं करता था। वह इस प्रकार के उपन्यासों में नित्य-नये पात्र इसलिए रखता था कि जिसमें आचारनीति की गुत्थियाँ सुलझ सकें। स्वभाव की गहराई में प्रवेश करने के विचार से वह शिक्षित मनुष्यों को असाधारण परिस्थितियों में डालकर उनके आचरण का निरीक्षण करता था। मानवीय व्यवहार की गहराई की थाह लेने की उत्सुकता उसे सारे जीवन में रही और विभिन्न समस्याओं में डालकर उसने बूढ़े और जवान स्त्री तथा पुरुषों की उलझनों का अध्ययन किया। ऐसा करने में उसने मृत्यु के द्वार तक अपना निरीक्षण करना बन्द नहीं किया। जिस अनन्त में सम्पूर्ण रहस्यों के परदे उठ जाते हैं उसमें भी झाँकने की चेष्टा वह करता रहा। मन पर पड़नेवाले बुरे प्रभावों का अध्ययन उसने उस समय भी किया जब वह पारिवारिक जीवन की स्वस्थता के उपन्यास लिखता था, अथवा इतिहास के प्रतिभाशाली लोगों के रेखा-चित्र खींचता था।

बुल्वर-लिटन के ऐतिहासिक उपन्यास

दि पिल्ग्रिम्स आफ़ दि ह्राइन (The Pilgrims of the Rhine) को प्रकाशित करने के उपरान्त सन् १८३३ में बुल्वर एक मासिक पत्रिका का सम्पादक हो गया, परन्तु शीघ्र ही उस पद को त्याग कर इटली की सैर को चला गया, जहाँ उसने दिल खोलकर भ्रमण किया और फिर रोम में कुछ काल ठहरने के उपरान्त नेपिल्स में रहने लगा। इटली में भ्रमण करते समय उसे विगत के रोमांस में दिलचस्पी हुई और उसने दि लास्ट डेज़ आफ़ पाम्पिआई (The Last Days of Pompeii) के लिए सामग्री एकत्रित करके १८३४ में ही उपन्यास लिख डाला और वर्ष का अंत होने से पहले उसे प्रकाशित कर दिया। यह उपन्यास रोम के सबसे श्रेष्ठ प्राचीन समय के वैभव तथा विचित्र रीति-रिवाजों, संस्थाओं एवं समाजव्यवस्था को फिर से जीवित करके पाठकों के सामने लाता है। इन सब बातों को वह एक सुन्दर प्रेम-कथा में पिरो देता है जिसके पीछे का दृश्य ज्वालामुखी पर्वत का फटना है, जो सारे समाज को उलट-पलट देता है और एक अद्भुत चेतना से वातावरण में रोमांचकारी थरथराहट उत्पन्न कर देता है। इस उपन्यास को लिखने से पहले बुल्वर वेसूवियस के ज्वालामुखी पहाड़ पर चढ़ा था और उसने इटली की प्राचीन वस्तुओं का निरीक्षण किया था, बड़ी संख्या में लातीनी भाषा की साहित्यिक

पुस्तकें पढ़ी थीं, यूनान के दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया था और इसी के साथ-साथ अपनी कल्पना द्वारा उस जीवन तथा समाज का चित्र मन में बनाया था जिसकी ये सब वस्तुएँ स्मारक थीं। पाम्पिआई और उसका वेसूवियन के उद्भेदन से पहले का क्षयग्रस्त जीवन उसकी कल्पना में मूर्तिमान् हो गया था, किन्तु उस काल के मनुष्यों के कोई ऐतिहासिक वर्णन उसे पढ़ने को नहीं मिले थे, जिसके आधार पर वह अपनी कथावस्तु के पात्रों की कल्पना कर सकता। उसके सामने यही समस्या थी—"माना कि पाम्पिआई की दशा सन् ७९ में वही थी जो प्राचीन वस्तुओं तथा साहित्य से मैंने मूर्तिमान् की है; माना कि समाज तथा व्यक्ति की आचरणनीति वही थी जो मुझे दार्शनिक विचारों में मिलती है और यह भी माना कि क्षयग्रस्त होने के कारण जीवन की गति मंद और भविष्य सूना था। ऐसे समाज और ऐसी दुनिया में किस प्रकार के स्त्री और पुरुष उत्पन्न होकर कैसे होंगे? और फिर ऐसे समाज तथा इस प्रकार के लोगों पर वेसूवियन के उद्भेदन-जैसे प्रलय का प्रभाव क्या होगा?" इस समस्या को बुल्वर ने कल्पना द्वारा हल किया और अपने उपन्यास में ऐसे वर्णन तथा ऐसे पात्र रखे, कहानी इतनी गठी हुई और सीधी बनायी, पुरावशेष का ज्ञान ऐसा ठीक एवं सम्पूर्ण दिखाया कि उनकी कल्पित बातें ज्ञात बातों से घुल-मिलकर एकस्वर हो गयीं। उपन्यास की सफलता इस बात से सिद्ध होती है कि पाम्पिआई के खंडहरों में घूमनेवाले लोग आज भी डायोमीड और ग्लाकस के घरों को ढूँढ़ते हैं और उन तहखाने की दीवारों पर जूलिया के आकार के चिन्ह तलाश करते हैं, जिससे वह ज्वालामुखी पहाड़ से बहकर आनेवाले लावा की लाल विकराल जिह्वा से बचने को जा छिपी थी। रोम-जैसे नगर के खंडहरों में भ्रमण करनेवाला विद्वान् कवि और कला-प्रेमी, जो रोमैन्टिक प्रवृत्तियों का अनुभवी भी हो, अपनी कल्पना में उस विगत को सजीव किये बिना नहीं रह सकता था, जिसके विध्वंस का दृश्य उसके सामने था। विचारों में निमग्न बुल्वर ने पाम्पिआई के खंडहरों में खड़े होकर विगत के स्वप्न को साकार करके अपने समकालीन देशवासियों को उसका चित्र दिया।

बुल्वर से पहले के ऐतिहासिक उपन्यास लिखनेवाले इतिहास में से कुछ व्यक्तियों को चुन लेते थे और फिर उन व्यक्तियों के लिए ऐसी घटनाएँ और ऐसे साहसिक कार्य अपनी कल्पना में निश्चित करते थे, जो उनके स्वभाव तथा अनुभूत एवं जाने हुए कार्यों से मिलते-जुलते होते थे। सर वाल्टर स्कॉट ने ऐतिहासिक व्यक्तियों और घटनाओं को कल्पित व्यक्तियों और घटनाओं से इसी प्रकार एक

मे मिलाया था और फिर उनको समकालीन जीवन में आरोपित कर दिया था। वुल्वर अपने उपन्यासों मे इतिहास के किसी ऐसे उत्कर्ष अथवा मोड़ को शिखर बनाता है, जहाँ प्राचीन और नवीन विचारों तथा आदर्शों में मुठभेड़ अथवा टक्कर होती है। ऐसी टक्कर या मुठभेड़ के समय में कैसी परिस्थिति उत्पन्न होगी, अथवा कैसे स्त्री और पुरुप होंगे, ये सब बातें उसकी कल्पना के आविष्कार हैं जिनकी सत्यता प्रकृति की कसौटी पर जाँची जाती है।

रिएन्जी (Rienzi) नामक उपन्यास में मध्यकालीन रोम का बचा-खुचा ठाटबाट एक ऐतिहासिक प्रासंगिक कथा को लेकर चित्रित किया गया है। यह प्रसग बड़ी चतुराई से रोम के लम्बे इतिहास में से निकाला गया है, क्योंकि इसके द्वारा वुल्वर ने अपने सिद्धान्त पर जोर देकर इस पूरे प्रसंग के सम्बन्ध में इतिहासकारों का मत बदल दिया है और रिएन्जी के चरित्र का बिलकुल दूसरा मूल्य निरूपण किया है। चौदहवीं शताब्दी के मध्यकाल का जीवन और उसकी समस्याएँ, सामाजिक तथा राजनीतिक दशा और रिएन्जी का शासन, ये सब बातें बड़ी अच्छी भाँति वर्णित की गयी है। कथावस्तु इतिहास के वर्णनों के साथ-साथ चलती है और वुल्वर की कल्पना बिखरे हुए आशिक तत्त्व को मूर्तिमान् कर देती है। रिएन्जी के अतिरिक्त उसकी बहिन आइरीनी, तथा एडियन कोलोना के चरित्रों का बड़ा सुन्दर चित्रण किया गया है।

वुल्वर ने इसके बाद दो ऐतिहासिक उपन्यास और लिखे,—दि लास्ट आफ दि बैरन्स (१८४३) (The Last of the Barons) और हैरल्ड (१८४८) (Harold)–जिनमे से पहला पन्द्रहवी शताब्दी की इंग्लैण्ड की सामाजिक दशा का चित्र खीचता है और दूसरा नार्मन विजय के समय का। एडवर्ड चतुर्थ के राज्यकाल के झगड़े और लडाइयो को वुल्वर ने एक दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक की भाँति आँका है और उनसे परिणाम निकाले है। सामाजिक प्रभावों के बल का निरीक्षण इतनी गहराई में जाकर किया है कि पन्द्रहवी शताब्दी में ही मध्यश्रेणी के लोगों का अलग वर्ग बन जाना अनिवार्य विदित होता है और उसके हाथों देश का इतिहास बदलना भी निश्चय जान पड़ता है।

आधुनिक काल के जीवन सम्बन्धी उपन्यास

समय के रिवाज के अनुसार वुल्वर ने भी आधुनिक काल के जीवन् पर उपन्यास लिखे, जिनमें वास्तविकता के साथ उसने काल्पनिक तत्त्वों को जोड़ा और लारेन्स

स्टेर्न (Lawrence Sterne) की शैली में व्यंग्यात्मक रेखाचित्र दिये। कदाचित् उसका विचार था कि सद्गुण अधिक स्वाभाविक तथा विश्वसनीय होते हैं, यदि उनमें किंचित् मात्र मूर्खता मिलाकर उनका चित्रण किया जाय। इस प्रकार के उपन्यासों में दि कैक्सटन्स (१८४९) (The Caxtons) और माई नावेल (१८५३) (My Novel) विशेष महत्त्व के है। दि कैक्सटन्स में कई चित्र बड़ी सुन्दरता से व्यक्ति और समाज के सघर्ष का मुख्य कारण बताते है।—"अपने पड़ोसी की नकल करो तो सब प्रसन्न, किन्तु अपने विचार तथा सिद्धान्त पर जीवन को चलाना अपने को अनोखा बताना है—यही बुरी बात है।" माई नावेल का पूरा नाम—वैराइटीज इन इग्लिश लाइफ (Varieties in English Life) उसके उद्देश्य को बताता है।

"अलौकिक, मायावी तथा रहस्य" एवं "असम्भव" विषयों के उपन्यास

लार्ड लिटन के उपन्यासों मे दो प्रकार के उपन्यास आधुनिक काल के पाठकों के लिए खास दिलचस्पी के है। ये उपन्यास वे है जो अलौकिक तथा मायावी एवं रहस्य की बातों से सम्बन्ध रखते है, या अनहोनी घटनाओं का वर्णन करते है। जनोनी (Zanoni) नामक उपन्यास, जो १८४५ मे प्रकाशित हुआ था, अलौकिकता को आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्तो से परखता है। इसी के साथ ए स्ट्रेन्ज स्टोरी (A Strange Story) तथा दि हान्टेड एन्ड दि हान्टर्स (The Haunted and the Haunters) का भी उल्लेख होना चाहिए, जो १८६० में प्रकाशित हुए थे। इन पुस्तकों मे लेखक ने बड़ी ही विस्मित करनेवाली बाते लिखी है, जिनसे अधिक विलक्षण बाते किसी दूसरे अग्रेज अथवा यूरोपीय लेखक ने नही लिखीं। इन पुस्तकों में आयुष्य-वर्धक रसायन, मेस्मरिज्म (Mesmerism), जादू तथा डरावने अनुभव, रसायन-विद्या और बहुत-सी ऐसी गूढ समस्याओ की सामग्री का प्रयोग किया गया है। 'ए स्ट्रेन्ज स्टोरी' का प्रमुख पात्र आधुनिक काल का मनुष्य है, जिसके जीवन में आज-कल के समय की समस्याएँ है जिन्हे वह आजकल की ही रीतियो से हल करने की चेष्टा करता है। वह पाँच अथवा छः सौ वर्ष से ससार में रहता आया है किन्तु अभी तक युवावस्था समाप्त नही हुई है क्योकि उसे किन्हीं गुप्त रीतियों का ज्ञान है। वह प्रत्येक साठ-सत्तर वर्ष के बाद अपना नाम बदलता रहा है और बहुत तरह की भाषा बोलता है। दूसरे मनुष्यो को मारने और जिलाने की उसमें शक्ति है जिसे वह अपने ही लाभ के लिए काम में लाता है। बड़े से बड़ा

अपराध वह कर सकता है और उसके करने में उसे पछतावा नही होता। उसे मानवजाति से न कोई सहानुभूति है न उस पर उसे दया ही आती है क्योकि वह मानव जाति से किसी प्रकार श्रेष्ठ हो गया है जो वह जानता है परन्तु बताता नही। इसी प्रकार की असम्भव सी बाते कहानी में इस तरह लिखी है मानों वे सम्भव ही नही बल्कि सामने की घटनाएँ है जिनका अनुभव किया जा चुका है।

स्पष्ट है कि इस प्रकार इन विषयों पर लिखने के लिए लेखक ने बीसों प्राचीन जातियो का इतिहास और उनके साहित्य की सैकड़ों पुस्तके पढ़ी होंगी। बहुत-से वे विश्वास जिनके बारे मे आजकल के लोग कुछ नही जानते, उसने अपने उपन्यासो मे लाकर उनके आधुनिक विज्ञान तथा दर्शनशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार अर्थ लगाये। भूत-प्रेतो के सम्बन्ध के विचार जो यूरोप की उत्तरीय जातियों में प्रचलित थे, अथवा पूर्वीय देशों से आकर लोगो के विश्वास बन गये थे, उसने अपनी पुस्तको में एकत्रित किये। इस सामग्री को लेकर जो उपन्यास एवं कहानियाँ लिखी, उन्हे प्रचलित धार्मिक विश्वासो के विरुद्ध होने के कारण साधारण लोगों ने अस्वीकार कर दिया और समकालीन लेखकों ने उसका विरोध करने में उनसे लाभ उठाया। इस पर भी कहना पडता है कि उसकी दि हान्टेड एन्ड दि हान्टर्स (The Haunted and the Haunters) अग्रेजी भाषा की सबसे अच्छी भूतों की कहानी है। इसी सग्रह की एक और मोनोज एन्ड डायामोनोज (Monos and Diamonos) नामक कहानी भी अपने ढंग की अनुपम कहानी है। कहा जाता है कि जगत-विख्यात लेखक एडगर एलेन पो (Edgar Allen Poe) ने यह कहानी अपने साहित्यिक जीवन के प्रारम्भ काल में पढी थी वह इतना प्रभावित हुआ था कि उसके बाद से उसकी सारी जीवनविधि बदल गयी थी। पो ने अपने गद्य की पुस्तके इस कहानी के प्रभाव मे लिखी और इन पुस्तकों का प्रभाव इंग्लैण्ड की कविता पर पडा और बहुत सी गद्य की पुस्तकों पर भी। पो की पुस्तकों ने फ्रेन्च, जर्मन और स्पेन के साहित्य पर भी बड़ा गहरा प्रभाव डाला।

लार्ड लिटन की सारी पुस्तकों का सग्रह मोटी-मोटी तीस जिल्दों में छपा है। उसने जितने प्रकार के उपन्यास लिखे उतने शायद ही किसी ने लिखे हों। इस पर भी सबसे प्रतिष्ठित उपन्यासकारों की सूची मे लार्ड लिटन का नाम नही लिया जाता। जिस समय वह जीवित था उसका नाम उन महान् लेखकों के साथ लिया जाता था, जो सभी प्रकार के साहित्य मे अच्छा काम कर सकते थे। जब उनकी मृत्यु हुई तो लोगों को ऐसा प्रतीत हुआ कि इंग्लैण्ड के आकाश का एक बहुत चमकदार

तारा लोप हो गया। उसके समकालीन लेखकों में जरूर ऐसे लोग थे जो उसका नाम सुनकर नाक चढ़ाते और उसके उपन्यासों के दोष दिखाते थे। कदाचित् उसके विचार औरों के विचारों से बिलकुल अलग थे, विशेषकर धार्मिक विचार; कदाचित् उसने उन क्षेत्रों में अपना कदम बढाया था जहाँ जाना सन्तुष्ट लोगों के लिए वर्जित किया गया था; संयोग से वह और दूसरे लेखकों की अपेक्षा निर्भीक होकर ऐसे विषयों में हाथ डालता था जिन्हें शिष्टाचार छिपाये रखना चाहता था। कोई भी कारण हो, उसकी मृत्यु के बाद उसकी ख्याति दिन पर दिन घटती गयी, यहाँ तक कि आज के दिन उसके पाठकों की सख्या तक कम हो गयी है।

लार्ड लिटन का ही जैसा हाल टामस कार्लाइल (Thomas Carlyle) का भी हुआ। कार्लाइल की ओर से भी कुछ इसी प्रकार के कारणो से अग्रेजों को अरुचि हुई थी जो आज तक चली आ रही है। लार्ड लिटन के विरुद्ध पहले उसकी आचारनीति तथा अपराध एवं अपराधियों के प्रति उसके व्यवहार पर कड़ी समीक्षा की गयी, जो कुछ ही समय के उपरान्त उसकी शैली तथा लेखनप्रणाली को बुरा-भला कहने में परिवर्तित हो गयी। उसकी शैली को 'नाटकीय' और उसके भावों को 'झूठा और बनावटी' कहा जाने लगा था। लोगों का मत एक बार फिर बदला और उसे श्रेष्ठ न कहकर श्रेष्ठता के निकट पहुँचा दिया। वे उसे "करीब-करीब" बड़ा उपन्यासकार तथा बडा नाटककार कहने लगे। कुछ दिनों के लिए लोगों ने यह भुला दिया कि श्रेष्ठ लेखक बहुत प्रकार के हो सकते है और शैली भी सबकी एक ही-सी होना जरूरी नही, चाहे वे सब "रोमैन्टिक" प्रवृत्ति के ही क्यों न हों। शैली का अच्छा और बुरा होना अलग गुण और दोष नही होते बल्कि उस विशेष कार्य की सफलता पर निर्भर होता है, जो लेखक उससे लेना चाहता है। बुल्वर की शैली तथा उसकी लेखन-प्रणाली बडी सुन्दर इसलिए है कि वह उन प्रभावों को उत्पन्न करने मे सफल है जो वह उत्पन्न करना चाहता था। उसके पात्र उस अर्थ में जीते-जागते न सही, जिसमे स्कॉट के बहुत से पात्र जीवित कहे जाते हैं, किन्तु उसका सा कमाल कर दिखाना, जब वह आत्मा एव छाया सम्बन्धी विषय उठाता है, उसीका काम है। "असम्भव" बातों को लिखकर "सम्भव" प्रभाव डालना उसी की जैसी प्रणाली एवं शैली मे हो सकता था। ऐसे विषयों को उसकी शैली जीवित तथा मूर्तिमान् करके हमारे सामने खड़ा कर देती है।

दूसरे सामाजिक, ऐतिहासिक तथा आधुनिक जीवन के साधारण उपन्यास भी अपने गुणों में किसी दूसरे के उपन्यासों से कम नही। ज्वालामुखी पहाड़ का

वर्णन दि लास्ट डेज़ आफ़ पाम्पिआई में, रोम अथवा रोम के जीवन का वर्णन रिएन्जी में, वेनिस का वर्णन ज़ेनोनी (Zanoni) में, और वीसों प्रसंग जो जीवन की कोमल तथा क्रूर स्थितियों का वर्णन करते हैं, वुल्वर की विशेषताएँ हैं। उसका बड़ा दोष यह था कि उसने इतनी अधिक पुस्तकें लिखीं जिसकी उसे सज़ा मिली। परन्तु उपन्यास के इतिहास में उसका महत्त्व भी इस कारण है कि उसने इतने प्रकार के उपन्यास लिखे और वहुत सी विगत की प्रणालियों को आधुनिक काल की आवश्यकता के अनुरूप कर दिया और नयी शक्ति दे दी। इतने पर भी, जैसा प्रोफेसर सेन्टस्वरी का कथन है, "बड़ी लज्जा की वात है कि इतने प्रकार के उपन्यास लिखनेवाले पर दोषारोपण किया जाता है और उसकी दिलचस्पी तथा विभिन्नता, जो उसकी सिद्धि एवं सामयिक लक्षण है, भुला दी जाती हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि वुल्वर सवसे श्रेष्ठ उपन्यासकारों में होकर भी उनमें नहीं है।

बेन्जामिन डिज़रैली और राजनीतिक उपन्यास विवियन ग्रे

लार्ड लिटन के समान बेन्जामिन डिज़रैली (Benjamin Disraeli) ने भी अपना साहित्यिक जीवन एक नये प्रकार के सांसारिक व्यक्ति को कथापुरुष बनाकर उपन्यास लिखने से प्रारम्भ किया था। विवियन ग्रे (Vivian Grey) नामक पहले उपन्यास में उसने अपनी कल्पना द्वारा उस ज्ञान का परिवर्तन करके, जो उसने पुस्तकों को पढ़ने तथा लोगों के वार्तालाप से प्राप्त किया था, कथावस्तु वनाया था। इस समय उसकी उम्र केवल इक्कीस वर्ष की थी। इस उपन्यास में उसने लार्ड लिटन की भाँति युवकों के "रोमैन्टिक" विद्रोह पर आक्रमण किया है, जो वाइरन के नाटकों के नायक के समान रूढ़ियों तथा सामाजिक सदाचार का विरोध करते और भाग्य को ठुकराते थे।

विवियन एक सामान्य योग्यता का युवक है जो संसार तथा समाज में उन्नति करना चाहता है, किन्तु परिश्रम से नहीं वलिक चालाकी और चालवाजी से, जिसके लिए वह अवसर ढूँढ़ता रहता है। उसके ढंग भी अनोखे हैं। यदि कोई धनवान् युवक कविता प्रकाशित करता है तो तुरन्त वह कहता है कि गेटे ने वेमर के साहित्यिक गज़ट में उसकी समालोचना प्रकाशित की है। यही नहीं, वह इसपर टिप्पणी भी जोड़ता है और कहता है—"कैसे सौभाग्य की वात है कि यूरोप का सवसे श्रेष्ठ कवि इस प्रकार एक होनहार युवक कवि की प्रतिभा की प्रशंसा करता है।" यदि कोई भावुक युवती मित्र-मंडल में उसका हस्ताक्षर लेने की इच्छा करती है तो वह

किसी कवि की एक पंक्ति लिखकर पूछता है—"क्या मैं कुछ और लिखूँ? सर वाल्टर स्कॉट की कोई पंक्ति या डिजरैली के कुछ विचार अथवा किसी और का कथन? यदि कहें तो बाइरन की कोई पंक्तियाँ लिखूँ?" यदि युवती ने जरा भी उत्तर देने की चेष्टा की तो ग़ज़ब ही हो गया। किसी तरह वह बातों ही बातों में उससे विवाह का प्रस्ताव कर देगा। इस तरह अपनी धृष्टता तथा सावधानी एवं मिथ्या प्रशंसा से विवियन बुलाये या बिना बुलाये उच्च श्रेणी की बिरादरी में घुसपैठ करता चला जाता है और एक दिन उस राजनीतिक संयोग में कर्ता-धर्ता बन बैठता है जो मिनिस्ट्री को निकाल देना चाहता है। इस मौके पर उसकी बौद्धिक माया का जाल टूट जाता है और वह ठग भागकर यूरोप में कहीं लुप्त हो जाता है। यूरोप में भी वह अपना यही व्यापार कुछ दिन तक चलाता है और प्रेम तथा राजनीति के क्षेत्रों में धक्के खाकर अन्त में वह समझने लगता है कि मैं इस संसार में सबसे अधिक अभागा और दुखी मनुष्य हूँ।

डिजरैली के इस उपन्यास में लोगों को उसके प्रारम्भिक जीवन का खाका दिखाई देता है, क्योंकि विवियन की भाँति उसको भी राजनीति में विशेष दिलचस्पी थी और वह भी राजनीति-संयोग में शीघ्रता से प्रवेश करने के फेर में रहा करता था। परन्तु इससे आगे विवियन और डिज़रैली में कोई समता नहीं पायी जाती। अलबत्ता, डिज़रैली को लोग घृणा से ज़रूर देखते थे, क्या लेखक क्या राज्यकार्य में लगे हुए लोग, तरह तरह के नामों से पुकारते थे। किन्तु थोड़े ही समय में लोगों को उसकी बुद्धि तथा नीति की प्रशंसा करनी पड़ी और उसे अच्छा लेखक मानना पड़ा। सन् १८३७ में वह पार्लमेन्ट का सदस्य चुना गया और कुशल राजनीतिज्ञ समझा जाने लगा। विवियन ग्रे के प्रकाशन से लेकर १८३७ तक उसने पाँच उपन्यास और लिखे जो विभिन्न विषयों पर हैं और किसी ऐसे युवक के लिखे जान पड़ते हैं, जिसे अभी यह नहीं मालूम कि वह क्या होना चाहता है। ये उपन्यास बहुत कुछ बुल्वर की प्रणाली पर लिखे गये हैं किन्तु लेखक का झुकाव दूसरी ओर होने के कारण एक से दूसरे में भिन्नता अधिक होती गयी है।

प्रथम वर्ग के उपन्यास

दि यंग ड्यूक (The Young Duke) और कान्टेरीनी (Contarini) जो १८३१-३२ में प्रकाशित हुए थे, इस समानता को प्रकट करते हैं और साथ ही

उस विभिन्नता को भी सामने लाते है जिसके कारण अगले दोनों उपन्यास, टेल आफ एलरोय (Tale of Alroy) और वेनीशिया (Venetia) बिल्कुल अलग हो गये। कान्टेरीनी वुल्वर की शैली पर सूक्ष्म परीक्षा तथा विभाजन प्रणाली का अनुसरण है, जो यूजीन ऐरम से उसकी लड मिलाती है। भिन्नता का पहला कारण डिजरैली के यहूदी होने से सम्वन्धित है जो विशेप प्रकार से कई वातों मे प्रकट होता है। दूसरा कारण राजनीति मे उसकी रुचि है जो प्रत्येक विपय को कुछ न कुछ उस ओर झुकाती रहती है। इन उपन्यासों मे भावुकता भी अविक मात्रा मे मिलती है जो कही कही उसकी शैली को चकमा देती है। मनोविज्ञान तथा दर्शन-शास्त्र का वहुत जमा-खर्च है परन्तु यह पाण्डित्य दिखावे का है, जिसकी इन उपन्यासो मे कोई विशेप आवश्यकता नही। वेनीशिया (Venetia) मे इसी कारण से कहानी फीकी हो गयी है परन्तु वाइरन और शेली का चित्रण वडा सुन्दर है। हेनरीटा टेम्पल् (Henrietta Temple), जो इस वर्ग का छठा उपन्यास है, रसिकता एव भावुकता को वडी कुशलता से घिनौनी वना देता है।

डिजरैली के जीवन मे १८३७ से राजनीति का अधिकार आया और वह अपनी पूरी शक्ति से उत्कट अभिलापा की प्राप्ति मे लग गया। अव जो उपन्यास उसने लिखे उन मे उसकी लालसा की झलक है और वे ऐसे व्यक्ति के लिखे जान पड़ते है जो राजनीतिज्ञ पहले है, उपन्यासकार वहुत वाद को।

द्वितीय वर्ग के उपन्यास

ऐसे तीन मुख्य उपन्यास है जो दूसरे वर्ग के कहे जाते है और जिनकी सामग्री राजनीति से ली गयी है। पहला कानिग्सवी (Coningsby) नामक उपन्यास १८४४ मे प्रकाशित हुआ था जिसके वाद "सिबिल : दि टू नेशन्स" (१८४५) (Sybil : The Two Nations) और उसके एक वर्प के उपरान्त टेंक्रेड (Tancred) प्रकाशित हुआ। ये उपन्यास नवयुग का चित्त देश की समस्याओं एव दशा की ओर आकर्पित करते है और उस आदर्श को भी सामने रखते है जिसे स्वय डिजरैली अपने जीवन मे प्रत्यक्ष करना चाहता था। अपने काल के इतिहास की पृष्ठभूमि पर कैसा जीवन व्यतीत करना सम्भव हो सकता है और क्यो? यही उसकी समस्या है ओर इसी प्रश्न का उत्तर ढूंढने मे उसने सारी राजनीतिक पार्टियो का विकास ओर उनके सिद्धान्त तथा उनके गुण और दोष पाठकों के सामने रखने की चेष्टा की है। डिजरैली के सिद्धान्त एवं उसके निर्धारित कार्यक्रम

का भी पाठकों को ज्ञान हो जाता है। कथावस्तु वास्तविक दशा को लेकर समकालीन लोगों के चरित्र पर आधारित पात्रों के अनुभवों तथा कार्यों का निरीक्षण करती है और बड़े रोचक ढंग से समाज एवं व्यक्ति के दुःख-दर्द, आशा और नैराश्य तथा उनकी अभिलाषा के चित्र देती है। पाठकों को वे सारे सिद्धान्त व्याख्या सहित मालूम हो जाते हैं जिन पर आगे चलकर डिज़रैली ने इंग्लैण्ड का शासन चलाया।

कानिंग्सबी में १८३२ से लेकर दस वर्ष पर्यन्त की दशा दिखाकर वह ऐसी स्थितिपालक पार्टी की उपेक्षा करता है जिसके कोई सिद्धान्त न हों, ह्विग पार्टी तथा स्वार्थवाद का उपहास करता है और समकालीन राज्यशासन को, जिसमें स्वार्थसाधक लोगों के हाथ में सारी शक्ति है, तोड़ने की प्रेरणा देता है। ऐसी परिस्थिति में उसकी कथा प्रारम्भ होती है और हैरी कानिंग्सबी का जीवन चलता है। इसी प्रकार दूसरे सिबिल नामक उपन्यास में, जिसका पूरा नाम "सिबिल : दि टू नेशन्स" (Sybil : The Two Nations) है, वह उस जनता की दशा का चित्र खींचता है जिस पर ये पार्टियाँ दो सौ वर्ष से शासन करती आयी है और जिन्होंने इंग्लैण्ड में दो जातियाँ, एक धनवान् और दूसरी निर्धन, उत्पन्न करा दी है। जो प्रेमकहानी वह उपन्यास में कहता है वह इन्हीं दो जातियों की वास्तविक दशा को दिखाती है।

जब डिज़रैली स्वयं स्थितिपालक पार्टी का नेता हुआ और मुख्य मंत्री बनाया गया तो भी वह कभी कभी अवकाश मिलने पर उपन्यास लिखता रहा। इस काल के लिखे हुए उपन्यास लाथेयर (१८७०) और एन्डिमियन (१८८१), यद्यपि राजनीतिक संकेतों से भरे हैं, परन्तु उनका कोई राजनीतिक उद्देश्य नहीं है। इन उपन्यासों में चरित्र-चित्रण बड़ा सुन्दर है और कई सामाजिक तथा नैतिक आन्दोलनों के प्रभाव का बहुत अच्छी तरह वर्णन किया गया है। इनमें साधारण "रोमैन्टिक" सामग्री के साथ-साथ समाज-सुधार के सिद्धान्त दिये गये हैं और उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यकाल में प्रचलित राजनीति पर अच्छी व्याख्या की गयी है। ये दोनों उपन्यास डिज़रैली की वृद्धावस्था की दुर्बलता के कारण साहित्यिक गुणों में दूसरे उपन्यासों के बराबर नहीं कहे जा सकते, फिर भी उसका बौद्धिक बल तथा दूरदर्शिता एवं उसका मनोविज्ञान और यहूदी जाति के इतिहास का ज्ञान वे अच्छी तरह दिखाते हैं।

डिज़रैली के जीवन में उपन्यास लिखना कोई प्रधान कार्य नहीं बल्कि उसके

राजनीतिक उद्देश्यों का सहायक कार्य था, जो उसकी वृद्धावस्था में उसका एकमात्र मन-बहलाव अथवा मनोरंजन का साधन था। उसका साहित्यिक जीवन वास्तव में अंग्रेज जाति के इतिहास से सम्बन्धित है, न कि उपन्यास के। डिजरैली के समान और भी लोग हुए है जो राजनीतिज्ञ थे और साहित्यिक भी, जैसे लार्ड लिटन और लॉर्ड मैकाले। परन्तु इन दोनों के जीवन मे साहित्य की प्रधानता रही और उसी से उन्हे विशेष दिलचस्पी रही। इसके विरुद्ध डिजरैली के जीवन मे साहित्य को प्रधानता नही मिली। जानने की विशेष बात यह है कि दोनों ही व्यवसायों में डिजरैली ने एक ही सी प्रवृत्ति का प्रदर्शन किया जिसे हम अभिनय या दिखावा कह सकते है। थैकरे ने इस दिखावे की बड़ी हँसी उड़ायी थी और उसकी शैली को अस्वाभाविक तथा बनावटी कहा था जिसका प्रभाव नही होता।

बुल्वर और डिजरैली दोनों के कृत्यों के पीछे जो उन्नीसवी शताब्दी के प्रथम चरण का ससार था, उसमे प्रत्येक वर्ष सैकड़ों उपन्यास प्रकाशित हुआ करते थे। इस काल के विस्तृत जीवन तथा कल्पना की व्यप्ति ने पहले की अपेक्षा उपन्यास के क्षेत्र की सीमा को बहुत बढा दिया था। साधारण श्रेणी के उपन्यासकारों ने जो अपनी विविध रीतियाँ विषयों के प्रतिपादन में चलायी थी उन रीतियों को सुधारकर श्रेष्ठ लेखकों ने नयी प्रणाली का निर्माण किया था। साहित्य के अन्य अगों की भाँति उपन्यास मे भी श्रेष्ठ लेखको की कृतियों को दूसरों के प्रभाव तथा सम्बन्ध दिखाकर ऐसी व्याख्या नही की जा सकती कि उनके गुणों का महत्त्व घट जाय। एक लेखक का दूसरे पर प्रभाव होते हुए भी तथा एक की शैली दूसरे के कुछ समान होते हुए भी श्रेष्ठ कृतियाँ केवल श्रेष्ठ ही लेखकों की होती है जो प्रणाली एव रीतियों के अनुसरण से नहीं लिखी जातीं, श्रेष्ठ लेखक का अपना व्यक्तित्व उन विशेष गुणो को उत्पन्न करता है, दूसरे का व्यक्तित्व ऐसे गुण उत्पन्न नही कर सकता। सामान्य श्रेणी के लेखक जो श्रेष्ठ लेखकों का अनुसरण करते है, उनके एक या दो गुण, जिन्हे वे समझ पाते है अथवा जिनका वे अनुकरण कर सकते है, ग्रहण कर लेते है। कभी सामान्य लेखक ऐसा अनुकरण करने में उन गुणों को और भी बढा-चढा देते है। यह क्रम चला करता है, यहाँ तक कि एक दिन इन्ही लेखकों मे से कोई ऐसा लेखक निकल आता है जो अपनी कृतियो में कई गुण मिलाकर अपना अलग चमत्कार पैदा कर देता है, जिसमें उसके व्यक्तित्व का महत्त्व दिखाई देता है। हम इस लेखक को मौलिक लेखक कहते है और यह ठीक भी है क्योंकि मौलिकता यही होती भी है। इस विचार से उपन्यास की प्रगति

एक चौड़ी नदी के समान है जिसके वहते हुए जल पर कहीं कहीं ऊँची तथा वड़ी लहरें समय-समय पर उठती हों और फिर उसी जल में डूबकर नदी के तल को अपने जल से भरकर और ऊँचा कर दें। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में ऐसी ही दो लहरें उपन्यास की नदी में से उठी थीं, जिनमें से एक का नाम मिस आस्टेन और दूसरी का वाल्टर स्काट था। इन दोनों महान् लेखकों ने अपने काल तक के सारे गुण, जो उपन्यास ने अपने विकास में संचित किये थे, एकत्रित किये और उस समष्टि में अपनी अपूर्व वुद्धि तथा कल्पनाशक्ति से और वहुत से गुण एवं सामर्थ्य जोड़कर उपन्यास को अंग्रेजी साहित्य का श्रेष्ठ अंग तथा आभूषण बना दिया।

अनुसरण करनेवालों के वड़े दल ने जो उनके पीछे आया, टोलियाँ वनाकर काम करना शुरू किया और प्रत्येक टोली ने अपनी योग्यता के अनुसार उन महान् लेखकों की कृतियों के विभिन्न तत्त्वों को जाँचना, विस्तार देना तथा कहीं-कहीं सुधारना आरम्भ कर दिया। कितने और कौन से तत्त्व इस प्रकार की साधना में लाये जायँगे यह अनुसरण करनेवालों की योग्यता और उस वातावरण पर निर्भर होता है जिसमें वे लिखते हैं। सामाजिक, राजनीतिक तथा वौद्धिक स्थिति ही नहीं वल्कि फैशन भी उनके कार्यों का संचालन करते तथा उन्हें सीमित भी करते हैं, और यही सव उनकी पुस्तकों के स्वभाव एवं प्रणाली को निश्चित करते हैं।

यह वात कि लिटन और डिजरैली दोनों ने अपने पहले उपन्यासों में "वायर-निज्म" (Byronism) पर आक्षेप किया और फिर दूसरे उपन्यासों में अपना क्षेत्र विस्तृत किया, उस समय के उपन्यासों को पढ़कर स्पष्ट हो जाती है, जव वे दोनों युवावस्था में थे। और यह भी केवल संयोग से नहीं हुआ था कि उनके पहले उपन्यास "पिकैरेस्क" नमूने के अन्तिम प्रतिरूप थे। सन् १८१९ में टामस होप (Thomas Hope) ने वायरन के कार्सेयर (Corsair) और लारा (Lara) नामक काव्यों से प्रभावित होकर अनास्टेसिअस (Anastasius) नाम का "पिकैरेस्क" उपन्यास प्रकाशित किया था, जिस की मिसेज रैडक्लिफ ने प्रशंसा की थी और जो उस समय सर्वप्रिय हो रहा था। इस उपन्यास का कथा-पुरुष एक आधुनिक काल का यूनानी है जो "वायरनिज्म" की उत्पत्ति तथा हज़ारों अपराधों का पुतला है। थिओडोर हुक (Theodore Hook) के सेइंग्ज ऐन्ड डूइंग्ज (Sayings and Doings) नामक उपन्यास ने हर एक

तरह के विषय के लिए मानो दरवाजा ही खोल दिया और उपन्यास की भाषा भी साधारण लोगों की बोल-चाल की सी कर दी, जिसके कारण उपन्यास पर से अठारहवी शताब्दी का चढ़ाया हुआ शिकंजा उतर गया और वह लचीला तथा मुलायम हो गया। डिज़रैली के कानिग्सबी का मिस्टर ग्रे नाम का पात्र, जो लम्ब-लम्बे राजनीतिक विवादों को अपने हास्यप्रद वार्तालाप से सहने योग्य बनाता है, थिओडोर हुक ही है। थैकरे के पेन्डेनिस में वह मिस्टर वैग के रूप में पाखंडियों तथा छली मनुष्यों के चेहरे उतारकर उनका असली मुँह दिखाता है। हुक की कहानियों के दृश्य एवं वार्तालाप डिकेन्स ने कहीं कहीं अपने उपन्यासों में प्रयुक्त करके बड़ा व्यंग्य किया है। इस समय लोगो को पूर्वी देशो का पहले की अपेक्षा अधिक अच्छा तथा ठीक ज्ञान होने लगा था और बहुत से लेखक पूर्वी देशों की सामग्री लेकर कहानियाँ लिखने थे जो बड़े चाव से पढ़ी जाती थी। पहले ऐसी कहानियाँ या तो विलक्षण या रहस्यमय हुआ करती थी। अब वे वास्तविक होने लगी थीं क्योंकि उनकी सामग्री पूर्वी जीवन तथा पुस्तकों के अध्ययन से ली जाने लगी थी।

इस समय का मुख्य लेखक जो ऐसे उपन्यास लिखता था, जेम्स जस्टीनियन मारियर (James Justinian Morrier) था, जो राजदूत के मंत्री के पद पर नियुक्त होकर फारस में बहुत समय तक रहा था। अभी तक अंग्रेजों को फ़ारस के सम्बन्ध मे बहुत थोड़ा ज्ञान था। मारियर ने फ़ारस में खूब भ्रमण किया और जो देखा उसे अपनी पुस्तकों में लिखा। जिस पुस्तक से उसे विशेष ख्याति मिली वह दि ऐडवेन्चर्स आफ हाजी बाबा आफ इस्पहान (The Adventures of Haji Baba of Ispahan) नामक "पिकैरेस्क" उपन्यास है। प्रकाशित होते ही यह उपन्यास सन् १८२४ में लोकप्रिय हो गया और खूब बिका। मारियर ने इस पुस्तक में फ़ारस के रीति-रिवाज, शिष्टाचार तथा जीवन के बड़े सुन्दर चित्र खींचे हैं और अपने पात्रों को सजीव कर दिया है। वह ऐसी थोड़ी सी बातों को लेकर वर्णन करता है जो अर्थपूर्ण और विचित्र होती हैं और जिन्हें जानकर हमारे सामने पात्र सजीव खड़ा हो जाता है। उसके पात्र बहुत प्रकार के लोग हैं जिनके चित्रण द्वारा मारियर फ़ारस का बहुत कुछ हाल बता देता है। चरित्र-चित्रण कुछ बड़ा गम्भीर अथवा मार्मिक नहीं है बल्कि वर्णनात्मक कहा जा सकता है। इस उपन्यास का मारियर ने उत्तर भाग भी लिखा जिसमें हाजी बाबा को इग्लैण्ड लाया गया और गोल्डस्मिथ के सिटिज़ेन आफ दि वर्ल्ड (The

Citizen of the World) के समान उससे वहाँ के जीवन तथा रीति-रिवाजों की समीक्षा करायी गयी ।

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही "रहस्यमय पूर्वी देश" लोगों की दिलचस्पी का विषय बने हुए थे और बहुत-से रोमांस में विविध प्रकार के अलौकिक तथा मायावी अनुभवों के दृश्य पूर्व में दिखाये जाते थे अथवा पूर्वी लोगों के द्वारा यूरोप में अनुभव कराये जाते थे। शेली ने दो रोमांस, जैस्ट्रोज़ी (Zastrozzi) और सेन्ट आयर्विन (St. Irvyne) सन् १८१०-११ में प्रकाशित किये थे, जिनमे मिसेज रैडक्लिफ़ तथा गाडविन के उपन्यासों के तत्त्व मिलाकर सामग्री तैयार की गयी थी। शेली अपने कथापुरुष पर बिजली गिराता है और जलाकर काला कर देता है, फिर ऐंठन उत्पन्न करके उसे मार डालता है। समकालीन अन्य लोगों की भाँति शेली भी "रासीक्रूशियन" समस्या में बहुत दिलचस्पी लेता था और मुर्दे में जान डालना सम्भव समझता था। वह अमृत की खोज में भी रहता था और इन सब बातों के लिए प्राचीन विचारों में विश्वास करता था। परन्तु इन रोमांसों में उसने भयानक बातों के सिवा इन विश्वासों को नहीं लिया। मिसेज शेली ने बायरन और अपने पति से ऐसी रहस्य की बातों को सुनकर फ्रैंकिन्स्टीन (Frankenstein) नामक रोमांस लिखा, जो १८१८ में प्रकाशित हुआ और "गाथिक" का अच्छा नमूना समझा गया। विज्ञान और अलौकिक का इसमें संमिश्रण करके एक दैत्य बनाया गया है जो भयानक जरूर है परन्तु घृणा उत्पन्न करता है।

मिसेज शेली ने १८२३ में एक साहित्यिक रोमांस लिखा, जो सुन्दर दृश्य वर्णनों तथा चरित्र-चित्रण के होते हुए भी सफल नहीं रहा। सन् १८२६ में मिसेज शेली ने दि लास्ट मैन (The Last Man) लिखा, जिसमे एक व्यापक रोग से धीरे-धीरे सारे मनुष्यों की मृत्यु हो जाती है और अन्तिम मनुष्य अपना जीवनकाल अकेला सूनसान संसार में रो रोकर समाप्त करता है। मिसेज शेली ने "गाथिक" उपन्यासों के श्रेष्ठ लेखकों के समान अपने रोमांसों में एक ऐसे संसार की ओर संकेत किया है जिसमे स्वार्थ के सिद्धान्त को माननेवाले भले ही विश्वास न करें, किन्तु जो कला के लिए सत्य अवश्य है। लेखकों के इस संकेत को कई विचारवान् उपन्यासकारों ने समझा और उस संसार की सत्यता में विश्वास करके अपनी खोज को आगे बढ़ाने की दीर्घ चेष्टा भी की। इसी खोज में लार्ड लिटन ने अपनी ए स्ट्रेन्ज स्टोरी (A Strange Story) तथा

दि हान्टेड एन्ड दी हान्टर्स (The Haunted and the Haunters) लिखे थे।

टामस लव पीकाक

जहाँ कुछ लेखक अपनी कल्पना को ऐसी खोज में भेज रहे थे, उसी समय में एक उपन्यासकार लगभग सभी प्रकार के रोमांसों तथा बहुत-से सामयिक विचारों एव सिद्धान्तो का उपहास कर रहा था। इस उपन्यासकार का नाम टामस लव पीकाक (Thomas Love Peacock) था। वह १७८५ में लन्दन मे पैदा हुआ था और एक घनाढ्य व्यापारी का पुत्र होने के कारण अपनी रुचि के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करने में समर्थ था। लन्दन के लगभग सभी साहित्यिक लोगों से उसकी मित्रता थी। पहले उसने कविता करना आरम्भ किया था किन्तु शीघ्र ही गद्य और उपन्यास ने उसे अपनी ओर आकर्षित कर लिया। सन् १८१६ मे उसने हेडलांग हाल (Headlong Hall) नाम की पुस्तक प्रकाशित की, जिसे व्यंग्यात्मक रोमास कहा गया है। अगले दो वर्षों में उसने मेलिनकोर्ट (Melincourt) और नाइटमेयर ऐबी (Nightmare Abbey) प्रकाशित किये, जिसके उपरान्त सन् १८१९ में वह ईस्ट इंडिया कम्पनी की नौकरी पर चला गया। इन पुस्तकों मे बड़ी सभ्य रीति से वह उपहास तथा व्यंग्य करता है जिसे पढे-लिखे और शिष्ट लोग किसी तरह बुरा नही कह सकते। उसके पात्र केवल विभिन्न विषयों पर तरह तरह से अपना मत प्रकट करने के लिए जन्म लेते हैं और कठपुतली की तरह से अपना काम करते रहते है। हम उनके वार्तालाप को सुन कर एक या दो शब्दों में उनका वर्णन कर सकते हैं और वह वर्णन पीकाक के अभिप्राय को पूरी तरह प्रकट करेगा।

हेडलांग हाल में यदि मिस्टर फास्टर आशावादी है तो मिस्टर एस्टाक उनके उलटे मत के निराशावादी कहे जायँगे और मिस्टर जेन्किन्सन जो सदा उनके मध्यस्थ से रहते है, यथास्तिवादी कहलायेंगे। उपन्यास मे विषयों पर विवाद इन्ही तीन मतो के अनुसार होता है जिसके लिए वे पात्र बनाये गये है। बाकी कोई घटना नही होती जिसके सम्बन्ध में कोई संघर्ष हो, कोई ऐसी प्रेरणा नहीं होती जो चरित्र संगठन करे अथवा चरित्र की परीक्षा करा सके। नाइटमेयर ऐबी में पीकाक भावुक परिहास करता है; किसी सिद्धान्त पर विवाद नहीं उठाता और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए "बायरनिज़्म" तथा कोलरिज की

हवाई रसिकता एवं निराशावाद के दुखियों की दशा को लेकर तीखी समीक्षा करता है।

सन् १८३१ में पीकाक ने क्राचेट कास्ल (Crotchet Castle) प्रकाशित किया जिसमें उसने मिस्टर क्राचेट और मिस टचएन्डगो (Miss Touchandgo) के अभागे प्रेम की कहानी का पुट देकर समकालीन विचारों का निरीक्षण बड़े सुन्दर प्रकार से व्यंग्यात्मक वर्णनों में किया। अपनी रीति के अनुसार इस उपन्यास में भी उसने कई पढ़े-लिखे बौद्धिक क्षमता के लोगों को इकट्ठा करके उन्हें वार्तालाप में लगा दिया है। प्राचीन काल के संगीत से लेकर यूनानी नाटक तथा ताश खेलने और खाना पकाने तक कोई विषय ऐसा नहीं जो उठाया न गया हो और प्रत्येक विषय के सम्बन्ध में विचित्र ज्ञान एवं पाण्डित्य दिखाया न गया हो। ग्रन्थों के प्रमाण और उद्धरणों की भरमार है और कविता की सुन्दर पंक्तियाँ बात-बात पर सुनायी गयी हैं। पात्र विभिन्न प्रवृत्तियों तथा रुचियों के हैं और प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी सिद्धान्त का अनुयायी है, जिसके कारण वार्तालाप बहुत दिलचस्प हो जाता है। पीकाक का अन्तिम उपन्यास, ग्रिल ग्रेन्ज (Gryll Grange) १८६० में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास में औरों की तरह बहुत-से लोग एक मकान के कमरे में इकट्ठा हैं और बात-चीत हो रही है। यहाँ एक झक्की व्यक्ति भी लाया गया है जो अपनी औंधी खोपड़ी से जो बात निकालता है वह विचित्र होती है। उपन्यास के अन्त में एक साथ नौ प्रेम-कहानियाँ नौ विवाहों में समाप्त होती हैं।

अंग्रेजी साहित्य में पीकाक के उपन्यास एक नयी शैली के सुन्दर उदाहरण हैं। बहुत-सी बातों में वे वाल्टेयर तथा मार्मान्टेल (Voltaire and Mormontel) की दार्शनिक कथाओं से मिलते-जुलते है। उनका वातावरण एवं भाषा साहित्यिक है परन्तु बनावटी या पाण्डित्य दिखलाने वाली नहीं है। शैली उत्तेजक तथा लालित्य-पूर्ण होते हुए भी बहते पानी की भाँति चुपचाप कहानी को आगे बढ़ाती चली जाती है।

अध्याय ९

विक्टोरिया के राज्यकाल के पूर्वार्ध में उपन्यास

इग्लैण्ड के इतिहास मे विक्टोरिया के राज्यकाल का प्रथम चरण उद्वेग तथा सकट का समय था। यद्यपि १८३२ के सुधार-विधेयक ने राजनीति के क्षेत्र में जमींदारो का प्रभुत्व समाप्त कर दिया था, किन्तु इतने से उन लोगों को सन्तोष नही हुआ था जो मौलिक सुधार चाहते थे। श्रमिक-वर्ग की बहुत बड़ी सख्या को अब भी वोट देने का अधिकार नही था जिसके लिए आन्दोलन चलाया जा रहा था। इस विषय की सारी माँगे "चार्टिस्ट" आन्दोलन के छ· लक्ष्यों मे सम्मिलित कर दी गयी थी। इसी समय उद्योग और व्यवसाय मे खिन्नता भी आयी और जनता की आर्थिक दशा बहुत बिगड गयी जिस कारण आन्दोलन और भी बल पकड़ता गया। इतिहास में इस दस वर्ष के काल को "भुक्कड़ चालीसा" कहा गया है। समय के इन सकटों ने जनता को एकमत कर दिया और लोगों मे एक नयी सामाजिक चेतना तथा विश्व-बन्धुत्व का भाव उत्पन्न हो गया। एक दूसरे की कठिनाइयाँ लोग समझने लगे और आपस में सहायता करने तथा सहानुभूति दिखाने लगे। समय समय पर जो सुधार किये गये थे, उन सबके थोड़े-थोड़े बल ने जनता को शक्ति दी, जिसके फल-स्वरूप राजनीतिक परिवर्तन हुआ और स्वल्पाधिपत्य समाप्त होकर इंग्लैण्ड मे एक "मुकुटधारी गणराज्य" स्थापित हो गया।

इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन सामाजिक एवं बौद्धिक क्षेत्रों में हुआ, जिसने मानवतावादी बोध को शक्ति प्रदान की और थोड़े विशेष अधिकारयुक्त मनुष्यों के विरुद्ध बहुतों के स्वत्व को स्वीकार कराया। जैसे-जैसे समय बदलता गया, आपस मे सहानुभूति बढती गयी और शिक्षा की उन्नति के साथ-साथ व्यक्ति को अपनी उन्नति के अवसर अधिक सुगमता से मिलने लगे। इस समय की दो विशेषताएँ, जो सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन मे कदम-कदम पर अपना गहरा प्रभाव डाल रही थी, और जो स्वयं समय तथा अवसर ने उत्पन्न की थी,

राजनीति एवं समाज की सार्वलौकिक प्रवृत्ति और बौद्धिक क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रगति थीं।

इस काल का साहित्य सामाजिक परिवर्तन और बौद्धिक प्रगति का पूर्ण रूप में प्रतिबिम्ब है। सामाजिक जीवन की निर्माण-शक्ति से ऐसा सहयोग अथवा ऐसा खुला विरोध सत्रहवीं शताब्दी के साहित्य में भी नहीं मिलता, जैसा विक्टोरिया के राज्य-काल के पूर्वार्ध में पाया जाता है। इस काल के लगभग सब श्रेष्ठ लेखक इस चेष्टा में लगे रहते थे कि कैसे समाज के विशालकाय निश्चल पिंड को जगाकर उसे समझाया-बुझाया और उत्तेजित किया जाय। यन्त्रकला तथा व्यापार-उद्यम ने जीवन की सुख-सुविधाएँ इतनी बढ़ा दी थीं कि लोग इन्हीं को सब कुछ समझने लगे थे। शरीर-सुख-सम्बन्धी वस्तुओं का ऐसा आदर उन्हें अनात्मवादी बनाता जा रहा था। इस प्रवृत्ति के विरोध में लगभग सभी श्रेष्ठ लेखक आवाज़ उठा रहे थे और लोगों को चेतावनी देते थे। वैज्ञानिक आविष्कारों ने सैकड़ों ऐसे विचार फैला दिये थे जिन्होंने लोगों की धारणाएँ गड़बड़ में डाल दी थी और धार्मिक विश्वासों को भी अस्थिर कर दिया था।

विक्टोरिया के राज्यकाल में साहित्य की प्रवृत्ति

इस उथल-पुथल के कारण साहित्य पर भी गहरा प्रभाव पड़ा था और बहुत-सी निश्चित बातों में परिवर्तन आ रहा था। परिवर्तन के इन सब कारणों के साथ-साथ लोगों को एक ऐसा नया समाज स्थापित करने की भी आवश्यकता मालूम होती थी, जो सब मनुष्यों को बराबर अवसर दे कि वे अपने जीवन को सुखी कर सकें। बहुत लोग दिन-रात इस विचार में रहते थे कि कैसे एवं क्या करें कि उनका समाज थोड़े परिवर्तन के बाद ही ऐसा कर सके। सामाजिक अशान्ति इस काल का विशिष्ट लक्षण है और सामाजिक न्याय की माँग ने एक न एक रूप में इस काल के विचारों को रँग रखा था। उत्साहपूर्ण उद्योग एवं अभिन्न उद्देश्य, समाजसेवा की आकांक्षा तथा जीवन की समस्याओं का गम्भीरता से सामना करने की प्रवृत्ति इस काल के साहित्य में प्रतिध्वनित हैं और दूसरे काल के साहित्य से उसे पृथक् करती हैं।

उसका सामाजिक उद्देश्य

इस काल का प्रत्येक लेखक एक वैद्य के समान है जो अपनी रुचि तथा सामर्थ्य के अनुसार मनुष्य की घबड़ाहट और व्याकुलता दूर करने को एक न एक औषधि

लेकर सामने आता है, अथवा उपदेशक की भाँति किसी न किसी कुरीति एवं नैराश्य के विरुद्ध धर्मयुद्ध करने की प्रेरणा देता है। लेखकों का सारा प्रयत्न जनता में भावना के वे स्रोत जगाने की ओर है जो इस समय से पहले कुछ ही वरदहस्त व्यक्तियों तक सीमित रही थी। सत्य की खोज और लोगों को जीवन तथा संसार सम्बन्धी रूढ़ धारणाओं को छोड़ने की प्रेरणा देने में कल्पना एवं तीव्र भावना का पूरा उपयोग इस समय के साहित्यकारों ने किया। इस काल में न तो सोलहवीं शताब्दी की जैसी प्रसन्नचित्त से जनमी साधारण जीवन में दिलचस्पी है, न वर्ड्स्वर्थ और कोलरिज के समय की जैसी ध्यानावस्थित स्वप्न की दशा। साहित्यिक जन दर्शन तथा विज्ञान से इतने अधिक प्रभावित हैं कि वे धर्म और अर्थ दोनों की सुविधा के लिए उन्हीं का सहारा ढूँढ़ते और उन्ही के सिद्धान्तों की दुहाई देते है।

विक्टोरिया के समय के उपन्यास

पाठकों की बहुत बड़ी और बराबर बढ़ती हुई संख्या साहित्य के दूसरे सब रूपों की अपेक्षा उपन्यास को सबसे अधिक उपयोगी समझने लगी थी। इस समय उपन्यास की बहुत बड़ी माँग थी और उसी माँग की पूर्ति करने को लेखकों की बहुत बड़ी संख्या उपन्यास लिखने लगी थी। अपनी इच्छानुसार अपने विचारों तथा भावों को प्रकट करने की जो स्वतंत्रता उपन्यास में उन्हें मिलती थी, वह न नाटक दे सकता था न काव्य। और फिर जिस विस्तार एवं लोच-लचक के साथ वे लिखना चाहते थे वह भी उपन्यास में ही सम्भव हो सकता था। इस काल के अंग्रेज़ी उपन्यास में जो विशेष गुण उत्पन्न हुए उनकी व्याख्या के लिए इन बातों का ध्यान में रखना आवश्यक है। सुधार की आकांक्षा से जो लेखक अपने विचारों को दूर-दूर पहुँचाना चाहते थे और अधिक से अधिक संख्या को प्रभावित करना चाहते थे, उनके लिए उपन्यास ही सब से अच्छा माध्यम था। यही सब कारण थे जो इस काल की सर्वश्रेष्ठ सर्जनशक्ति का सबसे बड़ा अंश उपन्यास में व्यक्त हुआ। उपन्यास में ही हमें वे सारी शक्तियाँ दिखाई भी देती हैं जिन्होंने इस काल के मिश्रित एवं चहुँमुखी प्रवाहों वाले इंग्लैण्ड का निर्माण किया था। जैसे-जैसे प्रजातंत्र का विकास हुआ और उसकी पुष्टि होती गयी, उपन्यास भी मानवतावादी होता गया और मनुष्य को समाज के सन्दर्भ अथवा प्रसंग में देखता गया।

मनुष्य और समाज को इस प्रकार पहले कभी नहीं देखा गया था और न उपन्यास में उनका ऐसा वर्णन ही किया गया था। विगत शताब्दियों में व्यक्ति को

समाज से अलग ही देखा जाता था। जैसे-जैसे साइन्स का ज्ञान फैलता गया, उपन्यास विश्लेषणात्मक और वास्तविकतावादी होता गया। उसके विषयों की विविधता एवं उन पर लिखने की विभिन्न रीतियाँ उपन्यास को इस समय की विविध दिलचस्पियों तथा विभिन्न उद्देश्यों का सूचक बनाती हैं। इस शताब्दी के आरम्भ में लेखक मनुष्यों के विशेष वर्गों अथवा उनकी दशा पर अपने कथानकों में विशेष ध्यान दिया करते थे। समय के परिवर्तन के साथ-साथ यह प्रवृत्ति उन्हें विशिष्टता की ओर ले गयी और बहुत-से उपन्यासकारों ने जीवन की सीमित गति तथा असाधारण रूपों को लेकर कथानक बनाना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार क्षुद्र जीवन के एवं श्रेष्ठ लोगों के तथा मध्य वर्ग के जीवन के अलग अलग उपन्यास लिखे जाने लगे और इसी प्रकार सैनिक तथा अपराधी एवं विविध व्यवसायों के लोगों के जीवन को लेकर भी उपन्यास लिखे गये। विभिन्न स्थानों और विविध शताब्दियों पर लेखकों ने ध्यान दिया और अपने कथानकों में उन्हें स्थान दिया। इस विशिष्टता के कारण कथासाहित्य का क्षेत्र बड़ा विस्तृत होता गया, यहाँ तक कि जीवन का कोई रूप तथा मनुष्य का कोई उद्यम अथवा व्यवसाय ऐसा नहीं बचा जिस पर उपन्यास न लिखे गये हों।

डिकेन्स और थैकरे

विक्टोरिया का राज्यकाल जिस खींच-तान एवं तनाव और तीव्र उद्योग की दशा में प्रारम्भ हुआ, जिन भावपूर्ण विचारों के संघर्ष ने उस काल में विभिन्न आदर्शों के अनुयायी उत्पन्न किये, उन्हीं प्रभावों ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में योग्य तथा प्रबल नेता भी उत्पन्न किये। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, विचारों तथा धारणाओं में उथल-पुथल बढ़ती गयी और लोग जीवन की समस्याओं की गम्भीरता को समझते गये। नेता अपने विषयों के कलात्मक एवं मानसिक महत्त्व को भली-भाँति समझते थे और जीवन के प्रवाह में अपने को छोड़कर उसमें ही अद्‌भुत वस्तुएँ ढूँढ़ते और उसकी नीरसता में भी सौन्दर्य का अनुभव करने की चेष्टा करते थे।

ऐसे ही दो व्यक्ति, जिन्होंने अपने परिज्ञान तथा अनुभूतियों को उपन्यास द्वारा व्यक्त करके अंग्रेज़ी साहित्य को इस काल में आभूषित किया, चार्ल्स डिकेन्स (Charles Dickens) और विलियम मेकपीस थैकरे (William Makepeace Thackeray) थे। इन दोनों लेखकों में सर्जनशक्ति भी थी और जन-सेवा की आकांक्षा भी। उन्होंने अपनी अपूर्व बुद्धि एवं कल्पना शक्ति से पूरा काम लेकर अपने देश और काल की समस्याओं को हल करने का प्रयत्न किया। दोनों के हृदय

में सजातीय लोगों के लिए प्रेम था, दोनों को उनकी दशा पर दुःख था और उस अवस्था को देखकर क्रोध आता था जिसमें वे किसी प्रकार अपना जीवन-निर्वाह करते थे। दोनों लेखकों को परिज्ञान की शक्ति में पूरा विश्वास था और वे जानते थे कि जब तक जनता की दुर्दशा का भली-भाँति लोगों को ज्ञान नहीं होता, कोई सुधार नही हो सकता। उन्होंने समाज की वास्तविक दशा का चित्रण करके लोगों का ध्यान उसकी ओर आकर्षित किया जिसमे वे उसे देखकर सुधार करें। उनकी गहरी सहानुभूति ने व्यंग्यात्मक हास्य का रूप ग्रहण किया, जिसे उन्होंने जनता की दशा का प्रदर्शन कराने में अपना शस्त्र बनाया। दोनों लेखकों की दृष्टि में जीवन बड़े गूढ रहस्यों से परिपूर्ण था, जिन्हें दोनों ने अपने-अपने ढंग से व्यक्त किया।

अपनी सहनशीलता एवं क्षमाभाव से प्रेरित होकर डिकेन्स ने समाज के दीन-दुखियों और सताये हुए लोगों के साथ सहानुभूति दिखायी और उन बातों पर विशेष ध्यान दिया जो मनुष्य के सुख को बढ़ाती अथवा नष्ट करती है। उसने समकालीन क्रूरता तथा अत्याचारों का, जिन्हें नाटक में स्थान नही दिया जाता था, उपन्यासों में चित्रण किया। उसने अंग्रेज जाति के गुणों की मुक्त कठ से प्रशंसा की और उसके दोषों को बिना संकोच के स्वीकार किया। साधारण जनता की दुर्दशा का चित्रण करने में उसने किसी बात पर अपनी नाक नही चढ़ायी और न यह प्रकट होने दिया कि वह स्वयं उस दलित संसार का अनुभवी व्यक्ति नही था। साधारण से साधारण वस्तु में उसे सौन्दर्य एवं आनन्द का अनुभव होता और नित्य-जीवन की सामान्य घटना उसे काव्यपूर्ण दिखाई देती।

थैकरे ने शिष्टता तथा सज्जनता स्थापित करने का बीड़ा उठाया, जिसके लिए उसने बने हुए भद्र पुरुषों अथवा रँगे सियारों की निन्दा की और अपने उपन्यासों में ऐसे भलेमानसों के चित्र खीचे जिन्हें दुष्ट मनुष्यों ने कुचल डाला था और तत्कालीन समाज इस अत्याचार को सहता चला जाता था। थैकरे में बड़ी सहनशीलता थी। बड़े धैर्य के साथ उसने समाज का निरीक्षण किया और मनुष्यों की उत्कण्ठा तथा प्रतिक्रिया के अध्ययन से उसने साधारण जीवन के अनुभवों में छिपे हुए उन तथ्यों को खोज निकाला, जिनमें बड़ी से बड़ी दुःख देनेवाली बाते और हास्यप्रद घटनाएँ होती है। उसकी धारणा थी कि सामने की छोटी से छोटी बात में वे तत्त्व छिपे हैं जिनके द्वारा जीवन के बड़े से बड़े रहस्य जाने जाते हैं। संसार के श्रेष्ठ लेखकों की भाँति थैकरे भी बदला लेने के न्याय (Nemesis) के अनुसार अपराधों तथा दुराचार के प्राकृतिक दंड में विश्वास रखता है। उसने अपने उपन्यासों में दुष्टता का स्वाभा-

विक अन्त सर्वनाश बताया और जीवन-नाटक के दृश्यों को करुणा एवं व्यंग्य के बीच संचारित देखा। इन दोनों उपन्यासकारों ने अपनी-अपनी प्रतिभा के अनुसार जीवन की विस्तृत सामग्री का उपयोग किया और विक्टोरिया के मध्यकालीन उपन्यास को उस युग की मानवता का प्रतिरूप तथा अंग्रेजी साहित्य का प्रतिष्ठित अंग बना दिया।

चार्ल्स डिकेन्स

अंग्रेजी उपन्यास के इतिहास में चार्ल्स डिकेन्स (१८१२-७०) अपनी आश्चर्य-जनक सफलता एवं यश की भव्यता के कारण स्मरणीय व्यक्ति हुआ है। दीन दशा से दस वर्ष की उम्र में जीवन आरम्भ करके, जब वह जूतों में लगाने की स्याही बनाने के कारखाने में काम करता और एक दूकान के बाहर पटरे के नीचे सोता था, वह बड़ा होकर अपने देश तथा संसार के श्रेष्ठ उपन्यासकारों में गिना जाने लगा। उसके लड़कपन और युवावस्था का हाल जानना इसलिए जरूरी है कि उसने वह सामग्री और वे अनुभव, जिनका आगे चलकर उसने उपन्यासों में उपयोग किया, इसी काल में प्राप्त किये थे। उसका पिता जान डिकेन्स जहाजी बेड़े का कर्मचारी था, जो खाते-पीते लोगों की भाँति अपना परिवार चलाता था। चार्ल्स की प्रारम्भिक शिक्षा घर के निकट चैथम में हुई जहाँ से राचेस्टर और वहाँ का बड़ा गिरजाघर देखने जाना लड़कों का एकमात्र विनोद हुआ करता था। राचेस्टर के चारों ओर के दृश्यों का बड़ा गहरा प्रभाव चार्ल्स के हृदय पर पड़ा था। नदी का सुन्दर किनारा, रमणीक उपवन और फूलों से लदी हुई झाड़ियों के झुरमुट, यहाँ तक कि नगर की पतली गलियाँ भी उसके मन पर ऐसी अंकित हो गयी थीं कि वह उन्हें कभी भूला न सका। बार बार इन दृश्यों का उल्लेख उसके उपन्यासों में आता है और अनेकों कल्पित दृश्यों की नींव इन्हीं पर रखी हुई है। बदली होने पर जब उसके पिता को परिवार-सहित लन्दन में रहना पड़ा, जहाँ उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और जहाँ आगे चलकर डिकेन्स को ख्याति मिली, तो भी चार्ल्स इन सुन्दर दृश्यों को भूला नहीं। लन्दन के कोलाहल और दुर्गन्ध से भरी हुई गलियों में उसे राचेस्टर की निस्तब्धता और खुली सुगंधित वायु की याद आती रही।

जान डिकेन्स उद्योगी एवं दयालु और उदारचित्त तथा उत्साही मनुष्य था, किन्तु परिश्रम करने पर भी वह आर्थिक कठिनाइयों में ही सदा रहता था। डेविड कापरफील्ड (David Copperfield) में जिस प्रकार मिस्टर मिकाबर (Mr. Micawber) सदैव अपना जीवन प्रतीक्षा में व्यतीत करते हैं, उसी तरह

जान डिकेन्स भी इस भरोसे में रहता था कि कुछ न कुछ हो रहेगा, घवरायें क्या। वह ऋणग्रस्त तो हो ही रहा था और लन्दन आने के वाद से उसकी दशा और भी दुर्वल हो गयी थी। वाल-वच्चों की वीमारी ने कुछ समय से उसकी कठिनाइयों को इतना वढ़ा-चढ़ा दिया था कि उसकी पत्नी को युवतियों को पढ़ाने का स्कूल अपने घर में खोलना पड़ा और चार्ल्स का पढ़ना छुड़ाकर घरेलू कामों में उसे लगाना पड़ा। कभीकभी जव उसे घर का सामान महाजन के यहाँ ले जाकर गिरवी रखना पड़ता, तो परिवार के मानभंग से उसे वड़ा दुःख होता। जिस काम से उसकी आत्मा को चोट पहुँचती थी वह महाजनों को समझा-वुझाकर अपने घर से लौटाना था। जव कभी समय मिलता वह चुपके से घर से निकल जाता और अपने लिए काम ढूँढ़ने को लन्दन में इधर-उधर चक्कर लगाता और थका-माँदा घर लौट आता। मिसेज़ डिकेन्स के स्कूल में तो कोई युवती आयी नही, परन्तु कुछ दिन के वाद चार्ल्स को कारखाने में काम मिल गया। इन्ही दिनों ऋण के कारण जान डिकेन्स को वन्धन-गृह मे जाना पड़ा और घर उठा दिया गया। चार्ल्स को एक निर्धन महिला के घर में रख दिया गया। डिकेन्स ने इस महिला का चित्रण डाम्वे ऐन्ड सन (Dombay and Son) में किया, जो मिसेज़ पिपचिन (Mrs. Pipchin) के नाम से जगद्-विख्यात है। इसी समय में चार्ल्स ने जी-तोड़ परिश्रम करके परिवार की आर्थिक दशा सुधारने की दृढ़ प्रतिज्ञा की थी, जिसने उसे कारखाने के कठिन प्रयास में हताश नही होने दिया और जिसे वह वरसों वाद तक एक क्षण को नहीं भूला। कारखाने के वरताव और वहाँ की दिनचर्या से उसके हृदय को पग-पग पर आघात पहुँचता था परन्तु उसने सव कुछ सहा और सैकड़ों मुसीवते उठायी। दरिद्र जीवन के जो अनुभव उसे इस समय हुए उनका वर्णन आगे चलकर उसने उपन्यासों में किया और पाठकों के हृदय पर प्रभाव डाला।

जिस समय चार्ल्स के उपन्यास लोकप्रिय हुए और उनकी हजारों प्रतिलिपियाँ दूर दूर तक जा पहुँची तो लोगों को वड़ा आश्चर्य हुआ कि कैसे उसे लन्दन के दरिद्रता-ग्रस्त अभागे क्षुद्र मनुष्यों के जीवन का ऐसा अच्छा तथा ठीक ज्ञान प्राप्त हुआ था। वास्तव में इस काल के किसी दूसरे लेखक ने ऐसे जीवन का अनुभव स्वयं नही किया था और न इतनी कठिनाई उठाकर जीवन के तथ्यों एव रहस्यो को जाना था। यदि उसके उपन्यासों के कोई-कोई स्त्री-पुरुष ऐसे विलक्षण एवं फूहड़ लगते है कि हमें उन पर विश्वास नही होता, तो हमें लेखक के उन अनुभवों का ध्यान करना चाहिये जो कही अधिक अनहोने तथा अचंभे के प्रतीत होते हैं।

कुछ समय के व्यतीत होने पर जान डिकेन्स को एक सम्बन्धी की मृत्यु होने पर कुछ धन मिला, जिससे ऋण चुका दिया गया और अब चार्ल्स को भी कारखाने के काम से हटाकर फिर से स्कूल में भरती कराया गया। स्कूल में उसने बड़े परिश्रम से पढ़ाई की और शीघ्र उन्नति करके कहानियाँ लिखने लगा। कहा जाता है कि नाटक से उसे विशेप रुचि थी और वह कभी-कभी अपनी सूझ-बूझ एवं प्रौढ़ विचारों से अपने अध्यापकों को चकित कर देता था। इतनी थोड़ी आयु में उसने बहुत सी ऐसी शिक्षा प्राप्त कर ली.जो पुस्तकों के पढ़ने से नही मिलती। जीवन की कठिनाइयों तथा अनुभवों ने समय से कही पहले उसे विचारशील बना दिया। लड़कपन में आश्चर्य भरी आँखों से उसने जो कुछ देखा उस पर असहाय एव अकेले मन के भीतर विचार किया और धारणाएँ बनायी। भावुक स्वभाव और कल्पना शक्ति ने उसे सौन्दर्यबोध तथा स्फूर्ति प्रदान की। उसके माता-पिता उसके निर्णय को आदर से स्वीकार करते और अपने मन में उसे सराहते थे। चार्ल्स ने पढ़ने-लिखने में जो उन्नति की उस पर उन्हें अभिमान था और वे कभी.कभी उस दिन के स्वप्न भी देखने लगे थे जब वह बड़ा होकर परिवार को ऊँचा उठायेगा और सारा दरिद्र दूर करेगा। चौदहवें वर्प में जब चार्ल्स ने स्कूल की पढाई समाप्त की तो लिकन्स इन के एक बैरिस्टर के दफ्तर में उसे नौकरी मिल गयी।

इसी समय जान डिकेन्स ने भी फिर से काम करना आरम्भ किया और वह पार्लमेन्ट का रिपोर्टर हो गया। कुछ समय काम करने के बाद चार्ल्स ने अपना भविष्य सुधारने की चेष्टा में संकेत-लिपि सीखी और स्वतंत्र होकर कचहरियों में संवाददाता का काम करना आरम्भ किया। कई वर्पो तक वह कचहरियों में कड़ा परिश्रम करता रहा परन्तु उसकी आय अनिश्चित एवं संदेहपूर्ण ही रही, जिस कारण कभी-कभी उसका मन नाटक तथा रगमच की ओर झुका करता था। स्कूल के दिनों से ही उसे नाटक तथा रगमंच मे बड़ी दिलचस्पी थी और बहुत से अभि-नेताओ को वह जानता भी था, जो रगमच पर अच्छा कमा रहे थे। आय में वृद्धि के उपायो में रंगमंच पर जाना उसे रुचिकर एवं सुगम प्रतीत होता था। अपनी योग्यता की जाँच भी उसने कई बार अकेले में और दूसरो के सामने की थी। कई बार उसने अभिनय में भाग भी लिया। जिस समय वह बैरिस्टर के दफ्तर में काम करता था तो उसने नाटकों में से बीसों पात्रों के नियोग कंठ किये थे, जिन्हें वह मवक्किलों, मुन्शियों तथा बैरिस्टरो के सन्मुख उचित संकेतों एव स्वर और वाणी के उतार-चढ़ाव के साथ सुनाया करता था। अपनी योग्यता पर उसे ऐसा विश्वास हो गया था कि

उसने कोवेन्ट गार्डेन थियेटर (Covent Garden Theatre) में काम करने के लिए चार्ल्स केम्वल (Charles Kemble) जैसे श्रेष्ठ अभिनेता को अपनी परीक्षा के निमित्त एक प्रार्थनापत्र भेजा था। जव प्रार्थना स्वीकार हुई और उसके पास अपनी योग्यता दिखाने के लिए निमंत्रण आया तो उसे यह जान पड़ा कि जैसे उसके पाँव उन्नति की सीढी पर पहुँच गये है और शिखर निकट ही सामने दिखाई दे रहा है। यह तो अग्रेजी साहित्य का सौभाग्य ही था जो चार्ल्स डिकेन्स नियत दिवस पर अस्वस्थ हो गया और साक्षात्कार के लिए कोवेन्ट गार्डेन थियेटर में उपस्थित नहीं हो सका। जव वह स्वस्थ हुआ तव तक उसी के काम में उन्नति का द्वार खुल गया था जिसमें प्रवेश करना कठिन नही था।

सन् १८३१ में दि ट्रू सन (The True Sun) का प्रतिनिधि होकर पार्लमेन्ट की कार्यवाही का वृत्तान्त लिखने को रिपोर्टर्स गैलरी में पहुँचा और उसके कुछ ही समय के वाद मार्निग क्रानिकल के लिए समाचार लिखने लगा। रंगमंच पर जाने की उसकी अभिलाषा मन में ही रह गयी। दि मार्निग क्रानिकल (The Morning Chronicle) को सवाद देने का कार्य उसने वड़े उत्साह से किया। दूर-दूर के गाँवों एवं क़सवों में जाकर प्रवान राजनीतिज्ञों के भाषण, आदि से अन्त तक, सकेत-लिपि में लिख लाता और फिर उन्हे पूर्ण रीति से हस्तलिपि में लिखकर समाचारपत्र को भेजता। इन दिनो एक स्थान से दूसरे स्थान को घोडागाड़ी पर जाना होता था। रात को ठहरने के लिए सड़कों के किनारे सराय होती थी जहाँ यात्रियों के आराम की सारी सुविधा होती थी। ये यात्राएँ चार्ल्स डिकेन्स के लिए वडे महत्त्व की सिद्ध हुई। वह अपनी आँखों से देश की वहुत सी दशा देख सका और रास्ते एव सराय के जीवन का अनुभव कर सका। जो ज्ञान उसे इन यात्राओं मे प्राप्त हुआ उसका उपयोग उसने अपने उपन्यासों मे किया। आरम्भ मे उसके सवाद केवल व्याख्यानो से भरे होते थे जो वह सकेत-लिपि में लिखकर लाता था किन्तु धीरे-धीरे उसने मनुष्यों एवं दृश्यों के रेखा-चित्र भी स्वय लिखकर भाषणों के आगे-पीछे लगाने शुरू कर दिये। जहाँ कही वह जाता वहाँ की यात्रा का हाल, सराय में ठहरने के अनुभव, सभा में आये हुए लोगों का वृत्तान्त और वक्ता के स्वागत तथा उसके भाषण का प्रभाव, सभी कुछ अपने संवाद के साथ-साथ लिखकर अपनी रिपोर्ट को रोचक वनाता था। समाचारपत्र के दफ्तर के कर्मचारी इन रोचक बातों को इतना पसंद करते थे कि चार्ल्स डिकेन्स ने क्रानिकल के लिए अलग से ऐसे वर्णनों के निवन्ध लिखने शुरू कर दिये। इस प्रकार से प्रेरित होकर १८३४ में जव उसकी आयु वाईस वर्ष की थी, डिकेन्स ने पहले पहल

एक हास्यरस-प्रधान रेखाचित्र लिखने की चेष्टा की। अपने अनुभवों से सामग्री लेकर कई बार के प्रयत्न के बाद वह लिखा गया। बिना नाम दिये चुपके से उसने डरते-डरते रेखाचित्र दि मन्थली मैगजीन (The Monthly Magazine) में छपने को भेज दिया और अधीर होकर कातरता से मैगजीन के प्रकाशन की राह देखने लगा। जिस दिन मैगजीन प्रकाशित हुई और बिना नाम की उसकी रचना उसमें मुद्रित होकर उसकी आँखों के सामने आयी तो वह गद्गद हो गया। जितनी प्रसन्नता डिकेन्स को उस दिन हुई थी उतनी फिर कभी नहीं हुई। बहुत वर्ष व्यतीत होने पर डिकेन्स ने अपने मित्र फार्स्टर से इस दिन का स्मरण करके बताया था कि जब उसने झपटकर मुद्रणालय से निकली पहली प्रति को हाथ में लिया और अपनी कल्पना की पहली उपज पर नजर पड़ी, तो उसकी आँखों में आँसू भर आये और "वे हर्ष एवं गर्व के आँसुओं से ऐसी धुँधली हो गयीं कि वे उस खुले स्थान को न तो सह सकती थीं, न वहाँ देखने योग्य थी।"

इस प्रारम्भिक कातरता पर विजय प्राप्त कर लेने के बाद डिकेन्स ने लन्दन तथा देहात के जीवन सम्बन्धी अनेक रेखाचित्र ऐसे ही हास्योत्पादक एवं व्यंग्यात्मक लिखे, और इसलिए कि लोग उसे पहचान न सकें, उसने उन्हें "बुआज" (Boz) के उपनाम से प्रकाशित करना आरम्भ किया। ये रेखाचित्र १८३६ में जार्ज क्रुकशैंक (George Cruickshank) के दृष्टान्त चित्रों सहित एक मोटी पुस्तक के रूप में प्रकाशित किये गये और पुस्तक लोकप्रिय होकर खूब बिकने लगी। पुस्तक ने देश भर में धूम मचा दी और "बुआज" का नाम जगत्-विख्यात हो गया। पुस्तक बिकी भी इतनी कि जिसकी किसी को आशा नहीं थी।

दि पिकविक पेपर्स

चार्ल्स डिकेन्स के जीवन में स्केचेज बाई बुआज (Sketches by Boz) के प्रकाशन का वर्ष बड़े महत्त्व का समझा जाना चाहिए। इस पुस्तक की सफलता के कारण उसे आत्मविश्वास हुआ और लेखनी द्वारा धन प्राप्त करना सम्भव जान पड़ने लगा। अब उसने सवाददाता का काम छोड दिया और विवाह करके निश्चित जीवन आरम्भ किया। इसी वर्ष उसने कई प्रकाशकों के साथ उनकी पत्रिकाओं केलिए कहानियां लिखने की सविदाएँ की और चैपमैन ऐन्ड हाल (Messrs. Chapman and Hall) से पिकविक पेपर्स (Pickwick Papers) लिखने की भी सविदा की जो प्रत्येक मास मे नियत दिवस पर भागों में प्रकाशित होने वाली थी और जिसके प्रत्येक भाग का मूल्य एक शिलिंग रखा गया था। राबर्ट सीमोर (Robert

Seymour) नामक चित्रकार के व्यंग्यचित्र और चार्ल्स डिकेन्स के लिखे हुए हास्योत्पादक निवन्ध मिलकर खेल-कूद एवं शिकार इत्यादि के वर्णन इस एक पुस्तक में दिये जाने को थे।

डिकेन्स ने पात्रों को एकत्र करने के लिए "पिकविक क्लब" की कल्पना की जो तुरन्त सर्वप्रिय हुई। "क्लव" का नाम लोगों की ज़बान पर चढ़ गया और पुस्तक का पहला भाग प्रकाशित होते ही हाथों-हाथ विक गया। दूसरा भाग अभी छप ही रहा था जव सीमोर ने आत्महत्या करके प्राण त्याग दिये। तीसरे भाग से केवल डिकेन्स पर सारा भार आ गया और उसे पुस्तक की व्यवस्था बदलनी पड़ी। नये-नये पात्रों का क्लव मे प्रवेश कराया और नवीन स्थितियों एवं घटनाओं में उनके चरित्र तथा स्वभाव का चित्रण किया गया, जिन परिवर्तनों के कारण पुस्तक का पूरा ढाँचा कुछ का कुछ हो गया। इन परिवर्तनों का परिणाम यह हुआ कि पिकविक पेपर्स एक श्रेप्ठ पुस्तक वन गयी, जिसमे बीसों पात्र अपनी अलग अलग विचित्रताऍ और अनोखे ढग लेकर हमारे सामने आते और अपनी वातचीत एवं हरकतों से हमें हँसाते है। डिकेन्स ने अपने ढग से पात्रों को देश और काल के निकट लाकर उनकी बातचीत और हरकतों को वास्तविक कर दिया था, जिस कारण स्नोडग्रस, विंक्ल तथा जिंग्ल का वुद्धिचापल्य एवं मनमौजीपन और वेलर्स का चातुर्य अद्‌भुत होते हुए भी लोगों की समझ मे आया और वहुत दिलचस्प मालूम हुआ। स्पेक्टेटर नामक पत्रिका ने लिखा कि सैम वेलर का चित्रण शेक्सपियर के फाल्सटाफ (Falstaff) से भी वढ़-चढ़कर है। अनोखे एव परिहासपूर्ण होते हुए भी सारे पात्र मानवता से भरे हुए है और उनका भॉड़पन पग-पग पर उनकी जीवन-स्थिति को दिखाता है।

पुस्तक जैसी लोकप्रिय हुई और जितनी विकी उसका अनुमान न तो डिकेन्स को था न उसके प्रकाशक को। इस समय किसी पत्रिका को विज्ञापनों द्वारा प्रशंसा करके वेचने की कोई सुविधा अथवा प्रथा नही थी। एक पाठक दूसरे से उसकी प्रशंसा करता था और इस प्रकार धीरे-धीरे विक्री होती थी। पिकविक के पहले दो भागों ने पाठकों को कुछ अविक आकर्पित नही किया और इस कारण वे कम विके। लन्दन के कुछ थोड़े साहित्यिक लोगों को छोड़कर, जिन्होंने डिकेन्स की प्रतिभा को समझा, वाकी पाठकों की वड़ी संख्या के लिए उसकी मौलिकता केवल अनोखापन था, जो किसी दूसरे उपन्यासकार के गुणों से न मिलने के कारण दोप-सा जान पड़ता था। सावारण पाठको को उसकी रचना में वे गुण नही मिलते थे जिन्हे स्कॉट और जेन आस्टेन के उपन्यासों में पाने की उन्हे आदत पड़ गयी थी, अथवा जो उन

उपन्यासकारों की विशेषता कहे जाते थे, जिनकी रचनाएँ समकालीन बैठकखानों के जीवन का चित्रण करती थी और शौकीन सभ्य समाज की मूर्खता दिखाती थी।

बहुत-से पाठक इस नये लेखक को बात का बतंगड़ बनानेवाला कहते थे या उसे भोंड़े प्रकार का भाँड़पन अथवा उचक-फाँद वर्णन करनेवाला समझते थे। बहुत से साहित्य के समीक्षक भी मिस्टर पिकविक के चित्रण मे कोई विशेष मौलिकता नहीं देखते थे। उन्हें एक अवकाशप्राप्त लन्दननिवासी द्वारा कुछ मूर्खों की टोली को सैर कराने ले जाने में कोई दिलचस्प बात नही दिखाई देती थी, विशेपकर ऐसे मूर्खो को, जिनका कोई सिर-पैर ही न हो और जिनकी सारी हरकते शिष्टाचार-विरुद्ध हों; लोगों का यह मत होते हुए पुस्तक की माँग बहुत कम और धीरे-धीरे ही हो सकती थी। हुआ भी ऐसा ही। प्रथम भाग की चार सौ प्रतियो की बिक्री से आरम्भ होकर पहले चार भाग संसार में मिस्टर पिकविक की तरह लुढकते-पुढ़कते किसी प्रकार भ्रमण करते रहे और एक पाठक से दूसरे को पहुँचते रहे। जब सैम वेलर (Sam Weller) रंगमंच पर आया तो धीरे-धीरे माँग बढने लगी, यहाँ तक कि थोड़े ही दिनों में पंद्रहवें भाग तक पहुँचने-पहुँचते चालीस हजार प्रतियों की माँग हो गयी, जिसकी किसी को आशा नही थी।

अब क्या था, लोग पिकविक के प्रकाशन के दिवस की प्रतीक्षा करने लगे और उसके आने के लिए उत्सुक होने लगे; उसके पात्र हजारों पाठकों के संसार में जाने-पहचाने लोग बन गये। टामस कारलाइल (Thomas Carlyle) ने फार्स्टर (Forster) को एक चुटकला भेजा था जिससे इस उत्सुकता का पता चलता है—"एक प्रधान पादरी ने अपने पूज्य होठों से मुझे एक गम्भीर पादरी की बतायी हुई यह कहानी सुनायी। पादरी किसी अस्वस्थ मनुष्य के सिरहाने बैठकर उसे ईश्वर की याद दिला रहा था। जब वह बहुत देर के बाद कार्य समाप्त करके चला और कमरे से बाहर हुआ तो उसने अस्वस्थ मनुष्य को कहते सुना—'खैर, ईश्वर को धन्यवाद है कि दस दिन के भीतर ही पिकविक आ जायगा तो सब ठीक हो जायगा।" जो लेखक अपने देशवासियों के उदास एवं दुःखमय जीवन मे विनोद तथा हँसी ला सकता था, वह संसार के सारे पदार्थों से कहीं अधिक मूल्यवान् और सर्वप्रिय हो गया था।

पिकविक पेपर्स की सफलता को लेखक-जीवन का रोमांस कहा जा सकता है और इस रोमांस का प्रभाव डिकेन्स के भाग्य एवं सम्पत्ति पर तत्काल हुआ और बराबर स्थायी रहा। उसने इस पुस्तक का प्रत्येक भाग पन्द्रह गिन्नी प्रति मास के वेतन पर लिखना स्वीकार किया था और आर्थिक दशा के कारण उसने प्रकाशक-

संस्था को कुछ धन पेशगी देने का अनुरोध करके राज़ी किया था। पिकविक से बीस हज़ार पौंड कमा लेने के कारण प्रकाशक अब डिकेन्स को दसगुना धन देने को तैयार थे, यदि भविष्य में वह कुछ लिखकर उन्हें प्रकाशित करने को देना स्वीकार करे। प्रकाशकों की दूसरी संस्थाएँ अब जान गयी थीं कि डिकेन्स जिसे चाहे धनवान् करके कही से कही पहुँचा दे सकता है। वे उसके साथ व्यवहार करने को उत्सुक थीं और उसकी शर्ते स्वीकार करने को राज़ी थीं। डिकेन्स भी अपनी शक्ति अब अच्छी तरह समझता था और चतुराई से अपनी शर्तो को स्वीकार कराकर लाभ उठाना जानता था। इस समय के बाद से उसने बड़ी तेज़ी से लिखना भी शुरू कर दिया, जिसके कारण कभी कभी एक से अधिक कहानियाँ एक ही साथ चलती रहती थीं।

पिकविक समाप्त होने के पहले ही आलिवर ट्विस्ट (Oliver Twist) लिखना प्रारम्भ हो गया था और उसके अन्तिम भाग अभी चल ही रहे थे, जब निकोलस निक्लबी (Nicholas Nickleby) के प्रारम्भिक भाग निकलने लगे। इसी प्रकार दि ओल्ड क्यूरिआसिटी शाप (The Old Curiosity Shop) और बार्नबी रज (Barnaby Rudge) एक ही साथ प्रकाशित होते रहे। डिकेन्स के दूसरे प्रधान उपन्यासों के प्रकाशन का समय यद्यपि इस प्रकार ड्योढ़ लगा हुआ नहीं था, फिर भी उनकी तिथियां एक-दूसरी से इतनी निकट है कि हमें उसकी बौद्धिक स्फूर्ति जानकर आश्चर्य होता है। मार्टिन चज़लविट (Martin Chuzzlawit), डाम्बे ऐन्ड सन (Dombey and Sor), डेविड कापर्फील्ड (David Copperfield), ब्लीक हाउस (Bleak House), ए टेल आफ़ टू सिटीज (A Tale of Two Cities) और ग्रेट एक्सपेक्टेशन्स (Great Expectations) सब एक निश्चित क्रम के अनुसार चौबीस वर्ष के भीतर लिखे गये थे। जब हम इस पर भी ध्यान देते हैं कि १८४६ में डिकेन्स लन्दन डेली न्यूज़ (The London Daily News) का सम्पादक था और तीन वर्ष के बाद उसने हाउसहोल्ड वर्ड्स् (Household Words) नामक साप्ताहिक पत्रिका निकाली थी, जिसमें उसकी ए क्रिसमस कैरोल (A Christmas Carol), दि चाइम्स (The Chimes) और दि क्रिकेट आन दि हार्थ (The Cricket on the Hearth) नामों की कई सुन्दर कहानियाँ पहले छपी थी, तो हमें उसकी सर्जन-शक्ति एवं उसकी साहित्यिक रचनाओं की विविधता पर आश्चर्य होता है और हमें उसे अपूर्व बुद्धि का मनुप्य मानना पड़ता है।

डिकेन्स की असाधारण शक्ति का अनुमान उन विभिन्न कार्यो से किया जा

सकता है जिनमें उसने योग दिया था। इस समय का शायद ही कोई सार्वजनिक कार्य रहा होगा, जिसमें उसने भाग न लिया हो। लगभग बीस वर्ष तक वह पद-दलित जनता की दशा सुधारने में व्यस्त रहा। इन सब कामों के साथ साथ उपन्यास लिखना एक दिन के लिए भी बन्द नहीं हुआ और रंगमंच के कामों में जैसी दिलचस्पी वह अपनी आरम्भिक दशा में लिया करता था, वैसी ही अब भी लेता रहा। सन् १८५३ के पहले उसने इतना धन भी कमा लिया था कि एक बड़ा मकान, जिसके चारों ओर सुन्दर विस्तृत उद्यान एव विशाल वृक्ष थे, उसने मोल ले लिया था। इंग्लैण्ड एवं अमेरिका में सैकड़ों बार उसने अपने उपन्यासों के दृश्य तथा वार्तालापके नाटकीय अंश निकालकर अभिनय के ढग से सुनाकर लोगो को प्रभावित किया था।

सन् १८६९ की शरद ऋतु में डिकेन्स ने दि मिस्ट्री आफ एडविन ड्रूड के नाम का एक उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया जो उसकी अन्तिम रचना है और जिसे समाप्त करने के पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी। आलिवर ट्विस्ट या ग्रेट एक्सपेक्टेशन्स के पढ़ने के तुरन्त बाद यदि इस अन्तिम उपन्यास को कोई पढ़े तो बड़ी अद्‌भुत बातें मालूम होंगी। यद्यपि कथानक में रहस्य को बड़ी अच्छी तरह से निबाहा गया है, यद्यपि देश और काल दोनों भली प्रकार सोचकर निश्चित किये गये हैं, और दृश्य वे चित्रित हुए हैं जो डिकेन्स के मनस्पट पर गहरी रेखाओं में अंकित थे, किन्तु दूसरे उपन्यासों की तरह इसमें ओज है न उत्साह, और एक प्रकार की उदासी उन दृश्यों पर भी छायी हुई है, जो फूलों से रंगीन खुले आसमान के नीचे चमक रहे हैं। वर्णनात्मक शैली का सारा चमत्कार कब्रों एवं कब्रिस्तानों में दिखाया गया है और अँधेरे तथा धुँधले स्थानों एवं पत्थर गढ़ने वालों के काम के सम्बन्ध में सारी भावुकता दिखायी गयी है। एडविन ड्रूड (Edwin Drood) इन विशिष्ट गुणों के कारण शीघ्र आनेवाले अन्त की पूर्व सूचना समझा जा सकता है। क्या ही अच्छा होता जो डिकेन्स हत्या एवं रहस्य के विषयों को छोड़कर अपने ही रंग में कोई दूसरा डेविड कापरफील्ड संसार को देता। कुछ दिन पहले से वह सुस्त एवं उदासीन सा रहा करता था। एडविन ड्रूड (Edwin Drood) के बीच में ही एक शाम को उसकी तबियत खराब हुई। उसी रात खाने की मेज़ पर उसके चेहरे पर लक़वे के चिह्न से दिखाई दिये और जब तक उसे पलंग पर ले जाया गया वह बेहोश हो गया। बिना होश आये दूसरे दिन उसकी मृत्यु हो गयी।

टामस कारलाइल ने एक मित्र को सूचना देते हुए जिन शब्दों का प्रयोग किया था वे उसकी कब्र पर लिखने योग्य हैं—"उपकार की मूर्ति, मनुष्य-मात्र का परम

मित्र, सौम्य स्वभाव, मेधावी, उदारचेता डिकेन्स, जिसके रोम-रोम में सत्य और सदाचार भरा था. . . ।"

डिकेन्स की अपने पाठकों से सन्निकटता

इसमें सन्देह नहीं कि डिकेन्स की अकालमृत्यु उन कठिनाइयों एवं तीव्र उद्योग के कारण हुई, जिनमें उसका लड़कपन और युवावस्था व्यतीत हुई थी। उसके साहित्यिक जीवन की विशिष्टता और उसकी रचनाओं के प्रधान लक्षणों का स्रोत उसकी अपने पाठकों तथा संसार से सन्निकटता थी, जिसने उसके व्यक्तित्व एवं उपन्यासों को वह रंग दिया जो अलग पहचाना जाता है। उसके समय के इंग्लैण्ड में निर्दयता एवं अशिष्टता, अन्याय तथा कठोरता, प्रजापीड़न और उपेक्षा का बाज़ार गरम था और उन्हें मुँह खोलकर बुरा कहनेवालों की संख्या बहुत कम थी। समाज तथा व्यक्ति में इन सब बातों को उसने आँख से देखा और स्वयं अनुभव किया था तथा इनके कारण और परिणाम के परस्पर सम्बन्ध का निरीक्षण भी किया था। उपन्यास लिखकर डिकेन्स ने पाठकों को वे दृश्य दिखाये, जिन्हें उन्होंने न देखा था न देखना चाहते थे। व्यवसाय एवं वाणिज्य द्वारा धनोपार्जन करके लोग आँखें बन्द किये इस संसार को सुखमय और इंग्लैण्ड को संसार का सबसे उत्तम देश समझते थे। डिकेन्स ने ऐसे लोगों की आँखे खोल दीं और अन्तःकरण को जगाकर शुद्ध किया। उसने केवल उपन्यास लिखकर ही सन्तोष नहीं किया, बल्कि सैकड़ों स्थानों और अवसरों पर उसने अपने लिखे उपन्यासों के कारुणिक टुकड़े स्वयं रंगमंच पर जाकर इस प्रकार पढ़कर सुनाये कि लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा। राजनीति को ओढ़ना-बिछौना बनाये वे स्वार्थी लोग जो जनता को इन्द्रजाल में फँसाये चैन कर रहे थे, सहम गये। सुधार की माँग बढ़ने लगी, क्योंकि जनता डिकेन्स के उपन्यासों में अपनी दशा के वास्तविक चित्र देखने लगी।

डिकेन्स का सामाजिक उद्देश्य

यह ठीक है कि डिकेन्स ने सुधार के फेर में कभी-कभी कहानी-कला के सिद्धान्तों के विरुद्ध अपने उपन्यासों की रचना की, और यह भी ठीक है कि उसने अपने व्यक्तिगत संवेगों एवं चित्तवृत्तियों को कला से दूर नहीं रखा, जिस कारण उसके उपन्यासों में हमें विशुद्ध निरपेक्षता नहीं मिलती। पात्रों के जीवन तथा उनकी समस्याओं को उसने केवल मनोविज्ञान अथवा दर्शन के सिद्धान्तों की कसौटी पर

ही नहीं जाँचा, जैसे उन्नीसवीं शताब्दी उत्तरार्ध के बहुत से श्रेष्ठ उपन्यासकारों ने जाँचा। वह तो मानवजाति का प्रेमी था और अपने देशवासियों के लिए न्याय और कृपालुता का व्यवहार चाहता था। इस उद्देश्य की साधना में उसने उपन्यास का प्रयोग एक प्रबल यन्त्र के समान किया, जो लोगों की आँखें खोलकर और उनका अन्तःकरण जगाकर समाज-सुधार कर सकता था।

बहुत-से समकालीन उच्चकोटि के देशवासियों की भाँति डिकेन्स भी इसी चेष्टा में कार्य करता और जीवित रहता था कि कैसे वह संसार को किंचित् मात्र उन्नति की दशा में देखकर उसे छोड़े। इस उद्देश्य को उसने दोनों ओर से साधने की चेष्टा की; एक तो उसने धनी लोगों को निर्धनों की दशा समझने में सहायता दी और दूसरे निर्धनों को अपनी वास्तविक दशा का पूरा तथा ठीक ज्ञान प्राप्त करने की सुविधा दी। उसने साधारण लोगों के जीवन की सीधी-सादी घटनाओं का वर्णन इस प्रकार किया कि उसके पाठक उनके विशिष्ट गुण और लाक्षणिक दोष उपन्यासों से भली भाँति जान गये। वे पात्र और ऐसी घटनाएँ जिन्हें हम महत्त्व नहीं देते, डिकेन्स के लिखने में सारगर्भित हो जाती हैं और फिर सद्भाव एवं आनन्द अथवा निर्दयता तथा दुष्टता की सूचक हो जाती हैं।

डिकेन्स का चरित्र-चित्रण

यह जानते हुए कि छोटी-छोटी साधारण बातों का चरित्र तथा जीवन में क्या महत्त्व होता है, डिकेन्स ने स्त्रियों और पुरुषों के क्षुद्र व्यक्तिगत लक्षणों को लेकर उनकी विचित्रताओं एवं भद्दापन, दुष्टताओं तथा सद्भाव का वर्णन किया। वह अपने उपन्यासों को साधारण जनता तक पहुँचाना चाहता था, इसलिए आवश्यक था कि वह स्पष्ट बातों को और भी स्पष्ट करके लिखे, सोने पर सुनहरा रंग चढ़ाये और कुमुदिनी को चित्रकारी करके उन्हें दिखाये, जिसमें उनके चारों ओर की भूरी दुनिया में वे बातें उनका ध्यान अपनी ओर खींच सकें। इस प्रकार डिकेन्स ने एक पूरी बस्ती हास्यकर स्त्री और पुरुषों से बसा दी। इस जनसंख्या के लिए उसने ऐसे स्त्री और पुरुष बनाये जिनका व्यक्तित्व दूर से पहचाना जा सके, और उनकी विशेषताओं को इस तरह उभारा कि वे उनके चरित्र की सूचक हो गयीं। यही कारण है कि डिकेन्स के पात्र पाठकों के सामने अलग-अलग खड़े होते हैं। उनकी विशेषताएँ तथा विषमताएँ ऐसे अच्छे प्रकार से प्रकट होती हैं कि उपन्यासों का पढ़ने वाला पात्रों को भूल नहीं सकता—मिस्टर मिकावर ((Mr. Micawber) जो

कुछ होने की प्रतीक्षा में सदा रहता है, सयरी गैम्प (Sairy Gamp) जिसके सिर पर सदा काल्पनिक मिसेज हैरिस का भूत सवार रहता है, पेकस्निफ (Pecksniff) जो धर्माभिमान में सदा चूर रहता है, उराया हीप (Uriah Heap) जो नम्रता से सबके आगे सीस झुकाये विछ जाता है; इसी प्रकार के सैकड़ों स्त्री और पुरुष जिनका साक्षात् डिकेन्स के उपन्यासों में होता है, भुलाये नही जा सकते। ये सब सामान्य स्वभाव तथा अभ्यास के सूचक है, सबके सब विशेष ढग तथा स्थिति एवं अवस्था के प्रतिरूप है, इसी लिए जबसे उन्होंने इस ससार में आँखे खोली है, उनके नाम अंग्रेजी साहित्य में स्वतः-सिद्ध कल्पना की भाँति लिये जाते है।

चरित्र-चित्रण का यह ढंग बहुत दूषित बताया गया है। समीक्षकों का मत है कि डिकेन्स ने इस प्रकार आकृति तथा लक्षण को बिगाड़कर और चाल-ढाल को बढा-चढ़ाकर वक्र कर के पात्रों की सनकों को उभारा है और उन्हें उपहास का विषय बना दिया है, जिससे वे मनुष्य न रहकर टेढ़े-मेढ़े एवं अधूरे से व्यक्ति बनकर रह गये है। इसमे संदेह नही कि डिकेन्स ने अपने पहले उपन्यासों में हास्यजनक चित्र खींचे है और बड़े विस्तार से हँसी उड़ाने की चेष्टा की है। किन्तु जैसे-जैसे वह उन्नति करता गया वैसे-वैसे प्रभावों की सीमा बढ़ती गयी और पात्र अर्थपूर्ण होते गये, यहाँ तक कि हास्य उत्पन्न करने की जगह भय तथा घृणा के प्रभावों की बहुतायत हो गयी। डिकेन्स ने कभी सुडौल अथवा यथाप्रमाण पात्र बनाने का प्रयत्न नहीं किया, इसलिए कि वह जानता था और विश्वास रखता था कि अच्छे मनुष्यों में भी, जो प्रकृति कम ही पैदा करती है, सदा स्वभाव एवं ज्ञान अथवा युक्ति की त्रुटियाँ रहती है। इस बात में, जैसे बहुत सी दूसरी बातों में, वह प्रकृति का अनुयायी था।

जैसा कि एमर्सन (Emerson) ने कहा है, कोई भी मनुष्य कद्दू के समान सम्पूर्ण एवं निर्दोष नही होता, क्योंकि प्रत्येक कद्दू अपनी बाढ़ में उन सब दशाओं मे होकर गुजरता है जो उसकी बाढ़ में आती हैं और मनुष्य ऐसा नही करता। इसके विरुद्ध स्त्री और पुरुष थोड़े-थोड़े दोषों से ठिठरकर क्षीण तथा दुर्बल हो जाते है और बड़े लोग भी केवल एक ही दो बातों में गौरव प्राप्त करते है। मानव-प्रकृति और स्वभाव की प्रमाण-विरुद्धता पर निर्भर होकर और मनुष्य के सामने जरा टेढ़ा रूप दिखानेवाला दर्पण रखकर डिकेन्स ने अपनी कला को विशेषता दी तथा अनोखा लक्ष्य रखा। जैसा वह स्वयं कहता है—"वास्तविक जीवन में लोगों की विलक्षणता और अनोखेपन पर हमारी दृष्टि पहले पड़ती है यदि उनमें ऐसी कोई बात हुई तो,

और जब तक हम उनसे पूरी तरह से परिचित नही हो जाते हम इन्हीं ऊपरी लक्षणों में उलझे रहते हैं, उनके पीछे के गुणों को नही देख पाते।" हम जितने लोगों से परिचित होते है वे सब हमें अपना हृदय खोलकर नही दिखाते। उनमें से बहुतों को हम ऊपरी लक्षणों से ही जानते है और उनके साथ किसी प्रकार जीवन व्यतीत करते है।

उन्नीसवी शताब्दी के पूर्वकाल में मध्य श्रेणी के निम्न स्तर के लोगों का जीवन उनके कार्यो तथा व्यापार के बाहरी स्वरूप मे पूरी तरह प्रकट होता था। यदि कोई मनुष्य गाड़ी चलाता था अथवा कपड़े सीता था तो इन कामों को अच्छी भाँति जान लेने से उस व्यक्ति का सारा जीवन सामने आ जाता था। उस श्रेणी के लोगों का कोई अन्त.स्थ जीवन बहुधा नही होता था। भाव तथा ध्यान, चिन्तन एवं चित्तवृत्ति बहुत कुछ कार्यो के ही सम्बन्ध मे दिखाई देती थी और व्यापार से अलग कोई विशेष महत्त्व नही रखती थी। इस काल का उपन्यासकार जो इस श्रेणी के जीवन का निरीक्षण करके उसका चित्रण करता था, अन्त.स्थ चित्तवृत्ति तथा चिन्तन और ध्यान एवं भावों को अलग करके नही देखता था। डिकेन्स ने भी ऐसा ही किया। उसके चारों ओर जो संसार था उसमें कार्य और व्यापार ही लोगो का जीवन था, जिसका उसने उपन्यासों मे चित्रण किया। जिस श्रेणी के लोगो को वह जानता था और जिनके जीवन की घटनाएँ उसने देखी थी, उस जीवन मे इस समय तक वह गहराई तथा अन्त.स्थ जीवन नही था जो आगे चलकर पेचीदगियों के कारण उत्पन्न हुआ। जैसे-जैसे समय पेचीदा होता गया उलझने पैदा होती गयी और जीवन मे अन्तरग हलचल उत्पन्न होती गयी, यहाँ तक कि काम-काज के जीवन के अलावा उनका अन्त स्थ जीवन भी महत्त्व का होता गया। डिकेन्स के समीक्षक को उसके समय की इस वास्तविक दशा को भुलाकर उपन्यासकार से उस वस्तु की आशा नही करनी चाहिए जो जीवन में भी नही थी। बड़े से बडा मनुष्य एक ही समय सब कुछ नही हो सकता। डिकेन्स ने एक विशेष वर्ग के लोगों का जीवन देखा और समझा और उसी के चित्रण मे उसने एक नया ससार बनाया, जिसमे जीते-जागते, काम-काज करते सैकड़ों स्त्री और पुरुष बसाये जो अपने साथ उसे भी जीवित रखेंगे।

डिकेन्स की आनन्द-वृत्ति तथा हास्य

चार्ल्स डिकेन्स की अपूर्व बुद्धि का सबसे श्रेष्ठ गुण तथा लक्षण उसकी आनन्दवृत्ति है। अपने इसी गुण से उसने समकालीन देशवासियों को प्रभावित किया था और

उनका ध्यान ऐसी सैकड़ों बातों की ओर आकर्षित किया था जिनमें सुधार की आवश्यकता थी। उसके उपन्यासों के हास्यकर पात्र सजीव हैं और उनके जीवन में डिकेन्स का भी जीवित होना सिद्ध है। हँस-हँसकर पाठक डिकेन्स की रचनाएँ पढ़ते और गम्भीरता से उन विषयों पर विचार करते थे, जिन्हें वह व्यंग्यात्मक ढंग से उनके सामने प्रस्तुत करता था। इन हास्यजनक काल्पनिक आकृतियों में, जिन्हें डिकेन्स ने जन्म दिया था, आगे की पीढ़ियों ने सदाचार की आत्मा के दर्शन किये और उनके द्वारा जीवन के बहुत-से रहस्यों को समझा, जिन्हें बिना कला की सहायता के जान सकना उनके लिए अत्यन्त कठिन था।

जैसा ब्राउनिंग ने कहा है, हम वस्तुओं और दृश्यों को उनके चित्रों में देखकर पहले आकर्षित होते हैं और फिर उनसे कला की प्रेरणा के अनुसार प्रेम करते हैं। डिकेन्स ने कला द्वारा लोगों को वास्तविक जीवन पहले दिखाया और उसे हास्यजनक करके उसके अर्थ को समझाया। उसका हास्य ऐसी कल्पना की उत्पत्ति था जो भोंडे जीवन की भी सुन्दरता को देखता था। यही कारण है कि हमें उसकी अतिशयोक्ति बुरी नहीं लगती और उसके मुँह चिढ़ाने तथा बिगाड़कर चीजों को प्रस्तुत करने में आनन्द आता है। हम जानते हैं कि ऐसा करके वह वास्तव पर एक प्रकार से परदा डालता है जिसमें उसके भीतरी रहस्य को भले ढंग से दर्शा सके। जब हम वस्तुओं और लोगों को इस रूप में देखते हैं तो हमें उनके इसी रूप से प्रेम हो जाता है, क्योंकि वह स्वयं उनसे प्रेम करता है, उन्हें घृणित नहीं समझता। डिकेन्स के पात्रों के लिए हमारे हृदय में सहानुभूति एवं प्रेम उमड़ता है क्योंकि वह उन्हें व्यंग्य तथा हास्य द्वारा मानवता से भर देता है। उसके उपन्यास को पढ़ने के बाद हमें यह विलक्षण संसार भला लगता है और इसमें जीवन व्यतीत करना बड़ा सौभाग्य जान पड़ता है। हमारे मन में दूसरों की सेवा के लिए इच्छा उत्पन्न होती है और हम अपने को उन पर निछावर करने के लिए उत्सुक हो जाते हैं, इसलिए कि वे दूसरे नहीं रह जाते, हमारे ही हाड़-मांस बन जाते हैं और हमारी ही आत्मा उनकी टेढ़ी-मेढ़ी आकृति में समायी होती है।

डिकेन्स में यह भाव उत्पन्न करने की शक्ति आरम्भ से ही नहीं थी। स्केचेज बाई बोज़ (Sketches by Boz) में वह केवल हँसी उड़ाता है और लोगों तथा रीति-रिवाजों के भद्देपन को दिखाता है। कई उपन्यासों में वह अपने लड़कपन की मुसीबतों का चित्रण करके केवल भावुकता की नदियाँ बहाता है। कई और उपन्यासों में हास्य सिकुड़कर केवल मुस्कुराहट रह जाता है, आँखें डबडबा आती हैं,

क्योंकि डिकेन्स हमें लोगों के काम नहीं दिखाता बल्कि उनकी आत्मा के दर्शन कराता है। उसके पात्र इन उपन्यासों में अपूर्ण तथा अयोग्य दीख पड़ते हैं जो धीरे-धीरे बेमेल और असम्बद्ध गुणों तथा दोषों के पुतले कहे जा सकते हैं और अन्त में उनके चरित्र असंगत एवं विरुद्ध भावों के कारण बेसुरे तथा बेताल होने से चौपट हो जाते हैं। ऐसी दशा में क्या मर्द, क्या औरत, जीवन भर दुःखों का सामना करते हैं, अपने आदर्शों के कारण मुसीबतें उठाते हैं और अपने निष्फल कार्यों में समय बिताते हुए शरीर छोड़ देते हैं।

मिस्टर पिकविक का उदाहरण लीजिए। उनकी आँखों पर गुलाबी चश्मा चढ़ा होने के कारण वे संसार को गुलाबी देखते हैं और जीवन को तरह-तरह की रंगीनियों से भरा-पूरा पाते हैं। नफ़ासत, शिष्टाचार, सुशीलता, विनय, मर्यादा, सभी ऐसे गुणों के वे भण्डार हैं जो सभ्य जीवन के आभूषण कहे जाते हैं। किन्तु जिस संसार में वे रहते हैं उसमें चारों ओर से उन पर फ़िकरे कसे जाते हैं, फबतियों की बौछार होती है। परन्तु वे अपनी चाल से बराबर चले जाते हैं, कोई कुछ भी कहे, हर एक से उन्हें शिष्टाचार की आशा है और हर एक जगह वे सत्य तथा सदाचार का व्यवहार ढूंढ़ते और उसकी प्रतीक्षा करते हैं। कदम-कदम पर उनको विश्वासघात तथा कपट की ठोकर लगती है और उनकी नफ़ासत चूर-चूर हो जाती है।

इसी प्रकार की असंगति का उदाहरण हमें मिस्टर मिकावर (Mr. Micawber) में मिलता है जो मितव्यय के विचार लेकर हमारे सामने आते हैं और बड़े दृढ़ स्वभाव के व्यापारी जान पड़ते हैं, बैठे-बैठे मदिरा का स्वाद लेते और प्रतीक्षा में रहते हुए अपने पड़ोसियों की जेबों को गिद्ध की सी आँखों से ताकते रहते हैं। वे बिना आमदनी के मुक्तहस्त होकर उदारता के भाव रखते हैं और निर्धनता की दशा में प्रसन्नचित्त रहकर अपना जीवन खाते-पीते मनुष्य की सी स्थिरता के साथ व्यतीत करते हैं।

मिकावर के जीवन में जो असंगति है वह उस समय के समाज में प्रचलित थी जिसे डिकेन्स समझता था और सुधारना चाहता था। मिसेज गैम्प (Mrs. Gamp) की जैसी स्त्री का चित्रण केवल श्रेष्ठ उपन्यासकार ही कर सकता था जो डिकेन्स ने किया। मिसेज गैम्प की जैसी गंदी तथा नीच प्रकृति की स्त्री होना कठिन है परन्तु कोई भी पाठक ऐसा न होगा जो उसकी बातों पर घंटों न हँसा हो और जिसने डिकेन्स की इस कल्पना की मुक्तकंठ से प्रशंसा न की हो। मिसेज गैम्प अपने कर्तव्य में सबसे पवित्र तथा कोमल अथवा करुणार्द्र गुणों को, नर्स होने के नाते, एक में

मिलाती है, किन्तु उसे लेशमात्र भी उन गुणों के अर्थ एवं गौरव का ध्यान न था। ऐसे व्यक्ति के साथ सिवा उस पर हँसने के किसी का क्या सम्बन्ध हो सकता है ? उसे देखिए और ईश्वर की महिमा को समझिए।

वे लोग जिन्होंने डिकेन्स का तिरस्कार किया था और उपन्यासकारों से प्राकृतिक नियमों के सिद्धान्तों का पालन करने की माँग की थी, समझते थे कि वह इस पृथ्वी पर एक रंगीन और सुन्दर संसार, प्रकृति का मुँह टेढ़ा करके और उसके नियमों के विरुद्ध कार्य करके, बसाना चाहता है। उनके मत के अनुसार कहानी-साहित्य में मिस्टर पिकविक (Pickwick) के लिए स्थान नही होना चाहिए क्योंकि उनके जैसा मनुष्य प्रकृति के बनाये संसार में नहीं होता। मिसेज गैम्प-जैसी स्त्री नर्स नही होती, इसलिए उपन्यास में भी उसे नही होना चाहिए। उपन्यास में वास्तविक संसार बसाया जाना चाहिए न कि ऐसा जो प्रकृति नही बनाती। इन समीक्षकों के लिए यन्त्र से बनाया हुआ चित्र (Photograph) सबसे श्रेष्ठ कला का नमूना होगा, और इस काल में यन्त्रों की भरमार भी है। किन्तु ऐसे विचार कला के सिद्धान्तों के विरुद्ध हैं। यदि कला का उद्देश्य और इष्ट यथार्थता का आभास देना है, यदि कलाकार अपनी कल्पना में जीवन-सत्य को साकार करके मनुष्यों के सामने रखता है, तो कलाकार को पूर्ण अधिकार है कि वह डिकेन्स की तरह जिंग्ल (Jingle) का सा धूर्त तथा कुटिल स्वभाव का मनुष्य बनाकर उसे प्रेम करने के योग्य कर सके; मिसेज गैम्प (Mrs. Gamp) की सी घृणित स्त्री बनाकर उसे पाठकों तथा पात्रों को हँसाने की योग्यता भी दे सके। मानव-प्रकृति को इस दृष्टि से देखने में हमें वे असगतियाँ और वह लयभंग दशा दिखाई पड़ती हैं जिसके कारण हम होते कुछ है और हो सकने की क्षमता कुछ और रखते है। जीवन के दुःख तथा हमारे पाप, बचपन की सारी पीड़ा एवं यातना के समान आते और चले जाते विदित होते है। इनके आदि और अन्त, कारण एवं परिणाम के समान, हमारे सामने होते है और हम जीवन के रहस्यों को समझ जाते हैं। डिकेन्स का हास्य जीवन के इन रहस्यों की कल्पना में हमारे व्यथित एवं अधीर हृदय पर प्रभाव डालता है और हमारे मन को शान्ति प्रदान करता है, जिससे हम दुःख के उस अगाध समुद्र की कल्पना भी कर सकते हैं जहाँ से लहरों का कोलाहल तक हमारे कानों में नही पहुँचता।

डिकेन्स की कथा-वस्तु और प्लाट

डिकेन्स अपने उपन्यासों की कथावस्तु सँवारने में बहुधा अपने मुख्य पात्र के

सारे जीवन पर नजर रखता है और उसके बचपन से प्रारम्भ करके चरित्र तथा घटना को आगे बढाता है, यहाँ तक कि कहानी उसकी जीवनी हो जाती है। जैसे-जैसे उसकी कहानी-कला विकसित होती गयी, उसके प्लाट असामान्य तथा विस्तृत होते गये और उनमें जीवन की जैसी मिश्रता और पेचीलापन आता गया और उसके पात्रों में पराक्रमी लोगों की सी तीव्रता उत्पन्न होती गयी। इन गुणों के कारण डिकेन्स के कई उपन्यास बड़े ही प्रभावपूर्ण हो गये हैं, किन्तु उसकी प्रसिद्धि उन उपन्यासों पर निर्भर नहीं है। उसकी ख्याति ऐसे पात्रों के बड़े समूह पर निर्भर है जो हास्यजनक तथा भयानक और भद्दे हैं, जो ऐसे बालक हैं जिनकी दीन दशा पाठकों के हृदय में करुणा उत्पन्न करती है, जो चंचल चित्त वाले दुर्बल स्त्री और पुरुष हैं और समाज के अत्याचारों से पीड़ित हो गये है। उसके उपन्यासो में होनेवाले काम कभी मोद तथा प्रमोद उपजाते हैं, कभी करुणा से रुला देते है और हम उनके प्रभाव में आकर विवश हो जाते हैं। डिकेन्स को जीवन की हास्यप्रद बाते देखने मे देर नही लगतीं और इसी के साथ वह निष्प्रयोजन यातना को भी सह नही सकता तथा उत्तेजित हो उठता है। उसे हँसने तथा क्रोध मे आने अथवा तरस खाने में देर नही लगती और उसके पाठकों में भी यही क्षमता उत्पन्न हो जाती है, परन्तु उसके उपन्यास का वातावरण आनन्दमय ही रहता है, क्योंकि मानव-जीवन में भी यही क्रम रहता है और मनुष्य की सारी चेष्टा किसी न किसी ढग से सार्थक ही होकर रहती है।

विलियम मेकपीस थैकरे

बुल्वर लिटन और चार्ल्स डिकेन्स, दोनो उपन्यासकार बड़ी सुगमता से चेतना उत्तेजक सामग्री का प्रयोग करते है और दोनो ही साहित्यिक रीति से भावुकता उत्पन्न करने से डरते नही। दोनों ने उपन्यास को सामाजिक सुधार का यन्त्र समझकर उत्तेजित होकर लेखनी उठायी थी। इन उद्देश्यो और रीतियो के खिलाफ उनके समकालीन उपन्यासकारों ने विरोध उठाया था, जिनमे विलियम मेकपीस थैकरे (William Makepeace Thackeray) अग्रणी था। सन् १८११ मे वह कलकत्ता में भागीरथी के किनारे पैदा हुआ था और गंगा के अनेक मुहानों के कलरव के समान वह कई भाषाएँ बोलता और कई कलाओ में अपना आशय प्रकट करता था। थैकरे ने कहानी, व्यंग्य तथा हास्य, उपहास एवं नीत्युपदेश के साहित्य में ख्याति पायी और अपने समकालीन लेखको की अपेक्षा इन सब अगों की रचनाओं में श्रेष्ठ

रहा। उसके पिता कलक्टर के पद पर नियुक्त थे और केवल तीस वर्ष की आयु पूरी करके १९१६ में उनका स्वर्गवास हो गया था।

पिता की मृत्यु हो जाने के उपरान्त विलियम अपने दादा के पास इंग्लैंड भेज दिया गया जहाँ उसकी शिक्षा प्रारम्भ हुई। लन्दन के स्कूलों में उस समय चार्टर हाउस स्कूल बहुत अच्छा समझा जाता था, इसलिए थैकरे को उसी में भर्ती कराया गया और कई वर्षों तक विना किसी संघर्ष तथा स्पर्द्धा के वह लातीनी एवं यूनानी भाषाओं और साहित्यों की शिक्षा पाता रहा। इस समय न तो कोई विशेष उत्साह उसने दिखाया न कोई चमत्कार, किन्तु फिर भी अपने सहपाठियों में वह सर्वप्रिय इस कारण रहा कि वह उनके हास्यपूर्ण रेखाचित्र बनाता था और बहुत से कवियों के अनुकरण में काव्य लिखता था। स्कूल से जब विलियम केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कालेज में पहुँचा, तो भी इन्हीं गुणों के कारण वह सर्वप्रिय रहा। कालेज में उसने नाटक खेलने तथा उपन्यास पढ़ने में अपना समय लगाया और चार वर्ष रहने के बाद वह बिना कोई उपाधि प्राप्त किये ही घर लौट गया। लगभग सभी प्रसिद्ध नाटक खेलने वालों तथा अभिनय करनेवालों से उसका परिचय था और इस कला में कुशल होने के कारण वह गैरिक क्लब का सदस्य भी बना लिया गया था।

उसकी प्रवृत्तियों के निर्माण में उपन्यास तथा कहानी-साहित्य का गहरा प्रभाव पड़ा था। दि मिस्ट्रीज आफ यूडोल्फो (The Mystries of Udolpho) के दृश्य उसकी आँखों के सन्मुख घूमते थे और वह दि स्काटिश चीफ्स (The Scottish Chiefs) पढ़कर रो देता था। बार-बार वह डान क्विग्ज़ोट (Don Quixote), आर्लण्डो फ्यूरियाजो (Orlando Furioso) और अलिफ लैला पढ़ता और उनसे बड़ा प्रभावित होता था। यही नहीं, इनके महत्त्वपूर्ण दृश्यों तथा दशाओं और स्थितियों के रेखाचित्र खींचकर वह कहानी कला के अर्थों को इस प्रकार दूसरी कला के माध्यम से स्पष्ट भी करता था। जी० एच० लेविस (G. H. Lewis) को, जिन्होंने गेटे की जीवनी लिखी थी, सन् १८५५ में थैकरे ने जो कुछ गेटे के प्रभाव के सम्बन्ध में लिखा था, उससे हमें मालूम होता है कि अनुभवों का उसके ऊपर कितना गहरा प्रभाव पड़ता था। "गेटे की आँखें विलक्षण प्रकार की काली, तीखी एवं चमकती हुई थीं, जिन्हें देखकर मुझे उनसे डर लगता था और, मुझे याद है, मैं उन्हें मेल्मथ दि वाण्डरर (Melmoth the Wanderer) नामक रोमान्स के कथापुरुष की आँखों के समान समझता था, जिनसे तीस वर्ष हुए मुझे भय लगा

करता था।" थैकरे पेण्डेनिस (Pendennis) के बारे में जो कहता है वह स्वयं उसके जीवन के अनुकूल है—"वह विज्ञान अथवा ऐसी विद्याओं के सीखने की योग्यता एवं सामर्थ्य नहीं रखता था, जो ठीक बातों को जानने से सम्बन्ध रखती हैं। यूनानी और लातीनी साहित्यों का वह अध्ययन करता था और विश्वविद्यालय के नियत किये हुए क्रम को छोड़कर अपनी रुचि की पुस्तकों के पठन को अधिक उपयोगी समझता था।" यही कारण था जो थैकरे बिना कोई उपाधि लिये ही कालेज से चला गया था। केम्ब्रिज जाने और कालेज में इतने वर्ष रहने का केवल इतना फल अवश्य मिला था कि उसकी टेनिसन (Tennyson), फिट्ज जेरल्ड (Fitzgerald), केम्ब्ल (Kemble) आदि साहित्यिक लोगों से मित्रता हो गयी थी जो आगे चल कर उसके काम आयी।

विश्वविद्यालय छोड़कर उसने ठंडे दिल से अपना जीवन आरम्भ किया। बीस हजार पौण्ड उसके पास थे और वह कला से इतना प्रेम करता था कि उसने किसी व्यापार की ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया। विश्वविद्यालय छोड़ने के बाद उसके मित्रों ने चाहा कि वह कानून पढ़े और वकालत करे, परन्तु उसने अपनी रुचि के अनुसार कला में ही अपना सारा बल तथा समय लगाना निश्चय किया। कुछ युवकों के साथ वह वेमर (Weimar) गया जो इस समय कला एवं ज्ञान का जर्मनी में बहुत बड़ा केन्द्र बन गया था। जर्मनी का सबसे श्रेष्ठ कवि गेटे (Goethe) वेमर में रहता था और उसके चमत्कार से आकर्षित होकर बड़े-बड़े विद्वान्, ज्ञानी तथा कलावन्त वेमर में एकत्रित थे। थैकरे का मित्र लेटसन (Lettson) इग्लैण्ड के राजदूत के साथ वेमर पहुँचा हुआ था और वहाँ के शिष्ट समाज में सर्वप्रिय हो रहा था। लेटसन के सहयोग से थैकरे भी उस समाज मे प्रवेश कर सका और जर्मनी के श्रेष्ठ ज्ञानियों एवं कलाकारों का सत्सग कर सका। कुछ समय के उपरान्त थैकरे को गेटे से भी मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। थैकरे ने इस समय अपने मित्रों को जो पत्र इंग्लैण्ड भेजे थे उनमे उसने सैक्सन दरबार (Saxon Court) के ज्ञानोन्नत एव कला-निपुण लोगों की प्रशंसा करते हुए उनके शिष्टाचार तथा अतिथिसत्कार की बड़ाई की है। इन पत्रों में उन तीन अवसरों का भी वर्णन किया है जब उसने गेटे को देखा था और उसकी अपूर्व बुद्धि से प्रभावित हुआ था। जिन महिलाओं से उसका साक्षात् हुआ था उनकी बुद्धि तथा विद्या, सिद्धि एवं शोभा से भी थैकरे बहुत प्रभावित हुआ था। उसके बहुत-से रेखाचित्र इन महिलाओं और उनके बच्चों के एल्बम्स (albums) में खीचे गये थे जो आज भी जर्मनी के पुस्तक-संग्रहों में देखे जाते हैं।

थैकरे ने वेमर में रहते हुए फ्रेजर्स मैगजीन (Fraser's Magazine) और टासम हुड के कामिक ऐनुअल (Thomas Hood's Comic Annual) को लेख और रेखाचित्र भेजना आरम्भ किया था, जिन्हे लिखकर उसने पहले-पहल उस प्रतिभा का सकेत दिया था जिसने आगे चलकर सारे इंग्लैण्ड को चमत्कृत कर दिया। जन्म-पर्यन्त थैकरे के मन मे वेमर एक सुन्दर स्वप्न वना रहा, जिसे फिर से देखने की उत्कण्ठा कभी कम नही हुई। जो समय उसने वहाँ व्यतीत किया था उसकी याद से वह सदा आनन्दित होता रहा। कदाचित् उसके जीवन मे सवसे सुखद अवसर वह था जव वह अपनी पुत्रियो के सहित फिर वेमर गया और कुछ दिन रहकर अपने पुराने सम्वन्धों और सम्पर्क को फिर से अपने मन में जीवित कर सका।

वेमर से इग्लैण्ड लौटने पर थैकरे ने नेशनल स्टैन्डर्ड नामक पत्रिका खरीद ली और १८३३ मे उसने लेख तथा रेखाचित्र प्रकाशित करना आरम्भ किया। किन्तु कई कारणों से वह इस पत्रिका को वहुत दिन नही चला सका और फिर से उसने चित्र-कारी से जीवन-निर्वाह करने का निश्चय किया। चित्र-कला की सर्वोत्तम रचनाओं को देखने के लिए उसने इटली तथा फ्रास में लम्वी यात्राएँ की और अन्त मे लूव्र (Louvre) में रखी हुई रचनाओं की नकल करके महान् चित्रकारों की जादूगरी सीखने के लिए वह पेरिस में रहने लगा। जैसा पहले वेमर अयवा लन्दन में हुआ था, यहाँ भी थैकरे वहुत शीघ्र कला-प्रेमियों तथा दूसरे कला सीखनेवालों का इष्ट-मित्र हो गया, जो फ्रेन्च रेवोल्यूशन (French Revolution) के समय इंग्लैण्ड आकर उसके मेहमान और व्यापार के साथी हुए। यह तो ठीक मालूम नही कि थैकरे ने किस कारण और किस वात से प्रेरित होकर चित्रकला को छोड़कर साहित्य-कला को अधिक प्रतिष्ठा दी, किन्तु यह मालूम है कि १८३४ के वाद से उसने वरावर क्रमवद्ध होकर फ्रेजर्स मैगजीन मे लिखना फिर से आरम्भ कर दिया। दोनो कलाओं का उद्देश्य एक होने और फ्रेजर्स मैगजीन से प्राय· सारे प्रतिष्ठित लेखकों के सम्वन्धित होने के सयोग से कदाचित् उसे प्रेरणा हुई हो। सहज स्वभाव से उसे व्यंग्यात्मक रूप मे वस्तुएँ दिखाई देती थीं और अन्तर्ज्ञान से प्राप्त शक्ति से समाज के दु खदायी घावो की वेदना को वह जानता और समझता था। उसे संस्थाओ की सडन का भी पूरा पता था और उसका कारण भी वह जानता था। अपने समय के लोगों को इन सव वातों का ज्ञान कराना भी वह आवश्यक समझता था।

थियोफाइल वैगस्टाफ (Theophile Wagstaff) के नामसे १८३६ मे उसने रगमच पर नाचने-गाने वालो के आठ वडे सुन्दर हास्यजनक चित्र खीचकर

एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किये और पुस्तक का नाम फ्लोर एट जेफायर (Flore et Zephyre) रखा। इन्हीं दिनों उसने लन्दन के साहित्यिक समाज में भी प्रवेश किया और जेम्स हाग (James Hogg), थियोडोर हुक (Theodore Hook), वैरी कार्नवाल (Barry Cornwall), जान गाल्ट (John Galt), लाकहार्ट (Lockhart) और दूसरे लोगों के सम्पर्क में आया, जिन सवने अनुरोध किया कि वह साहित्य कला के माध्यम द्वारा अपने अनुभवों को व्यक्त करे। कहा जाता है कि थैकरे ने सीमोर की मृत्यु के वाद डिकेन्स के साथ पिकविक के लिए रेखाचित्र वनाने का प्रस्ताव रखा था, परन्तु डिकेन्स इससे कहीं पहले उपन्यास का ढाँचा वदल चुका था जिसके कारण वह प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सका।

इस समय के कई प्रमुख पत्रों और पत्रिकाओं से थैकरे का सम्वन्ध था, जिनमें १८३७ से लेकर १८४७ तक वरावर विभिन्न विषयों पर वह निवन्ध लिखा करता था। इन लेखों तथा निवन्धों में से सवसे अच्छे १८३७-३८ के दि येलोप्लश करेस्पान्डेन्स (The Yellowplush Correspondence) नाम के लेख हैं जिनमें एक अनपढ़ नौकर के सामाजिक अनुभवों को एक चतुर शिष्टाचार-प्रेक्षक ने लिखकर प्रस्तुत किया है। थैकरे इस समय प्रौढ़ता को पहुँच चुका था और उसकी सारी शक्तियाँ पूरी तरह विकसित हो चुकी थीं। सत्य तथा मानव-सत्कार के हेतु वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति और पूरा पराक्रम लगाने को तैयार था। झूठ तथा आडंवर एवं प्रसन्न करने के लिए शब्दों के प्रयोग से उसे घृणा होती थी और ऐसी वातों को दोप कहने में उसे जरा भी हिचक नहीं होती थी, क्योंकि ऐसा करना उसके जीवन का सिद्धान्त वन गया था। मिस्टर येलोप्लश के सुविख्यात सिद्धान्त पर थैकरे की शैली नियत थी—"हे महानुभाव, मुझ छोटे मनुष्य की वात भी तो सुनिए। साहित्य में पहले अपने आशय तथा अभिप्राय को पूरी तरह समझने की आवश्यकता होती है, फिर उसे स्पप्ट रूप में सीधे-सादे शब्दों में प्रकट कर देने में ही सारी कला होती है।" दि पेरिस स्केचवुक (The Paris Sketch Book) १८४१ में माइकेल टिटमार्श के नाम से छपी थी और १८४२-४३ में फिट्जबूडल पेपर्स (The Fitz-boodle Papers) निकले थे जिनमें एक वयस्क पुरुप ने अपनी प्रेम-कहानी सुनायी है। दि वुक आफ स्नाब्ज (The Book of Snobs) पंच नामक पत्रिका में १८४७ में प्रकाशित हुई थी, जिसमें उस काल के प्रचलित सामाजिक प्रपंच तथा दूसरी वुराइयाँ नग्न रूप से दिखायी गयी है। ये सव लेख एक प्रकार के हल्के-फुल्के निवन्ध अथवा व्यंग्यपूर्ण रेखाचित्र है जिनमें रोमैन्टिक स्कूल की कमजोरियाँ

दर्शायी गयी हैं और ऐसा करने में स्काट, लिटन तथा डिजरैली की शैली का अनुकरण किया गया है। साथ ही थैकरे ने अपने मतानुसार कुछ बातों का सुधार करने की विधि भी पाठकों की स्वीकृति के लिए उनके सामने रखी है।

कैथरिन तथा दूसरी प्रारम्भिक रचनाएँ

थैकरे की पहली लम्बी रचना १८३९ में पिकारेस्क (Picaresque) उपन्यास के रूप में प्रकाशित हुई जिसमें वास्तविकता पर तो बहुत जोर दिया गया है, किन्तु समवेदना अथवा दयाभाव का लोप है। इस रचना का नाम कैथरिन (Catherine) है और इसमें एक पत्नी अपने पति का वध करती है और फाँसी पाती है। इस उपन्यास का उद्देश्य उस सहानुभूति की हँसी उड़ाना मालूम होता है जो लिटन ने अपने यूजीन ऐरम नामक उपन्यास में अपराधी के प्रति प्रकट की थी। थैकरे ने स्वयं लिखा था—"प्राचीन काल्पनिक रचनाओं के अध्ययन से मैंने कहानी की घटनाओं को इस प्रकार सुलझाकर रखना सीखा था कि पाठक के हृदय में धर्म एवं सदाचार के लिए प्रेम उत्पन्न हो और अधर्म तथा दुराचार के लिए घृणा। यूजीन ऐरम (Eugene Aram) ने मुझे धर्म और अधर्म, सदाचार और दुराचार इस प्रकार मिला-जुलाकर रखना सिखाया है कि उनका भेद समझना अथवा उनको गड़बड़ में से निकालकर किसी एक को अच्छा और दूसरे को बुरा कहना असम्भव हो गया है।"

थैकरे का बैरी लिन्डन (Barry Lyndon) नामक दूसरा उपन्यास भी, जो १८४४ में प्रकाशित हुआ, पिकारेस्क ढंग का है और अठारहवीं शताब्दी के एक साहसी व्यक्ति की जीवन-घटनाओं का वृत्तान्त है। प्रारम्भिक काल की रचनाओं में भाषा बड़ी प्रभावशाली है और धारणाएँ मार्मिक तथा विस्तार के योग्य हैं, फिर भी वे थैकरे को पत्रिकाओं के अवलम्बन एवं सहायता से मुक्त करने में असमर्थ हैं। इन रचनाओं ने उसे और उसके मित्रों को यह जरूर बता दिया कि वह उच्च कोटि का कलाकार है और शब्दों अथवा भाषा को, उसी सुगमता से अपने अभिप्राय को व्यक्त करने के लिए माध्यम बना सकता है जैसे कि रंग एवं रेखा को। इन दोनों माध्यमों को अलग-अलग वह अपने काम में लाने की सामर्थ्य रखता था, जिस कारण यह कहना ठीक न होगा कि उपन्यास में उसकी सफलता चित्रकला में असफल रहने से हुई थी। आनन्दवृत्ति, रसिकता, व्यंग्य, हास्य, प्रभावित करने की उक्तियां और निरीक्षण-शक्ति ऐसे गुण थे जो उसकी लेखनी द्वारा ठीक उसी सरलता से प्रकट

होते थे, जैसे कि पेन्सिल द्वारा। इसके अलावा, दोनों माध्यमों में उसका जीवन-सिद्धान्त तथा उसकी भावपूर्णता प्रकट होती थी, जिसके उदाहरण दि बुक आफ स्नाब्ज (The Book of Snobs) तथा दूसरी स्केचबुक्स (Sketch Books) में मिलते है।

यद्यपि इतने सब गुण थैकरे की प्रारम्भिक रचनाओं में पाये जाते है, फिर भी वे रचनाएँ पत्रिकाओं के ही स्तर पर रहती है और उस महत्त्व को नहीं पहुँचती जिससे लेख साहित्य की पदवी पाता है। वैरी लिन्डन नामक पुस्तक ही इस समय तक कुछ कुछ वे गुण तथा वह शक्ति दर्शाती थी, जिसके कारण उसे उपन्यासकार कहा जा सकता था, और यह पुस्तक भी थैकरे के दूसरे समकालीन लेखकों की रचनाओ के सामने कोई महत्व नही रखती थी। जिन उपन्यासों ने बुल्वर, डिजरैली एव डिकेन्स को उनकी पहली सफलता और ख्याति दी थी, वे उस से कहीं ऊँचे दर्जे के थे। थैकरे की प्रारम्भिक रचनाओ मे हमे वे सीढियाँ दिखाई पड़ती है जिन पर चढते-चढते वह पत्रिकाओ मे लेख लिखनेवाले की हैसियत से बढ़कर धीरे-धीरे साहित्यकार हो गया और वैनिटी फेयर (Vanity Fair), पेन्डेनिस (Pendennis) और एस्माड (Esmond) की जैसी रचनाएँ संसार को दे सका, जिन्होंने उसे दूसरे उपन्यासकारो से अलग प्रथम श्रेणी का ऊँचा आसन दिया।

थैकरे के उपन्यासों की कथावस्तु और उसका संगठन--वैनिटी फेयर

वह उपन्यास जिसमे थैकरे की प्रतिभा एवं अपूर्व बुद्धि सबसे पहले ससार के सामने आयी, वैनिटी फेयर (Vanity Fair) था, जो १८४७ से लेकर १८४८ तक प्रति मास क्रमश. प्रकाशित हुआ था। इस प्रकार प्रकाशित होने के कारण उसकी कथावस्तु अच्छी तरह से सगठित नही हो सकती थी, विशेष कर जब कि लेखक छपने के अतिम मिनट तक अगले अध्याय को समाप्त न करे और मुद्रणालय से मॉग पर मॉग आ रही हो। किन्तु इस प्रकार से लिखे जाने के कुछ लाभ भी थे, जिनसे उपन्यास का ढाँचा तैयार हुआ और थैकरे की कलात्मक समस्या तथा उसके स्वभाव के अनुकूल रहा। थैकरे ने वैनिटी फेयर को कथापुरुष-रहित उपन्यास कहा था और इस कथन के अनुसार लिखे जाने से उसमे विशेष गुण उत्पन्न हुए और उपन्यास का ससार बहुत-सी आवाजों से गूंजने लगा, जैसा कि बाजार की भीड़-भाड़ में होता है।

कथापुरुष के न होने से पुस्तक में कई दुर्बलताएँ भी आयी जिनके कारण वह उपन्यास की परिभाषा से कुछ अलग हो गयी। जान बनियन (John Bunyan) के मेले की भाँति, जिसमे तरह तरह के अहंकार एव झूठे अभिमान बिकते है और जहाँ विविध प्रकार की धूर्तता के खेल-तमाशे होते है, जहाँ मूढ़ तथा छली मनुष्यों और स्वाँग रचनेवालों की भीड़ है, थैकरे के मेले में भी दुराचारियों की कमी नही है जिन्हे देखकर भले तथा समझदार लोगों को क्रोध नहीं तो घृणा तो जरूर ही होती है। जिस वास्तविकता को थैकरे हमारे सामने लाता है वह उसने मेले में अपनी आँखो से देखी है, किन्तु उसकी सूक्ष्म परीक्षा नही की है और न विश्लेषण करके उसके अर्थ निकाले है। उसने किसी व्यक्ति अथवा स्थिति को पृथक् करके उसकी परीक्षा नही की। इसके खिलाफ वह तो एक उदारचित्त सासारिक व्यक्ति की तरह जीवन को देखता है ओर नीति का उपदेश देनेवाले की भाँति अपने पाठकों को वताता है कि कैसे लक्ष्य के बाहर तीर मारने के कारण दुराचार असफल रहता है और सदाचार कैसे उसके पीछे रह जाने से नष्ट होता है।

साधारण उपन्यासों की भाँति यदि थैकरे अपनी कथावस्तु निर्धारित करके अपने पात्रों के समूह को सीमित कर देता तो उसकी पुस्तक अस्वाभाविक तथा असत्य हो जाती। वैनिटी फेयर की सारी घटनाएँ अमिलिया सेडले (Amelia Sedley) तथा बेकी शार्प (Becky Sharp) मे केन्द्रित है और उन्ही के चारों ओर होती है। ये दोनो स्त्रियाँ साथ-साथ रखी जाने के कारण एक-दूसरे के गुण-दोष उभार देती है। अमिलिया कोमल और असमर्थ है—थैकरे उसे पराश्रयी कहता है—और डाबिन के पालन-पोषण तथा रक्षा मे रहती है; बेकी चाक-चौबन्द, तीक्ष्ण बुद्धि की निपुण स्त्री है जो अपना ससार स्वय अपने लिये बनाती है और अपने से भिड़नेवाले को प्रशसा करने पर मजबूर करती है। दोनों स्त्रियों की जीवन-कथा साथ साथ आरम्भ होती है। कुछ समय व्यतीत होने पर थैकरे दोनों कथाओं को जोस सेडले (Jos Sedley) नामक कडी से जोड़ना चाहता है। अन्त मे नीतिकुशल थैकरे इस चेष्टा को छोड देता है ओर उपन्यास में दोनों टोलियाँ अलग-अलग रास्तों पर चलने लगती है; ठीक उसी प्रकार से जैसे वास्तविक जीवन मे चलती है।

थैकरे यह समझाने की कोशिश करता है कि सदाचार मे कुछ ऐसा अंश होता है जो शक्तिहीन, निर्बुद्धि तथा मूर्ख मनुष्य को बलवान् धूर्त से अधिक समय तक जीवित रखता है। निर्दोष एव निष्कपट मनुष्य का जीवन भीतरी ओर दुष्ट एवं धूर्त मनुष्य का बाहरी होता है, और बाहरी होने से वह निस्सार तथा व्यर्थ भी होता है। मनुष्य

का आवेगों के वश में भावुक हो जाना इससे कहीं अच्छा है कि वह वेकी शार्प के समान वाह्य जगत के प्रभावों के लिए कोई अनुकूलता न रखे और सारी इन्द्रियों को शिथिल करके अपने लिए एक नरक वना ले।

संसार तथा मनुष्यजीवन सम्बन्धी धारणाएँ एवं विचार

थैकरे की शिक्षा एक निवन्धलेखक की सी हुई थी और वह फील्डिंग (Fielding) के समान अपने उपन्यास की कथावस्तु को मानव प्रकृति तथा स्वभाव सम्वन्धी विचार एव धारणाएँ प्रस्तुत करने के लिए काम में लाता था। वैनिटी फ़ेयर मे पात्रों को कठपुतलियो की भाँति नचाता है और उनके नाच तथा स्थितियों द्वारा वह अपने विचार प्रकट करता एव अपनी धारणाएँ सिद्ध करता है। पात्रों से जो छिछोरा तथा सशयात्मक वार्तालाप कराता है उसमे भी उसकी धारणाएँ काम करती है और जो जगत् वह हमारे सामने लाता है उसमे वह उन्हें सत्य सिद्ध करता है। कठपुतली के रूपक मे वैसा ही व्यग्य छिपा हुआ है जैसा डीन स्विफ़्ट (Dean Swift) ने लिलीपुट के समाज को चित्रण करके किया था। थैकरे की कठपुतलियो की धूर्तता एव दुर्वलता के कारण लोगो ने उनके नचानेवाले को मनुष्यद्वेषी, निन्दाशील, चिड़चिड़ा और न मालूम क्या-क्या कह डाला है, परन्तु कोई भी नाम उसे दिया जाय हमे उसकी क्षमा एव सहनशीलता को भुलाना नही चाहिए, जो सदा उसके हृदय मे वनी रहती है।

डिकेन्स अपने उपन्यासों मे ऐसे स्त्री-पुरुष लेकर ससार और समाज की वुराइयों से उन्हे पीड़ित करता है जो निर्दोषता के आदर्श होते हैं, वह इस प्रकार हमारे मन पर प्रभाव डालता है। थैकरे ऐसे स्त्री-पुरुषों के दु:खों को लेकर हमारे सामने रखता है जो स्वय मन्दमति, शक्तिहीन तथा दोषपूर्ण होते हैं। उनकी दुर्दशा दिखाकर वह हमें प्रभावित करता है। वेकी का पति, रोडन क्राली (Rowdon Crawley) कोई वहुत अच्छा मनुष्य नही है, फिर भी हमे उस पर दया आती है। अमिलिया सेडले और जार्ज दोनों ही अपनी-अपनी तरह के घृणित व्यक्ति हैं, किन्तु उनके विदा होने का दृश्य थैकरे ने कुछ इस प्रकार लिखा है कि हमें दु:ख भी होता है और हम उनके प्रति दयालुता तथा कोमलता के भाव भी रखने लगते हैं। थैकरे दुर्वल पर दया करता है और उन दोषों से भरे हुए लोगों के लिए उसके हृदय मे सहानुभूति भी है, जिनके जीवन-सघर्ष का वह अपने उपन्यासो मे चित्रण करता है, इसलिए कि वह स्वभाव से दयालु है और कोमल हृदय रखता है। यद्यपि वह वना-

वटी तथा असाधारण अथवा बढ़ी-चढ़ी सामर्थ्य के धोखे में नही आता और उन्हे सन्देह से देखता है, फिर भी वह उस भाव मे विश्वास रखता है जो प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में केवल यह जानकर उत्पन्न होता है कि दूसरा व्यक्ति उसी का-सा जीवधारी मनुष्य है। सच्ची दया का यही महत्त्व और यही रीति है जो थैकरे ने अपनी पुस्तकों मे ठीक उसी भॉति रखी है जैसे वह उसके जीवन में व्याप्त थी।

पेन्डेनिस

वैनिटी फेयर की सफलता ने थैकरे को भली प्रकार अनुमान करा दिया कि उसमे कैसी पुस्तके लिखने की योग्यता थी। तुरन्त ही उसने पेण्डेनिस (Pen dennis) नामक दूसरा उपन्यास लिखना आरम्भ कर दिया, जो १८४९ और १८५० मे उसी प्रकार टुकड़ों मे प्रकाशित हुआ जैसे वैनिटी फ़ेयर हुआ था। इस उपन्यास मे उसने पहले से भी अधिक दृढ़, वल्कि कठोर होकर नीति का उपदेश दिया और कठपुतलियों के नाच का रूपक छोड़कर प्राचीन नाटकों की रीति से, उसने अपने कथापुरुष को क्रमानुसार कई प्रलोभनों में से होकर गुजारा, जो सांसारिक जीवन मे उसके सामने उपस्थित हुए। ये प्रलोभन कुछ तो देहधारी होने के स्वाभाविक खिचाव से उत्पन्न किये गये और कुछ प्राकृतिक पैशाचिक प्रवृत्ति से, जिसे ईसाई धर्म मे शैतान (The Devil) का नाम दिया गया है। पेण्डेनिस मे ये प्रलोभन अलग-अलग उपकथाओं अथवा प्रासंगिक वार्ताओं के रूप में विभिन्न अध्यायो मे लिखे गये है। कथा-पुरुष अन्त में दो सदाचारी स्त्रियों के प्रभाव से इन प्रलोभनों से मुक्त हो जाता है; एक उसकी माता और दूसरी लारा (Laura), और थैकरे उनके प्रभाव को सराहता तथा दैवी शक्ति मानता है। किन्तु वह इस शक्ति की सीमा को भी वताये विना नही रहता और शेपर्डस इन (Shepherds' Inn) के मालिक की पुत्री फैनी वोल्टन (Fanny Bolton) के प्रति उनके सन्देह और अविश्वास तथा निर्दयता को उदाहरण वनाता है, जिसे भली प्रकार समझाने के लिए वह फैनी वोल्टन को भी घृणित सिद्ध करता है।

पेण्डेनिस को थैकरे प्रलोभनों के परिणामों से तो वचाता चला जाता है किन्तु उसे वह शक्ति नही देता कि नये प्रलोभन में न पड़े। ऐसी आन्तरिक शक्ति पेण्डेनिस के चाचा में दिखाई देती है, जो एक वूढा दुनियादार अथवा सांसारिक व्यक्ति है। यह उपन्यास मानवप्रकृति का वड़ा सच्चा चित्र देता है और मनुष्य के आन्तरिक वल तथा उसकी नीतिविद्या को अनुभवों की मिश्रित सामग्री के अनेक द्रव्यों

का समुदाय बताता है। ऐसी धारणाओं के कारण वह केवल आर्थर पेण्डेनिस की ही आत्मकहानी नहीं है बल्कि मनुष्य-मात्र की, क्योंकि आर्थर का जीवन मनुष्यमात्र के जीवन का प्रतिरूप अथवा लाक्षणिक संकेत है, और इस प्रकार लिखकर थैकरे ने अपने उपन्यास को महाकाव्य का सा विस्तार प्रदान किया है।

जिस प्रकार शेक्सपियर का हैम्लेट (Hamlet) प्रत्येक ऐसे मनुष्य का प्रतिरूप है जो शंकाओं तथा अनिश्चित विचारों का शिकार हो रहा है, उसी प्रकार आर्थर पेण्डेनिस भी प्रत्येक ऐसे मनुष्य का प्रतिरूप है जो तरह-तरह के प्रलोभनों में पड़ता और निकलता चला जाता है, जिनसे मनुष्यजीवन भरा पड़ा है और जो मनुष्य की प्रकृति के निर्माण-द्रव्यों में से हैं। उपन्यास के अन्य पात्र कथापुरुष की आत्मा को प्रभावित करने में सहायता देते हैं और इस प्रकार आन्तरिक बल बढ़ाते हैं।

सारी शक्तियों को इस प्रकार केन्द्रित कर देने से उपन्यास में महाकाव्य के गुण उत्पन्न हो गये हैं, जिसमें मानव-प्रकृति की दुर्बलता दिखायी गयी है और बताया गया है कि बिना किसी सदाचार-संहिता अथवा धार्मिक निषेधों के नीतियुक्त जीवन-निर्वाह कैसे किया जा सकता है। पेण्डेनिस में जीवन-क्षेत्र एवं अनुभव-राशि इतनी तीव्र कल्पना द्वारा प्रत्यक्ष किये गये हैं कि उपन्यास थैकरे की आध्यात्मिक आत्म-कहानी हो गया है।

साधारण जीवन में थैकरे का इतिहास-प्रयोग

कहानीसाहित्य में इतिहास के अंग का महत्त्व सर वाल्टर स्काट के समय के बाद से कितना मान्य तथा अनिवार्य समझा जाने लगा था, यह वैनिटी फ़ेयर के छोटे से संसार में विदित होता है। इस छोटे-से संसार मे एक राष्ट्रीय संकट से उथल-पुथल हो रही है, किन्तु थैकरे उस उथल-पुथल को अपनी कहानी में महत्त्व देने को काम में नहीं लाता बल्कि उस संकट का प्रभाव साधारण लोगों के नित्य जीवन में देखता है। वाटर्लू की लड़ाई को न तो वह नेपोलियन के दृष्टिकोण से देखता है, न ड्यूक आफ़ वेलिंगटन के; बल्कि जोस सेडले के भय तथा सन्देह में और आइसीडोर की आशा में एवं बेकी शार्प की उधेड़-बुन में। साथ ही उसे अमिलिया का भी ध्यान है जो अनाथ दशा में जार्ज के लड़ाई में मारे जाने पर शोक मनाती और उसकी आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है। थैकरे प्रख्यात घटनाओं तथा व्यक्तियों में इसलिए दिलचस्पी लेता है कि वे साधारण लोगों की दिनचर्या एवं काम-काज पर प्रकाश डालते हैं।

अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में भी वह वास्तविकता पर ध्यान रखता है और अठारहवीं शताब्दी के वर्णनों में विगत काल की तड़क-भड़क अथवा सजावटों पर वह इतना ज़ोर नहीं देता, जितना कि उन अंशों को उभारने पर जो तत्कालीन मनुष्यों के नित्यजीवन को प्रभावित करते हैं और स्थायी अंश हैं। जिस तरह वैनिटी फ़ेयर में उसी प्रकार दूसरे उपन्यासों में सारे वर्णन थैकरे के स्वभाव तथा प्रकृति के रंग में डूबे होते हैं और वह विगत शताब्दी पर ऐसे भावपूर्ण ढंग से लिखता है कि उपन्यास में इतिहास वास्तविक हो जाता है और सारी रचना में ऊँची श्रेणी के काव्य के कुल लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

हेनरी एस्माण्ड (Henry Esmond) में यही चमत्कार दिखाई देता है। कथा-पुरुष का बचपन कास्लवुड के रहस्यपूर्ण वातावरण में व्यतीत होता है जहाँ पोप के अनुयायी बीसों प्रकार के कपट-प्रबन्धों में लगे रहते हैं। उसका यौवन काल लन्दन में गुज़रता है जहाँ महारानी ऐन के राज्यकालीन लोगों के वार्तालाप से समाज गूँजता है। थैकरे के उपन्यास में एडिसन, स्टील, प्रायर, स्विफ्ट, फील्डिंग, ऐटरबरी और दूसरे लोग हमें उसी प्रकार दाहिने-बायें मिलते हैं जैसे आजकल के प्रख्यात और प्रमुख लोग। मार्लबरो (Marlborough) की अद्भुत विजय में वह योग देता है और उन सारे खेलों में वह भाग लेता है जो गद्दी पाने के लिए खेले जा रहे थे। अठारहवीं शताब्दी का विगत संसार हमारी आँखों के सामने इन व्यक्तियों और घटनाओं द्वारा सजीव हो उठता है और हमें चकित कर देता है। ऐसी सुन्दर कल्पना उस सज-धज की कहीं नहीं मिलती जो उस काल को सदेह करके खड़ा कर दे, और शैली भी थैकरे ने उसी काल की ग्रहण की है जिसके कारण प्रभाव और भी तीव्र हो जाता है।

इस उत्तम रचना में थैकरे एक महान् कलाकार की भाँति लिखता है न कि एक ऊँघते हुए कठपुतली का नाच करानेवाले के समान। प्रत्येक घटना एवं उसका वर्णन हेनरी एस्माण्ड के चरित्र तथा स्वभाव को प्रकट करने में समर्थ है। उसका तेज तथा उसकी सुशीलता, उसकी उदारता एवं प्रतिष्ठा, उसकी राजभक्ति और उसकी नीति, कोई भी ऐसा गुण नहीं जिसे प्रकट करने के लिए थैकरे ने ठीक कलात्मक प्रबन्ध न किया हो।

हेनरी एस्माण्ड

जिस प्रकार एस्माण्ड मार्लबरो को छोड़कर अलग होता है, लार्ड कास्लवुड

और उसके पुत्र की ओर उसकी भक्ति तथा त्याग, बीट्रिक्स से उसका प्रेम और लेडी कास्लवुड के प्रति उसकी श्रद्धा ये सब बातें हेनरी एस्माण्ड के सभ्य एवं शिष्ट होने को सिद्ध करती हैं। जब वह मार्लबरो और बेब के बीच झगड़े का वर्णन करता है तो हमें मालूम होता है कि शिष्ट लोगों का हाल कहा जा रहा है। जब वह अपनी धन-दौलत, नाम और प्रतिष्ठा सब कुछ छोड़ता है तो हमें त्याग का सच्चा अर्थ समझ में आता है। एस्माण्ड के व्यक्तित्व को पूरी तरह चमकाने में शैली ने भी बड़ा काम किया है। हर मौके पर उसकी भाषा और शैली उसके सरल स्वभाव और शान्त चित्त को प्रकट करती है और पाठक को प्रभावित करती है जिसमें थैकरे की कला की विशेषता है। इन गुणों के कारण हेनरी एस्माण्ड को साहित्य-कला का श्रेष्ठ नमूना समझना चाहिए। यद्यपि रोमांस में आनन्द से संयोग होता है और वास्तविकता दुःखमय कही जाती है, किन्तु यह रोमैण्टिक उपन्यास थैकरे की रचनाओं में सबसे अधिक शोकपूर्ण है।

अन्तिम तीन उपन्यास और दूसरी रचनाएँ

वैनिटी फ़ेयर, पेण्डेनिस और हेनरी एस्माण्ड जिस उच्च कोटि के उपन्यास हैं उनके लिखने में इतना आत्मबल तथा उत्साह व्यय हो जाता है कि फिर नयी शक्ति का संचार बहुधा असम्भव होता है। यही हाल थैकरे का भी हुआ। उसने तीन उपन्यास और लिखे—दि वर्जिनियन्स (The Virginians), दि न्यूकम्स (The Newcomes) और दि एडवेन्चर्स आफ़ फिलिप (The Adventures of Philip) जो उनके मुक़ाबले मे फीके रहे। इस पर भी ये तीनों रचनाएँ एक महान् लेखक की तो है ही और इन्हें थैकरे के अलावा कोई लिख भी नही सकता था। दि वर्जिनियन्स (१८५७—१८५९) में हेनरी एस्माण्ड का उत्तर भाग दिया गया है और कई कड़ियों द्वारा पात्रो को भी कई पीढ़ियों के बाद मिलाया गया है। वारिंगटन्स और बैरनेस बर्न्सटीन इसी प्रकार की कड़ियाँ है परन्तु पहले उपन्यास का सा लालित्य इनकी दुनिया में नही है और न इनकी रगो मे वह विद्युत्-शक्ति ही है। लेखक ने अपने अनुभव का सर्वोत्तम भाग इनके पहले की पुस्तक मे समाप्त कर दिया था और वह उसी अनुभव को फिर से अपने से सजीव नही कर सकता था। उपन्यास के पात्रों को जीवित करने के लिए लेखक को अपनी जीवन-शक्ति का बड़ा अंग देना होता है, क्योंकि वे उसी की शक्ति से जीवित हो सकते है। पूर्णता अथवा सिद्धि प्राप्त करने के लिए सर्वस्व की भेंट देनी होती है, कुछ भी बचाकर नही

रखा जाता। शेक्सपियर जैसे कितने लेखक अपनी कला को ऐसी भेंट देकर अन्य मनुष्यों की अपेक्षा बहुत शीघ्र दुनिया को छोड़कर चल बसे।

थैकरे की एक श्रेष्ठ रचना न्यूकम्स (The Newcomes) नामक उपन्यास है जो १८५३ और १८५५ के बीच में लिखा गया और अपने कथा-पुरुष के व्यक्तित्व के कारण जगत्-विख्यात हुआ। कर्नल न्यूकम (Colonel Newcome) कहानी साहित्य के उन चिरंजीवी पात्रों में से हैं जो कभी भुलाये नहीं जा सकते, जैसे डान क्विग्ज़ोट (Don Quixote), अंकल टोवी (Uncle Toby), मिस्टर पिकविक (Mr. Pickwick)। चाहे वह न्यूकम हो जो मुँह में तिनका दबाये और हाथ जेबों में डाले खड़ा है और मर्दानगी से अपने काम से काम रखने का इरादा कर चुका है और जिसने दूसरे सब काम अपनी पत्नी को सौंप दिये हैं; चाहे वह दूसरा न्यूकम हो जो ओछा और ज़हरीला होते हुए भी भयरहित तथा सम्पन्न है और सूखे मटर की-सी आत्मा रखते हुए भी संसार को विजय करना चाहता है; एक बार इन्हें जान लेने पर कैसे कोई इन्हें भूल सकता है? और एथेल न्यूकम (Ethel Newcome) को देखना तो मानो चन्द्रमा की देवी को स्वप्न में इस ऊबड़-खाबड़ पृथ्वी पर चलते-फिरते देखना है।

दि एडवेंचर्स आफ़ फ़िलिप (The Adventures of Philip) जो १८६१ और १८६२ के बीच प्रकाशित हुआ था, पेण्डेनिस का फीका रूपान्तर है जो थैकरे के दूसरे सब उपन्यासों से गिरा हुआ समझा जाता है। यह उपन्यास कार्न-हिल मैग्ज़ीन में क्रमशः प्रकाशित हुआ था, जब थैकरे उसका सम्पादक था। इसी पत्रिका में राउण्ड अबाउट पेपर्स (Round-about Papers) भी प्रकाशित हुए थे जिनसे थैकरे की हार्दिक सहानुभूति एवं दयालु स्वभाव तथा प्रसन्न-चित्त होने का पता चलता है। इन निबन्धों में उसकी तीव्र बुद्धि एवं परिज्ञान ने विषयों को बहुत ऊँचा उठा दिया है और उसकी लेखनप्रणाली ने उन्हें बड़ा लालित्य प्रदान कर दिया है। फिलिप को समाप्त करने पर थैकरे ने डेनिस डूवल (Denis Duval) नामक उपन्यास लिखना आरम्भ किया, जिसे वह डिकेन्स के समान बिना समाप्त किये ही संसार से विदा हो गया। १८६३ के बड़े दिन के पहले वह कुछ अस्वस्थ हुआ और रात्रि में ही किसी समय उसकी मृत्यु हो गयी। डिकेन्स ने इस असमाप्त रचना की प्रशंसा करते हुए उसे थैकरे के सर्वोत्तम उपन्यासों के बराबर बताया। किन्तु डेनिस डूवल सदा के लिए एक अपूर्ण ग्रन्थ हो गया, जिसे कोई दूसरा उपन्यासकार आगे नहीं बढ़ा सकेगा, क्योंकि प्रणाली और शैली दोनों ही थैकरे की खास अपनी थीं।

थैकरे की प्रणाली उसकी प्रवृत्तियों के अनुरूप थी और दोनों उसके उद्देश्य को सफल बनाने में उसकी सहायक थीं। कुछ लगती, कुछ बिलगती बातों की आड़ में वह विषय के मध्य पर धीरे-धीरे चुपके से पहुँचता है और फिर बड़े सभ्य तथा शिष्ट ढंग से लोगों के गुप्त भेदों को जानकर उन पर व्यंग्य करता है। इस प्रणाली में विस्तार से काम लेना ज़रूरी होने के कारण वह बड़ी देर में अपने लक्ष्य पर तीर फेंकता है किन्तु जब फेंकना आरम्भ करता है तो कोई तीर व्यर्थ नही जाता। यही कारण है, कि भीतर से अभिमान तथा आत्मश्लाघा के दुर्ग को ढाने में उसे सैकड़ों पन्ने लिखने पड़ते है। परन्तु यह ढंग किसी प्रकार दूसरे ढंगों की अपेक्षा कम प्राण-नाशक नही होता। डिकेन्स बाहर से आक्रमण करता है और स्वार्थ के टुकड़े कर डालता है; थैकरे घर का भेदी बनकर अहंकार की जड़ काट देता है। थैकरे की शैली का बहुत बड़ा गुण यह है कि उसमें कोई बनावटी बात अथवा कोरे आडम्बर से प्रभाव डालने की बहानेबाजी नही होती, न तो भाषा मे न भाव में। खुले दिल से सीधा-सादा वार्तालाप चलता रहता है और बड़े स्वाभाविक ढग से विचार तथा धारणाएँ व्यक्त होती रहती है। थैकरे को अपने ऊपर पूरा अधिकार इस बात का रहता है कि उसकी ओर से कोई अशिष्ट शब्द अथवा असभ्य व्यवहार नही होगा।

अध्याय १०

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अंग्रेजी उपन्यास

डिकेन्स और थैकरे की रचनाओं में वास्तविक जीवन के विस्तृत क्षेत्र तथा मनुष्य की वहुमुखी चेतना को पर्याप्त रूप से आकृति देने एवं स्पष्ट करके प्रस्तुत करनेवाले उपन्यास की प्रणाली निश्चित हो गयी। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में कथा-साहित्य दो विशेष मार्गों में चक्कर लगाता था, जिनके उद्गमों पर दो महान् उपन्यासकार, सर वाल्टर स्काट और जेन आस्टेन खड़े थे। यद्यपि जेन आस्टेन का अनुसरण यथार्थवादी उपन्यास में भी नहीं किया गया, किन्तु स्कॉट के अनुकारियों ने नीति का उपदेश देने और मनोरंजन की सामग्री उपस्थित करने के लिए अपने अनुभवों तथा परीक्षाज्ञान के ऊपर रोमांस का रंग चढ़ा दिया। सामने की वस्तुएँ इन अनुकारियों ने स्वप्न की रंगीनी देकर रहस्यमय कर दीं, जिस कारण आनन्द तथा प्रफुल्लता की अवस्था उत्पन्न करना उपन्यास का मुख्य व्यापार समझा जाने लगा। उपन्यासकार जीवन की समस्याओं को कुछ इस प्रकार अपनी कथा-वस्तु में रखने लगे कि वे चित्त विक्षोभ करनेवाले अनुभवों से अलग रहें। जो प्रफुल्लता एवं आनन्द की अवस्था वे उत्पन्न करते, वह अनुभवों से युक्त अथवा उनसे प्राप्य न होकर वाहर से लायी हुई वस्तु या घटना की उत्पत्ति होती।

डिकेन्स और थैकरे दोनों ने अपने-अपने ढंग से स्काट और आस्टेन के मार्गों को अपने उपन्यासों में मिला दिया और दोनों स्रोतों की प्रवाह-शक्ति को काम में लाकर उपन्यास को पहले से कहीं अधिक प्रवल और विस्तृत कर दिया। डिकेन्स ने रोमांस की प्रणाली का प्रयोग ऐसी जीवन-सामग्री पर किया जिसमें लेश मात्र भी रोमांस न था। थैकरे ने यथार्थवादी उपन्यास की प्रणाली का रोमांस की विधि से आधुनिक काल के ऐसे समाज के जीवन के चित्रण में प्रयोग किया, जहाँ कुछ होता ही नहीं, जिसकी दिनचर्या विना किसी घटना के दिन पर दिन चलती रहती है। उसने आधुनिक जीवन को इतिहास का प्रसंग समझकर प्रत्येक अनुभव को उसके सन्दर्भ सहित विचारा। अपने पात्रों को नित्यवर्ती मानवप्रकृति की पृष्ठभूमि पर रखकर

उसने उन लोगों को फटकारा जो बार-बार होनेवाली प्राणभूत एवं मार्मिक घटनाओं के विरुद्ध विद्रोह करने पर तुले बैठे रहते हैं। इन दोनों महान् लेखकों ने संसार को दिखाया कि यथार्थता की खोज में उपन्यास की विशिष्ट रीति क्या होती है, और ऐसा करके उन्होंने साहित्य-निर्माण में उपन्यासकार की सबसे बड़ी समस्या हल कर दी। उनकी कलात्मक प्रणाली के निरीक्षण से पता चलता है कि जीवन-रहस्य की व्याख्या मानव-प्रकृति के सन्दर्भ में होती है, और उसका चित्रण उसके सहज स्वभाव तथा सौन्दर्य के सहित होना चाहिए, तथा मनुष्यजीवन के सारे व्यापार इस प्रकार दिखाये जाने चाहिए कि उन्हें देखकर उस जीवन की अनुरूपता एवं अर्थ तथा प्रतिष्ठा का पूरा ज्ञान प्राप्त हो जाय।

कहानी-कला को इस सिद्धान्त तक पहुँचाने में डिकेन्स और थैकरे दोनों ही को बड़ा समय लगा था—थैकरे को तो पूरे सोलह वर्ष लगे थे। उनके प्रारम्भिक प्रयोगों में उन्हें मार्ग उन नारियों ने दिखाया था जिनके उपन्यासों में निरीक्षण की वह कोमलता एवं लालित्य भरा हुआ है जो उनकी प्राकृतिक विशेषता है। इन्हीं लेखिकाओं के उपन्यासों ने डिकेन्स और थैकरे को जेन आस्टेन के उपन्यासों तक भी पहुँचाया था, जिनका किसी ने अनुसरण नहीं किया था। यह एक अद्भुत-सी बात है कि उन्नींसवीं शताब्दी का पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों ही काल उपन्यासकार नारियों के नाम से आरम्भ होते है। इस कारण यदि सर वाल्टर स्काट आधुनिक रोमांस का पिता था, तो मिस एजवर्थ आजकल के घरेलू जीवन के उपन्यास की माता थी। शताब्दी का यह उत्तरार्ध काल जिस उपन्यासकार नारी ने प्रारम्भ किया उसका नाम शार्लाट ब्राण्टी (Charlotte Bronte) था, जो आयरलैण्ड के एक पादरी की तीन तीव्रबुद्धि लड़कियों में से एक थी।

शार्लाटब्राण्टी

पैट्रिक ब्राण्टी कुछ चिड़चिड़े किस्म का मनुष्य था जो अपने परिवार के लिए एक मुसीबत से कम न था। उसकी आमदनी भी बहुत थोड़ी थी, जिसके कारण बहुधा घर में कलह होती रहती थी और लड़कियों का जीवन कटु एव अप्रिय हो गया था। ऐसी स्थिति में उनका विवाह न तो कुलीनों में हो सकता था, न पढ़ी-लिखी होने के कारण हाथ से काम करनेवाले कारीगर लोगों में। अपनी जीविका कमाना उनके लिए जरूरी हो गया था। शार्लाट (१८१६-१८५५) ने अध्यापन के काम की शिक्षा ली और १८४३ में नौकरी करने लगी। तीनों बहनें कविता

करती थीं और तीनों ने मिलकर १८४६ में एक पुस्तक में अपनी कविताओं का संग्रह प्रकाशित भी किया था। इन कविताओं में अद्वैतवादी सिद्धान्त के अनुसार प्रकृति को ईश्वर का अंश माना गया था, जिसके कारण पुस्तक का कड़ा विरोध किया गया और बहुत वर्षों तक उसका छपना बन्द रहा। तीनों बहनों ने इसके बाद अलग-अलग काम करना आरम्भ किया।

शार्लट ब्राण्टी का 'दि प्रोफेसर' (The Professor) नामक उपन्यास किसी प्रकाशक ने छापना स्वीकार नहीं किया इसलिए कि उसमें कोई उत्तेजित करनेवाली घटनाएँ नहीं थीं। यह उपन्यास बहुत सालों के बाद, जब शार्लट की मृत्यु हो चुकी थी और उसकी दूसरी पुस्तकें कुछ ख्याति प्राप्त कर चुकी थीं, प्रकाशित किया गया और बड़ा लोकप्रिय हुआ।

इस बीच में उसने अपने दूसरे जेन आयर (Jane Eyre) नामक उपन्यास में ये त्रुटियाँ दूर कर दीं, जो १८४७ में प्रकाशित हुआ और जिसे उसने थैकरे को समर्पित किया था। इस रचना में, उस समय के उपन्यासों के विरुद्ध, न तो कोई सुन्दर स्त्री थी न कोई छैल-छबीला युवक; यद्यपि उसमें रोमांस भी था और वास्तविकता भी, परन्तु अनुकरण न स्काट का किया गया था न जेन आस्टेन का। उसकी कथावस्तु साधारण जीवन की सामान्य बातों को लेकर सुधारी गयी है। वह अभिमान तथा स्नेह के बीच संघर्ष का वर्णन करती है, जिसमें मानव-प्रकृति की नीव में दबा हुआ रोमांस उभर आता है। दो बहुत साधारण व्यक्ति जो बड़े हठी एवं बड़े गंभीर हैं, परस्पर एक-दूसरे को आकर्पित करते और कभी एकाएक एक दूसरे से कोसों दूर खिच जाते हैं, दोनों ही एक दूसरे के लिए स्नेह दिखाते डरते हैं और जब कभी ऐसा हो जाता है तो तुरन्त बड़े वेग से एक-दूसरे को अस्वीकार करके अलग के अलग अपना संघर्ष फिर से आरम्भ कर देते हैं। यह संघर्ष बहुत दिनों तक चलता रहता है और उस समय समाप्त होता है जब एक साथ दोनों की विजय होती है।

जेन आयर

उपन्यास में जो घटनाएँ वर्णित की गयी हैं उनमें से कई लेखिका को अनुभवहीन सिद्ध करती है और कई एक ऐसी हैं जिनसे विदित होता है कि उसे सम्भव और असम्भव का भी ज्ञान कम ही था। इतने पर भी यह कहना पड़ता है कि उपन्यास थैकरे को समर्पण करने योग्य था, क्योंकि उसकी नायिका रोम-रोम में स्त्री है,

कठपुतली नहीं, और उसकी मानसिक दशा स्वयं शार्लोट ब्राण्टी की आन्तरिक दशा का आभास है। नायिका का रोमैण्टिक अनुभव उस चेष्टा का सूचक है जो ब्राण्टी वहिनों ने अपने संसार की सीमा बढ़ाने तथा अपने सूखे-सड़े संसार को कल्पना में विस्तृत एवं रंगीन बनाने में की थी। इंग्लैण्ड तथा अमेरिका में बहुत से लेखकों ने इस उपन्यास की नकल की और दो तीन ही वर्षों में वीसों ऐसे उपन्यास प्रकाशित हुए जिनमें कुरूपा स्त्रियाँ और हठी पुरुष पात्र बनाये गये।

शर्ली और विलेट

शार्लोट ब्राण्टी ने दो उपन्यास और लिखे—एक शर्ली (Shirley) १८४९ में और दूसरा विलेट (Villette) १८५३ में, जिनमें भी जेन आयर (Jane Eyre) की भाँति उसने अपने जीवन तथा संसार से सामग्री ली और कल्पना के जादू से उसे अर्थपूर्ण बनाया। जैसा कि थैकरे ने पहले ही समझ लिया था, शार्लोट वास्तव में यथार्थवादी थी, किन्तु उसे अपने जीवन में अनुभव के अवसर बहुत कम मिलने के कारण रोमांसकार की भाँति कल्पना का सहारा बहुत अधिक लेना पड़ता था। इन दोनों उपन्यासों में भी ऐसा ही किया गया है। वह इस बात की बड़ी कोशिश करती है कि चीज़ों को जैसी वे हैं उन्हें वैसी ही रखे, किन्तु अनुभव तथा कला के उद्देश्य मे अनुरूपता न होने के कारण उसे रोमांसकार की तरह पग-पग पर कल्पना की सहायता से अनुभव के अभाव को पूरा करना पड़ता है, जिस कारण वास्तविकता से बात बहुत दूर जा पड़ती है और चीज़ें बहुत सुन्दर अथवा बहुत भदेस हो जाती हैं।

ये दोनों उपन्यास नित्यप्रति की निष्ठुरता एवं दयाहीन व्यवहार, नैराश्य, संघर्ष तथा कलह और ममता का वर्णन इतना सच्चा और ऐसे ढंग से करते हैं कि हमारे हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ता है और हम अनुभव करते हैं जैसे जीवन का यह सारा खेल हमारी आँखों के ही सामने नही हो रहा है बल्कि हम उसमें भाग भी ले रहे हैं। जिस संसार में ये घटनाएँ होती है, ये अनुभव होते है, वह संसार हमारे सामने है और हम उसकी क्रूरता को अनुभव करते हुए भी उसे विलक्षण समझते और उसमें जन्म पाने को अपना सौभाग्य मानते हैं। इसी में कलाकार की विजय है। हमारे चारों ओर दिन-रात दिल तोड़नेवाली घटनाएँ होती हैं, सैकड़ों बार मनुष्य घबरा उठता है और इस जी के जंजाल को तोड़-फोड़कर निकल जाना चाहता है, तो कलाकार हमें उसका सौन्दर्य और रहस्य दिखाकर लुभाता है और साथ ही

घटनाओं को उनके सन्दर्भ में रखकर उनका अर्थ समझाता है। हम कला के प्रभाव में आकर शान्ति प्राप्त करते हैं और समझ जाते है कि मनुष्य न तो इतना बुरा है न इतना क्रूर, बल्कि उसकी आत्मा की गहराइयों में कुछ दूसरा ही दृश्य दिखाई देता है। शार्लोट ब्राण्टी उस जीवन-क्रीड़ा का वर्णन करती है किन्तु उस पर टीका-टिप्पणी नही करती। जीवन की तह में जो रहस्य उसे दिखाई देता है उससे वह भयभीत जरूर होती है परन्तु उसे यथार्थ मानती है। उसने अपने अनुभवों का कल्पना द्वारा विस्तार करने का बहुत प्रयत्न किया है; गम्भीरता एवं उत्साह भी बनाये रखती है; फिर भी उसका संसार छोटा तथा संकुचित होने से उसकी कथावस्तु रोमांस के स्तर तक नहीं उठती। इस कमी को वह अपने विशेष ढंग से पूरा करती है। अपनी कहानी के ताने-बाने के साथ वह प्राकृतिक तथ्यों को इस तरह बुन देती है कि हम सुगमता से पात्रों के जीवन की गहराई में प्रवेश करते और *छोटी बातों की तुच्छता को बिलकुल भूल जाते हैं।*

शार्लोट ब्राण्टी की बहनों ने भी उपन्यास लिखे और उसी की तरह अपने मन-बहलाव के लिए कल्पना द्वारा अपने अनुभवों के संसार का विस्तार भी किया, जिससे उनकी कहानियाँ मकड़ी के जाले के समान झिरझिरी एवं पतली हो गयी हैं।

कल्पना से प्राप्त भावुकता के वश में एमिली ब्राण्टी (Emily Bronte) ने वुदरिंग हाइट्स (Wuthering Heights) नामक उपन्यास (१८४७ में) लिखा, जो बड़ा अद्भुत तथा दिल को हिला देनेवाला है। इस उपन्यास के नायक और नायिका एक-दूसरे से प्रेम भी करते हैं और वेदना भी पहुँचाते हैं। उनका संसार सारी दुनिया से दूर उन्ही का और सामाजिक तथा मानसिक रीतियों में अनोखा है। ऐन ब्राण्टी (Anne Bronte) ने दो उपन्यास प्रकाशित किये—एक ऐग्निस ग्रे (Agnes Gray) और दूसरा दि टेनैण्ट आफ़ वाइल्डफ़ेल (The Tenant of Wildfell) जो बहुत साधारण होते हुए भी दूसरी बहनों की रचनाओं के साथ उस जीवन का चित्र देते हैं जो ब्राण्टी-परिवार का रहा होगा।

मिसेज़ गैस्केल क्रेनफर्ड

ब्राण्टी-बहनें उस श्रेणी की लेखिकाएँ हैं जिनकी जीवनी उनकी रचनाओं की सबसे अच्छी व्याख्या अथवा टिप्पणी होती है। शार्लोट ब्राण्टी की ऐसी जीवनी मिसेज़ गैस्केल (Mrs. Gaskell) ने लिखी है जो उसकी मित्र और उपन्यासकार भी थी। यह जीवनी अंग्रेजी भाषा की सर्वश्रेष्ठ जीवनियों में इसलिए

गिनी जाती है कि इसमें मिसेज गैस्केल ने कहानी-कला का वडा सुन्दर प्रयोग करके एक ऐसे मित्र का स्वभाव एवं अपूर्व बुद्धि का वर्णन किया है, जिसे वह खूब अच्छी तरह समझती थी। इसके अलावा, जीवनी के लिखने में जिस शैली का प्रयोग हुआ है वह अत्यन्त सुन्दर तथा मनोहर है। मिसेज एलिजवेथ क्लेगहार्न गैस्केल (Mrs. Elizabeth Cleghorn Gaskell) (१८१०—१८६५) अपने समय के प्रधान उपन्यासकारों में गिनी जाती थी और उसकी सबसे श्रेष्ठ क्रैनफ़र्ड (Cranford) नामक रचना उपन्यासों की तुलना में गोल्डस्मिथ के दि विकार आफ़ वेकफ़ील्ड और आस्टेन की प्राइड एण्ड प्रेजुडिस की श्रेणी में रखी जाती है।

मैनचेस्टर के पादरी की पत्नी होने के कारण मिसेज गैस्केल को कारखानों में काम करनेवालों के सम्पर्क में बहुत आना पड़ता था, जिससे उनकी आर्थिक एवं सामाजिक कठिनाइयों का उसे अच्छा ज्ञान हो गया था। ये कठिनाइयाँ वहुधा कारीगरों तथा उनके मालिकों के बीच संघर्ष से उत्पन्न होती थीं। संघर्षों के समय मिसेज़ गैस्केल कारीगरों की निर्धनता, मानभंग और दुर्गति को मालिकों की फ़िजूल-खर्ची एवं विलासिता के साथ-साथ देखकर काँप उठती थी। ये मालिक हाल में ही धनवान् हुए थे और अपने व्यापार की सफलता में कारीगरों के प्रति अपना कोई कर्तव्य नहीं स्वीकार करते थे और उन्हें उन स्थितियों में कोई सम्बन्ध नही मालूम होता था जो कारीगरों के जीवन को निर्दयी वना रही थी। इन वातों के प्रत्यक्ष ज्ञान को लेकर मिसेज गैस्केल ने अपना प्रथम उपन्यास मेरी वार्टन (Mary Barton) लिखा और लोगों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित करके सुधार के लिए प्रयत्न किये।

अखवारों में पुस्तक की वहुत निन्दा की गयी, किन्तु वह सर्वप्रिय हो गयी और डिकेन्स-जैसे श्रेष्ठ लेखक ने उसका स्वागत किया। इस समय (१८४८) के वाद से मिसेज़ गैस्केल ने डिकेन्स की पत्रिका में लेख भेजना आरम्भ कर दिया। सन् १८५५ में उसी विषय पर उन्होंने दूसरा उपन्यास लिखा जिसमें उन परिवर्तनों को भी दिखाया जो सुधारों के कारण नार्थ एण्ड साउथ (North and South) के प्रकाशन तक हो चुके थे। ये दोनों उपन्यास ऐसे पक्षपातरहित एवं न्याययुक्त थे और उनमें ऐसा सच्चा चित्र श्रमिक वर्ग की दुर्दशा का दिया गया था कि उन्हें पढ़कर लोग कारखानेदारी की पद्धति के दोषों को समझ गये।

मिसेज़ गैस्केल की अन्य पुस्तकों के जो अपने समय में लोकप्रिय हुई, नाम निम्नलिखित हैं—रूथ (१८५४), सिल्वियाज़ लवर्स (१८६३) और वाइव्ज़ एण्ड डाटर्स (१८६६)। इन सव उपन्यासों में मिसेज़ गैस्केल की रसिकता, हृदय

पर प्रभाव डालने की विशेष उक्तियाँ तथा स्त्री और पुरुष के स्वभावों को पहचानने की शक्ति के सुन्दर उदाहरण मिलते हैं।

क्रैनफ़र्ड

मिसेज़ गैस्केल की सबसे उत्तम रचना क्रैनफ़र्ड (Cranford), जो १८५१ से लेकर १८५३ तक चार्ल्स डिकेन्स की "हाउसहोल्ड वर्ड्स" नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी, ग्रामीण जीवन का गद्य-गीत है, जिसमें वयस्क कुँआरी स्त्रियों की दिनचर्या बड़े लालित्य एवं हास्यजनक ढंग से वर्णित की गयी है। क्रैनफ़र्ड उन्नीसवी शताब्दी के आरम्भ का ठेठ अंग्रेजी गाँव है जो शान्त वातावरण तथा बसनेवालों की मानवता एवं परस्पर की सहानुभूति के लिए सारे यूरोप में प्रख्यात हो रहा था। मिसेज़ गैस्केल ने इस गाँव की सब वस्तुओं को ग्रामीण जीवन से मिलाजुलाकर देखा है और पात्रों के स्वभाव तथा चरित्र का इस प्रकार वर्णन किया है कि कदम-कदम पर हमें सदाचार एवं दया-भाव मूर्तिमान् दिखाई पड़ता है। करीब-करीब सारी उपकथाएँ, चाहे वे हास्य रस से भरी हों चाहे करुण रस से, गाँव के वातावरण का सच्चा चित्र देती है और उसे काव्य में रंग देती हैं। साथ ही वह बनावट तथा कपट भाव, जो "सामने कुछ और, पीछे कुछ और" होकर जीवन में कटुता उत्पन्न करता है, शुद्ध शिष्टाचार से बड़ी सुन्दर रीति से अलग करके दिखाया गया है। उपन्यास का प्रत्येक पात्र एक विशेष प्रकार की भावना का प्रतिरूप है। इन सब विशिष्ट गुणों ने क्रैनफर्ड को उन लोगों के लिए एक स्वर्ग बना दिया है जो प्राचीन काल के ग्रामीण जीवन में दिलचस्पी रखते है और उस समय के वातावरण तथा ग्रामीण दशा में आनन्द ले सकते है, जब न कहीं बिजली थी न बड़े-बड़े कारखाने।

"कार्नहिल" पत्रिका के सम्पादक ने, जिसमें मिसेज़ गैस्केल की बहुत-सी रचनाएँ पहले प्रकाशित हुई थीं, लिखा है—"जब आप इन रचनाओं को पढ़ते हैं तो जान पड़ता है मानो आप एक घृणित तथा दुराचारी संसार से, जिसमें नीच भावनाएँ भरी हैं और जो किसी प्रकार धीरे-धीरे स्वार्थ के बोझ से लदा हुआ घिसट रहा है, निकल भागे हों, और अब किसी ऐसे जगत् में आन पहुँचे हों जिसमें बहुत कमजोरियाँ हैं और गलतियाँ भी होती हैं, जहाँ दुःख एवं मुसीबत के साथ जीवन में शान्ति भी पायी जा सकती है, जहाँ जीवन स्वास्थ्यकर तथा हितकर हो सकता है और जहाँ पग-पग पर आपकी आत्मा को स्वीकार करना पड़ता है कि यह जगत् कम से कम उस संसार की अपेक्षा अधिक वास्तविक तथा सत्य है।"

मिसेज़ गैस्केल की ही भाँति अपने समय के सामाजिक अन्याय एवं दुर्दशा पर गहरा चिन्तन करनेवाला व्यक्ति चार्ल्स किंग्सले (१८१९—१८७५) भी था, जिसने साहित्य के माध्यम को सुधारों के लिए प्रयुक्त करने का प्रयत्न किया और उपन्यास लिखे। किन्तु चार्ल्स किंग्सले (Charles Kingsley) को उस दशा तथा उन स्थितियों का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं था, जिनमें श्रमिकवर्ग जीवन व्यतीत करता था, और न उसे इस बात का अनुभव था कि चरित्र का कैसा और कितना बल चिथड़े-गुदड़े लपेटे हुए हाथों से कारखानों के काम करनेवालों में छिपा पड़ा था। किन्तु इसके-साथ वह शार्लट ब्राण्टी की तरह कहानी-कला के महत्त्व और उसके गम्भीर उद्देश्य को भी भली प्रकार समझता था। समाज एवं संसार में अपने स्थान तथा प्रतिष्ठा के कारण वह तत्कालीन समस्याओं एवं विचारणीय विषयों से सम्बन्धित रहा करता था।

चार्ल्स किंग्सले

किंग्सले एक पादरी का पुत्र था जो केम्ब्रिज विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त करने पर स्वयं भी केवल पचीस वर्ष की अवस्था में एवर्स्ली के रेक्टर के पद पर नियुक्त कर दिया गया था। इस प्रारम्भिक काल में भी उसे लोग बड़ा विद्वान् समझते थे। सन् १८६० में केम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने उसे इतिहास का प्रोफेसर बनाया, और वह उस पद पर नौ वर्ष तक काम करता रहा। युवावस्था में वह फ्रेड्रिक डेनिज़न मारिस (Fradrick Denison Maurice) तथा टामस कार्लाइल के विचारों और सिद्धान्तों के प्रभाव में आ गया था, जिस कारण किसी समय भी वह केवल पादरी नहीं था। उसके धर्मविषयक व्याख्यानों में मानवप्रकृति का ज्ञान और उसकी निर्बलता से सहानुभूति का भाव टपकता था। वह अपने को "ईसाई सोशलिस्ट" इसलिए कहता था कि ईश्वर को पिता मानकर मनुष्यों में जो भाईचारा और बराबरी का भाव उत्पन्न होता है, वही "सोशलिज्म" का मुख्य सिद्धान्त है। कार्लाइल का उत्साही एवं उद्योगी जीवन-सिद्धान्त उसे बहुत आकर्षित करता था। कोई भी ऐसा समय नहीं था जब किंग्सले लोगों को इन सिद्धान्तों की व्याख्या करके समझाता नहीं था।

शताब्दी के मध्यकाल में सुधारों के लिए जितने आन्दोलन किये गये उन सब में किंग्सले ने दिलचस्पी ली, किन्तु वह कभी प्रचण्डता तथा बलात्कार की चार्टिस्ट नीति से सहमत नहीं हुआ। दूसरे पादरियों की तरह वह स्थितिपालक भी नहीं था।

यद्यपि उसकी सारी रचनाएँ साफ़-साफ़ ईसाई की लिखी जान पड़ती हैं, किन्तु वह ईसाइयत न तो किसी विशेष संप्रदाय से सम्बन्ध रखती है, न किसी पन्थ की है। कहीं भी उसके विचार संकुचित अथवा पक्षपाती नहीं मालूम होते, वल्कि वह भी दूसरे विचारशील लोगों की तरह उदारचित्त तथा विज्ञानवादी एवं एक प्रकार का आदर्शवादी कहा जा सकता है।

समय की विचार-भिन्नता

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यकाल में वहुत लोगों के विचार कई मतों के वीच डगमगाया करते थे। एक ओर वह इच्छापूर्ति एवं चित्त की सावधानी तथा आत्माभिमान था जो इंग्लैण्ड के व्यापार, वाणिज्य, यन्त्रविद्या और पक्षपातहीन शासन-पद्धति की सफलता से प्राप्त हुआ था। इसके फलस्वरूप लोगों की आर्थिक दशा का सुधार हुआ और उन्हें जीवन की सुविधाएँ प्राप्त हुई जो उन्नति के प्रमाण थे। दूसरी ओर वह आदर्श जीवन की लालसा थी जो शताब्दी के पहले चरण में लोगों को सांसारिक उन्नति से सन्तोष नही देती थी और उन्हें सदा अलभ्य की प्राप्ति की चेष्टा करने को उत्तेजित करती रहती थी। लार्ड् मैकाले (Lord Macaulay) प्रथम मत का प्रतिनिधि था और राजनीतिक तथा आर्थिक अभ्युदय की पताका फहराता था। न्यूमैन (Newman) इसके विरुद्ध उस मत को अपना पूर्ण वल देता था जो मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति को प्रधानता देता और पारलौकिक एवं धार्मिक प्रमाणों के अनुसार सारे जीवन और उन्नति को देखता था। इस समय वहुत-से ऐसे विचारशील लोग थे जो न तो मैकाले की भाँति प्रथम मत से सन्तोष पाते थे न न्यूमैन की भाँति इस संसार से मुँह मोड़कर परमार्थ में लग जाना चाहते थे। ये लोग किसी ऐसे सिद्धान्त की खोज में थे जो उन्हें अनात्मवाद से वचाकर संसार तथा जीवन की व्याख्या करे और समाजसुधार की नींव शासनपद्धति के सुधार से अधिक गहरी डाल सके। इन विचारशील लोगों को ऐसे सिद्धान्त टामस कार्लाइल (Thomas Carlyle) की पुस्तकों में मिले, जिनसे चार्ल्स किंग्सले वहुत प्रभावित हुआ। युवावस्था से ही वह उस दशा से असन्तुष्ट रहा करता था जिसे दूसरे लोग उन्नति कहते थे। वह अपने हृदय एवं आत्मा की उस लालसा अथवा उत्कण्ठा को, जो उसे अलभ्य तथा अकल्पनीय आदर्श की ओर प्रेरित करती थी, छोड़कर "उन्नति" को स्वीकार नहीं कर सकता था। अपनी प्रकृति से ही वह असमर्थ था कि सन्तुष्ट सुअर को असन्तोषी सुक़रात से उत्तम समझे, अथवा "मिड-

ल्सेक्स" में एक एकड़ भूमि पाकर स्वर्ग के राज्य को ठुकरा दे। स्वभाव से ही किन्सले उन लोगों में था जो यथार्थ की खोज में किसी सुन्दर भ्रान्ति को अंगीकार नहीं कर सकते थे।

किन्सले की पुस्तकें उसकी विभिन्न रुचियों तथा दिलचस्पियों की सूचक हैं। उसने कई उपन्यास भी लिखे जिनमें कुछ ऐतिहासिक हैं, कुछ रोमैण्टिक, और प्राचीन काल का उसी निश्चय एवं साहस के साथ चित्रण करते हैं जैसे कि वर्तमान का। उसने १८४८ में यीस्ट (Yeast) और १८५० मे ऐल्टन लाक (Alton Locke) नामक उपन्यास लिखे, जिनमें वे समस्याएँ प्रस्तुत कीं जो शताब्दी के मध्यकाल में विचारशील लोगों को चक्कर में डाल रही थी और व्याकुल कर रही थीं। इस समय में कैथलिक धर्म को पुनर्जीवित करने की कोशिश हो रही थी और "चार्टिज्म" का आन्दोलन चल रहा था। किन्सले "कैथलिक विश्वास" और "सन्देह" अथवा अविश्वास के बीच का रास्ता दिखाता है। इसी प्रकार वह राजनीति मे भी कोरी राजभक्ति और निरी राज्यविद्रोह की प्रवृत्ति के बीच का मार्ग बतलाता है।

यीस्ट और ऐल्टन लाक

यीस्ट में ग्रामसमाज के ऊँची तथा नीची श्रेणी के लोगों को पात्र बनाकर उस सिद्धान्त को मूर्तिमान् किया गया है जिसे "क्रिश्चन सोशलिज्म" का नाम दिया गया था। दूसरा उपन्यास ऐल्टन लाक शहरों के छोटे-छोटे दूकानदारों के जीवन के चित्र देता है और उनकी तुलना पढ़े-लिखे लोगों से करता है जिन्हे बहुत-सी सुविधाएँ प्राप्त हैं। यद्यपि उपन्यासों की तुलना में ये दोनों कोई विशेष महत्त्व नही रखते, किन्तु साहित्यिक दृष्टि से इनमें कुछ गुण है जिन्हें अब तक किसी ने आगे नहीं बढ़ाया। लैविंग्टन आर्जमोन (Lavington Orgemone) का चरित्र-चित्रण यीस्ट में और साण्डर्स मैके का ऐल्टन लाक मे असाधारण बुद्धि के नमूने हैं और किसी भी उपन्यासकार को ख्याति दे सकते है। जिस कारण ये दोनों प्रारम्भिक रचनाएँ उच्च कोटि के उपन्यास नही है वह इनकी कलात्मक कमजोरी है—इनके कुछ भाग अति गम्भीर होकर बहुत बोझिल हो गये है। इसके विरुद्ध इन उपन्यासों में दृश्यों का वर्णन बड़ा सुन्दर है, क्योंकि जो स्थान दिखाये गये हैं वे किन्सले के स्वयं देखे हुए है और जिनसे उसे प्रेम है।

ऐल्टन लाक में चित्त पर गहरा प्रभाव डालने वाला टुकड़ा वह है जिसमें

ऐल्टन लाक के स्वप्न का वर्णन किया गया है। इस काल में इंग्लैण्ड में संस्कृत भाषा तथा साहित्य की पढ़ाई का बड़ा उत्साह था और लोगों की कल्पना में भारत से उन महान् जाति-समूहों के देश-देशान्तर गमन के चित्र घूम रहे थे। ऐल्टन लाक का स्वप्न भारत से ऐसे ही समूहों के पश्चिम गमन का चित्र देता है और सूर्य के प्रकाश से भरे अनन्त आकाश के नीचे फैले हुए मैदानों तथा घाटियों का अद्भुत छायाचित्र खींचता है, जहाँ एक बड़ा जनसमूह हिमालय से निकलकर टिड्डीदल के समान चलता चला जा रहा है। दुर्भाग्य से किग्सले ने बुल्वर लिटन का अनुसरण करके वास्तविक को रोमैण्टिक से इस प्रकार मिलाया कि घटनाएँ सजीव और स्पष्ट होते हुए भी विश्वसनीय नहीं रहीं और उपन्यास अच्छे टुकड़ों को कहानी का चेतनायुक्त अंग न बना सका। इसके अलावा, किंग्सले न तो अपने विचारों तथा धारणाओं को, जो लोकाचार के विरुद्ध समझी जाती थीं, बदल ही सकता था न उनको उपन्यास से बाहर ही रख सकता था। उसके उदार चित्त तथा प्रवर्त्तक स्वभाव में जो भय एवं उत्तेजना समय की दशा से उत्पन्न होती थी उसे ठंडे दिल से कला को बोझिल न होने देने के लिए दबाना सम्भव नहीं था। इन कारणों से किंग्सले को भी कार्लाइल की भाँति लोकप्रियता प्राप्त नहीं हुई और ये दोनों उपन्यास असफल रहे। फिर भी रचनाओं की विभिन्नता एवं उनके प्रभाव डालनेवाले ऐसे अंग, जिनमें चेतना भरी है और जो उत्तेजक कल्पनाओं से मिलकर वर्णनों को स्पष्ट तथा सजीव करते है ऐसे गुण हैं, जिनके कारण उसे उन्नीसवी शताब्दी के मध्यकाल का प्रतिनिधि उपन्यासकार कहा जाता है।

ऐतिहासिक उपन्यास—वेस्टवर्ड हो, हाइपेशिया

किंग्सले ने अपने ऐसे विचारों तथा धारणाओं को, जो उसे विशेष प्रकार से उत्तेजित करती थीं, अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में भी प्रवर्त्तक रखा। उसने इति-हास से प्रबोधक उद्देश्य सिद्ध करने का काम लिया और अपने देशवासियों को "पुरानी आकृति के नये शत्रु" दिखाये। साथ ही उसने मानवता का वह आदर्श भी मूर्तिमान् किया जो ईसाई धर्म के पालन से उत्पन्न होता है और जिसमें शारीरिक बल के साथ मानसिक समभाव होता है। इंग्लैण्ड के पाठकों को उसका १८५५ का लिखा वेस्टवर्ड हो! (Westward Ho) नामक उपन्यास बहुत पसन्द आया। इस उपन्यास में उसने इंग्लैण्ड और स्पेन की लड़ाई से कथावस्तु बनायी और बड़े जोरदार वर्णनों में समय का वातावरण तथा घटनाएँ प्रस्तुत कीं। महा-

काव्य के ढंग से उसने आर्मेडा तथा उसके सम्बन्ध के वीर चरित्रों का वर्णन किया है। इस उपन्यास में भी किंग्सले ने विशेष अवसरों पर अपनी लेखनी का चमत्कार दिखलाया है और बड़ा सुन्दर गद्य लिखा है। वेस्ट इण्डियन जाति का जीवन, लड़ाई के दृश्य, अंग्रेज जाति का शिष्टाचार तथा चरित्रगठन और अन्त की वह घटना, जिसमें अमियस ली (Amyas Leigh) बिजली के अकस्मात् चमकने से अन्धा हो जाता है, ऐसे प्रसंग हैं जिन्होंने प्रकाशित होते ही इस उपन्यास को लोकप्रिय बना दिया था। बहुत से साहित्यप्रेमी इस उपन्यास को किंग्सले की सर्वोत्तम रचना मानते है और किसी श्रेष्ठ उपन्यासकार की सर्वोत्तम रचना से उसे कम नहीं समझते।

किंग्सले के दो उपन्यास, हाईपेशिया (Hypatia) और हेरीवर्ड दि वेक (Hereward the Wake) विदेशी पाठकों को बहुत पसन्द आते हैं। दोनों उपन्यास इतिहास के विशेष युगों से सम्बन्धित है जो कई अर्थो में जातीयता के लिए विशेष महत्त्व के हैं। हाईपेशिया (१८५३) में उस संघर्ष का वर्णन है जो पाँचवीं शताब्दी में ईसाइयत और उसके पहले से प्रचलित मतों के बीच अलेग्जैन्ड्रिया (Alexandria) में हुआ था। ईसाई मत के इतिहास का यह प्रारम्भिक युग बड़ा भयंकर था। हमें आश्चर्य तो यह है कि ईसाई तथा पादरी होते हुए किंग्सले ने इस युग को अपने उपन्यास का विषय कैसे बनाया।

हाईपेशिया

हाईपेशिया एक सुन्दर एवं विद्वान् स्त्री थी जो अलेग्जैन्ड्रिया के विश्वविद्यालय में प्लेटो के आध्यात्मिक सिद्धान्तों की शिक्षा दिया करती थी। वह प्राचीन यूनानी मत की माननेवाली, बल्कि उसकी पुरोहिताइन भी थी। इस मत में प्लेटो के सिद्धान्तों को पूर्वी अध्यात्म विद्या से मिलाया गया था, जिसकी व्याख्या करनेवालों में हाईपेशिया का बड़ा नाम इसलिए था कि उसने अपने मत को उन्मादरहित तथा संयमी कर दिया था। पाँचवीं शताब्दी के धर्मोन्मत्त ईसाई अपनी हठधर्मी से हाईपेशिया को ईसाइयत और अपने मठों का घातक शत्रु समझते थे। एक दिन हाईपेशिया जब लेक्चर देने विश्वविद्यालय को जा रही थी तो उन्होंने रास्ते में उसे पकड़ लिया और उसे वस्त्रहीन करके बोटी-बोटी नोच डाली और बचे-खुचे अंगों को जला दिया। हाईपेशिया की मृत्यु के बाद अलेग्जैन्ड्रिया से यूनानी विद्या का लोप हो गया और हठधर्मी एवं मूढ़विश्वास का राज्य स्थापित हो गया। कुछ काल तक बड़ा

उपद्रव मचा रहा जिसे राज्यपद के अधिकारी वश में नहीं कर पाये और न शान्ति स्थापित कर सके। इसी समय में अलेग्ज़न्ड्रिया पर उत्तर से गाथ जाति के झुण्ड टूट पड़े। उन्होंने हाईपेशिया के वध का बदला ले लिया और कई हजार ईसाइयों को उनके मठों में मार काट डाला। यह उत्तरी जाति अपने चरित्रबल से जो कुछ चाहती कर सकती थी।

किंग्सले ने बड़े सुन्दर ढंग से अलेग्जैन्ड्रिया के लोगों के भ्रष्ट जीवन और गाथ जाति की स्वाभाविक शिष्टता का चित्रण किया है और दिखाया है कि आचरण पर जलवायु तथा भोग-विलास एव पाप का प्रभाव क्या होता है। उसने उन साधनों तथा उपायों का भी बड़ा अच्छा निरीक्षण किया है, जिनके द्वारा वुल्फ जैसे प्रौढ नेताने धीरे-धीरे उनके जीवन में परिवर्तन करके उन्हें कुछ से कुछ बना दिया। हाईपेशिया अत्यन्त दुःखमय कहानी है किन्तु किंग्सले ने उसे सदा के लिए अर्थपूर्ण उन्ही कलात्मक विधियों से बना दिया है जो कोई भी श्रेष्ठ कलाकार अपने काम में लाता है।

हेरीवर्ड दि वेक

चरित्रों एवं स्वभावों के भेदों के निरीक्षण में कदाचित् यह बात किंग्सले को सूझी कि वह हेरीवर्ड दि वेक (Hereward the Wake) लिखकर अपने देशवासियों को एक पराक्रमी तथा उदारचित्त मनुष्य का नमूना दे। हेरीवर्ड दि वेक ऐसे ही आदर्श पुरुष के रूप में उसने लोगों के सामने रखा है। यह उपन्यास भी किंग्सले के दूसरे उपन्यासों की भाँति इतिहास की सामग्री को कल्पना के आश्रय से सजीव करके जातीयता की चेतना जगाता और सच्ची मानवता के भाव उत्तेजित करता है। इस उपन्यास में उस अन्तिम राजद्रोही की जीवनी ली गयी है जिसने नार्मन विजय को स्वीकार नहीं किया और एंग्लो-सैक्सन अंश को अंग्रेजों की जातीयता के भावों में जीवित रखने की सदा चेष्टा की।

हेरीवर्ड प्राचीन समय का अंग्रेज वाइकिंग है जिसका भाई वह स्कैन्डिनेवियन बर्सर्क (Berserk) नामक योद्धा था जो युद्ध के समय पहनने की जगह अपना कवच उतार देता था। इंग्लैण्ड के इतिहास मे हेरीवर्ड नाम का योद्धा हुआ है जो बहुत काल तक विलियम, दि काङ्करर (William, the Conqueror) का विरोध करता रहा था, जिसे उपन्यास में किंग्सले ने उत्तरी जातियों के गुणों का प्रतिरूप बनाया है। प्राचीन उत्तरी जाति के लोग उसे मनुष्यता एवं पराक्रम के सबसे अच्छे नमूने मालूम होते थे और उन्ही में के एक व्यक्ति को उसने आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है।

इस आदर्श में उसने शारीरिक तथा बौद्धिक बल को एकत्रित करके हमारे सामने रखा है।

बच्चों की पुस्तकें; हीरोज़, वाटर बेबीज़

किंग्सले जितना उत्तरी जातियों के पराक्रम को सराहता था, उतना ही यूनानी प्रवृत्ति से भी प्रेम करता था। यह प्रेम उस कहानियों की पुस्तक से मालूम होता है जो उसने अपने बच्चों के लिए लिखी थी और जो आगे चलकर हीरोज़ (Heroes) के नाम से प्रकाशित हुई। यह पुस्तक बच्चों के पढ़ने की पुस्तकों में सर्वोत्तम है जिससे अच्छी शायद ही किसी दूसरी भाषा में किसी ने लिखी हो। किंग्सले ने कई और पुस्तकें बच्चों के ही लिए वैज्ञानिक विषयों पर लिखी हैं, जिनमें से वाटर बेबीज़ (Water Babies) नामक कहानियाँ अब तक प्रसिद्ध हैं और पढ़ी जाती है।

सन् १८५७ में किंग्सले ने समकालीन जीवन पर भी एक उत्तेजित करनेवाला रोमांस लिखा, जिसमें उसने अपने आदर्शवाद को दूसरा रूप दिया। किंग्सले का विश्वास था कि सच्चा धर्म विश्वास मे नहीं बल्कि अच्छे कामों में होता है। मुसीबत के समय ईश्वर के सामने घुटने टेकना एवं सिर झुकाना और जरूरत में उससे प्रार्थना करना धर्म नहीं है; और न यह धर्म है कि सारी मुसीबतों को ईश्वर की भेजी हुई समझकर सहा जाय और चूँ न की जाय। किंग्सले के विचार से मुसीबतों को धैर्य के साथ सहना और पराक्रम से विघ्नों को दूर करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। मनुष्य को अपनी पूरी शक्ति के साथ और अपना शारीरिक एवं बौद्धिक बल लगाकर जीवन को सफल करना चाहिए। अपने शरीर के रग और पुट्ठे, उसी प्रकार पुष्ट तथा प्रबल करने चाहिए जैसे कि मन को, क्योंकि बिना इसके मनुष्य इस सुन्दर संसार का जैसा चाहिए वैसा उपयोग नही कर सकता और वह स्वार्थी तथा नीच एवं कपटी हो जाता है।

टू इयर्स एगो (Two years ago) में किंग्सले एक आदर्श महानुभाव का चित्र देता है और हमें बताता है कि एक सुशिक्षित मनुष्य जो ऊँचे सिद्धान्तों का पालन करता हुआ अपने जीवन को सफल बनाने की चेष्टा करता रहे, कैसा होना चाहिए।

उपन्यास के इतिहास में एक विशेष युग ऐन्टनी ट्रोलोप (Anthony Trollope) के नाम से प्रसिद्ध है। ट्रोलोप (१८१५-१८८२) ने बड़ा परिश्रम थैकरे का अनुकरण करने में किया था और वह उपन्यास को यथार्थवाद की ओर लौटा

लाना चाहता था। वह एक बैरिस्टर का पुत्र था और आक्सफर्ड विश्वविद्यालय में उसकी शिक्षा हुई थी। उसकी माता वही मिसेज ट्रोलोप थी जिसने १८३२.में डोमेस्टिक मैनर्स आफ दि अमेरिकन्स (Domestic Manners of the Americans) नामक पुस्तक लिखकर अमेरिका के लोगों को वहुत क्रुद्ध कर दिया था। मिसेज ट्रोलोप ऐसे समय में अमेरिका गयी थी जब वहाँ की सामाजिक दशा वहुत विगड़ी हुई थी। उसे जब जीविका के लिए अपनी लेखनी का आश्रय लेना पड़ा तो उसने अपने अनुभवों और जानी हुई वातों को लेकर यह पुस्तक लिखी। पुस्तक उसकी वुद्धि तथा चातुरी की अच्छी मिसाल है और ये सारे गुण उसके पुत्रों में भी पाये जाते हैं।

ऐन्टनी ट्रोलोप और "वार्चेस्टर" सीरीज़ के उपन्यास

ऐन्टनी ट्रोलोप मिसेज ट्रोलोप का छोटा पुत्र था जो वड़ा सफल उपन्यासकार हुआ और उसने अंग्रेजी में इतनी अधिक सख्या में उपन्यास लिखे कि उसके मुख्य समालोचक प्रोफेसर सेन्टस्वरी को लिखना पड़ा कि उन्हें भी उनकी संख्या मालूम नहीं थी। ऐन्टनी ने थैकरे के उन्हीं विचारों को अपना भी सिद्धान्त वनाया था जो उसने अपने वैनिटी फेयर नामक उपन्यास में दिये हैं। परन्तु थैकरे ने अपनी उपन्यासकला को उन विचारों से वाँधकर नहीं रखा। ट्रोलोप ऐसा नहीं कर सका। वह साफ-साफ लिखता है कि उपन्यास युवकों तथा युवतियों के मनोरंजन के लिए लिखे जाने चाहिए और उनमें कोई अप्रिय एवं कटु वातें नहीं होनी चाहिए। वह अपने पाठकों को विश्वास दिलाता है कि वह अपने उपन्यासों में ऐसी कोई वातें नहीं आने देगा। उसे जो आश्चर्यजनक सफलता मिली वह वास्तव में एक कुशल कहानीकार की सफलता कही जानी चाहिए, उपन्यासकार की नहीं।

ट्रोलोप ने अंग्रेज समाज के मध्य श्रेणी के लोगों के जीवन से सम्वन्धित उपन्यास लिखे अथवा अभिजातवर्ग के लोगों की नीची श्रेणी को लिया, जिनकी जीवन-कहानी किसी दूसरे लेखक ने नहीं छुई थी। ऐसा करने का फल यह मिला कि उसके पाठकों की संख्या वहुत वढ़ गयी। यदि हम साहित्य की कड़ी परिभापा करे तो हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि ट्रोलोप के उपन्यास केवल रोचक कहानियाँ हैं, साहित्यिक उपन्यासकला के नमूने नही है, क्योंकि उनमें विपयवस्तु पर ही सारा ध्यान है, कलात्मक लक्षणो पर अथवा साहित्यिक रूप तथा शैली पर नहीं। उसकी कल्पनाशक्ति वड़ी विलक्षण एव तीव्र थी, किन्तु वह शक्ति वहुधा चरित्र-

निरूपण के कार्य में प्रकाशित होती थी। जिस समाज को वह भली-भाँति जानता और समझता था, उसी के व्यक्ति-स्वभाव तथा चरित्र के नमूनों को लेकर उन्हें कठपुतलियों अथवा शतरंज के मुहरों की तरह चलाता फिराता और उनकी प्रकृति को पाठकों के सन्मुख उपस्थित करता था।

उसकी कहानियों में सारा वल इस वात को स्पष्ट करने में दिखाई देता है कि विशेप स्थितियों में कोई ऐसा व्यक्ति क्या करेगा एवं क्या सोचेगा और स्थिति-परिवर्तन से उसके कार्यों अथवा विचारो में क्या अन्तर पड़ेगा। अपने पात्रों के सम्वन्ध में इस प्रकार वह जो भविष्य वताता है वह कभी अशुद्ध नहीं निकलता। जो भी हो, कम से कम ट्रोलोप के पाठक ऐसा ही समझते थे और उसकी पुस्तकों की विक्री इन्हीं विचारों के कारण खूव तेजी से होती थी। इसी विधि से उसने अनेक पुस्तकें लिखीं और आश्चर्य की वात यह है कि वह डाकखाने की नौकरी भी करता था तथा दूर-दूर के दौरे भी वरावर किया करता था।

ट्रोलोप "वार्चेस्टर" ग्रन्थमाला के लेखक रूप में प्रसिद्ध है जिसके सव उपन्यास वार्चेस्टर केथीड्रल गिरजे से कोई न कोई सम्वन्ध रखते हैं। दि वार्डेन (The Warden) पहला उपन्यास था जो १८५५ में प्रकाशित हुआ, जिसके दो वर्प के उपरान्त वार्चेस्टर टावर्स (Barchester Towers) लिखा गया। यह उसका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। उसके दो और उपन्यास फ़्रैमली पार्सनेज (Framley Parsonage) और दि लास्ट क्रानिक्ल आफ़ वार्सेट (The Iast Chronicle of Barset) भी प्रसिद्ध हैं। ट्रोलोप ने राजनीति एवं वाणिज्य के विषयों पर भी उपन्यास लिखे, जिनमे उसने अपने समय की सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डाला और उस अवस्था का अच्छा चित्र खीचा, जिसमें रहकर लोगों का चरित्र वनता और विगड़ता था। विपय उसने वे ही लिये है जो सदा से रोचक रहे हैं, जैसे धन-दौलत एवं रिश्तेदारी अथवा मेल-जोल से उत्पन्न होनेवाली रंजिशें तथा स्पर्धा, एक-दूसरे पर डोरे डालने के वे ढंग जो ऊँचे समाज के स्त्री व पुरुप काम में लाते हैं। एक-दूसरे को फाँसकर विवाह के नाते तक की सारी प्रचलित रीतियाँ उसने वड़ी समझ-वूझ से दिखाने की चेप्टा की है। वे पाठक जिन्हें सभ्य जीवन के सीधे-सादे नित्यप्रति खेले जानेवाले नाटकों में आनन्द मिलता है, ट्रोलोप के उपन्यासों को वहुत पसन्द करते हैं। यद्यपि वह कोई गूढ़ रहस्य अथवा अनोखा सत्य उनके सामने प्रस्तुत नहीं करता, किन्तु उसके उपन्यासों में वहुत से ऐसे पात्रों से हमारी भेंट होती है जिन्हे फिर हम भूलते नहीं। यही कारण है कि इतना समय

बीत जाने पर भी उसके उपन्यासों की माँग कुछ न कुछ बनी रहती है और जब तब उनके नये संस्करण प्रकाशित होते रहते है।

चार्ल्स रीड और "फोटोग्राफ" की प्रणाली

ऐन्टनी ट्रोलोप के ही समान चार्ल्स रीड (Charles Reade) भी उसी वर्ग या जाति का लेखक हुआ है जिसे साहित्यकार नही बल्कि कहानीकार कहना अधिक उचित होगा। रीड (१८१४-१८८४) एक खाते-पीते घराने का लड़का था जो आक्सफर्ड विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के बाद अविच्छात्र नियुक्त हो गया और अ-पराधीन जीवन व्यतीत करता रहा। दूसरे अनेकों सुशिक्षित युवकों के समान उसे जीविका के लिए अपनी लेखनी का सहारा नही लेना पड़ा। जिस समय उसने लिखना प्रारम्भ किया वह प्रौढ़ अवस्था को पहुँच चुका था और लेखक के कर्तव्य तथा रचना के नियमों को भली-भाँति समझ गया था। उसने पहला उपन्यास १८५३ में प्रकाशित किया जिसके पहले वह एक नाटक लिख चुका था और यह अनुभव कर चुका था कि जितने संकेन्द्रण तथा वास्तविकीकरण की आवश्यकता नाटक के लिए होनी जरूरी है वह उसके वश की बात नहीं थी। इसके अलावा स्वभाव से रीड "रोमैंटिसिस्ट" (romanticist) था जो वास्तववाद के काल में साहित्य कला द्वारा अपने भावों तथा कल्पनाओं को साकार करने की चेष्टा करता था। यदि वह डिकेन्स की भाँति समकालीन समाज एवं जीवन में "रोमैंटिक" अंश ढूँढ़ता और उन्हें अपने स्वाभाविक ढंग से "रोमैंटिक" प्रणाली तथा शैली मे व्यक्त करता तो उसे उपन्यास में डिकेन्स की जैसी सफलता मिलती। किन्तु रीड ने समकालीन वास्तववाद की माँग को पूरा करने के लिए तथ्यों एवं लेखबद्ध प्रमाणों को ढूढना और सग्रह करना आरम्भ किया जिन्हें प्रस्तुत करके वह अपनी लिखी हुई बातों को सत्य सिद्ध करता था। इस ढंग तथा ऐसे परिश्रम से लिखे हुए उपन्यासों का कोई न कोई विशेष उद्देश्य होना भी जरूरी हो गया और साथ ही उसके ज्ञान तथा विद्वत्ता ने उपन्यासों को बोझिल बना दिया।

चार्ल्स रीड को इट इज नेवर टू लेट टु मेण्ड (It is Never too late to Mend) और दि क्लायस्टर ऐण्ड दि हार्थ (The Cloister and the Hearth) नामक दो उपन्यासों में विशेष और अच्छी सफलता प्राप्त हुई। इन दोनों उपन्यासों में विषय-प्रतिपादन वास्तविक एवं ओजस्वी है और विद्वत्ता के बोझ से दबा होते हुए भी दि क्लायस्टर (१८६१) उन तीन या चार ऐतिहासिक उपन्यासों में गिना जाता है जो

सर वाल्टर स्काट के बाद सफल हुए। अपने सिद्धान्त के अनुसार रीड ने विषय का बड़ी गहराई में जाकर अध्ययन किया और नवजाग्रति (Renaissance) के काल की अच्छी से अच्छी जानकारी प्राप्त की, हजारों तथ्यों का निर्णय किया, सैकड़ों लेखवद्ध प्रमाणों को जाँचा, तव कहीं यह उपन्यास लिखा और इरैज्मस (Erasmus) को कथापुरुष वनाया।

इसी प्रकार उसने कारागारों के जीवन की छोटी से छोटी वातों को भली-भाँति देखकर और परखकर इट इज़ नेवर टू लेट टु मेन्ड (१८५६) लिखा। उसके ढंग से प्रकट होता है कि वह कदाचित् "फोटोग्राफ़ी" को सच्ची कला मानता था। उसकी भूल यह थी कि वह वास्तविक को यथार्थ अथवा सच्चा भी समझता था जो सत्य नहीं होता।

चाहे हम उसके वर्णन के तथ्यों में दोष न निकाल सकें और न उसे वढ़ा-चढ़ा कर कुछ का कुछ वनाने का दोषी ठहरा सकें, परन्तु फिर भी उसके उपन्यासों का जो प्रभाव हमारे हृदय पर पड़ता है, उसे हमारा मन वनावटी एवं असत्य समझकर वहुधा अस्वीकार कर देता है। कलाकार की दृष्टि में वास्तविक अथवा ठोस और मूर्तिमान् विशिष्ट वस्तु का मूल्य केवल वह अनन्त का संकेत या सुझाव है जो उससे मिलता है। इतिहास और कला के वीच कोई भेद ऐसा अवश्य है जो दोनों के सार का सूचक है और जिसके कारण ही कलाकार ऐतिहासिक रीति एवं क्रम को वड़ी सरलता से समझ लेता है। चार्ल्स रीड की सफलता वास्तव में उसके शिल्प-कौशल की सफलता है, जिसे उसने वड़े परिश्रम के बाद सीखा था और जिस कुशलता का उसने पूरा फ़ायदा भी उठाया।

कहानी कहनेवालों में रीड का महत्त्व इस वात में है कि उसने विभिन्न विषयों पर कहानियाँ लिखीं। किसी ऐसे दूसरे अंग्रेजी लेखक का नाम वताना, जिसने रीड से अधिक विस्तृत क्षेत्र से सामग्री ली हो, कठिन होगा। उसने पन्द्रहवीं और सत्रहवीं शताब्दियों से विषय लिये, उसने ग्राम तथा नगर के जीवन पर कहानियां लिखीं, समकालीन समस्याओं और वहुत से स्थानों की विशेषताओं का भी कहानियों में प्रतिपादन किया। उन दो उपन्यासों के अतिरिक्त, जिनका उल्लेख पहले किया जा चुका है, रीड की कई रचनाएँ अपने विशेष गुणों के कारण प्रसिद्ध है जि।में से दो ऐसी है जिन्हें छोड़ा नहीं जा सकता। एक रचना में उसने कंजर जाति के स्वभाव एवं उसके पैतृक गुणों का वड़ा सुन्दर चित्र दिया है। इस रचना का नाम ए टेरिब्ल टेम्पटेशन (A Terrible Temptation) है। दूसरी ग्रिफ़िथ गान्ट

(Griffith Gaunt) नामक रचना मनोविज्ञान की रीति से डाह के आवेश का विश्लेषण करती है। इन दोनों कहानियों का महत्त्व इसलिए भी कहा जाता है कि रीड ने इनमें समय से पहले ही विज्ञान के कुछ मूल सिद्धान्तों का प्रयोग किया था।

अंग्रेज़ी उपन्यास में रोमांस और वास्तविकता किस प्रकार घुल-मिल गये, कैसे वे सारे अंश जो अठारहवीं शताब्दी में उपन्यास को प्राप्त हुए, उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध काल में धीरे-धीरे उसकी परिभाषा में सम्मिलित हो गये और इस काल के बौद्धिक विकास एवं नैतिक उन्नति तथा विस्तार को मूर्त्तिमान् करने में उपन्यास से कैसे-कैसे काम लिये गये, इन सारी बातों के अध्ययन में जिस लेखक का विशेष महत्त्व है वह जार्ज इलियट (George Eliot) के नाम से प्रसिद्ध है। एक ओर उसके उपन्यास मिसेज़ गैस्केल (Mrs. Gaskell) और चार्ल्स किंग्सले (Charles Kingsley) का सम्बन्ध इस विकास तथा उन्नति से स्पष्ट करते हैं, दूसरी ओर वे बताते है कि कैसे स्वयं उसकी व्यापक सहानुभूति एवं अन्तर्दृष्टि ने और समकालीन सामाजिक तथा व्यक्ति-जीवन की समस्याओं की जानकारी ने उपन्यास को पहले से कहीं अधिक गम्भीर बना दिया। रिचर्डसन (Richardson) और फील्डिंग (Fielding) ने उपन्यास को क्षुद्रता और ओछी बकवास से मुक्त कर दिया था। उनके उपरान्त आनेवाले लेखकों ने उसका हलकापन भी दूर कर दिया था। विषयवस्तु के परिवर्तन के साथ-साथ कलात्मक भेद भी उत्पन्न होते गये थे, जिनके कारण कहानीकला तथा उपन्यास में अन्तर पड़ता गया था।

जार्ज इलियट ने उपन्यास को साहित्य का प्रतिष्ठित अंग बनाने की कोशिश की और अपने उपन्यासों के लिखने में कलात्मक गुत्थियों को सुलझाने का प्रयत्न किया। उसके उपन्यासों ने यह भी सिद्ध किया कि उपन्यास लिखनेवाले को कितनी बड़ी साधना और कितने कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है तब कहीं वह लिखने का अधिकारी होता है। साथ ही उसने यह भी सिद्ध किया कि पाठक में भी, यदि वह कला का उपासक होना चाहता है, लेखक-जैसी गम्भीरता और तपस्या होनी चाहिए। किसी पादरी का चित्र केवल सामाजिक सम्बन्धों के सहित खींचना और उसके धार्मिक विचारों तथा दृढ़ विश्वासों को छोड़ देना, जैसा कि एण्टनी ट्रोलोप ने किया है, जार्ज इलियट के लिए असम्भव था। इसी तरह प्रचलित रीति से कथावस्तु तैयार करके पात्रों को उसमें शतरंज के मोहरों के समान जमा देना और पाठकों के मनोरंजन के लिए उन्हें इधर से उधर चक्कर लगवाना जार्ज इलियट की दृष्टि में तुच्छ काम था। उसके मत के अनुसार उपन्यास लिखनेवाले

के लिए ज़रूरी है कि वह न केवल साधारण आवेगों का प्रभाव दिखाये बल्कि उन महान् अवधारणाओं तथा उत्साहों का भी, जो समाज और व्यक्ति के जीवन को क्षण क्षण पर बनाया और बिगाड़ा करते है। इस समय से पहले मिसेज़ गैस्केल और शार्लाट ब्रान्टी ने अपने उपन्यासों मे ऐसी धारणाओं एवं भावनाओं को स्थान दिया था जो किसी न किसी नैतिक सूत्र से बँधे होने के कारण सामाजिक तथा व्यक्ति जीवन को समरूप करने में समर्थ थी। किन्तु ऐसा करने के लिए और सम्बन्धित-समस्याओं को हल करने के लिए जो ज्ञान एव विस्तीर्ण विचारों का ससार चाहिए था वह जार्ज इलियट ने इस समय अंग्रेज़ी उपन्यास को दिया।

जार्ज इलियट

जार्ज इलियट का अपना नाम मेरियन ऐन इवैन्स (Marian Ann Evans) था। वह एक बड़ी रियासत के मालदार परिचालक की पुत्री थी जिसका जन्म १८१९ में हुआ था। उसके पिता ने बड़े उत्साह से उसे पढ़ाया-लिखाया था; पहले घर पर ही वारिकशायर में और बाद को स्विजरलैन्ड में अच्छे से अच्छे पण्डितों की देखरेख में। जिस काल में उसकी बुद्धि का विकास हो रहा था इगलैण्ड वैज्ञानिक विचारों की उथल-पुथल में पड़ा हुआ था। शिक्षित समाज में धार्मिक विश्वासों पर विवाद होते थे और दिन पर दिन लोगों में श्रद्धा घटती जाती थी। मेरियन पर भी इन विचारों का प्रभाव पड़ा और उसका जगा हुआ चित्त व्याकुल होने लगा।

वह अभी पूरी बीस वर्ष की भी नही हुई थी जब उसने ईसाई धर्म के द्वैतवाद से अपने मन को फेर लिया और १८४२ मे ईसाइयत मे उसका विश्वास समाप्त हो गया। इसी वर्ष उसने स्ट्रास की लिखी हुई ईसा की जीवनी का अग्रेजी भाषा में अनुवाद करना आरम्भ किया, जिसे उसने १८४६ में समाप्त किया। अब उसने वेस्टमिस्टर रिव्यू (Westminster Review) में लेख भेजने शुरू किये और १८५१ में वह उसकी सहकारी सम्पादिका हो गयी। यह पत्रिका उन लोगों की थी जो धार्मिक विचारों का त्याग करके स्वयं सोचते-विचारते थे। उस समय के लगभग सभी विचारशील वैज्ञानिक अथवा विज्ञान के सिद्धान्तों में विश्वास करनेवाले इस पत्रिका से सम्बन्ध रखते थे। मिस इवैन्स का, पत्रिका के ही नाते जान स्टुअर्ट मिल (John Stuart Mill), हर्बर्ट स्पेन्सर (Herbert Spencer), जार्ज हेनरी लेविस (George Henry Lewis) और दूसरे कई स्वतंत्र विचार के लोगों से साक्षात् हुआ। यद्यपि डार्विन (Charles Darwin)

का मत अभी प्रमाणित रूप में सामने नहीं आया था, फिर भी पत्रिका में जो लेख प्रकाशित होते थे वे धार्मिक लोगों के लिए उद्वेगकारी होते थे। मिस इवैन्स के सम्बन्ध ने विशेष करके लोगों को पत्रिका का शत्रु बना दिया था।

हर्बर्ट स्पेन्सर ने जब मिस इवैन्स का अपने मित्र जार्ज हेनरी लेविस से परिचय कराया तो स्वप्न में भी यह नहीं सोचा था कि एक दिन वे दोनों मित्र होंगे और उनकी मित्रता एक दूसरे के लिए प्रेम में परिवर्तित हो जायगी। लेविस की पत्नी पागल अवश्य थी पर जीवित होने के कारण इन दोनों में विवाह होने की कोई सम्भावना नहीं थी। मिस इवैन्स और लेविस दोनों ही दार्शनिक तथा नीतिज्ञ थे। उन्होंने अपनी रीति से इस समस्या को हल किया और कानून के विरुद्ध होते हुए भी साथ रहने लगे। आश्चर्य तो यह है कि समाज ने इस नाते को स्वीकार भी कर लिया। इस नाते का बड़ा गहरा प्रभाव मिस इवैन्स के साहित्यिक जीवन पर पड़ा। यद्यपि लेविस कहानी तो ऐसी ही वैसी लिखता था किन्तु समीक्षक वह ऊँचे पाये का था और विज्ञान के विषयों पर तो वह समकालीन लेखकों की पहली पंक्ति मे रखा जाता था। वह गूढ, नीरस तथा शुष्क विषयों पर बड़े रोचक "रोमैन्टिक" ढग से लिख सकता था। यहूदी जाति की विशेषताएँ भी उसमें वे सब थीं जो लेखक को सुन्दर शैली एवं साहित्य-कला का ज्ञान देती है और उसकी रचनाओं में लालित्य उत्पन्न करती है। इन विशेषताओं के होते हुए यह सम्भव नही था कि लेविस का अच्छा और बुरा प्रभाव मिस इवैन्स पर न पड़ता। जो स्थिति उनके सहवास से उत्पन्न हो गयी थी और उससे पहले ईसाई धर्म छोड़ देने से जो उसके विरुद्ध धार्मिक लोगो मे हलचल मची थी, इन दो महत्त्वपूर्ण बातों के कारण उसे सदा सचेत रहना पड़ता था, जिसका आयास उसके स्वभाव को विकृत कर सकता था। किन्तु मिस इवैन्स के सामने एक ऐसा आदर्श था जो उसको इस दशा में बल देता और प्रसन्नचित्त रखता था। उसने इरादा कर लिया था कि वह अपने जीवन से सिद्ध करेगी कि स्वतंत्र विचार और ईसाइयत को छोड़ना व्यभिचारी होना नही है। लडकपन से ही उसके विचार नीति एवं सदाचार के सम्बन्ध में बडे दृढ तथा अटल थे, और अब इन दोनों सामाजिक विरोधो के कारण वह और भी सचेत रहती थी और आदर्श को सदा सामने रखती थी। उसने १८५७ में लिखा था—"यदि मै पाँच वर्ष और जीवित रह जाऊँ तो मेरे जीवन की साक्षात् फल-प्राप्ति उस सत्य एव सद्भाव के रूप में, जो मैं खोजती हूँ, ऐसे नकारात्मक प्रतिबन्ध से कहीं अधिक मूल्य की होगी जो मैं लोगों की भावना को ठेस न लगाकर प्राप्त करती।

प्रथम निर्माणकाल के उपन्यास

इस बात का सबसे पहला संकेत कि शायद मिस इवैन्स उपन्यास लिखना प्रारम्भ करे, अक्टूबर १८५६ के वेस्ट-मिस्टर रिव्यू के एक लेख में मिला था, जो उसने स्त्रियों के उपन्यासों की समीक्षा में लिखा था। जनवरी १८५७ में उसकी पहली कहानी ब्लैकवुड्स मैगज़ीन (Blackwood's Magazine) में प्रकाशित हुई। उसी वर्ष उसने दो और कहानियाँ लिखीं और १८५८ में तीनों को सीन्स फ्राम क्लैरिकल लाइफ़ (Scenes from Clerical life) के नाम से प्रकाशित किया। इन कहानियों में ऐसे पादरियों के विचार और भावनाएँ चित्रित हैं, जिन्हें डिसेन्टर्स (Dissenters) कहते थे और जो धार्मिक मतभेद एवं स्वतंत्र विचारों के कारण स्मालेट (Smollet) के समय से दम्भी तथा पाखण्डी के रूप में उपन्यासों में दिखाये जाते थे। जार्ज इलियट ने अपनी कहानियों में इनके साथ ऐसा अच्छा न्याय किया कि बहुत से पाठक पुस्तक को किसी डिसेन्टर की रचना समझते रहे। सन् १८५९ में उसने एडम बीड (Adam Bede) नामक अपना प्रथम उपन्यास प्रकाशित किया और उसके बाद अगले वर्ष ही दि मिल आन दि फ्लास (The Mill on the Floss) और १८६१ में साइलस मार्नर (Silas Marner) प्रकाशित किया। इन तीनों उपन्यासों का बड़ा आदर हुआ और जार्ज इलियट को श्रेष्ठ उपन्यासकारों में गिना जाने लगा।

मिसेज़ गैस्केल की भाँति इन उपन्यासों की कथावस्तु में जार्ज इलियट ने इंग्लैण्ड के इतिहास का वह काल लिया है, जब वर्ड्स्वर्थ (Wordsworth) और कोलरिज (Coleridge) अपनी युवावस्था से पार हो रहे थे और वह काल भी दिन पर दिन बड़ी शीघ्रता से बदल रहा था। किन्तु, मिसेज गैस्केल के ढंग से विपरीत, जार्ज इलियट ने अपने उपन्यासों की सामग्री अपने अनुभवों में केन्द्रित रखी और अपने पात्र उस जीते-जागते संसार से लिये जिसमें न तो केवल देवता बसते थे न केवल दैत्य। उस संसार में स्त्री और पुरुष न तो देवदूतों के जैसे उज्ज्वल थे न शैतान जैसे काले, बल्कि भलाइयों और बुराइयों के मिले-जुले कुछ भूरे से लोग थे जिनके जीवन में सुख और दुःख, हँसी और रोना, एक ही दिवस के अनुभव हो सकते थे। इस धूप-छाँह के संसार को वह समझती और प्यार भी करती थी और इसी संसार में अच्छा जीवन विताने में वह मनुष्य की सारी करतूत भी समझती थी।

ऐडम वीड

ऐडम वीड की कथावस्तु एक कहानी पर आधारित है जो जार्ज इलियट ने अपनी मौसी से सुनी थी। यह मौसी "मैथोडिस्ट" (Methodist) गिरजे की एक कट्टर क़िस्म की उपदेशक थी, जिसको एक युवती ने कारागार में बच्चे के वध कर डालने का वृत्तान्त बताया था। उपन्यास की डाइना मारिस (Dinah Moris) का मूल खाका यही मौसी थी। ऐडम वीड की कल्पना उसने अपने पिता के चरित्र पर आश्रित की है और मिसेज़ पुआयज़र (Mrs. Poyser) कहा जाता है बहुत कुछ जार्ज इलियट की माता से मिली है। यह निश्चित है कि वास्तविकता लाने के लिए वह सदा अपने घर तथा क़सबे के लोगों एवं उनके जीवन का मूल चित्र बनाकर अपने उपन्यासों के वर्णन लिखती थी। ऐडम वीड में नित्य-प्रति का जीवन ठीक उसी प्रकार चलता है जैसे कहीं भी वारिकशायर अथवा डर्बी-शायर में सामान्य लोग देखते हैं। उस जीवन के चित्र में न कोई विशेष प्रकार से उत्पन्न की हुई स्थितियाँ हैं, न अलग से साधारण बातों के सम्बन्ध में गहरे विचार प्रकट किये जाते हैं, और न सुप्त-चेतन के प्रवाह में उत्तेजना के बाद की म्लानता दिखाई जाती है।

ऐडम वीड में जो जीवन चित्रित है वह वही साधारण दुःख-सुख, प्रेम और आनन्द, व्यंग्य तथा करुणा से भरा हुआ जीवन है, जो प्रत्येक मनुष्य प्रातःकाल प्रारम्भ करता और भोगता है। हेटी से ऐडम का प्रेम, डानीथार्न का हेटी को प्रलोभन देना तथा उसका सिर फिरा देना, हेटी का दुःखमय जीवन, उसके अपराध का निर्णय तथा संशय की अवस्था, डानीथार्न का पश्चात्ताप, अन्तिम क्षण की क्षमा और फिर ऐडम का डाइना मारिस से विवाह, ये सब बातें साधारण किन्तु हृदयग्राही होने के कारण सर्वप्रिय हैं क्योंकि किसी के भी जीवन में उठ सकती हैं। कला का महत्त्व यह है कि वह इन अप्रत्यक्ष तथा गुप्त सम्भावनाओं को जीवित करके हमें अनुभव कराती है और उस अनुभव को प्रकट करने में बहुमूल्य एवं विस्तृत कर देती है। सुख-दुःख को इस प्रकार व्यवस्थित कर देने से कलाकार संभ्रान्त भावना-संघर्ष को शुद्ध करता और बेजोड़ अथवा असंगत आवेगों को दूर कर देता है। उपन्यासकला का आधार मनुष्य-जीवन है, जिसकी सामान्य गति को दुःख-सुख, प्रेम, हास्य, करुणा इत्यादि भावनाएँ गामक बल देती हैं। इतनी सामग्री से कोई अर्थपूर्ण कथावस्तु नहीं बनायी जाती। उपन्यासकार में मनुष्य को पहचानने तथा

उसके चरित्र के वे गुण पृथक् कर लेने की योग्यता होनी चाहिए जो उसकी आत्मा के विशेष लक्षण हैं। साथ ही उसमें आचारिक तथा आध्यात्मिक एवं भौतिक सौन्दर्य से प्रभावित होने की क्षमता होना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इस क्षमता के बिना वह कोई महत्त्व की बात कहीं देख ही नहीं सकता। जार्ज इलियट के मतानुसार उपन्यास लिखनेवाले में नैतिक निश्चय और अपने अनुभव से प्राप्त किये हुए सत्य में दृढ़ विश्वास का होना भी बहुत जरूरी है, इसलिए कि बिना इस निश्चय तथा विश्वास के सुख और दुःख, जीवन और संसार, हानि और लाभ कोई भी सार नहीं रखते और मनुष्य एक पतंगे के समान निर्बोध, केवल इन्द्रियों के वश में इधर-उधर टक्करें मारता फिरता है। ऐडम बीड की लोकप्रियता आज भी इन्हीं सब गुणों के कारण है और अंग्रेजी भाषा जब तक जीवित है बनी रहेगी।

दि मिल ऑन दि फ्लॉस

दि मिल ऑन दि फ्लॉस (The Mill on the Floss) में स्वभावों की असमता का बहुत सुन्दर चित्रण है। टाम और मैगी पनचक्की के मालिक, मिस्टर टुलिवर के बच्चे हैं जो साथ-साथ फ्लास नदी के किनारे के स्थानीय रंगों से सुशोभित डवकोट में रहते और बड़े होते हैं। टाम बढ़कर एक नीरस, कुछ सूखा-सा युवक हो जाता है, जिसकी न तो बुद्धि न कल्पना एक संकुचित सीमा से ऊपर निकलती है और न जो अपने बँधे-टँके सदाचार सम्बन्धी मत को ढील देकर दूसरे के आशय को समझ सकता है। दूसरों पर नियम लगाने का उसे खास शौक है। इसके विरुद्ध मैगी बड़ी बुद्धिमान्, न्यायशील, सूक्ष्मग्राही, कलाप्रेमी और प्रत्येक गुण में अपने भाई से अधिक आदर के योग्य थी। स्वभाव की इस असमानता एवं स्थानीय असंगतियों ने मैगी का जीवन दुःखमय कर दिया, यहाँ तक कि कहानी दुःखान्त हो गयी। एक ओर भाई की नासमझी और सहानुभूति की कमी ने मैगी के हृदय में पग-पग पर भ्रातृभाव को ठेस लगायी, और दूसरी ओर उसने घर के वातावरण में मैगी की बौद्धिक उन्नति एवं भावना-विकास के प्राकृतिक मार्ग को रूँधकर उसकी आत्मा की भूख को मार दिया। किस प्रकार मैगी का जीवन भावना-संघर्ष और स्वाभाविक प्रेरणा की हलचल में फँसा हुआ किनारे लगता है और चट्टान पर टकराकर चूर-चूर हो जाता है, यही इस उपन्यास की दुःखान्त कहानी है।

मैगी को कौन समझता और कौन नहीं समझता है, यह बताने में उपन्यासकार ने कई गहरे मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर प्रकाश डाला है। दुःखमय कहानी में कुछ

ऐसे स्थान भी आते है जहाँ हम आनन्द से हँसते भी है और दुःख को भूल जाते है। जिन पात्रों के ससर्ग मे ऐसा होता है वे अमुख्य तो है किन्तु स्कॉट के ऐसे पात्रों की भाँति निर्णीत है तथा उनके लक्षण निर्धारित किये जा सकते है और डिकेन्स के ऐसे अमुख्य पात्रो के समान हँसमुख तथा मन बहलानेवाले है। जार्ज इलियट थैकरे (Thackeray) से किसी बात में नही मिलती, किन्तु डिके स (Dickens) से उसने सूक्ष्म निरीक्षण सीखा और अपने सामने की बातो से प्रभावित होकर उन्हें उपन्यासो की सामग्री बनाया। परन्तु जहाँ डिकेन्स के यहाँ भावुकता की अति हो जाने से रसिकता का आधिक्य तथा दुर्बलता का दोष उत्पन्न हो गया है, जार्ज इलियट के बुद्धिप्रधान एव नीतिमान् स्वभाव ने ऐसे कोई दोष कथावस्तु में आने नही दिये है और न सहानुभूति से घुलकर वह पानी-पानी होती है। जब मैंगी टुलिवर ने अपने व्यक्तिगत आनन्द के लिए सामाजिक बन्धन तोड़ने से इन्कार किया, उस समय इलियट स्वय अपने जीवन की समस्या के अति निकट पहुँच गयी थी, किन्तु उसने अपने को पात्रों से अलग रखकर केवल मनुष्य की प्रारब्ध एव उसकी कठिनाइयों को स्वीकार करके प्रसग बदल दिया।

रामोला

इस प्रथम निर्माण-काल की ये चारों रचनाएँ सीधे-सादे जीवन की कहानियाँ है जिनके पात्र सामान्य प्रकृति के लोग है। इसी काल में जार्ज इलियट एक विशेष प्रकार का उपन्यास लिखने की तैयारी कर रही थी, जिसका नाम उसने रामोला (Romola) रखा और जिसे १८६३ में प्रकाशित किया। जैसा वह कहा करती थी, उसने यह उपन्यास युवावस्था में लिखना प्रारम्भ किया था और जब वह समाप्त हुआ तो उस पर बुढापा आ गया था। उसे लिखने की तैयारी मे उसे अंग्रेजी, फ़्रांसीसी तथा जर्मन और इटैलियन भाषाओं में पाँच सौ से अधिक पुस्तके पढ़नी पड़ी थी और सैकड़ों समस्याओ पर गहरा विचार करना पड़ा था।

इस उपन्यास की कहानी इटली की नवजागृति से सम्बन्ध रखती है और उसकी पृष्टभूमि मे पन्द्रहवी शताब्दी का फ्लोरेन्स और उसका वातावरण है। जगत्-विख्यात बहुत से लोग, जैसे सावोनारोला, मैकियावेली, चार्ल्स अष्टम, मेडीची, इस उपन्यास मे आते है और उनका चित्रण बड़ी होशियारी से किय' गया है। फ्लोरेन्स की दशा तथा उसकी सजधज का वर्णन बड़ा सुन्दर है। रामोला एक अन्धे वृद्ध विद्वान् की पुत्री है जिसकी पितृ-भक्ति और आत्म-समर्पण मे विघ्न डालने

को टीटो मेलिमा नामक एक यूनानी कहीं से उत्पन्न होता है और रामोला के जीवन में कड़ी परीक्षाएँ आकर उसकी सद्भावना एवं सदाचार को सिद्ध करती हैं। टीटो मेलिमा (Tito Melema) उन यूनानी लोगों में से था जो इटली में शरण लेकर अध्यापक का काम करते और विज्ञान तथा कला के प्रचार में योग देते थे। इस यूनानी के चरित्र का चित्रण करके जार्ज इलियट ने उपन्यास में अनोखा काम किया है। उसका चरित्र बहुत ही पेचीदा, बड़ा ही आकर्षक तथा मोहित करनेवाला है। साथ ही टीटो अत्यन्त घृणित एवं तिरस्कार करने योग्य मनुष्य भी है जिसे न उदारता छू गयी है, न कृतज्ञता। कोरी स्वार्थपरता से वह अपने साथियों, मित्रों, उपकार करनेवालों, यहाँ तक कि अपनी पत्नी तक के साथ विश्वासघात करता है और अन्त में वह उस मनुष्य के हाथों मार डाला जाता है जिसने उसे अपना पुत्र कहकर पाला-पोसा था।

टीटो मेलिमा जैसे मनुष्य इटली के इस नवयुग में उस विशेष प्रकार के वातावरण और उस नयी स्वतंत्रता ने उत्पन्न किये थे, जो इस जाग्रति के काल में मनुष्य-जीवन को बदल रही थी। जार्ज इलियट ने फ्लोरेन्स एवं इटली के इस वातावरण और उन सारे बलों तथा प्रभावों का अच्छी प्रकार अध्ययन किया और ऐसे मनुष्य की कल्पना की जो उस वातावरण में उन प्रभावों के बीच उत्पन्न हो सकता था। टीटो मेलिमा उसी कल्पना का फल है और उसका चरित्र तथा स्वभाव एक प्राकृतिक सत्य है। वातावरण एवं प्रभावों के अध्ययन में उपन्यासकार ने कोई वस्तु छोड़ी नहीं है, कला और दर्शन, उत्साह और प्रेम ने जो कुछ इस काल में निर्माण किया था, उसने वह सब अनुभव किया और बड़ी सुन्दर रीति से उसका वर्णन भी किया है।

जार्ज इलियट की सूक्ष्म चेतना तथा ज्ञान और मानवप्रकृति को समझने की योग्यता ने उपन्यास को ऐसी रचना का महत्त्व दिया है जो अंग्रेजी में ही नहीं, बल्कि शायद सभी भाषाओं में अद्वितीय है। स्वयं जार्ज इलियट की रचनाओं में भी रामोला की विशेषता इस बात में है कि उसमें रहस्यों तथा गूढ़ार्थ बातों को लाक्षणिक रूपकों द्वारा स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है, जिसका बड़ा सुन्दर उदाहरण वह स्वप्न है, जिसमें एक ऐसी नदी बहती है जिसका पानी पानी नहीं बल्कि बराबर खुलते चले जानेवाले प्राचीन चर्मपत्र हैं, जिन पर लिखी हुई रचनाएँ मानवसभ्यता के गौरव का दर्शन कराती हैं। ऐसा ही वह स्वप्न है जिसमें उस विवाह का वर्णन किया गया है जिसमें पुरोहित का चेहरा मौत का चेहरा बन जाता

है। ऐसे स्थानों पर वड़ी सुन्दर तथा काव्यात्मक शैली का प्रयोग किया गया है और कल्पनाशक्ति ने भी खूब चमत्कार दिखलाये है।

मिड्लमार्च

रामोला के वाद के उपन्यासों में लेविस का प्रभाव जार्ज इलियट की कथावस्तु और लेखन-प्रणाली पर पड़ता हुआ दिखाई देता है और उपन्यासों में पाण्डित्य की मात्रा वढ़ती जाती है। मिड्लमार्च (Middlemarch), जो १८७२ में प्रकाशित हुआ, मनोवैज्ञानिक निरीक्षणों तथा दूसरे प्रकार के पाण्डित्य से भरा हुआ है। इसमें संदेह नही कि उपन्याम अपने दूसरे गुणों के कारण वहुत ऊँची श्रेणी का है और उसमें जार्ज इलियट के प्रौढ़ विचारों एवं अनुभवों के साथ इंग्लैण्ड के कसबों तथा गाँवों में रहनेवाले बड़े आदमियों का जीवन और आपस के सम्वन्धों की पेचीदगियाँ वड़े कलात्मक ढंग और गहरी सूझ-बूझ से दिखलायी गयी है। जो स्थितियाँ और तथ्य कथावस्तु को दिलचस्प वनाते हैं, जैसे कि कर्तव्य के विचार से एक युवती का एक निकम्मे तथा स्वार्थी मनुष्य के साथ विवाह और उसके परिणाम की दुर्गति और विरक्तता। किन्तु सारा उपन्यास एक सा दिलचस्प नही है। डारोथी ब्रुक (Dorothea Brooke) और मिस्टर कसावाँ (Mr. Casaubon) की कहानी जैसी दिलचस्प है वैसा कोई दूसरा प्रसंग दिलचस्प नहीं है और जो गहरी वातें उसके सम्वन्ध में कहीं गयी हैं वे वहुत ही हृदयग्राही है।

इस उपन्यास का संसार वहुत विस्तृत है और वहुत से दिलचस्प स्त्री-पुरुष उसमे वसते है। मिसेज़ कैंडवैलेडर जैसी हास्यपूर्ण स्त्री, सर जेम्स चिटम जैसा नियत आचार-विधि का पालन करनेवाला पुरुप, मिस्टर ब्रुक जैसा विश्वास में ढुलमुल तथा सवसे सहमत होनेवाला विचारशील मनुष्य, जिसकी राजनीति और वोट का किसी को पता न चल सके, और धार्मिक ठगी में निपुण मिस्टर वुलस्ट्रोड, सव इसी संसार में रहते और अपने-अपने काम करते हैं।

डेनियल डेरोंडा

डेनियल डेरोंडा (Daniel Deronda) नामक उपन्यास में जो इसके वाद १८७६ मे प्रकाशित हुआ, लेविस का प्रभाव पूर्णरूप में दिखाई देता है। पहले तो उसका प्रमुख पात्र ही यहूदी है और दूसरे उसमें यहूदी जाति का इतिहास, धार्मिक

विश्वास, उसकी विद्या तथा ज्ञान और जाति के आदर्श कुछ इस प्रकार बिना प्रयोजन के पुस्तक में भरे गये हैं कि वे लेखक की अपनी प्रणाली से अलग क्षेपक से जान पड़ते हैं और कथावस्तु के प्रभाव की एकता को तोड़ते हैं। इन क्षेपकों के बोझ के कारण यह उपन्यास बहुत अप्रिय रहा, यद्यपि उसका मुख्य भाग उतना ही अच्छा है जितना किसी श्रेष्ठ उपन्यास का होता है। उस युवती के चरित्र का जो अपने माता-पिता की सहायता के हेतु एक ऐसे धनवान् मनुष्य से विवाह करती है जिसका न तो वह सम्मान कर सकती है और न जिससे प्रेम कर सकती है, ऐसे पुरुष के चरित्र का जो पत्थर के समान कठोर और उसी के जैसा ठंडा या उदासीन है, तथा ऐसे ही कई प्रकार के लोगों के परस्पर सम्बन्धों का इस उपन्यास में भी जार्ज इलियट ने बहुत सुन्दर चित्रण किया है और ऐसा करने में कई नीति-शास्त्र की जटिल समस्याएँ उठायी है। अंग्रेजी उपन्यास के इतिहास में कभी भी किसी श्रेष्ठ लेखक ने इससे अधिक गहराई में पैठकर ऐसी जटिल समस्याओं को नहीं देखा था।

जार्ज इलियट की लेखन-प्रणाली एवं शैली उसके मुख्य उद्देश्य तथा उसकी प्रवृत्तियों के अनुरूप है। प्रत्येक वाक्य की पूरे प्रयास के साथ रचना की गयी है, प्रत्येक विपरीत भावना का अच्छी तरह निरीक्षण किया गया है, जो घटना एवं प्रसंग प्रभाव को बढ़ाते है उनका वर्णन बड़ी सावधानी से किया गया है, और हँसी की प्रत्येक बात इस प्रकार कही गयी है कि उसका मिला-जुला उलटा रूप साथ ही दुःखमय जीवन की याद दिला देता है। प्रारम्भिक काल की रचनाओं में भावना तीव्र है और साधारण दुःखद परिस्थितियाँ स्वाभाविक रीति से उपस्थित की गयी है। सीन्स फ्राम क्लैरिकल लाइफ (Scenes from Clerical Life) का संसार बहुत संकीर्ण है और उसमे जो कुछ होता है वह भी कुछ विशेष महत्व नहीं रखता। इसी कारण इन उपन्यासों की कथावस्तु न पेचीदी है न उसकी घटनाएँ किसी केन्द्रित बल को नाटक के ढग से प्रकाशित करती है। सामान्य जीवन का शान्तिमय दृश्य जिसमें स्वाभाविक भावो का सुन्दर चित्रण किया गया है, पग-पग पर हमें उस दुःखद ठिकाने की सूचना देता है जहाँ उपन्यास हमें धीरे-धीरे लिये जा रहा है।

जार्ज इलियट की लेखनप्रणाली तथा शैली

यह लेखनप्रणाली साइलस मार्नर (Silas Marner) और ऐडम बीड

(Adam Bede) में बड़े सुन्दर तथा गम्भीर प्रभावों को उत्पन्न करने के लिए प्रयोग में लायी गयी है। इन उपन्यासों का संसार भी उतना संकीर्ण नहीं है और कलाकार को अवसर भी खूब-खूब मिले है। देहाती जीवन को बड़ी गहराई में जाकर कलाकार ने देखा है और उसके सुख-दुःख को दर्शाया है। वास्तविकता के साथ-साथ कला का चमत्कार भी खूब दिखाई देता है। शैली ने प्रत्येक अवसर पर कमाल दिखलाया है और कविता की परिपूर्णता प्राप्त की है। कथावस्तु को जिस गुण की जहाँ आवश्यकता हुई है वही भाषा तथा शैली ने अपना काम कर दिखाया और जिस ऊँचाई पर अथवा जिस गहराई में विचार और मन ने जाना चाहा है, भाषा और शैली ने साथ दिया है।

मनोवैज्ञानिक और नीतिज्ञ

जार्ज इलियट केवल प्रेक्षक नहीं है वल्कि मनोवैज्ञानिक तथा नीतिज्ञ भी है। साधारण वास्तविकता से ही उसे संतोष नहीं होता। वह जीवन-नाटक के नेपथ्य में प्रवेश करके उन शक्तियों का निरीक्षण करती है जो मनुष्य को कठपुतली के समान नचाती रहती है। वैश्लेषिक मनोविज्ञान के सिद्धान्तों के अनुसार वह अपने उपन्यासों के पात्रों का सूक्ष्म निरीक्षण करती है। जहाँ उसका अपना अनुभव पर्याप्त नहीं होता वहाँ वह अपने ज्ञान और अध्ययन से लाभ उठाती है। उसने उस विस्तृत साहित्य का अध्ययन किया था जिसमें लोगों के दोषों, अपराधों तथा पापों का अंगीकार प्रमाणित ढंग से वर्णित है। यही कारण है कि वह गुप्त एवं अन्तःस्थ जीवन की वातों को ऐसी स्पप्ट रीति से दर्शाती है। उसके उपन्यासों मे विलक्षण तथा अनोखे वर्णन वे हैं जिनमें वह अपने पात्रों की मनोवृत्ति का हेर-फेर एवं निर्णयों और परिणामों के रूप-रूपान्तरों का वर्णन करती है और उनके व्यक्तित्व की सफलता तथा पराजय एक ऐसे अभिनय में दिखाती है जिसमें वह पात्र अकेला ही होता है। व्यक्तिजीवन को ही वह इस प्रकार नही देखती वल्कि यह भी दर्शाती चली जाती है कि उन निर्णयों तथा परिणामों का प्रभाव जाति और समाज के ऊपर क्या होता है और नीतिशास्त्र कहाँ तक उनका साथ देता है। टीटो की धर्महीनता तथा उसका पतित होना रामोला में, डारोथिया की पराजय एवं लिडगेट की असफलता मिड्लमार्च में, ग्विनडालेन हालेथ का मानभंग डैनियल डिरोंडा में; ये सव नीतिशास्त्र के विरुद्ध कार्य करने के परिणाम है जो उतने ही निश्चित हैं जितना अग्नि का जलाना अथवा वायु का वेग से उखाड़ फेंकना।

प्रकृति के नियमों का उल्लंघन नीति-विरुद्ध सिद्ध करना उसका एक उद्देश्य था और वह अपने उपन्यासों में संसार की प्रत्येक घटना को नीतिविद्या से आँकती रही। राजनीति अथवा सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं को उसने अपनी पुस्तकों में कोई विशेष स्थान नहीं दिया। नीतिशास्त्र के सिद्धान्तों को लेकर उसने यह दिखाने की चेष्टा की कि कैसे नियमों के अनुकूल अथवा विरुद्ध होने से चरित्र की उन्नति अथवा नाश होता है, किस प्रकार एक छोटा-सा दोष या अवगुण दुःखों का पहाड़ सिर पर गिराता और मृत्यु के मुँह में पहुँचा देता है। साथ ही वह यह भी दर्शाती है कि दुःख सहने और प्रायश्चित्त करने से किस प्रकार व्यक्ति और संसार सिद्धि तथा पूर्णता प्राप्त करता है और एक मनुष्य के दूसरों के लिए आत्मसमर्पण करने से मनुष्यजाति को प्रेरणा और स्फूर्ति मिलती है। डाइना मारिस के मुख से वह कहलाती है—"दूसरों की सुविधा का विचार न करके केवल अपना ही स्वार्थ तथा हित चाहना उस आकांक्षा की जड़ है जो मनुष्य को उस व्यथा से छुटकारा पाने की ओर प्रेरित करती है जिससे सारा संसार पीड़ित है।" "यह इस लिए कि जो लोग दुःख सहते और जीवित रहते हैं वे कभी-कभी मुक्ति के साधन होते हैं।" यही वह आनन्द है जिसके कारण जार्ज इलियट पाप को भी पारितोषिक अथवा प्रतिफल मानती है। जिस नीति में मनुष्य की सेवा पर इतना बल दिया गया है, जिसमें इस सेवा को सबसे श्रेष्ठ गुण बताया गया है, उस नीति को हम कुछ भी समझें, जिन उपन्यासों में ऐसी नीति पर बल दिया गया है उन्हें हम कला की दृष्टि से कितना भी अच्छा और बुरा कहें, किन्तु इसमें संदेह नहीं कि जार्ज इलियट की रचनाएँ उद्देश .पूर्ण कहानी-साहित्य का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। इलियट के विचार बहुत गम्भीर और उसके सदाचार सम्बन्धी सिद्धान्त बहुत ऊँचे थे। उसके उपन्यासों के सब से अच्छे तथा जीवित पात्र वे हैं जो अपना जीवन किसी ऊँचे आदर्श को पाने की चेष्टा में सदा ,लगाये रहते हैं या किसी महत्त्वपूर्ण आकांक्षा के प्रभाव में कार्य करते हैं।

जार्ज इलियट की रचनाओं ने सिद्ध कर दिया कि अंग्रेजी उपन्यास केवल मनोरंजन के लिए नहीं लिखे जाते, बल्कि वे साहित्य-कला के गम्भीर से गम्भीर आदर्शों को फलीभूत करने के साधन भी होते हैं। जार्ज इलियट ने अपनी खुली आँखों से संसार को देखा तथा जीवन की समस्याओं पर मनन किया और जो परिणाम निकाला उसे अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया। प्राचीन यूनानी नाटक घोषित करते आये हैं कि जब कभी अपकृत्य एवं अन्याय का अपराध होता है तो

पृथ्वी की तथा अंधकार की शक्तियाँ अनेकों रूप धारण करके उठ खड़ी होती हैं और बदला लेती है। जार्ज इलियट के उपन्यासों की चेतावनी है कि जो मनुष्य आँधी बोता है उसे बवण्डर काटने को तैयार रहना चाहिए क्योंकि यही प्रकृति की नीति है।

जार्ज इलियट ने अंग्रेजी उपन्यास को जो सामग्री दी वह किसी दूसरे उपन्यास-कार ने कभी नही दी थी। ऐडम बीड (Adam Bede) और दि आरिजिन आफ़ स्पिशीज (The Origin of Species) किसी संयोग से अकस्मात् एक ही वर्ष मे प्रकाशित नहीं हुए थे। जार्ज इलियट और चार्ल्स डार्विन दोनों उन्नीसवीं शताब्दी के वैज्ञानिक विकास के अंग थे, जैसे गेटे तथा कामटे और टेन उसके अंग थे। जिस प्रकार हर्बर्ट स्पेन्सर ने डार्विन के सिद्धान्तों का नीतिशास्त्र तथा समाजविज्ञान की व्याख्या करने मे प्रयोग किया, उसी प्रकार कामटे ने उन्हे लेकर अपना इतिहास-विज्ञान स्थापित किया। जार्ज इलियट ने कामटे के नैतिकविज्ञान की अपने अध्ययन तथा विचारों के द्वारा व्याख्या की और उसे सुधारकर तथा अपना बनाकर उपन्यासों में उसका निर्णय किया। वैज्ञानिकों के समान वह केवल घटना और उसके प्राकृतिक नियम पर अपनी बुद्धि के सूक्ष्मदर्शक यन्त्र तथा विच्छेदनी का प्रयोग करके मनुष्यो के हृदय एवं मन को हमारे सामने स्पष्ट करके दिखलाना चाहती है। उसके सिद्धान्त के अनुसार चरित्र स्थिर नहीं, बल्कि उद्विकासी होता है जो अच्छे और बुरे कामों से बनता और बिगड़ता रहता है और अपने बल से सदाचार तथा दुराचार की प्रेरणा देता है। मनुष्य का कोई भी गुण सद्गुण कहे जाने योग्य नही होता जब तक वह अच्छे कामों के रूप में प्रकट न हो गया हो। "कल जो किया था वह भूतकाल के रूप में प्रेरणा है और आज का किया भविष्य बनकर हमे आगे खीचता है, इस प्रकार हमारी कामनाएँ वास्तव में हमारी वे स्मृतियाँ हैं जिन्हे हम भूले नही हैं।"

जार्ज इलियट के जैसे उपन्यास बिना उसी की सी प्रतिभा और पाण्डित्य के लिखना सभव नही, और ये दोनो ही बाते सबके वश की नही होतीं। साथ ही लोगों को यह भी मालूम हो गया था कि मनोवैज्ञानिक प्रणाली कितनी सीमित तथा सकीर्ण है ओर उस पर लिखित उपन्यासों के पाठक कितने कम होते है। इन्हीं कई कारणों से जार्ज इलियट का अनुकरण लोगों ने नही किया, यद्यपि कुछ उपन्यास-कारों ने मनोविज्ञान तथा दार्शनिक विचारो का उपयोग उसी की भाँति अपनी रचनाओं में किया और सफलता भी प्राप्त की। गृहस्थ जीवन की सामग्री लेकर

जो सीधे-सादे उपन्यास लिखे जाते थे उन्हीं की माँग थी। रोमांस अथवा ऐतिहासिक उपन्यास का प्रकाशन कठिन हो गया था। घरेलू बातों के उपन्यास, जिनमें प्रेम तथा बिरादरी के संघर्ष का वर्णन ही बहुत पसन्द किये जाते थे। ऐन्टनी ट्रालाप की धूम थी और सारे अंग्रेजी साहित्य पर पिछले पचास वर्षों में उपन्यास छा गया था।

सन् १८८० में जब जार्ज इलियट की मृत्यु हुई तो लोग घरेलू विषयों के उपन्यासों से उकताने लगे थे। यूरोप और अमेरिका में "कहानी साहित्य की क्रूर छाया" की चर्चा होती थी और इंग्लैंड में लोग "घिसे हुए विषयों" को उपन्यास के सम्बन्ध में आपत्ति का संकेत समझते थे। बहुत से लोग "नयी कथावस्तु" को असम्भव मान चुके थे। एक उपन्यास की कुछ बातें दूसरे उपन्यास की सामग्री में सम्मिलित करके तीसरी कथावस्तु तैयार करना सम्भव समझते थे। चारों ओर शिथिलता के लक्षण दिखाई देने लगे थे। जो नये प्रयोग किये जा रहे थे उनसे भी कोई विशेष लाभ होता दिखाई नहीं पड़ता था। ऐसे समय में जिन उपन्यासकारों ने नवीनता उत्पन्न करके अंग्रेजी उपन्यास को ऊँचे स्थल पर स्थापित रखा वे इस शताब्दी के चतुर्थ चरण के श्रेष्ठ लेखक जार्ज मेरिडिथ (George Meredith) और टामस हार्डी (Thomas Hardy) थे।

अध्याय ११

उन्नीसवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में अंग्रेजी उपन्यास

तत्त्व की खोज मे सदा रहने के कारण जार्ज इलियट को मनुष्य-जीवन, समस्याओं का क्रम जान पड़ता था। उसकी दृष्टि में टीटो मेलिमा (Tito Melema) एक ऐसे जीवन को मूर्तिमान् करता था जिसमे सब प्रकार के विषय-सुख की इच्छा के साथ प्रत्येक अरुचिकर वस्तु का परिहार किया जाता हो और किसी कर्तव्य को स्वीकार न किया जाता हो। ऐसे ही साइलस मार्नर (Silas Marner) उसकी दृष्टि में समाज से बहिष्कृत मनुष्य है जिसके साथ घोर अन्याय किया गया हो। वह जन्म से कंजूस नही है, बल्कि उस व्यवहार ने उसके हृदय में धन-दौलत से प्रेम उत्पन्न किया है जो उसके साथ किया गया है और जिसने उसके स्वभाव की उदारता को सुखाकर उसे आत्म-सन्तोषी बना दिया है। साइलस की प्रकृति अवसर मिलने पर फिर से जीवित हो उठती है और जार्ज इलियट के तत्त्वज्ञान को सिद्ध करती है।

शार्लाट ब्रान्टी (Charlotte Bronte) ने अपना जेन आयर (Jane Eyre) नामक उपन्यास थैकरे (Thackeray) को इसलिए समर्पित किया था कि वह अपने युग का प्रथम व्यक्ति था, जिसने समाज को पुनर्जीवित करने की चेष्टा की थी। थैकरे ने लोकसम्मति तथा रूढ़ियों पर आघात किया था; शार्लाट ब्रान्टी ने उन्हे तुच्छ जानकर उन पर ध्यान नही दिया था और अपने उपन्यास मे आन्तरिक भावों का प्रदर्शन किया था। उन्नीसवी शताब्दी के उपन्यास ने इन दोनों की रचनाओ के पथदर्शन से लाभ उठाकर मनुष्यजीवन की गहराइयों में प्रवेश करना और वहाँ के रहस्यो का चित्रण अपना मुख्य उद्देश्य समझ लिया था और उसके विस्तार की ओर से मुँह मोड लिया था।

थैकरे ने जगत् के दम्भ तथा मिथ्या-चरित्र को प्रकट करना और शार्लाट ब्रान्टी ने आन्तरिक रहस्यों को दर्शाना वास्तववाद कहा था। यही वास्तववाद युग के उपन्यास का प्रधान एवं मौलिक उद्देश्य हो गया था, जो व्यक्तिगत अन्तर के

साथ जार्ज इलियट, जार्ज मेरिडिथ और टामस हार्डी आदि अनेकों उपन्यासकारों ने इस शताब्दी के चतुर्थ चरण में व्यक्त किया। इन सब उपन्यासकारों ने जीवन की गहराइयों में प्रवेश करके उसकी गूढ़ समस्याओं का चिन्तन किया और उनकी व्याख्या करने की चेष्टा की। उनकी रचनाओं में एक प्रकार की आध्यात्मिक विराटता है, जो कहानी को उसके साधारण उद्देश्य से ऊँचा उठाकर बहुत दूर ले जाती है और पाठक को विचारों में निमग्न कर देती है। उस काल के बहुत से पाठक, जिन्हें ऐन्टनी ट्रोलोप के उपन्यास पढ़ने की आदत थी, इसे कहानी का दोष समझते और उपन्यास को केवल मनोरंजन का साधन कहते थे। ऐसे ही पाठकों की संख्या बहुत थी।

विचार-शक्ति को प्रोत्साहन देनेवाले उपन्यास बहुधा अपने मुख्य पात्रों के जीवन को युवावस्था में प्रारम्भ करके उसका अध्ययन किया करते थे। पात्रों का पराक्रम और उनकी मानवता के गुण उनके प्रेम सम्बन्धी संघर्ष में दिखाये जाते थे। कुछ समय व्यतीत हो जाने पर उनके जीवन के स्वच्छ नीले आकाश पर बादल घिरने लगते, जो धीरे-धीरे घने होकर उसे अन्धकारमय कर देते थे। उनके जीवन में कोई न कोई मुसीबत खड़ी हो जाती जिससे बचना किसी के लिए सम्भव नहीं होता। यह मुसीबत कभी वंशपरम्परा-प्राप्त दोष से उत्पन्न होती, कभी रूढ़ि अथवा लोकसम्मति के विरोध की शक्ति बनकर आती और निष्ठुरता से व्यक्ति-जीवन को अस्तव्यस्त कर देती। उपन्यास का पात्र उस शक्ति से युद्ध करने पर मजबूर होता और उपन्यासकार के मतानुसार विजय प्राप्त करता या युद्ध में परास्त हो जाता। इस युद्ध की रंगभूमि का दृश्य एवं वातावरण कभी तो युद्ध करनेवाले की चित्तवृत्ति तथा भाव के अनुरूप होते और कभी उस निर्दय शक्ति के सहायक होकर युद्ध को और घमासान कर देते। इन उपन्यासों के पात्र बहुधा किसान लोग होते थे जिनकी अन्तरात्मा ऊँची श्रेणी के मनुष्यों की अपेक्षा अधिक सहज तथा निष्कपट वाक्यशैली में प्रकट होती थी, और जो अपने स्वभाव से प्रेरित होकर कार्य करते थे न कि लोकमत के अनुसार, अपनी रुचि के विरुद्ध और अपने सद्विवेक के विपरीत।

जार्ज मेरिडिथ

इतना सादृश्य होते हुए भी युग के प्रमुख उपन्यासकार न तो एक-दूसरे के शिष्य हैं, न किसी ने किसी का अनुकरण ही किया है। जार्ज मेरिडिथ जार्ज

इलियट का शिष्य नही है, यद्यपि दोनों लेखकों ने अपने उपन्यासों में मनोविज्ञान का प्रयोग किया है और दोनों के विचार उपन्यास-कला के सम्वन्ध में एक से है। दोनों लेखक साहित्य की संजीवनी देकर विज्ञान एवं तत्त्वज्ञान को सजीव करते और उनके सिद्धान्तों की पुष्टि करते है, दोनों की रचनाओं में अदृश्य जीवन की घटनाएँ चरित्र के रूप मे प्रत्यक्ष होकर हमारे सन्मुख आती है और तर्क के विना ही हमारी वुद्धि उन्हे ग्रहण करती है; किन्तु ऐसा करने में कोई लेखक दूसरे का अनुसरण नही करता। मेरिडिथ का जन्म १८२८ में हुआ था और उसकी पहली रचना १८५१ मे, जव वह तेईस वर्ष का था, कविता की पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुई थी। सन् १८५६ के अप्रैल मे जार्ज इलियट ने वेस्टमिन्स्टर रिव्यू में उसकी दि शेविंग आफ शैगपैट (The Shaving of Shagpat) नामक पूर्वी ढंग की कहानी की प्रशसा करते हुए समालोचना प्रकाशित की थी। मेरिडिथ का प्रथम उपन्यास दि आर्डियल आफ रिचर्ड फेवरेल (The Ordeal of Richard Feveral) १८५९ मे जार्ज इलियट के ऐडम वीड के साथ प्रकाशित हुआ था। इस प्रथम उपन्यास ने मानो एक ही छलॉग में मेरिडिथ को उस उँचाई पर पहुँचा दिया जिस पर उसने अपने सारे उपन्यासों की रचना की। यह एक रईस युवक की कहानी है जिसकी देख-रेख तथा शिक्षा मे सदाचार पर इतना जोर दिया गया था कि वह प्रकृति के विपरीत हो गयी थी। रिचर्ड सर आस्टिन फेवरेल (Sir Austin Feveral) का पुत्र है जिसकी माता उसे छोड़कर चली गयी है और जिसकी देख-रेख उसके पिता करते है। सर आस्टिन को अपनी वुद्धिमानी का वड़ा घमंड है। यह समझ-कर कि स्कूल लड़कों को खराव करते है, वह रिचर्ड को घर पर ही अपनी चौकसी में शिक्षा दिलवाते है। जव लडका युवावस्था में पहुँचता है तो कैसे क्यों यह शिक्षा नामक प्रणाली टूट-फूटकर नष्ट हो जाती है, यह उपन्यास में दिखाया गया है। रिचर्ड जो वड़ा उत्साही युवक है, अपने पड़ोसी किसान की लूसी (Lucy) नामक लड़की से प्रेम करने लगता है। लूसी मे वे सारे गुण है जो किसी भी लड़की को प्रकृति से मिल सकते है, किन्तु सर आस्टिन उसे अपनी वहू वनाने के योग्य नही समझते और प्रेम-विच्छेद की चेष्टा करते है। जव सर आस्टिन की ओर से वहुत रोक-थाम होती है तो रिचर्ड और लूसी छिपकर अपना विवाह कर लेते है। सर आस्टिन पिता के प्रेम की दुहाई देकर दोनो को अलग करने की चेष्टा में रिचर्ड को लन्दन भेज देते है, जहाँ वह एक स्त्री के जाल में कुछ दिनों के लिए फँस जाता है, और पिता की शिक्षाप्रणाली को दूसरी चोट देकर तहस-नहस कर देता है। उपन्यास

के दूसरे पात्र भी ऊँचे स्तर के लोग है जिनका बड़ा सुन्दर वर्णन है और जिनका निरीक्षण बड़ी सूझ-बूझ के साथ किया गया है। कथावस्तु ढीली है किन्तु उपन्यास मेरिडिथ की शक्ति को बड़ी अच्छी तरह प्रकट करता है।

इवैन हैरिंग्टन (Evan Harrington) नामक दूसरा उपन्यास (१८६०) मेरिडिथ के परिवार का कुछ हाल बताता है और एमिलिया इन इंग्लैण्ड (Emilia in England), जिसका नाम बदलकर सैन्ड्रा बेलोनी (Sandra Belloni) कर दिया गया था, इटली के दृश्यों से भरा है और उपन्यासकार के ज्ञान की थाह देता है। दो या तीन वर्ष के अन्तर से मेरिडिथ ने रोडा फ्लेमिंग (Rhoda Fleming), विटोरिया (Vittoria), हैरी रिचमन्ड (The Adventures of Harry Richmond), और बोचम्प्स् कैरियर (Beauchamp's Career) प्रकाशित किये जिनके बाद १८७९ में ही 'ईगोइस्ट' संसार के सामने आया जो उसकी सबसे श्रेष्ठ रचना कही जाती है। इसके उपरान्त उसने कई और उपन्यास लिखे, जिनमें से डायना आफ दि क्रासवेज़ (Diana of the Crossways), वन आफ अवर कांकरर्स (One of Our Conquerors), और लार्ड ओरमान्ट ऐन्ड हिज अमिन्टा (Lord Ormont and his Aminta) विशेष महत्त्व के है। सन् १९०९ में जार्ज मेरिडिथ की मृत्यु हो गयी।

जार्ज मेरिडिथ के उपन्यासों के विषय

जैसा पहले कहा गया है, मेरिडिथ भी जार्ज इलियट की भाँति मनोवैज्ञानिक और एक प्रकार का नीतिप्रचारक था, जो अपने पाठकों से यह आशा रखता था कि कि वे "घास-फूस के हलके इशारों में मार्च की हवाओं से प्रभावित होंगे, जब कि वे चलती न हों।" वह घटनाएं तथा परिस्थितियाँ वास्तविक जीवन से चुनकर लेता है और उन पर अपने पात्रों की प्रतिक्रिया को सूक्ष्मदर्शी निगाह से ब्यौरेवार देखकर उनके चरित्रों का निर्णय करता है। इस प्रणाली का बड़ा सुन्दर उदाहरण डायना आफ दि क्रासवेज (Diana of the Crossways) में हमें मिलता है। इस उपन्यास की कथावस्तु एक अर्थ में वास्तविक कही जा सकती है, यद्यपि वह मामला जिस पर चरित्रचित्रण केन्द्रित है, बिल्कुल ऐतिहासिक नहीं था। मेरिडिथ उस कहानी को सत्य मानकर उन परिस्थितियों तथा घटनाओं की कल्पना करता है, जिनमें कहा जाता था कि एक महिला ने कोई राजनीतिक भेद जिसे उसने अपने प्रेमी से सुना था, किसी समाचारपत्र के हाथ बेच डाला था। उपन्यासकार इस अपराध की सत्यता को

महिला के चरित्र एवं स्वभाव के साथ रखकर देखता है, और वे इच्छाएँ तथा मनोवृत्तियाँ अपनी कल्पना मे लाता है, जो प्रलोभन से लेकर प्रतिकार तक, ऐसी परिस्थितियाँ में उसके मन को विचलित कर सकती है। साथ ही महिला के चरित्र का भी प्रतिक्रिया के निरीक्षण से निर्णय होता है और दोनों कसौटियाँ काम मे लायी जाती है। वे परिस्थितियाँ जो मेरिडिथ इस निर्णय के लिए चुना करता है, असाधारण और कभी-कभी विचित्र होती है। यदि उसके पात्र ऐसी परिस्थितियो के शिकार हो जाते है या बिलकुल परास्त हो जाते है, तो भी वह उनका पराक्रम एवं मानवता दर्शाने मे कमी नही करता।

जार्ज इलियट के समान मेरिडिथ भी आत्मा के ही दोषों पर ध्यान देता है और उन्ही को ढूँढता है, किन्तु जहाँ जार्ज इलियट पाप तथा दोष का परिणाम दुःखान्त दिखाती है, मेरिडिथ उनकी हँसी भी उड़ाता है। जार्ज इलियट दोषी को सदा दंड देती है, मेरिडिथ उसे हास्यकर बना देता है और इस प्रकार दोषी को हास्यकर बनाने में जो खेल वह खेलता है, उसका नैतिक प्रभाव उतना ही सुधारक होता है जितना दड का।

मेरिडिथ की "हास्यकर प्रणाली"

मेरिडिथ का यह ढंग अंग्रेजी उपन्यास में ऐसा नया और अनोखा था कि उसके पाठक बहुत दिनो तक उसका आशय समझ नही सके और उसके उपन्यास लोकप्रियता तो क्या, बहुत उलझन पैदा करने रहे। सम्भव है कि उसने खुद ही पहले यह निश्चित न कर पाया हो कि वह क्या करना चाहता है। लोगों को उसका आशय उस समय समझ में आया जब १८७७ मे उसने हास्यकर प्रणाली पर एक निबन्ध पढा और उसे प्रकाशित किया। दो वर्ष के बाद उसने दि ईगोइस्ट (The Egoist) प्रकाशित किया जिसके प्रथम अध्याय में अपनी प्रणाली की व्याख्या की। डायना आफ दि क्रासवेज मे फिर उस विषय को उठाया, तब उसके पाठकों को मालूम हुआ कि रिचर्ड फेवरेल से लेकर सारे ही उपन्यास इसी आशय पर जिखे गये है।

बोचम्प्स कैरियर (Beauchamp's Career) में उसने पाठकों को एक ऐसी स्थिति के बीच में रख दिया है जो वास्तव मे मनुष्यजीवन का खाका है और कठपुतलियों के खेल का जैसा हास्यकर प्रतीत होता है। हमारे सामने स्त्री और पुरुष कठपुतलियो के समान इधर उधर दौड़ते है, कोई एक धुन में है तो दूसरा उसकी

काट का प्रबन्ध कर रहा है और दोनों ही छोटी-छोटी बातों पर जान दिये दे रहे हैं और जीवन की महत्त्वपूर्ण बातों को भूले हुए हैं। उनके चारों ओर लोकसम्मति और रूढ़ियों का जाल बिछा हुआ है, जिसमें उनकी प्रेरणा फँसी हुई एक को दूसरे से टकरा रही है और वे स्वार्थ को सिद्धान्त का रूप देकर अपने को धोखा दे रहे हैं। इसी खाके के बाहर से व्यावहारिक ज्ञान लोगों की दौड़-धूप को देखकर विचारों में डूबा हुआ हँस रहा है। यह "विचारशील हँसी" हास्य की देवी (The Comic Spirit) को बहुत पसन्द है। "हास्य की देवी" की शक्ति व्यंग्य, उपहास, ताना, कई रूपों में अपना काम करती है। मेरिडिथ का कहना है कि हम हास्य की आँख से उसी हद तक लोगों को देख सकते हैं जहाँ तक हम उनकी भोंड़ी बातों पर उनसे प्रेम करना न छोड़ें और उनकी दी हुई सीख मानें जो हमें प्यार करते हैं और भोंड़ा समझते हैं। इसके विरुद्ध यदि लोगों की भद्देसता देखकर उनके प्रति हमारा प्रेम घटता है तो हम उनका उपहास करते हैं, उन पर आक्रमण करते हैं और वे हमारे कोड़े खाकर चीखते हैं। यदि हम लोगों को अपनी छाती से लगाते समय उन्हें सुइयाँ चुभोते हैं और वे समझ नहीं पाते कि उन्हें कोई कष्ट हो रहा है, तो हम उन पर ताने (irony) का प्रयोग करते हैं। जब हम हँसी-मजाक यह जानते हुए करते हैं कि हम और हमारे मजाक का शिकार दोनों ही मानव जाति के है, और एक दूसरे के भाई हैं, तो हमारा हास्य (humour) किसी उद्देश्य के लिए होता है जो हम चाहते हैं। "मेरिडिथ विचारशील हँसी" को सभ्यता की कसौटी मानता है। ऐसी हँसी न तो अशिष्ट होती है न छूँछी।

"विचारशील हँसी" जैसी "हास्य की देवी" को पसन्द है, वह तब सम्भव होती है जब मनुष्य और पृथ्वी का वास्तविक सम्बन्ध ठीक तरह समझ में आ गया हो। मेरिडिथ का विश्वास है कि प्रकृति का लक्ष्य पूर्णता को प्राप्त होना है और उसकी प्रत्येक वस्तु उसके साथ-साथ अपने को पूर्ण विकास पर पहुँचाने में निरन्तर लगी हुई है। इस पूर्णता को प्राप्त करने में जो कोई रुकावट डालता है और ऐसा करके मनुष्य तथा समाज को निश्चल एवं प्रवाह हीन बनाता है, वही "हास्य की देवी" के कोप का भागी है, वही उसका असली शिकार है। वह अच्छी तरह समझता है कि ऐसी रुकावटों का मूल कारण स्वार्थ और आत्मश्लाघा है जो आपे से बाहर हो गया है और जो प्रत्येक वस्तु को अपनी आँखों पर सूक्ष्मदर्शक या दूरदर्शक यंत्र लगाकर देखता है। मनुष्य का विशिष्ट तथा उचित यंत्र व्यावहारिक ज्ञान

(Common sense) है जो उसे सीधा रास्ता दिखाकर प्रकृति के केन्द्र अथवा पृथ्वी के हृदय तक पहुँचा सकता है जहाँ इसका भी केन्द्र है।

मेरिडिथ का कथन है कि मनुष्य का मुख्य कर्तव्य इस स्वार्थ (Egoism) को, जो सैकड़ों तरह के चेहरे अपने मुँह पर लगाये फिरता है, पहचाने और पकड़कर समाप्त कर दे। "हास्य की देवी" (The Comic Spirit) हमें सहायता देती है और हमें शक्ति देती है कि हम "स्वार्थ के दैत्य" (The Dragon-Self) के मुँह परसे चेहरा उतार लें और देखें कि वह कितना कुरूप है, और उसे समाप्त कर डालें। जब हम यह करेंगे तो इस योग्य होंगे कि "रुधिर और मस्तिष्क और आत्मा" के ऐक्य को समझ सकें और मनुष्य-मात्र के भाईचारे को जानकर पृथ्वी माता के उद्देश्य को पूरा कर सकें। हमारी आँखों पर से जब सूक्ष्मदर्शक तथा दूरदर्शक यंत्र हट जायँगे तब हम सत्य का चमकता हुआ चेहरा देख सकेंगे, और तुच्छ तथा संकीर्ण नैतिक विचारों को छोड़कर त्रिभुवन के नियमों को जान सकेंगे। जब हमें यह छुटकारा मिल जायगा तो हमारी आँखें हमें अन्धा और हमारे कान हमें बहरा नहीं बना सकेंगे और हम जीवन को इच्छाओं के पूरा करने का साधन या विषयसुख पाने का उपाय नहीं समझेंगे।"हास्यकर प्रणाली" हमें बताती है कि सत्य का माप व्यावहारिक ज्ञान से प्राप्य है, जिस पर समाज एवं सभ्यता स्थापित हैं और जो आगे चलकर हमें पूर्णता पर पहुँचायेगी।

भावप्रदर्शन या रसिकता—दि ईगोइस्ट

लोकमत से दि ईगोइस्ट (The Egoist) मेरिडिथ का सर्वोत्तम उपन्यास कहा जाता है। यह उपन्यास "स्वार्थ के दैत्य" का वह चेहरा उसके मुँह पर से उतारता है जिसे भाव-प्रदर्शन अथवा रसिकता (Sentimentalism) कहते है और जिसका मेरिडिथ शत्रु है। उपन्यास का मुख्य पात्र, सर विलोबी पैटर्न (Sir Willoughby Patterne), अपने समय की सामाजिक दशा का प्रतिपुरुष है और इस बात का दावेदार है कि जो ठीक है वही वह करता है। सर विलोबी मनुष्य के शरीर के बराबर का एक दर्पण है, जो उस श्रेणी के शिथिल पुरुषों को प्रतिबिम्बित करता है जिनमें शिष्टता के अतिरिक्त कोई और गुण दिखाई नहीं देता। ऐसे व्यक्ति का चरित्र और स्वभाव जाँचने के लिए मेरिडिथ यह जानना चाहता है कि उसके सम्बन्ध स्त्रियों से कैसे हैं, खास कर उस स्त्री से जिसे वह समझता है कि वह उससे प्रेम करता है। वह कान्सटैन्शिया और कैरा से विवाह का प्रस्ताव

इसलिए नहीं करता कि उसे उनसे प्रेम है, बल्कि इसलिए कि सुन्दर आकृति और अच्छी चाल-ढाल देखने से उसके शरीर में कुछ होने लगता है। और फिर वह ऐसा मनुष्य भी तो नहीं है कि उससे कोई बाजी मार ले जाय। प्रतियोगी प्रेमी का होना ही काफी है कि वह अपने प्रेम की घोषणा कर दे। मूर्तिपूजा के वातावरण में पाले-पोसे जाने के कारण प्यारभरी आँखों में उसे अपनी सूरत देखकर आनन्द आता है, और चूँकि वह आपे से इतना भरा हुआ है कि उसका प्रेम अपने बराबर वाले मनुष्य के लिए आत्मसमर्पण नहीं बल्कि आत्मसन्तोष है, जिसका उस स्त्री से कोई सम्बन्ध नहीं। वह बड़े आदमियों के यहाँ इसलिए विवाह करना नहीं चाहता कि उसे उनके वंश में विश्वास नहीं होता। एक बार उसका प्रेम अस्वीकृत होने पर वह अपनी इज्जत के लिए दूसरी स्त्री से प्रस्ताव करता है, किन्तु इस डर से कि कहीं फिर तिरस्कार न हो, वह उस स्त्री का भी पीछा करता रहता है जो उससे दूर भागती है। जो भी स्त्री उससे विवाह करे उसे शपथ लेनी होगी कि वह सदा के लिए उसकी है, क्योंकि यदि उसकी मृत्यु पहले हुई, तो उसकी आत्मा अपनी बेवा की बदनामी न सह सकेगी। सर विलोबी को मेरिडिथ ने अन्त में यह पुरस्कार दिया है कि उसे वह स्त्री मिलती है जिसने उसकी नस-नस पहचान ली है और जो जानती है कि सर विलोबी पैटर्न का प्रेम करना वास्तव में एक उत्सव है, जो उसकी स्वार्थता कभी-कभी मनाती और उससे आनन्द उठाती है।

भावप्रदर्शन अथवा रसिकता से मेरिडिथ की सदा लड़ाई रही, क्योंकि उसे वह मनुष्य की दुर्बलता एवं असामर्थ्य समझता था और अपने चारों ओर प्रकृति की शक्ति का झंडा उड़ता देखता तथा प्रत्येक अवसर पर बल की ही विजय का घोष सुनता था। डायना के प्रथम अध्याय में वह 'रसिकता' की परिभाषा इन शब्दों में देता है—"रसिक जन (रसिये) इन्द्रिय-जनित सुख की तुन्तुनी बजाते हैं और लोग बड़े चाव से उसे सुनते और उनके बजाने पर झूमते हैं। ये लोग संगीत के भूखे नहीं बल्कि बजानेवाले की प्रवीणता से ही संतुष्ट हैं।" दया, सुजनता, परोपकार, सारी सहानुभूति को मेरिडिथ रसिकता कहता है जब तक वे गुण कार्य-विशेष के रूप में सामने न आयें और उन कार्यों में सम्पादन करनेवाले व्यक्ति के हृदय का रंग न झलके। समकालीन सामाजिक नियम जो स्त्री और पुरुष के परस्पर सम्बन्ध को क्रम में रखते हैं और उनके व्यवहार को व्यवस्थित करते हैं, वे सब मेरिडिथ के मत से रसिकता की नींव पर खड़े हैं। वे हमें शूर-वीर परम्परा से मिले हैं जो असभ्यता के काल में बनी थी। उनके बारे में केवल यही अच्छी बात कही जा

सकती है कि ढका हुआ पशु नंगे पशु से बेहतर है। मेरिडिथ उन युवकों और युवतियों पर बहुत कठोर दृष्टि डालता है जो चाँदनी रात में कहीं मिलते हैं और सदा के लिए जुदा होते हैं, या अनन्त प्रेम की शपथ लेते हैं।

सैन्ड्रा बेलोनी (Sandra Belloni) में एमिलिया और विल्फ्रिड सन्ध्या समय एक सुन्दर स्थान पर बैठे बातें कर रहे हैं—"तुम तो मेरी हो, हो न एमिलिया?," "हाँ, मैं तुम्हारी हूँ" उसने सहज स्वभाव से उत्तर दिया। विल्फ्रिडने धीरे से कहा—"वह बहता पानी कहता है सदा के लिए"—और एमिलिया की उँगलियों ने उसकी उँगिलयों को हलके से दबाया। मेरिडिथ लिखता है—"इसके बाद विवाह के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा गया। युवती का हृदय शान्त था, विल्फ्रिड चाहता भी था कि उसका हृदय बिना समय नियत किये ही यदि शान्त हो जाय तो अच्छा। वह अनन्त की दुहाई तो खुले दिल से दे सकता था परन्तु किसी निश्चित दिन के ग्यारह बजे के बन्धन से बहुत झिझकता था।" रसिकता भी स्वार्थ का एक चेहरा है जो बड़ा ही घिनावना है। मेरिडिथ यह नहीं कहता कि इन्द्रियों का कोई फायदा नहीं, या वे कोई मुसीबत है। उनका सदुपयोग बताने को उसने अपने उपन्यासों में बहुत-सी स्त्रियों और युवतियों के चरित्रों का चित्रण किया है, जिनके द्वारा उसने पशु को मानवता दी है और उसमें आत्मा जगायी है।

मेरिडिथ की नायिकाएं

मेरिडिथ से पहले के अंग्रेजी उपन्यासों में स्त्रियों के जो नमूने पाये जाते थे वे या तो वीरता के रोमांसों से या स्पेन के नावेलों से आये थे। मध्यकालीन रोमांसों की वीरांगना, चाहे वह कहानी-साहित्य में पुनर्जन्म लेती चाहे समाज में सदेह प्रस्तुत होती, एक निर्मल और शुद्ध घूँघट किये हुए कठपुतली या "गुड़िया" होती थी जो अपने पति अथवा प्रेमी की गुलाम हुआ करती थी। उसका पति अथवा प्रेमी सदा इस प्रकार रहता था मानो वह उसका पुजारी हो, और तरह-तरह की तरकीबों से उसे भुलावे देकर अज्ञान तथा निर्भयता में रखता था। झूठे बहानों द्वारा उसे जीवन के सैकड़ों अनुभवों से दूर रखा जाता था और उसकी देख-रेख एवं शिक्षा ऐसी होती थी कि वह डरपोक हो जाती थी। छवि तथा सुन्दरता की ऐसी रसिकता-पूर्ण परिभाषा प्रचलित थी कि उसकी शारीरिक दुर्बलता को गुण समझा जाता था। सुशीलता एवं मर्यादा का भी अभिप्राय रसिकता ने वह लगा रखा था कि स्वाभाविकता सामाजिक दोष हो गयी थी। आगे चलकर जब थैकरे ने और दूसरे उपन्यास-

कारों ने "धूर्त" को अंग्रेज़ी कहानी-साहित्य में सँचारा तो भी यह वीरांगना उपन्यासों में और समाज में जीवित रही और दूसरा नमूना बनी रही। "धूर्त" को अनुभव करने के साथ-साथ समाज के शिष्टाचारी महानुभाव इस "गुड़िया" की भी पूजा किया करते थे। हल्के-फुल्के उपन्यासों में प्रहसनों की जैसी नायिका का राज्य बहुत काल से चला आ रहा था, जिसमें व्यंग्य तथा वक्रोक्ति, उपहास एवं हर तरह का हँसी-मज़ाक होता था। शार्लोट ब्रान्टी, जेन आस्टेन, जार्ज इलियट आदि थोड़े उपन्यासकारों ने कहानी-साहित्य की इन तीनों नमूनों की नायिकाओं का अपनी पुस्तकों से बहिष्कार कर दिया था, किन्तु वे पीछे के दरवाजे से झाँकती और वास्तविकता की सूचना देती रहीं। परिणाम यह हुआ कि इन उपन्यासकारों की पुस्तकें उन विकट एवं राक्षसी कुरूपताओ को दिखाने में असफल रही, जिन्होने औरत और मर्द के सम्बन्ध में अशुद्ध विचार समाज में फैला रखे थे और जिन्होने स्त्री की आकृति भ्रष्ट कर दी थी।

मेरिडिथ ने इन सब नमूनों को अस्वीकार किया जिन्होने, उसकी राय में, औरत को खिलौना बना दिया था और प्रकृति के उद्देश्य को नष्ट कर दिया था। उसके मत से प्रकृति ने स्त्री को पुरुष का साथी तथा परिपूरक बनाया था कि दोनों मिलकर जीवन-युद्ध में सफलता प्राप्त कर सकें। अपने एक मित्र को १९०५ में उसने लिखा था—"उस अन्याय ने जो स्त्रियों के साथ किया गया है, मेरे ऊपर गहरा प्रभाव डाला है। उन पर जो रुकावटे डालकर स्वाभाविक योग्यता तथा आन्तरिक शक्ति को रोका गया है, उसने मानव जाति को नीच अवस्था में पहुँचा दिया है। मैंने उनका अध्ययन पुरुषों की अपेक्षा अधिक ध्यान से नही बल्कि अधिक स्नेह से किया है और उनकी उन्नति में दिलचस्पी भी ली है, क्योंकि मेरा यह दृढ निश्चय है कि हमारी ठीक तरह की उन्नति के लिए स्वाधीन एवं अनाश्रित मन की स्त्रियों की बड़ी आवश्यकता है। ऐसी स्त्रियाँ अपनी कन्याओं को ऐसी शिक्षा देगी कि शारीरिक बल की कमी के कारण वे अपने को हीन नहीं समझेगी और संसार में जीवननिर्वाह के लिए मार्जारीय चातुरी का प्रयोग नहीं करेंगी।"

मेरिडिथ ने स्त्री और पुरुष के संघर्ष को अपने उपन्यासों का मुख्य विषय बनाया और उनके एक-दूसरे से जो सम्बन्ध विभिन्न परिस्थितियों में हो सकते है उनका अध्ययन किया। परस्पर के ये सम्बन्ध ही वह कसौटी है जिस पर मर्द और औरत के चरित्र को परखा जाता है। स्त्री और पुरुष का जोड़ा यदि प्रकृति के

नियमों के अनुसार मिला है तो वे दोनों एक-दूसरे के सहकारी तथा सहायक होंगे और दोनों की बुद्धि मिलकर "धरती माता के उद्देश्य" को पूरा करेगी।

मेरिडिथ के उपन्यासों की नायिकाएँ स्वस्थ एवं पुष्ट होती है। वे फुर्तीले अंग वालों के समान खेल-कूद में भाग लेती और खुली हवा में रहना पसन्द करती हैं। उनकी खूराक अच्छी और उनके चेहरे सुर्ख तथा ताजे होते है। उन्हें इतनी बुद्धि होती है कि वे जीवन की सर्दी-गर्मी सहकर किसी प्रकार अपना निर्वाह कर सकती है। हृष्ट-पुष्ट और बुद्धिमान् होने के कारण वे देखने में सुन्दर भी होती हैं। न तो वे दोषरहित होती है न "धूर्त", और अपने स्वत्व की रक्षा करने की वे सदा चेष्टा करती है, चाहे उन्हें किसी से लड़ना ही क्यों न पड़े। मेरिडिथ स्वाभाविकता को उनका विशेष गुण समझता है और उनके इस गुण के द्वारा वह सिद्ध करता है कि वह धार्मिक विचार (The Doctrine of Original Sin), जो मनुष्य की उत्पत्ति पाप से और उसका स्वाभाविक झुकाव पाप की ओर बताता है, बिल्कुल अशुद्ध है। उसकी लगभग सब नायिकाएँ मानव-प्रकृति की श्रेष्ठता दर्शाती है। मेरिडिथ स्त्रियों को प्रकृति के बहुत निकट समझता है और उसके मत से स्त्रियाँ, औरत तथा मर्द के जाति-संघर्ष (the battle of the sexes) मे पुरुषो के पाँव धरती पर दृढ़ता से जमाये रखती हैं। स्त्रियों के विकास में प्रकृति ने उन्हे व्यावहारिक ज्ञान बड़ी मात्रा में दिया है, जिसके कारण वे अपने सामने के ससार को बड़ी पैनी दृष्टि से देख सकती है और मनुष्यजीवन के सिद्धान्तों को खूब समझती हैं। "हास्य की देवी" उनकी मित्र है जिसके सहारे वे सारे संसार को वास्तविक रूप मे समझती है और जीवन में अपने लिए रास्ता साफ़ कर लेती है।

मेरिडिथ की लेखन-प्रणाली और शैली

अपने समय के वास्तववाद (यथार्थवाद) से मेरिडिथ का पूरा विरोध था। वास्तववादी, कला का उद्देश्य जीवन की सारी बातों को जैसी की तैसी उपन्यास में लाना समझते थे। मेरिडिथ ऐसा करना व्यर्थ समझता है और ऐसे उपन्यासों को इतिहास की सामग्री कहता है। उपन्यास को न तो ऐसा करने की आवश्यकता है, न वह प्रकृति के सब रूपों का चित्रण कर ही सकता है। वह तो किसी विशेष उद्देश्य के लिए प्रकृति के एक कोने का साराश देने में भी यदि सफल हो सके तो बहुत बड़ी बात है। अपने जीवन में वह समाज की कुछ त्रुटियाँ देखता है, कई रोगों से

लोगों को पीड़ित पाता है और इसलिए तत्त्वज्ञानी अथवा वैज्ञानिक की भाँति वह उनकी जड़ तक पहुँचने की चेष्टा करता है। असाधारण परिस्थिति को लेकर और व्यर्थ के ब्यौरों को हटाकर वह तत्त्व को सामने लाता और उसी पर बल देता है। जहाँ दूसरे उपन्यासकार समाज का सम्पूर्ण चित्र देने की चेष्टा करते हैं, पात्रों के वास्तविक वार्तालाप का उद्धरण देते है, मेरिडिथ केवल थोड़े से लोगों का अध्ययन करता है और इस बात की ज़रा भी चिन्ता नहीं करता कि उसके पात्रों का वार्तालाप स्वाभाविक है या नही। उसका सारा ध्यान सार रूप में मनुष्य-जीवन के आध्यात्मिक तथ्यों को प्रकट करने पर रहता है। उसके पात्रों का वार्तालाप संकुचित और केन्द्रित होता है जिसमें कूट-कूटकर अर्थ भरे होते है, जैसा वास्तविक जीवन में नही होता।

सारगर्भित करने की चिन्ता में वह अपने उपन्यासों के दृश्यों, वर्णनों तथा बनावट को इस प्रकार बदलकर असामान्य करता गया कि साधारण पाठकों के लिए उनका समझना दिन पर दिन कठिन होता गया। मेरिडिथ अकस्मात् दृश्य को बदल देता है, कहानी को जहाँ पर चाहता है छोड़ देता है और फिर जहाँ से चाहता है उसे फिर से चला देता है; पात्रों का वार्तालाप भी सीधा-सादा नहीं रखता बल्कि गहरे से गहरे विचारों पर बात-चीत कराता है, जिसे जल्दी में समझ सकना असम्भव होता है। विभिन्न दृष्टिकोणों से कहानी के टुकड़ों को प्रकाश में लाकर कविता की रीति से प्रस्तुत करता है और बीसों ऐसे प्रसंग, जिन्हें पाठक जानने के लिए उत्सुक होता है, मेरिडिथ जान-बूझकर छोड़ता जाता है। यह उसकी विशेष प्रणाली है जिसे समझने का अभ्यास डालना होता है। किन्तु यह प्रणाली गहरी बातों, गम्भीर परिस्थितियों और ऊँचे विचारों के व्यक्त करने में बड़ी सफल है और पाठकों की आँख खोल देती है।

मेरिडिथ इस प्रकार लिखकर वास्तविकता को जितनी अच्छी तरह से हमारे हृदयों में उतारता है, उस तरह कोई दूसरा उपन्यासकार नहीं करता। वह जीवन को पुनः नवीन नहीं करता, सँवारता और सजाता नहीं, आदर्श भी नहीं बनाता, बल्कि वह उसे नवीन तथा असाधारण नमूनों में अनोखी परिस्थितियों में लाकर उसके गूढ़ रहस्यों एवं अद्‌भुत शक्तियों को हमारे सन्मुख सजीव करके खड़ा कर देता है। और यह सब महत्त्वपूर्ण बातें मेरिडिथ उपन्यास में इसलिए व्यक्त करने में सफल होता है कि वह बहुत ऊँची श्रेणी का कवि भी है।

अपने आभास को कल्पना के स्वप्न से खींचकर स्थूल रूप में कभी तो वह भावना

के आवेग-द्वारा, कभी बुद्धि की धारणाओं द्वारा हमारे मन में उतारने की चेष्टा करता है। जो कार्य बुद्धि तथा गद्य से नहीं होता वह भावना एवं पद्य में करने की चेष्टा करता है, और कभी-कभी दोनों विधियों को एक ही कार्य में लगाता है। सामान्य पाठकों के लिए मेरिडिथ की विधि उतनी ही कठिन और गूढ़ है, जितनी उस बाजीगर की जो एक साथ कई गेंदें अपने हाथों में उछालता है। मेरिडिथ भी एक ही साथ कहानी, कविता, बुद्धि-चातुरी और व्यंग्य तथा हास्य के द्वारा गूढ़ से गूढ़ विषयों का ज्ञान एवं अनुभव हमें कराना चाहता है और इसी कारण उसके उपन्यास कविता के समान पाठकों के लिए कठिन और अस्पष्ट हो जाते हैं। ऐसा जान पड़ता है कि मेरिडिथ ने कभी कोई रचना लोकप्रियता के लिए नहीं की, जो कुछ लिखा अपने लिए लिखा, अपने गूढ़ विचारों और शीघ्र लुप्त हो जानेवाले आभासों को उसने अपने लिए शब्दों का जामा पहनाया।

मेरिडिथ और टामस हार्डी का अन्तर

मेरिडिथ के समझने में हमें टामस हार्डी (Thomas Hardy) के विचारों से सहायता मिलती है। दोनों पहले कवि, बाद को उपन्यासकार हुए और दोनों के आभास (visions) तथा विचार भावना एवं बुद्धि के साँचों में ढालकर साहित्य का जामा पहनाते रहे। दोनों ही सभ्यता की समस्याओं को उसकी निर्दयता एवं अन्याय का परिणाम समझते थे और दोनों समाज के बहुत से नियमों और रूढ़ियों का विरोध करते थे। दोनों लेखक स्त्री-जाति की दुःखमय अवस्था से प्रभावित थे, दोनों एक ही रोग को बहुत सी व्यथाओं की जड़ समझते थे और उसी रोग का लक्षणों को देखकर निर्णय करना चाहते थे। परन्तु इन दोनों का निदान इतना भिन्न और चिकित्सा इतनी अलग है कि यह जान नहीं पड़ता कि दोनों एक ही रोग को दूर करना चाहते हैं।

इन दोनों की रीतियाँ पृथक्-पृथक् वैसी ही है जैसा कि सदा से सुधार करनेवाले समाज और जीवन को अपने आदर्श के अनुसार बनाने में प्रयुक्त करते आये हैं। यदि वे दोनों किसी पुराने, टूटे-फूटे मकान को ठीक करना चाहते हैं, तो दोनों अलग अलग रीतियों से अपना कार्य प्रारम्भ करेंगे। टामस हार्डी उसके सारे दोषों को एक-एक करके गिनायेगा और फिर उसको सुधारने का प्रस्ताव करेगा। मेरिडिथ उसी मकान के सामने खड़ा होकर इस प्रकार सोचना आरम्भ करेगा--"कैसा अच्छा यह मकान है, इसमें रहकर मनुष्य अपना जीवन कैसे सुख से व्यतीत कर सकता है!

मुझे तो इसे देखकर ऐसा मालूम होता है मानो मेरे सारे दुःख दूर हो गये हों और मैं आनन्द में इसमें रहता हूँ और इसमें रहकर मैं क्या कुछ नही कर सकता; लाओ हम इसकी मरम्मत करके इसे ठीक कर लें।" टामस हार्डी कहता है कि मकान ऐसा खराब है कि उसे ठीक करना चाहिए, मेरिडिथ कहता है कि मकान ऐसा अच्छा है कि उसे ठीक करना चाहिए, और इसी भेद के कारण एक को ससार निराशावादी और दूसरे को आशावादी कहता है। पहले सुधारक ने टेस (Tess) की कल्पना की और स्त्री-जाति को स्वतन्त्र कराने की चेष्टा इसलिए की कि वह पददलित और अज्ञानता की दशा में पड़ी है और अपनी महानता को नहीं जानती; दूसरे ने रोज़ जोस्लिन (Rose Jocelyn) की कल्पना की और स्त्रियों को स्वाधीन तथा अनाश्रित करने की चेष्टा इसलिए की कि पराधीन एव मुसीबत की दशा में भी वे रानियों से किसी प्रकार कम नहीं है।

मेरिडिथ की दृष्टि में मनुष्यजीवन का प्रकृति के क्रम में सबसे अधिक महत्त्व है, और संसार में सबसे अधिक महिमा मनुष्य की रचनाओ, मानवसमाज, मनुष्य की चेतना, तथा उसकी आत्मा का दर्शन करानेवाले चिह्नों की है। उसके मत से मनुष्य की उन्नति को उसी के दोष रोकते हैं और उसी की जाति से वे आपत्तिया भी आती हैं जो उसका नाश करती हैं। किन्तु मनुष्य इस दुष्टता का विरोध करने की सामर्थ्य रखता है, उस पर आक्रमण करके उसे परास्त कर सकता है और उसके साथ युद्ध करके वीरगति प्राप्त कर सकता है। इस संग्राम में एक पुरुष दूसरे पुरुषों से या एक स्त्री पुरुषों के समूह से युद्ध करती और अपनी सामर्थ्य के अनुसार विजय प्राप्त कर सकती है। विजय की यह आशा मेरिडिथ की सारी रचनाओं को प्रकाशमय कर देती है, यहाँ तक कि दुःखान्त कहानियाँ भी उदासीन अथवा मलिन नही करतीं।

इसके विरुद्ध, टामस हार्डी के संसार में मनुष्य का कोई महत्त्व नही होता, बल्कि प्रकृति के प्रबन्ध में मनुष्य को कोई भी प्रतिष्ठा नहीं दी जाती। मनुष्य की बुद्धि या उसकी निर्माण की हुई वस्तुओं का अध्ययन, हार्डी के मत से, किसी को विश्व के रहस्यों तक नहीं पहुँचा सकता और न सृष्टि का आशय और अर्थ बता सकता है। हार्डी का कथन है कि मनुष्य को रोकने तथा उसका विरोध और अपमान करनेवाले केवल उसके सहचर ही नहीं होते; उसे केवल उन्ही से युद्ध करना नही पड़ता; उसके भाग्य की प्रतिकूलता केवल उन्ही की बनायी नही होती। यह सब कुछ उस जगत् के स्वभाव और उस संसार की प्रकृति में हैं जिसमें मनुष्य जन्म लेता है। वह जगत् अभागी अवस्थाओं से भरा हुआ है। यह जरूर है कि बहुधा मनुष्य ही उस अभागी

अवस्था का वाहक होता है और मनुष्य के ही कारण दुर्भाग्य आता है, किन्तु यह कहना ठीक नही कि हार्डी के उपन्यासों के कथापुरुषों, नायकों तथा नायिकाओं को मानवीय शत्रु परास्त करते है। वे शत्रु के सामने आने और उस से भिड़ने के पहले ही परास्त हो जाते है। जूड दि आब्सक्योर (Jude the Obscure) का विद्यानुराग चूर-चूर हो जाता है और वह उस व्यक्ति से मिल तक नही पाता जो उस पद्धति का वाहक है जिसका वह शिकार बनता है। आत्मा और शरीर की लड़ाई में स्वभाव और चरित्र दुर्भाग्य तथा अवस्था के साथी बनकर जूड को परास्त कर देते हैं। टेस डर्बेफील्ड (Tess Durbeyfield) के सिर पर दुर्भाग्य के ऊपर दुर्भाग्य आते है और उसके कुछ किये बिना ऐसी स्थितियाँ उसको चारों ओर से घेर लेती है कि वह उनमे से निकल नही पाती। जितनी बार वह अपनी दशा तथा अनुभवो का वर्णन अपने मँगेतर से करने की चेष्टा करती है, कोई न कोई बाधा पड़ जाती है, यहाँ तक कि विवाह की रात्रि आ जाती है। अब उसका कहना कुछ और ही प्रभाव उत्पन्न करता है। "उस समय तुम कुछ और थी, अब कुछ और हो—जिस स्त्री को मैं प्यार करता हूँ वह स्त्री तुम कदापि नही हो सकती।" अपने उपन्यासों में टामस हार्डी व्यक्ति को न तो वह शक्ति देता है न वह अ-परवशता, जिससे व्यक्ति को अपने किये के लिए उत्तरदाता समझा जाय।

टामस हार्डी का जन्म १८४० मे डारसेटशायर में हुआ था। उसकी शिक्षा स्थानीय पाठशाला मे और उसके बाद किंग्स कालेज, लन्दन मे हुई। उसने शिक्षा के समय में ही प्राचीन गिरजाघरों की भवननिर्माण-कला का अध्ययन किया था, और कालेज से निकलकर उसने भवननिर्माण का काम करना आरम्भ किया। कुछ ही समय मे उसे साहित्य ने आकर्षित किया और बहुत से दूसरे लोगो की भाँति वह कविता करने लगा। प्रारम्भिक दशा में कविता मे सफलता न मिलने से और कुछ समकालीन लेखको को उपन्यास मे सफल देखकर हार्डी ने भी अपनी इकतीस वर्ष की अवस्था मे १८७१ मे डेस्परेट रेमेडीज़ (Desperate Remedies) नामक उपन्यास प्रकाशित किया जो रहस्य, चालबाजी तथा विस्मय की कहानी है और प्रथम रचना होते हुए भी होनहार नही कही जा सकती। अन्डर दि ग्रीनवुड ट्री (Under the Greenwood Tree) और ए पेयर आफ ब्लू आइज (A Pair of Blue Eyes), जो अगले दो वर्षो मे प्रकाशित हुई, बडी जोरदार कहानियाँ है और वेसेक्स (Wessex) के सामान्य कोटि के लोगो का सुन्दर चित्र देती है। हार्डी ने जान-बूझकर देहात के लोगो के जीवन की कहानियाँ इसलिए

लिखीं कि उनका आंतरिक जीवन जैसा होता है वैसा ही उनका चरित्र होता है और वैसे ही वे काम भी करते हैं। उच्च श्रेणी के लोगों का चरित्र जान सकना ऐसा सहल नही होता, क्योंकि उनके ऊपर लोकसम्मति का गहरा प्रभाव होता है जो उनके चरित्र को कुछ का कुछ कर देता है।

हार्डी के उपन्यासों में दृश्यों का महत्त्व

इन तीन उपन्यासों में हार्डी की सारी विशेषताएँ हमारे सामने आ जाती हैं, जिनके कारण उसे प्रसिद्धि मिली थी और जो उसे दूसरे उपन्यासकारों से पृथक् करती हैं। जब १८७८ में उसने दि रिटर्न आफ दि नेटिव (The Return of the Native) प्रकाशित किया, तब तक उसके बहुत से विचार तथा उपन्यास-कला सम्बन्धी उसके सिद्धान्त संसार के सामने आ चुके थे। टेस आफ दि डूर्बर वील्स (Tess of the D'urbervilles) और जूड दि आब्स्क्योर (Jude the Obscure) के प्रकाशन ने उसे लोकप्रिय बना दिया (१८९६), जिसके बाद उसने उपन्यास लिखना बन्द करके केवल कविता लिखना प्रारम्भ किया।

उपन्यासों की भाँति हार्डी के कहानी-काव्यों मे भी प्राकृतिक दृश्यों की बहुत बड़ी महिमा बनी रही। हार्डी प्रकृति की सत्ता और शक्ति के दृश्यो को दिखाकर मनुष्य की दुर्बलता और अनित्यता का ध्यान दिलाता है। कभी-कभी वह सुन्दर तथा शान्तिमय दृश्यों को कवियों की भाँति चित्रण करके प्रकृति को मनुष्य का शरणस्थान बना देता है। बहुधा प्रकृति को लाक्षणिक संकेत बनाकर वह अपने विशेष सिद्धान्त प्रस्तुत करता है, जैसे वुडलैण्डर्स (The Woodlanders) में टेढ़े मेढ़े कुरूप बौने वृक्षों के चित्रण से वह मनुष्यजीवन के असफल मनोरथों की ओर संकेत करता है। कभी-कभी प्रकृति को उस शक्ति का प्रतिरूप बनाकर वह हमारे सामने लाता है जो मनुष्यों का गर्व तोड़कर उन्हें नीचा दिखाती है। यह विचार करने योग्य है कि मनुष्यों के जितने नमूने हार्डी अपने उपन्यासों में लाता है वे सब अपना जीवन प्रकृति के निकट व्यतीत करते हैं और उन सबमें प्राथमिक अथवा मौलिक प्रवृत्तियाँ बहुत प्रबल होती हैं।

मेरिडिथ अपने उपन्यासों के पात्र ऐसे व्यवसायों तथा स्थितियों से लेता है जहाँ के स्त्री-पुरुष विभिन्न प्रकृति के एवं पेचीले और विचारशील होते हैं। हार्डी के मत से विचार सत्य को जानने में उतना ही असमर्थ होता है जितना स्वर्ग पहुँचने के लिए कोई सीढ़ी हो सकती है। मेरिडिथ व्यक्ति को उत्तेजित करता है और उसे

अपनी सीमा से बाहर ले जाता है; हार्डी का मत है कि मनुष्य में कामुकता, जाति-भेद तथा समय और स्वभाव की गुलामी के अतिरिक्त और कोई अर्थपूर्ण गुण नहीं है, इसीलिए वह ऐसे ही नमूने लेता है जिनमें ये बातें हों।

हार्डी का तत्त्वज्ञान—वास्तववाद तथा निराशावाद

टामस हार्डी ने ऐसे समय में उपन्यास लिखना आरम्भ किया था जब जार्ज इलियट की ख्याति दिन पर दिन बढ़ रही थी और सारे लेखक उसके उपन्यासों से प्रभावित हो रहे थे। हार्डी पर भी इलियट का प्रभाव पड़ा था जो उसकी रचनाओं में व्याप्त हो रहा है। उसी के समान हार्डी भी मनोवैज्ञानिक एवं वास्तववादी है, यद्यपि उसका वास्तववाद फ्रांस के ज़ोला (Zola) और मोपसां (Maupa-ssant) नामक पदार्थ-विज्ञान के सिद्धान्तों पर साहित्य को आधारित करने वाले उपन्यासकारों की रचनाओं से बहुत प्रभावित था। हार्डी भी विज्ञान की उन्नति के काल में बड़ा हुआ था और उसने भी विज्ञान के वातावरण में लिखना आरम्भ किया था। विज्ञान के प्रभाव से वह भी प्रकृति में नियम की प्रधानता देखता था और व्यक्ति को किसी दशा में ऐसी स्वतन्त्रता नहीं देता था कि उसे अपने किसी कार्य का उत्तरदाता समझा जा सके। हार्डी के सिद्धान्त से प्रकृति के नियम को सर्वोपरि मानना भाग्य पर भरोसा करने के बराबर है। यह भाग्यवाद विश्व में एक ऐसी भयंकर शक्ति को व्यापक देखता है जो अकारण जिसे चाहती है तहस-नहस करके समाप्त कर देती है।

हार्डी के उपन्यासों का यह नैराश्य उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम युग के वातावरण में था। विज्ञान एवं तत्त्वज्ञान की उन्नति तथा अध्ययन ने लोगों की धर्म-निष्ठा को ऐसा धक्का पहुँचाया था कि उनके विचार विचलित हो गये थे और मनुष्य अपने भविष्य को अनिश्चित समझने लगे थे। जिस प्रकार शताब्दी के प्रारम्भिक युगों में कान्ट तथा दूसरे जर्मन तत्त्वज्ञानियों के प्रभाव से रोमैन्टिक आन्दोलन (Romantic Movement) साहित्य में चला था, उसी प्रकार अब शताब्दी के चतुर्थ चरण में शोपेनहावर (Schopenhauer) के प्रभाव में विज्ञान तथा तत्त्वज्ञान के सिद्धान्तों के मेल से वह नवीन वास्तववाद उत्पन्न हुआ जिसके नैराश्य को हार्डी के उपन्यासों ने प्रकट किया। शोपेनहावर ने जीवन को अज्ञान एवं अन्धकारमय अभिलाषा के सङ्कल्प का परिणाम समझा था। यह संकल्प मनुष्य की बुद्धि और इच्छा के विरुद्ध जैसे चाहता अपने को प्रकट करता और सारे धार्मिक

आश्वासनों को हवा बताता चला जाता है। हार्डी चरित्र को वंशपरम्परा-प्राप्त और सांसारिक संघर्ष का परिणाम समझता है। उन घटनाओं तथा स्थितियों को भी, जो मनुष्य के अधिकार से बाहर की हैं, जैसे भाग्य और अकस्मात् होने वाली बातें, वह इसी प्रकार की समझता है। टेस के जीवन की घटनाओं को किसी क्रोधी देवता ने एकत्रित करके उसके नाश का स्वांग रचा है, जिसमें न दया है न सहानुभूति और न उसमें ईश्वर का हाथ दिखाई देता है। अन्त में हार्डी पूछता है—"टेस क्यों पैदा हुई थी? वे रंगीन चमकदार बादल कहाँ हैं जिन्हें उड़ाता हुआ बच्चा स्वर्ग से पृथ्वी पर मुस्कराता उतरता है?

राबर्ट लुई स्टीवेन्सन और 'रोमांस' का पुनरुद्धार

ऐसे समय में जब समाज में मनुष्यजीवन का यह चित्र लोगों को मलिन कर रहा था और चारों ओर अन्धकार छाया दिखाई देता था, राबर्ट लुई स्टीवेन्सन (Robert Louis Stevenson) की पुस्तकों ने रोमांस को फिर से जगाया और प्रत्येक मनुष्य के व्यक्ति-जीवन की आदर्श गति को सम्भव बतलाया। इन पुस्तकों का प्रभाव समाज और व्यक्ति पर एक बलवर्धक औषधि का जैसा पड़ा और उपन्यास के पाठकों ने फिर से अपनी स्वतन्त्र आत्मा तथा शक्ति की सम्भावना का अनुभव किया। वास्तविकवाद के इस बड़े काल में पिकविक पेपर्स (Pickwick Papers) से लेकर जूड दि आब्स्क्योर (Jude the Obscure) तक, उपन्यास ने कितने ही पल्टे खाये, परन्तु 'रोमास' फिर भी जीवित रहा और १८८० तक कई रोमांसकार पुस्तकें प्रकाशित करते रहे। 'रोमांस' ने भी इस काल में कई रूप बदले और भय के नवीन स्रोतों का आविष्कार हुआ। चार्ल्स रीड ने अपने दि क्लायस्टर ऐण्ड दि हार्थ (The Cloister and the Hearth) को "वास्तविक तथ्यों का रोमांस" कहा था। अपराध के विषय को उपन्यासों में नये ढंग से लिखा जा रहा था और विल्की कालिन्स (१८२४-१८८९) ऐसे लेखकों में अग्रसर रहा था। उसने लगभग पचीस उपन्यास लिखे थे जिनमें से दि वुमन इन व्हाइट (The Woman in White) और दि मूनस्टोन (The Moonstone) बहुत प्रख्यात हैं। उसने जासूसी विषय को एडगर ऐलेन पो (Edegar Allen Poe) से लेकर शर्लाक होम्स (Sherlock Holmes) तक पहुँचाया था। उसी समय में विज्ञान के रोमांस भी लिखे जाते थे जिनमें से आलिवर वेन्डेल होम्स (Oliver Wendell Holmes) का एल्सी वेनर (Elsie Venner) नामक रोमांस (१८६१) बहुत

विख्यात हुआ और बुल्वर-लिटन के दि कमिंग रेस (The Coming Race) के बराबर समझा जाता। इसी समय में (१८६९) ब्लैकमोर (Blackmore) का लार्ना डून (Lorna Doone) नामक रोमांस प्रकाशित हुआ था। इन रोमांसों से भी अधिक महत्त्व के रोमांस विलियम ब्लैक (Willaim Black) के थे जिनकी कथावस्तु दूरस्थ देशों के इतिहास से ली गयी थी। इसी श्रेणी के रोमांस सर हेनरी राइडर हैगर्ड (Sir Henry Rider Haggard) के थे जिनमें पूर्वी देशों के दृश्यों को लेकर कथावस्तु तैयार की गयी थी।

ये रोमांस साहित्य में कोई महत्त्व नही रखते किन्तु वास्तववादी उपन्यासों की कलाहीनता को अवश्य दर्शाते है। अंग्रेजी साहित्य में जिस लेखक के रोमांस इस काल मे विशेप महत्त्व के है वह विलियम मारिस (William Morris) नामक लेखक था, जिसका जन्म १८३४ में हुआ था और जो कवि, कलाकार, शिल्पी, घर सजानेवाला, मुद्रक और सोशलिस्ट (व्यक्ति के कल्याण को समाज की उन्नति पर निर्भर करनेवाला) था। उसने गद्य तथा पद्य मे कहानियाँ लिखी और तत्कालीन सभ्यता के बोझ से दबे हुए लोगों की दशा को छोड़कर चौदहवी शताब्दी के सीधे-सादे लोगों की दशा पर और इंग्लैण्ड को छोड़कर आइसलैण्ड (Iceland) की ऐतिहासिक वीर-कथाओं पर रोमांस लिखे। इन प्राचीन युगों में उसने पृथ्वी पर एक नया स्वर्ग (Earthly Paradise) और दूरस्थ समुद्रों की लहरों के बीच एक गुमनाम नगर ढूँढ़ निकाले।

ब्लैकमोर (Blackmore) ने भावुकता से व्याकुल युवकों के लिए और मारिस (Morris) ने सौन्दर्यशास्त्र के जाननेवाले शिक्षित विद्वानों के लिए रोमास लिखे थे। जिस लेखक ने आजकल के युवकों तथा प्रौढ़ मनुष्यों एवं सामान्य पाठकों के लिए रोमास लिखे और अपने जीवन-काल में ख्याति पायी वह राबर्ट लुई स्टीवेन्सन (Robert Louis Stevenson) था। उसका जन्म १८५० मे एडिनबरा के इंजीनियरों के परिवार में हुआ था। सर वाल्टर स्काट की भाँति पहले वह स्काटलैण्ड में बैरिस्टर हुआ किन्तु वकालत के पेशे से अरुचि हो जाने के कारण बैरिस्ट्री छोड़ दी। कुछ ही समय के उपरान्त उसका स्वास्थ्य बिगड़ा और क्षय रोग की शका से खुले मैदान में जीवन व्यतीत करने के हेतु वह भ्रमण करने लगा। कई वर्प का समय उसने इस प्रकार रहकर बिताया और मन बहलावके लिए कभी कभी पत्रिकाओं में निबन्ध और भ्रमणों का वृत्तान्त लिखता रहा, जिन्हें एकत्र करके १८७८ में ऐन इनलैन्ड वायज (An Inland Voyage), १८७९ में ट्रैवेल्स

विद ए डांकी (Travels with a Donkey) और १८८१ में वर्जिनिवस प्यूरिस्की (Virginibus Puerisque) नामक पुस्तकें प्रकाशित कीं। अव उसने रोमांस लिखने प्रारम्भ किये और पहले दि न्यू अरेबियन नाइट्स (१८८२) और फिर ट्रेजर आईलैन्ड (१८८३) प्रकाशित करके अपने रोमांसकार होने का प्रमाण दिया।

ट्रेजर आईलैण्ड (Treasure Island) समुद्री डाकुओं और भयंकर गरजते हुए समुद्र का रोमांस है जिसमें उसने बिना प्रेम अथवा चालाकी या भयानक रहस्यों का नमक-मिर्च लगाये केवल पराक्रम के कार्यों से ही दिलचस्पी उत्पन्न की है।

सन् १८८६ में स्टीवेन्सन ने डाक्टर जेकिल ऐन्ड मिस्टर हाइड (Dr. Jekyll and Mr. Hyde) नामक रोमांस लिखकर भय तथा रहस्य को प्रेरक वनाया। उसने अठारहवीं शताब्दी की ऐतिहासिक घटनाओं की सामग्री लेकर स्काटलैण्ड के उपन्यास लिखे, जिनमें से किडनैप्ड (Kidnapped), कैटरिओना (Catricna), दि ब्लैक ऐरो (The Black Arrow), दि मास्टर आफ वैलेन्ट्रे (The Master of Ballantrae) वहुत प्रसिद्ध है। जव उसका स्वास्थ्य वहुत विगड़ गया और क्षय रोग ने बिलकुल दवा लिया, तो उसे सैमोआ में जाकर रहना पड़ा, जहाँ का जल-वायु न वहुत गरम था न वहुत ठंडा और जहाँ रहकर उसने छै वर्ष निकाले और सात पुस्तकें लिखकर प्रकाशित कीं। पिछले वारह वर्ष उसने रोग से लड़कर किसी प्रकार प्रसन्नचित्त रहकर उन पुस्तकों के लिखने में लगाये जो विनोदी और आशावादी होने के साथ मानवता एवं पराक्रम को उत्तेजित करती हैं। उसका कथन है कि जीवन की समस्याएँ चाहे कितनी भी कठिन हों, हमें ईश्वर के होने में विश्वास हो या न हो, हमारा एकमात्र कर्तव्य जन-सेवा है, और वह सेवा उन्हें प्रसन्नचित्त रखने से वढ़कर कोई नहीं हो सकती। दूसरों को वही मनुष्य प्रसन्न-चित्त कर सकता है जो स्वयं प्रसन्न-चित्त हो; और यह सौभाग्य उसी व्यक्ति का होता है जो सद्गुणी तथा पुण्यात्मा हो। इसलिए अच्छा मनुष्य होना हमारा परम कर्त्तव्य है। स्टीवेन्सन का आनन्द उसकी पुस्तकों से टपकता है, जिनमें से अधिकांश उसने रोग से पीड़ित दशा में लिखी थीं। वह वियर आफ़ हरमिस्टन (Weir of Hermiston) नामक उपन्यास लिख रहा था जव १८९४ में उसकी मृत्यु हुई।

स्टीवेन्सन के उपन्यासों का वातावरण

स्टीवेन्सन ने उपन्यास में जार्ज मेरिडिथ की भाँति परिश्रम और सावधानी के

साथ एक निश्चित प्रणाली एवं संशोधित शैली का प्रयोग किया। यदि वह ऐसा प्रफुल्लचित्त, विनोदी स्वभाव का मनुष्य न होता और सुन्दर तथा संक्षिप्त वर्णनों मे दृश्यो और मनुष्यों का चित्रण न कर सकता, या सामग्री की प्रचुरता न होती, देश और काल का इतना अच्छा ज्ञान न होता, तो प्रणाली और शैली उसे कही का न रखती। किन्तु उसके अपने गुणों ने तथा मौलिकता ने उसे बल दिया और वह दूसरों का अनुसरण करके भी अपनी विशेषता रख सका। जो घटनाएँ उसने अपनी कथावस्तु मे रखी वे बड़ी हद तक नैतिकता के मण्डल से बाहर की है, और हार्डी के उपन्यासो की जैसी क्रूर और विद्वेषी न होकर, वे एक स्वर में मनुष्य-जीवन की सुन्दरता तथा आनन्द का गुणगान करती है। उसके उपन्यासों में भले लोग भाग्यशाली होते है और ससार को बड़ा सुन्दर स्थान समझते है; थोड़ी सी चोट खाकर उनके बहुत से झगड़े निपट जाते है; बुरे मनुष्यों को गोली मारने से लोग नही चूकते और उनके लिए फाँसी की सजा भी तैयार रहती है या आप ही वे किसी दलदल मे फँसकर प्राण दे देते है और उनके ऐसे किसी अन्त से लोगों को शोक नहीं होता।

ऐन्टनी ट्रालाप के घरेलू विषय उसे पसन्द न थे और न वह जीवन की गूढ़ समस्याओ को कहानीकला पर लादना अच्छा समझता था। जो स्थिति १८८० में उसके सामने थी उसमें रोमास का प्रकाशन असम्भव हो रहा था। मेरिडिथ और हार्डी दोनो ही कविता लेकर पाठकों के सामने आये थे और उनके उपन्यास उनको कविता से ऐसे मिले-जुले थे जिससे पाठकों में मतभेद था कि वे कवि है या उपन्यासकार। ऐसी दशा मे स्टीवेन्सन को अपने विचारों को साहित्यक लोगों में फैलाने की आवश्यकता थी, जो कार्य उसने अपने सुन्दर निबन्धो के द्वारा कई वर्ष तक किया।

स्टीवेन्सन के कहानी-कला सम्बन्धी विचार तथा उनका प्रयोग

इस समय इग्लैण्ड भर में ब्रेट हार्ट (Bret Harte) की कहानियाँ प्रचलित हो रही थी और अमेरिका से उसके आने और लन्दन में रहने की पाठकों में बड़ी चर्चा थी। फ्रांस में भी इस समय कहानियों की ही धूम मची हुई थी और मोपसां (Maupassant) के झडे उडाये जा रहे थे। ऐसे समय मे किसी अंग्रेज़ का इन्ही कहानीकारों की जैसी सुन्दर एवं जोरदार कहानियाँ लेकर समाने आना अपने को तुरन्त लोकप्रिय बनाना था। और हुआ भी ऐसा ही।

स्टीवेन्सन की कहानियों का दि न्यू अरेबियन नाइट्स (The New Arabian Nights) नामक संग्रह १८८२ में प्रकाशित होते हो प्रसिद्ध हो गया, और दि

मेरी मेन (The Merry Men) नामक संग्रह के सामने आने पर तो वह सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखक समझा जाने लगा। उसकी कहानियाँ कई प्रकार की थीं, जैसे थ्रॉन जैनेट (Thrawn Janet) सनसनी उत्पन्न करनेवाली है, विल ऑ' दि मिल (Will o' the Mill) काव्य की सी सुन्दरता तथा लालित्य से परिपूर्ण है, और कुछ कहानियाँ जैसे प्राविडेन्स एन्ड दि गिटार (Providence and the Guitar), विस्मय तथा अनुरूपता एवं समानता को काम में लाकर प्रभाव उत्पन्न करती है। किन्तु स्टीवेन्सन के लिखने में सब कहानियाँ चाहे वे कैसी भी हो, साहित्यिक गुणों से चमक जाती हैं, जैसे थ्रान जैनेट में स्काटलैण्ड की ग्रामीण भाषा का प्रयोग, जिसने कहानी में जान डाल दी है और उसके सनसनी-उत्पादक अंशों को तीव्र कर दिया है। एक प्रकार से देखा जाय तो ट्रेजर आईलैण्ड (Treasure Island) और किडनैप्ड (Kidnapped) युवकों की पुस्तकों-जैसी हैं, किन्तु लेखक की शैली ने वह चमत्कार दिखाया है कि बूढ़े लोग भी इन उपन्यासों में नवयुवकों-जैसी दिलचस्पी पाते हैं और फिर से अपने वे दिन स्मरण करते हैं जो लौट नहीं सकते परन्तु इस पुस्तक में वे उनका अनुभव करते हैं।

डाक्टर जेकिल ऐण्ड मिस्टर हाइड (Dr. Jekyll and Mr. Hyde) में मनोवैज्ञानिक तथा सनसनी-उत्पादक अंग मिले-जुले हैं, जिसके कारण एक तरह से यह उपन्यास बड़ा अच्छा थरथरी पैदा करनेवाला हो गया है, परन्तु ऐसे उपन्यासों की जैसी कोई भी रूक्षता उसमें स्टीवेन्सन की शैली ने नहीं रहने दी है, बल्कि शैली ने उसे सुन्दर और गम्भीर कर दिया है। यह साहित्य-चमत्कार स्टीवेन्सन की रचनाओं में पहले दिन से था और अन्त तक रहा।

स्टीवेन्सन ने निबन्ध, नाटक और कविता से साहित्यिक जीवन प्रारम्भ किया था और पहले दिन से ही सामग्री तथा शैली को एक कलाकार की भाँति निश्चित किया था। उसका कहना था कि कला और विशेषकर कहानी-कला, मनुष्यजीवन में एक विशिष्ट उपयोगिता रखती है, किन्तु वह जीवन का सजीव चित्रण नहीं करती और न किसी प्रकार जीवन की बराबरी करती है (जैसा कि हेनरी जेम्स का विचार है), न जीवन की उन्नति में योग देती है (जैसा जार्ज इलियट का सिद्धान्त है)। स्टीवेन्सन का मत था कि कला उसी अवस्था में जीवन की सच्ची सेवा कर सकती है जब वह पूर्णता प्राप्त कर ले। पूर्णता-प्राप्त कला जीवन की बाहरी तथा नित्यप्रति की साधारण वास्तविकता के जाल से मुक्त होने में मनुष्य की सहायक होती है और ऐसे प्रदेश में पहुँचाती है जहाँ आध्यात्मिक स्वतन्त्रता का राज्य होता

है। स्टीवेन्सन बड़ी गम्भीरता से कहता है कि "प्रौढ़ मनुष्य के लिए कहानी-साहित्य का वैसा ही महत्त्व होना चाहिए जैसा बच्चों के लिए खेल का होता है।" "बाहर से मनुष्य का जीवन मिट्टी का मामूली टीला ही क्यों न दिखाई पड़ता हो, किन्तु उस टीले के भीतर जरूर एक स्वर्णमय भवन होता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति आनन्द का जीवन व्यतीत करता है।" स्टीवेन्सन के मत से "मनुष्य के स्वप्नों के उस सुन्दर स्वर्णमय कमरे को सामने लाकर प्रस्तुत करना" ही रोमास का काम है। कहानी-कला के इस सिद्धान्त की स्टीवेन्सन ने कई निबन्धों में व्याख्या की और अपनी रचनाओं में उसका पालन किया। इस सिद्धान्त के अनुसार कहानी-साहित्य में घटना को ही भाव उत्पन्न करने का मुख्य साधन समझना चाहिए, किन्तु प्रत्येक घटना-क्रम मानवप्रकृति तथा मनुष्यजीवन सम्बन्धी विषयों में केन्द्रित होना चाहिए।

स्टीवेन्सन के रोमांसो मे मानवचरित्र घटना-क्रम पर प्रभुत्व पाता है, किन्तु घटना-प्रधान होने के कारण कथावस्तु में साहसिक कार्य पर अधिक बल होता है है और भय, दुःख तथा प्रेम के भावो से कार्यो को उत्तेजना नहीं दी जाती। जब उसके रोमांस और उपन्यास प्रकाशित हुए थे तो कहा जाता था कि वह स्त्रियों को पात्र बनाये बिना ही अपनी कहानियों को रोमांटिक तथा दिलचस्प बनाने की योग्यता रखता है। जब उसने अपने उपन्यासों मे स्त्रियों को भी पात्र बनाया तो उन नायिकाओ की बड़ी प्रशसा की जाने लगी जो समाज की वास्तविक दशा को दर्शाती थी। इस रीति से स्टीवेन्सन ने कहानी-साहित्य में वह परिवर्तन किया जिससे लोगों मे रोमांस की रुचि फिर से जीवित हो गयी। उसके उपन्यासों तथा कहानियों का ढंग एवं प्रणाली पहले के लेखकों के ढग और प्रणाली से भिन्न ही नही बल्कि बहुत साहसिक है; वर्णन की रीति और शैली, घटनाओं का क्रम और पात्रों का पराक्रम, सभी कुछ स्काट के समय के उपन्यासों से भिन्न है। स्टीवेन्सन उपन्यासों में वर्णन किये हुए काल तथा स्थान को इतनी अच्छी तरह जानता है कि उसको वास्तविकता का प्रभाव डालने में कोई कठिनाई नहीं होती और उसके रोमांस भी जीवन के निकट आ जाते है, यहाँ तक कि कल्पित बाते तथ्य का रूप धारण कर लेती है।

स्टीवेन्सन की नैतिक कहानियाँ—डाक्टर जेकिल एेण्ड मिस्टर हाइड

जब कभी स्टीवेन्सन नैतिक विषय पर उपन्यास या कहानी लिखता था तो उसकी प्रणाली अनोखी होती थी। इस प्रणाली का बड़ा अच्छा अध्ययन डाक्टर

जेकिल ऐन्ड मिस्टर हाइड (Dr. Jekyll and Mr. Hyde) में हो सकता है। यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसकी दो भिन्न प्रकृतियाँ है; एक निन्दित तथा दुष्ट और दूसरी सुशीलतायुक्त एवं दयालु। यह व्यक्ति जीवन के अधिकांश भाग में दो भिन्न मनुष्यों के समान समय व्यतीत करता और कार्य करता रहा यहाँ तक कि एक दिन अकस्मात् यह भेद खुल गया और मालूम हो गया कि दोनों एक ही व्यक्ति हैं। आधुनिक मनोविज्ञान के विषयों पर जितनी भी कहानियाँ लिखी गयी हैं उन सबमें यह पुस्तक बड़े महत्त्व की है और इसने विभिन्न देशों के लेखकों को अनुकरण में लाक्षणिक अर्थ के प्रयोग में बहुत सी कहानियाँ लिखने को उत्तेजना दी है।

हेनरी जेम्स (Henry James) ने भी ऐसी ही एक अद्भुत कहानी लिखी है जिसमें एक ऐसा व्यक्ति दिखाया गया है जिसका सारा जीवन सामाजिक ही है, जिसका व्यक्तिगत अपना निजी जीवन है ही नहीं। जब लोग उस व्यक्ति से बाहर, औरों के साथ, मिलते हैं तो वह नगर का सबसे अधिक शिष्ट और सुशील मनुष्य मालूम होता है, किन्तु जब वे उसका पीछा करके उसके घर में जाते है और उससे अकेले में मिलना चाहते हैं तो वह अदृश्य हो जाता है और एक जोड़े कपड़ों के सिवा वे वहाँ और कुछ नहीं पाते।

कहानी के ये दोनों रूप नैतिक तथ्यों की व्याख्या करते हैं और मौलिकता तथा उच्च कोटि की विचारशीलता का पता देते हैं। स्टीवेन्सन ने भयानक अथवा बुरे स्वप्नों की जितनी कहानियाँ लिखी हैं वे बहुधा स्वप्न के संसार में मनुष्य की बुद्धि को स्थगित करके उसके अंतर्ज्ञान को मुक्त करती है और तब उसकी अच्छाई तथा बुराई को सामने लाकर उनका निरूपण करती है। इस प्रणाली तथा इस आशय के पीछे, और कहानियों के विषय के चुनाव में, जो दार्शनिक विचारधारा काम करती थी, वह उसके रोमांस सम्बन्धी गम्भीर विचारों से एक-स्वर थी और बहुत कुछ जार्ज मेरिडिथ की विचारधारा से मिलती थी।

स्टीवेन्सन भी मेरिडिथ की भाँति वैज्ञानिक सिद्धान्तों को स्वीकार करता और जीवन तथा संसार को विज्ञान के मतानुसार देखता है। वह विज्ञान के मत का इस प्रकार अपने एक निबन्ध में संक्षेप करता है—"विश्व अनन्त आकाश है जिसमें घूमते हुए न मालूम कितने द्वीप बिखरे पड़े है जो उस पदार्थ के बने है जिसे हम 'घनपदार्थ' कहते है"। इस घनपदार्थ के "सड़ने से जीव-जन्तु उत्पन्न होते हैं" जो एक दूसरे को "चीरते-फाड़ते, अपने पेट में भरते और नष्ट करते

रहते हैं," यहाँ तक कि "हमारा घूमता हुआ द्वीप रुधिर से सने ऐसे जहाज़ से अधिक लथ-पथ हो जाता है, जिस पर विद्रोह हुआ हो।" इस भयंकर संग्राम एवं अवगाहन की "अन्तिम उपज मनुष्य है।" वड़े ही आश्चर्य की वात है कि "मनुष्य के मन में हमें 'कर्तव्य' की धारणा मिलती है"—हमें पागल कर देनेवाली धारणा, कि "मनुष्य स्वयं अपने से, अपने पड़ोसी से, और अपने ईश्वर से ऋणवद्ध है।" यही नहीं, परिणामवाद (The Theory of Evolution विकासवाद) जो मनुष्य को दूसरे जीव-जन्तुओं का नातेदार सिद्ध करता है, हमें यह संकेत भी देता है कि कदाचित् इसी प्रकार का आदर्श और ऐसी ही प्रेरणा सारे जीव-जन्तुओं में भी हो। इस विचारधारा से स्टीवेन्सन परिणाम निकालकर लिखता है—"ईश्वर न करे कि मनुष्य सद्भाव एवं सुचरित्र से उकता जाय या थक जाय; निष्काम कर्म छोड़कर निराश होकर वैठ रहे; अथवा दुःख-भरी भाषा में अपने भाग्य को कोसने लगे, या शिकायत करने लगे।" इस परिणाम मे स्टीवेन्सन और जार्ज इलियट की समानता प्रकट होती है और हमें अनात्मवाद और निराशावाद का उत्तर भी मिल जाता है। स्टीवेन्सन की रचनाएँ आशा से भरी है और पग-पग पर पाठक को वधाई देती है कि उसका जन्म ऐसे सुन्दर संसार में हुआ जो मनुष्य को अपने आपको कृतकार्य करने के अवसर देता है।

रावर्ट लुई स्टीवेन्सन की मृत्यु (१८९४) के समय अंग्रेजी साहित्य में जो हलचल मची हुई थी उसकी तह में कई प्रभाव काम कर रहे थे। साहित्य के लगभग सभी अंगों के श्रेष्ठ लेखकों की या तो मृत्यु हो चुकी थी या वे मौन होकर अलग वैठ गये थे। क्वीन विक्टोरिया की दोनों जुवलियों के वीच का दश वर्षीय काल, १८८७ से १८९७ तक, नयी-नयी साहित्यिक प्रवृत्तियों की वृद्धि के लिए वहुत शुभ था। साहित्यकारों की छोटी-छोटी मण्डलियाँ अपनी-अपनी रुचि के अनुसार रचना करतीं और दूसरे लेखकों को चढ़ाती उतारती रहती थीं। नये समालोचक विना रोक-टोक के टेनिसन और व्राउनिंग के लत्ते लेते थे और आदर्शवाद की हँसी उड़ाते थे। तीस वर्ष पूर्व का नारा कि कला का हेतु केवल कला है, फिर से उठाया गया था और वहुत-से लेखकों के लिए साहित्य का मुख्य सिद्धान्त हो गया था। उन्हीं लेखकों की प्रशंसा होती थी जो अपनी रचनाओं में सौन्दर्य और केवल सौन्दर्य के पीछे पड़ते थे। "दि येलो-व्रुक" ("The Yellow Book") इन लेखकों की मुखपत्रिका थी, जिससे आस्कर वाइल्ड (Oscar Wilde) और ऑव्रे वीयर्ड्स्ले (Aubrey Beardsley) सम्वन्धित थे। ये लेखक

शैली तथा शब्द-चयन पर सारा वल देते थे और विषय से कुछ मतलब नहीं रखते थे।

रचना की भाषा और शैली तथा बनावट पर इतना जोर देना और विपय को कुछ महत्त्व न देना बहुत लोगों को अंग्रेजी परम्परा के विरुद्ध और अवास्तविक मालूम होता था। जैसे-जैसे शताब्दी का अन्त निकट आता गया लोग दोष निकालने में निपुण होते गये, और क्या गिरजा क्या राज्य, क्या समाजव्यवस्था क्या राजनीति; यहाँ तक कि सारा संसार, वल्कि विश्व और स्वय अपना जीवन भी उन्हे दोपों से भरा हुआ दिखाई देता गया। इस मत का प्रचार सैमुएल वटलर (Samuel Butler) के एरिव्हन (Erewhon) नामक रोमास के प्रकाशन से ही प्रारम्भ हो चुका था, किन्तु इस समय वह वहुत फैल गया। जार्ज गिसिंग (George Gissing) के उपन्यासों मे अमीरो तथा गरीवों के वीच के अन्तर पर कड़ी-कड़ी वातें लिखी जाती थी, यहाँ तक कि उसकी दि प्राइवेट पेपर्स आफ हेन्री राईक्राफ्ट (The Private Papers of Henry Ryecroft) नामक जीवन-कहानी मे भी यह विपय उठाया गया है।

स्टीवेन्सन की मृत्यु के वर्ष में जार्ज मुअर (George Moore) ने एस्थर वाटर्स (Esther Waters) लिखकर उपन्यास मे वास्तववाद का झंडा फिर से ऊँचा किया। "मार्क रदरफर्ड" (Mark Rutherford) के उपन्यासों मे भी दूसरे सैकड़ों उपन्यासों की भाँति सन्देह और निराशा के गहरे वादल छाये हुए है जिनके अँधेरे मे दम घुटने लगता है। जैसे-जैसे शताब्दी का अन्त निकट आता गया, ऐसे शोक तथा निराशा-भरे उपन्यासों की संख्या बढ़ती गयी और यह जान पड़ने लगा कि तत्कालीन साहित्य ने ध्वंसकारी विचार से नाता जोड़ लिया है अथवा अपने को निराशा और उदासी के प्रचार का साधन बना लिया है। वड़ी सख्या मे जो पुस्तके प्रकाशित होती थी उनमें की वहुत सी का तो अग्रेजी परम्परा से कोई सम्वन्ध रहता ही न था और कुछ ऐसी होती थीं जिनमे कोई कला-सिद्धान्त ऐसे नही पाये जाते थे जिन्हे ऐतिहासिक कहा जा सकता। कोई ऐसा लेखक दिखाई नही देता था जो उपन्यास अथवा अग्रेजी साहित्य में नवीन तथा प्राचीन की सन्धि कराता या परम्परा को लेकर आगे वढ़ता।

अंग्रेजी साहित्य पर साम्यवाद का प्रभाव

उन्नीसवी शताब्दी के अन्तिम वर्षो से लेकर वीसवी के प्रथम चरण तक लेखक-

मण्डलियों, प्रवृत्तियों, उद्देश्यों, प्रयोगों की भरमार रही। यह साहित्य में साम्य-वाद की पूर्ण विजय का युग था। शिक्षा के प्रसार ने पाठकों की संख्या वहुत बढ़ा दी थी और समाज में पुस्तकों की बड़ी माँग थी। ऐसे समय में शिक्षित लोगों के लिए एक नया व्यवसाय पुस्तकें लिखने का खुल गया, और जैसे समाज में सब लोग पढ़ने में कुछ समय बिताने लगे, वैसे ही पुस्तकें लिखने का शिक्षित लोग हौसला रखने लगे। परिणाम यह हुआ कि एक ओर साहित्य की काया पलटने लगी और दूसरी ओर साहित्यिकों का सारे मनुष्य-जीवन के प्रति ढंग परिवर्तित होने लगा। साहित्यकला का संचालन दूसरे ढंग से होने लगा और उसकी सीमा के बन्धन भी शीघ्रता से टूटने लगे।

अंग्रेजी साहित्य के इतिहास में पहले भी कभी-कभी ऐसे लेखक हुए थे जिन्होंने साहित्य-कला के नियमों तथा सिद्धान्तों से अलग हटकर, उनका उल्लंघन करके अपने ढंग से पाठकों को प्रभावित करने के लिए पुस्तकें लिखी थी। इन पुस्तकों में सारा बल विषय पर होता था, रचना के नियम तथा प्रणाली को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता था। अब इस समय साम्यवाद के प्रभाव और सामयिक आवश्यकता के कारण लोगों ने इसी रीति पर गद्य तथा पद्य, उपन्यास एवं नाटक, सब प्रकार की पुस्तकें लिखनी आरम्भ कर दी थीं और जिसका जैसे जी चाहता था लिख देता था। चित्र-कला या संगीत की भाँति उन्हें लिखने को महीनों और सालों के अभ्यास की आवश्यकता न थी। मातृभाषा में लिखना था, और ऐसी जनता के लिए लिखना था जो स्वयं साहित्य-कला और प्रणाली के नियमों तथा सिद्धान्तों से अनभिज्ञ थी। समय के परिवर्तन से, और इन कारणों से, साहित्य एवं साहित्यकारों की रचनाएँ समाज के इतिहास की सामग्री होती गयीं, और जैसे जैसे समय व्यतीत होता गया, अंग्रेज़ी साहित्य की परम्परा से साहित्यिकों की रचनाएँ दूर होती गयीं, यहाँ तक कि कुछ ही काल में इतिहास के सिद्धान्तों के अनुसार रचनाओं और साहित्यकारों का वर्णन कारण और परिणाम दिखाकर पहले की भाँति देना व्यर्थ और असम्भव-सा हो गया।

साम्यवाद के प्रभाव से जहाँ साहित्यिक पुस्तकों की संख्या इतनी अधिक और शीघ्रता से बढ़ी वहाँ उसमें विभिन्नता भी बहुत आयी। उपन्यास पर ये दोनों प्रभाव बहुत जोरों से पड़े। जनता में साहित्य के दूसरे अंगों की अपेक्षा उपन्यास सर्वप्रिय होने के कारण उसकी संख्या खूब ही बढ़ी, किन्तु बहुत कम लेखक या उनके उपन्यास दस-बारह वर्ष से अधिक जीवित रह सके। उपन्यासकारों का यह समूह दो प्रकार

का था—एक वे जो परम्परा-प्राप्त प्रणाली पर लिखते थे, जिनकी संख्या थोड़ी थी और दूसरे वे जो स्वतंत्रता से अपनी रुचि के अनुसार प्रणाली को विषय के साथ परिवर्तित करने पर तैयार रहते थे। इन परिवर्तनशील लेखकों में जो प्रभावशाली हुए और जिनका लोगों ने अनुकरण भी किया, वे उपन्यास-कला और परम्परा दोनों को ही समझते और आदर करते थे और फिर अपनी रुचि तथा आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन करते थे। इन उपन्यासकारों ने कथावस्तु की व्यवस्था को बदलकर उपन्यासों में जीवन की ही जैसी आकस्मिक तथा नियमों से मुक्त घटनाएँ एवं परिस्थितियाँ लाकर पात्रों का अनुभव कराने की प्रथा चलायी थी, जिसका उपन्यास पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा और आगे चलकर इनकी उन्नति हुई। पाठकों की संख्या इतनी बढ़ गयी थी कि अब उन्हें मनोविज्ञान अथवा आध्यात्मिक विषयों के उपन्यास देना व्यर्थ था, और कथावस्तु में पेचीदगी भी रोचकता के विरुद्ध होती। इसके अलावा, इस युग में कोई ऐसा प्रधान विषय भी नहीं था जिसमें बहुत लोगों को दिलचस्पी होती। वास्तविक जीवन ही एक ऐसा विषय था जिसमें सबको दिलचस्पी थी और उसी विषय को लेकर अर्थपूर्ण उपन्यास लिखे गये।

पहले भी लेखकों ने वास्तविकता को कभी-कभी अपनी प्रणाली की विशेषता बनाया था, किन्तु अब उन्नीसवीं शताब्दी के समाप्त होने पर वास्तविकता वह पुरानी वास्तविकता नहीं रही थी। पहले के उपन्यासकार सामाजिक घटनाओं को समाज के बाहर से देखा करते थे और व्यक्ति पर जो उन घटनाओं का प्रभाव पड़ता था उसे ब्यौरेवार वर्णन करने में वास्तविकता से काम लिया करते थे। विज्ञान की उन्नति ने अब लोगों की आँखें खोल दी थीं और वे बहुत-से कारण और परिणाम देखने लगे थे; समाज तथा उसकी स्थितियों को अधिक गहराई में प्रवेश करके देखते थे और व्यक्ति-जीवन के अध्ययन में वंशपरम्परा-प्राप्त गुण एवं वातावरण तथा आस-पास की वस्तु या स्थिति के प्रभाव का विशेषता से वर्णन करते थे। मनुष्य जीवन से सम्बन्ध रखनेवाले सारे तथ्यों को अर्थपूर्ण समझकर उनका निरीक्षण किया जाता था, और आज के दिन, आज की समस्या, आज की भलाई-बुराई पर अधिक बल दिया जाता था। बहुधा उपन्यासकारों के दृष्टिकोण में और समाचारपत्रों के सम्पादकों के दृष्टिकोण में इस कारण कोई अन्तर न रहता था। जहाँ विगत काल के लेखक अपनी रचनाओं को विचारों की पूर्णता तथा उनकी सत्यता और भाषा एवं शैली की योग्यता व सुन्दरता से चिरजीवी बनाने की दीर्घ चेष्टा

करते थे, इस समय के लेखक कुछ इस फिक्र में रहते जान पड़ते हैं कि किसी प्रकार उनके इस क्षण के विचार लोगों की बड़ी से बड़ी संख्या तक पहुँच जायँ, फिर चाहे उनकी पुस्तक का दूसरा संस्करण निकलने की नौबत आये या न आये। इस विचारधारा ने थोड़े ही काल में इंग्लैण्ड में पुस्तकों की नदियाँ बहा दीं, जिनमे अधिकांश उपन्यास थे, जो दो ही चार वर्षों के भीतर समुद्र की तह में पहुँच गये।

समकालीन समालोचना ने इस विचारधारा के समर्थन में कुछ ऐसे सिद्धान्तों का प्रयोग किया, जो दूसरी कला के थे और वहाँ उनका सदुपयोग होता था। इन सिद्धान्तों में से एक प्रभाववाद (Impressionism) और दूसरा प्रतीकवाद (Symbolism) है, जो उपन्यास की आधुनिक विशेषता के समर्थन के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं। जब लेखक किसी विषय पर सम्पूर्ण सत्य न कहकर उस विषय का केवल वह पक्ष स्पष्टता से वर्णन करता है जो उसे भाता है तो वह लेखक प्रभाववादी (Impressionist) कहलाता है। इसी प्रकार जब लेखक साधारण जीवन की छोटी-छोटी सामान्य बातों में ऐसा रहस्य देखता है, जो दूसरे नही देख पाते और जो संकेत के रूप मे उसे दिखाई देता है, किन्तु जिसे बुद्धि ग्रहण नही कर सकती, तो उस रहस्य को वह प्रतीकों (Symbols) द्वारा प्रकट करता है। ऐसे लेखक को प्रतीकवादी (Symbolist) कहा जाता है।

तत्कालीन कहानी-साहित्य की प्रणाली तीन विशेष उद्देश्यों पर बल देने के कारण उत्पन्न हुई; एक विशेषता, जिसे "तत्क्षणता" कह सकते है, वर्तमान अथवा उपस्थित को सबसे अधिक महत्त्व देने से उत्पन्न हुई; दूसरी, जिसे "स्पष्टता" का नाम दिया जाता है, वस्तुओं के एक ही पक्ष पर लिखने के कारण उत्पन्न हुई; और तीसरी वह जो वस्तुओ की आध्यात्मिकता पर बल देने से उत्पन्न हुई और जिसे "अर्थपूर्णता" कहा जाता है। यह प्रणाली साहित्य में वास्तविकता लाने और उसे जीवन के निकट करने की चेष्टा का फल था, जिसने १८९० के उपरान्त लेखकों के दो मुख्य दल बना दिये; एक वह जो अंग्रेज़ी साहित्य तथा उपन्यास को उसकी परम्परा के अनुसार ही उन्नत करना चाहता था और विगत के सिद्धान्तों और प्रणाली से उसे काट देना नही पसन्द करता था, और दूसरा वह जो नये अर्थ में वास्तविकता का समर्थक था, और विगत की कमाई को व्यर्थ का बोझ समझता था। वे लेखक जो परम्परा को छोड़ना नही चाहते थे, बहुधा शताब्दी के पूर्वार्ध की प्रणाली तथा परम्परा के वातावरण में पले थे। उनमें से अधिकांश का जन्म १८६० के लगभग

का था और उनकी विशिष्ट-गुण-दर्शक रचनाएँ शताब्दी का अन्त होने से पहले या थोड़े ही वर्षों के बाद प्रकाशित हुई थी।

हेनरी जेम्स—मनोवैज्ञानिक परिच्छेद

परम्परा को न छोड़कर उपन्यास की उन्नति करनेवालों में सबसे वयोवृद्ध तथा अधिक महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार हेनरी जेम्स (Henry James) हैं जिसका जन्म १८४३ में न्यूयार्क में हुआ था, किन्तु जो इंग्लैण्ड में रहकर तथा यूरोप के सम्पर्क में आकर साहित्य-सेवा करता था। जेम्स ने १८७५ में राडरिक हडसन (Roderick Hudson) नामक अपना प्रथम उपन्यास प्रकाशित किया था। इस उपन्यास में वह अमेरिकानिवासी युवकों तथा युवतियों की उस दशा का वर्णन करता है जो उनकी यूरोपीय सभ्यता के सम्पर्क में आने पर होती है। इसी विषय को उसने कई और उपन्यासों में भी लिया है। प्रारम्भिक काल का सबसे अच्छा उपन्यास दि पोर्ट्रेट आफ ए लेडी (The Portrait of a Lady) है जो १८८१ में प्रकाशित हुआ था। दि ट्रैजिक म्यूज (१८९०) (The Tragic Muse) में उसने कला के जीवन की तुलना राजनीति तथा धनोपार्जन की सफल स्थिति से की है। दूषित सामाजिक वातावरण में एक युवती को प्रवेश कराने से जो कठिन प्रश्न सामने आते हैं, उनका बड़ा सुन्दर मनोवैज्ञानिक निरीक्षण उसने दि आकवर्ड एज (The Awkward Age) में किया है जो १८९८ में प्रकाशित हुआ था।

व्यक्तिगत ऐसी ही कई समस्याओं को लेकर उसने कई उपन्यास लिखे थे जिनमें से दि विंग्ज आफ ए डव (The Wings of a Dove), दि गोल्डेन बोल (The Golden Bowl), दि ऐम्बैसेडर्स (The Ambassadors) बहुत प्रसिद्ध हैं और १९०२ से लेकर १९०६ तक के समय में लिखे गये थे। दि ऐम्बैसेडर्स में, जो जेम्स की प्रौढ़ावस्था की श्रेष्ठ रचना है, उसने फिर एक अमेरिकन युवक की दशा का चित्रण किया है, जो पेरिस के प्रलोभनों में फँस जाता है और उसके स्वजन "एम्बैसेडर्स" की भाँति उसे मुक्त कराने फ्रांस आते हैं और मामले का निपटारा करते हैं।

जार्ज मेरिडिथ और स्टीवेन्सन के साथ हेनरी जेम्स उन थोड़े उपन्यासकारों में गिना जाता है जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के चतुर्थ चरण में अंग्रेजी उपन्यास को उसकी उन्नति के शिखर पर पहुँचाया और उसकी प्रणाली को विज्ञान के सिद्धान्तों के अनुसार शोधा। जेम्स यूरोपीय साहित्य की प्रगति को भी खूब अच्छी तरह

समझता था और कभी-कभी साहित्यकला के सिद्धान्तों पर बड़े दार्शनिक निबन्ध लिखता था, जो आज भी आदर से पढ़े जाते हैं। उपन्यास लिखने के लिए जेम्स समाज के उस स्तर के लोगों के जीवन से सामग्री लेता है जिनकी मनोवृत्तियाँ बड़ी तीव्र होती है, और अपनी प्रणाली के अनुसार उन्हें अपनी सूक्ष्म परीक्षा में लाकर वैज्ञानिक तथ्यों को दर्शाता है। इस प्रणाली के कारण जेम्स के बहुत-से उपन्यासों में दौड़-धूप या काम-काज बहुत कम है, किन्तु कथावस्तु कुछ इस प्रकार व्यवस्थित होती है कि उपन्यास के समाप्त होते-होते सारी परिस्थितियाँ किसी ऐसी घटना में सिमट आती है, जो मनोवैज्ञानिक समस्या को पाठक के सामने नाटक की रीति से सजीव तथा साकार कर देती है। हेनरी जेम्स की ऐसी रीतियाँ इतनी गूढ़ हैं कि साधारण पाठक उन्हें समझ नहीं पाते। उसके उपन्यासो के विषय भी गूढ़ होते हैं। जीवन सम्बन्धी कोई कलात्मक प्रश्न या कोई व्यक्तिगत समस्या, जो समाज के वातावरण और व्यक्ति के चरित्र की असंगति के कारण उत्पन्न हो, जेम्स के लिए बड़ा अच्छा विषय होती है और वह प्रश्न का सावधानी से पाठक के सामने सूक्ष्म निरीक्षण करता है। मेरिडिथ का भी यही ढंग है और दोनों की शैली भी विषय के अनुरूप होने के कारण सामान्य पाठकों के लिए कठिन है। यही कारण है कि जेम्स की पुस्तके लोकप्रिय नही हुई और आज भी बहुत थोड़े लोग उन्हें पढ़ते हैं। साहित्य-कला तथा कहानी-कला पर उसने जो रचनाएँ प्रकाशित कीं वे लेखकों के लिए बड़े महत्त्व की हैं और अपने पाठकों को कला के सिद्धान्त सिखाती हैं।

यद्यपि कहानी-साहित्य में मिसेज हम्फ्री वार्ड (Mrs Humphry Ward), जेम्स मैथ्यू बैरी (James Mathew Barrie), रडयार्ड किपलिंग (Rudyard Kipling और मारिस ह्यूलेट (Maurice Hewlett) ने रोमांस और वास्तविकता को परस्पर मिलाकर बड़ी सुन्दर रचनाएँ की थीं, किन्तु उपन्यास के विकास में उनका कोई विशेष महत्त्व नहीं है। इन लेखकों ने छोटी-कहानी और नाटक या कहानी-काव्य पर अधिक ध्यान दिया और बहुत थोड़े उपन्यास लिखे। मिसेज़ वार्ड ने मेरिडिथ और जेम्स की रचनाओं के साथ-साथ सामान्य जीवन की समस्याओं पर उपन्यास प्रकाशित करके कुछ ख्याति पायी थी, किन्तु समय के साथ-साथ उसके उपन्यास पुराने-से हो गये और अब कम पढ़े जाते हैं।

बहुत-सी सामयिक समस्याएँ इन उपन्यासों में उठायी गयी थीं जो विज्ञान और धर्म के परस्पर संघर्ष की थीं या व्यवसायों के आर्थिक झगड़ों से सम्बन्ध रखती थीं और समय पाकर हल होती गयीं। इस काल के उपन्यासकारों में सबसे अधिक

ख्याति उनको मिली जिन्होंने सामाजिक समस्याओं को लेकर उपन्यास लिखे। ऐसे लेखकों में आनल्डि वेनेट (Arnold Bennett), हर्वर्ट जार्ज वेल्स (Herbert George Wells) और जान गैल्सवर्दी (John Galsworthy) के समाज-समालोचना के उपन्यास विशेष महत्त्व के हैं। इनके उपन्यासों में वह परिवर्तन भी देखा जाता है जो इस युग के श्रेष्ठ लेखकों ने विज्ञान के प्रभाव में आकर साहित्य में किया था और जिसने उपन्यास की प्रणाली को भी प्रभावित किया था।

उपन्यास की कथावस्तु अधिक गठी हुई और प्रसंगों से मुक्त हो गयी है, यदि सर्जनात्मक अंशों का अभाव होने लगा है तो कलात्मक अंशों की वृद्धि हो गयी है, और अब उपन्यासों के पात्र उसी संसार में अपना जीवन विताते तथा भाग्य आज़माते हैं जिसके निर्माण में उन्होंने भाग लिया है। उपन्यासकार अब विना संकोच अथवा डर के सामाजिक तथ्यों को सामने लाता है और उनका सच्चा चित्र देता है। आडम्वर तथा वनावट के दिन बीत चुके हैं; उपन्यास में विज्ञान की भाँति सत्य को और समाज के रोगों को बाहर से वैद्य की तरह देखना आरम्भ हो गया है।

आर्नल्डि वेनेट

आर्नाल्ड वेनेट (Arnold Bennett) का जन्म १८६७ में हैन्ली के निकट हुआ था, जो उन पाँच कसबों में से एक कसबा है जहाँ के लोगों के हाल पर उसने आगे चलकर उपन्यास लिखे। पाँच कसबों का यह क्षेत्र संसार से निराला है, यहाँ के लोगों की भाषा और जीवन-प्रणाली अनोखी है और यहाँ के व्यवसायी जीवन की समस्याएँ भी दूसरे क्षेत्रों की समस्याओं से बहुत कुछ अलग हैं। यह वेनेट का सौभाग्य समझना चाहिए कि उसका लड़कपन एवं युवावस्था इंग्लैण्ड के उस दिलचस्प प्रदेश में व्यतीत हुई, जहाँ उपन्यासकार के काम की सामग्री भरी पड़ी है। इधर-उधर वहुत तरह के काम करने के उपरान्त और अपनी लेखनी को खूब अभ्यास करा चुकने के वाद उसने उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया। इससे पहले उसने फ्रांस में भी कई वर्ष व्यतीत किये थे और वास्तववाद के साहित्य का वहाँ अध्ययन किया था। उसने इंग्लैण्ड के व्यवसायी जीवन को भी अच्छी तरह देखा और समझा था। जिन पाँच कसबों वाले क्षेत्र में उसका लड़कपन बीता था वहाँ के निवासियों की सीमित दुनिया तथा उनका बँधा-टँका जीवन भी उसने देखा था।

अपने दि ओल्ड वाइव्ज टेल (The Old Wives' Tale) और क्लेहैंगर (Clayhanger) में उसने इसी क्षेत्र के व्यवसायियों को पात्र वनाया और उनके स्वाभाविक साहस तथा अन्वेषण की धुन को दर्शाया। वास्तविकता और रोमांस को मिलाकर उसने अपने उपन्यास लिखे और प्रत्येक उपन्यास में अलग-अलग व्यक्तियों मे ये प्रवृत्तियाँ दिखाकर कथावस्तु को तैयार किया। दृश्यों का भी वड़ा सुन्दर वर्णन किया, और यह सव कुछ करके उसने दिखाने की चेष्टा की कि दोनों प्रवृत्तियाँ स्वभाव तथा व्यक्ति के झुकाव एवं रुचि के अधीन होती है।

आर्नाल्ड वेनेट की समाज सम्वन्वी समालोचना का कोई अलग उद्देश्य नही वल्कि वह मुख्य उद्देश्य के साथ घुली-मिली होती है। ठीक अवसर मिलने पर वह सुयोग्य पात्रों के मुख से वे वाते कहलाता है जिनमें अनात्मवाद, पाखण्ड, रूढ़ियों तथा लौकिकता की निन्दा होती है। सव प्रकार के शिक्षा सम्वन्वी आडम्वरो से उसे घृणा है और वह शिक्षा के दोष क्षमा नही करता। वड़ी निर्दयता से उन सव वातों को नष्ट कर देना चाहता है जो शिक्षा को खराव करती है। क्या घर के भीतर की, क्या समाज की, सभी सभ्यता उसे खोखली दिखाई पड़ती है और वह उसकी दुर्गति का इस प्रकार चित्रण करता है कि पाठक तुरन्त उससे सहमत हो जाता है और वे सुधार स्वीकार कर लेता है जो वह इतिहासकार की भाँति प्रस्तुत करता है। वेनेट मे साधारण सुधारक का जैसा उत्तेजन नही है, वल्कि ऐसी सावधानी है जो दोपो को ठडे दिल से एक वैद्य की आँख से देखकर चिकित्सा करना चाहती है।

हर्वर्ट जार्ज वेल्स

शिक्षा तथा सभ्यता के दोष दिखाने मे वेनेट इस युग के दूसरे उपन्यासकारों के साथ है। ऐसे लेखको का मार्गदर्शक तथा विज्ञान की दृष्टि से चीजों को देखने-वाला साहित्यकार हर्वर्ट जार्ज वेल्स (Herbert George Wells) है, जिसका जन्म १८६६ मे हुआ था और जो रायल कालेज आफ साइन्स (Royal College of Science) मे शिक्षा प्राप्त करके समाजशास्त्र के विपयो के अध्ययन तथा अन्वेपण की धुन मे लगा रहता था। जिस समय उसका स्वास्थ्य विगड़ा और उसके वैज्ञानिक कार्यो मे विघ्न पड़ा तो वह कुछ दिनो विज्ञान की काल्पनिक उन्नति की सामग्री को लेकर कहानियाँ तथा उपन्यास लिखने लगा और 'दि टाइम मशीन'

'दि वार आफ़ दि वर्ल्ड्स' (The War of the Worlds) नामक पुस्तकें १९०५ से प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया। उसका प्रथम उपन्यास, जिसका नाम 'किप्स' (Kipps) है, १९०५ में प्रकाशित हुआ था, जिसके उपरान्त विभिन्न विपयों पर वह वीस-वाईस वर्षों तक वरावर उपन्यास लिखता रहा। उसने इन उपन्यासों में कई गूढ़ समस्याएँ उठायी हैं जिन्हें हल करने में समाज के सारे विचार-शील लोग दिलचस्पी ले रहे थे—जैसे वर्गों के परस्पर संघर्प, एक वर्ग से दूसरे में प्रवेश पाने की कठिनाइयाँ, स्त्रियों की शिक्षा तथा उनके जीवन की कठिनाइयाँ, प्रेम एवं विवाह सम्वन्धी प्रश्न, आवेग तथा व्यवसाय का जीवन से सम्वन्ध और उत्कंठा के वश में कार्य करने का मनुष्य के चरित्र पर प्रभाव। ये प्रश्न 'टोनो वंगे', "ऐन विरॉनिका", "मिस्टर पॉली", "दि न्यू मैकियवेली", "दि पैशेनेट फ़्रेंड्स" आदि उपन्यासों में लिये गये हैं और उनके उत्तर त्याग अथवा धार्मिक दुहाइयों के ऊपर निर्भर नहीं किये गये है, वल्कि वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर समाजशास्त्र के निश्चित नियमों के अनुसार प्रस्तुत किये गये हैं। इस चेप्टा में वेल्स विल्कुल आधुनिक वैज्ञानिक युग का लेखक है, जो दूर के आनेवाले भविष्य पर आँखें जमाये हुए है।

विगत और भविष्य के दृष्टिकोण का एक वड़ा साधारण अन्तर यह है कि मनुष्य पहले संसार का ज्ञान इतिहास को चित्र के पीछे का दृश्य वनाकर प्राप्त करने को ठीक रास्ता समझता था। हर्वर्ट स्पेन्सर तथा डारविन के युग के वाद से मनुष्य और संसार के चित्र के पीछे का दृश्य जीवशास्त्र एवं समाजशास्त्र को समझा जाने लगा। इस कारण एच० जी० वेल्स ने अपने उपन्यासों में डारविन के परिणामवाद (विकासवाद) के सिद्धान्तों को सामान्य जीवन तथा साधारण मनुष्यों के विचारों एवं मन्सूवों में और उनकी प्रेरणाओं में दिखाने की चेप्टा की। वह मनुष्य-जीवन को "जन्मों का अनुक्रम" और मनुष्य-जाति को "एक धारा, जिसका प्रवाह हमारे अन्दर से होता रहता है" समझता है। इस जगत-सम्वन्धी विचार के साथ वेल्स प्रत्येक मनुष्य के स्वयं अनुभव के वारे में भी विचार रखता है, और इसी कारण उसने समाजशास्त्र के विवरणों के निवन्धों के अलावा उपन्यास लिखे, जिनमें व्यक्ति से ही मतलव होता है, मनुष्य-जाति से नहीं। वह मनुष्य की वुद्धि तथा उसके आत्म-त्याग में भी विश्वास रखता है, और मनुष्य के चारों ओर के संसार को भी विशेष महत्त्व देता है। तत्कालीन समाज को वह अंधकारमय समझता है, किन्तु यह विश्वास रखता है कि पदार्थविज्ञान तथा अर्थशास्त्र के उचित प्रयोग से मनुष्य

अपनी दुनिया को अपना उन्नत जीवन व्यतीत करने के योग्य स्थान बना लेगा।

जॉन गैल्सवर्दी

एच० जी० वेल्स की इस आशावादी विचारधारा की ठीक उलटी विचार-धारा जॉन गैल्सवर्दी (John Galsworthy) की थी, जो मानव-सभ्यता को आर्नाल्ड बेनेट के समान धोखे की टट्टी समझता था। गैल्सवर्दी का जन्म सन् १८६७ में हुआ था। हैरो के स्कूल तथा आक्सफर्ड विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करके वह १८९० में बैरिस्टर हो गया था, किन्तु पेशे से अरुचि होने के कारण वकालत नहीं की और अपना समय भ्रमण करके देश-देशान्तर के देखने में व्यतीत करता रहा। साहित्य से उसे विशेष रुचि थी, और प्रारम्भ से ही वह लिखने का अभ्यास भी करता था, किन्तु जब उसकी प्रथम रचना प्रकाशित हुई तो वह तीस वर्ष का हो चुका था। वह पहली रचना जिस पर उसका नाम था, १९०४ में प्रकाशित हुई थी जब कि वह सैंतीस वर्ष का था।

१९०६ में जब दि मैन आफ प्रापर्टी (The Man of Property) प्रकाशित हुआ, तो तुरन्त वह प्रसिद्ध हो गया और उसका उपन्यास लोकप्रिय हो गया। इस उपन्यास में भाग्यशाली मध्य श्रेणी के लोगों की कहानी है, जिनके हृदय और जिनके न्याय तथा अच्छे और बुरे का विवेचन, सब सम्पत्ति और प्रभुत्व अथवा मिलकियत के ऊपर आधारित रहता था। इस उपन्यास में हमारा परिचय उस परिवार से होता है जो अंग्रेजी के कहानी-साहित्य में प्रख्यात है और जिसका प्रत्येक व्यक्ति उस मिश्रित रचना में एक नमूना है, जिसे तत्कालीन युग में धनिक मध्य वर्ग के नाम से समाज में विशिष्ट किया जाता था। गैल्सवर्दी ने बड़ी सूझ-बूझ से उसका सूक्ष्म-निरीक्षण समाज-चेतन होकर किया है। अपने दूसरे और तीसरे उपन्यासों में इसी प्रकार से उसने रईसों की वर्गचेतना को उनके धन और सम्पत्ति पर आधारित दिखाया, फिर 'फ्रैटर्निटी' (Fraternity) नामक उपन्यास मे उन सीमाओं के उल्लंघन की कठिनाइयों को दिखाया जो एक वर्ग को दूसरे से अलग रखती है और जिन्हें तोड़ने में मनुष्य असफल रहता है। समाज-व्यवस्था में गैल्सवर्दी विभिन्न वर्गों के भेद को प्रधान तत्त्व समझता है, और अपने उपन्यासों में बड़ी सावधानी के साथ प्रत्येक वर्ग का उसके व्यक्ति-समूह पर जो प्रभाव पड़ता है, उसे दर्शाता और विभिन्न वर्गों के परस्पर संघर्ष तथा द्वेषभाव को दिखाता है।

सारे अंग्रेज़ी कहानी-साहित्य में सामाजिक वर्ग-विभाजन का बड़ा महत्त्व रहा है। रोमांसों और प्राचीन कहानियों में पात्रों को निम्न श्रेणी से उनकी उत्पत्ति एवं विवाह-सम्बन्ध के कारण उठाकर उच्च श्रेणी में रख दिया जाता था और इस प्रकार बहुतों का भाग्य बदल जाता था। 'पैमिला' के प्रकाशन के समय से उपन्यासकार व्यक्तिगत गुणों को बहुधा वर्गीय सीमा से बाहर निकालने की चेष्टा करते आये थे। किन्तु गैल्सवर्दी वर्ग-विभाजन को पहले के उपन्यासकारों से कहीं अधिक महत्त्व देता है और वैज्ञानिक की भाँति उसका निरीक्षण करता है। जीवन के प्रतिफल तथा असुविधाएँ, पारितोषिक एवं दण्ड समाज-व्यवस्था के भेदों के अनुसार दिये जाते हैं। गैल्सवर्दी के उपन्यासों में कलंक तथा बदनामी की स्थिति इस वर्गीय विभाजन की चेतना से उत्पन्न होती है, जिसे उपन्यासकार बहुधा चरित्र की कसौटी बनाकर कथावस्तु को चलाता है। जो कोई अपने वर्ग की सीमा का उल्लंघन करके उसके बाहर निकलने की चेष्टा करता है, चाहे वह सफल हो या न हो, उसके सिर पर सदा निरर्थकता का शाप पड़ता है, जिसके परिणाम को वह कभी रोक नहीं सकता। इन सब बातों के दर्शाने में गैल्सवर्दी बड़ी सुन्दर रीति से वास्तविकता से काम लेता है और छोटी-छोटी नाजुक बातों से बड़े महत्त्व के प्रभाव डालता है। एक उपन्यास में वह एक धनाढ्य महानुभाव के भाईचारा स्थापित करने के सारे प्रयत्न को अकस्मात् लहसुन की बास सुँघाकर निष्फल कर देता है और उनकी दया केवल चन्दा देकर रह जाती है। एक मनुष्य इन मामलों में दूसरों से कितना भिन्न होता है, और हो सकता है वह खूब जानता है; और अपने पाठकों को वह अनुभव कराता है कि ये तुच्छ बातें भी एक मनुष्य और दूसरे मनुष्य में कितना भेद डालती हैं, जिसमें किसी का भी दोष नहीं होता। इन नफ़ासतों में गैल्सवर्दी की स्वाभाविक तीव्र चेतना दिखाई देती है, जो लारेन्स स्टर्न की याद दिलाती और मनुष्य की निर्बलता का प्रदर्शन करती है। उसकी समझ में समाज एक दलदल के समान है, जिसमें व्यक्ति-जीवन उसी प्रकार धँस जाता है, जैसे प्राचीन काल के विशालकाय जन्तु धरती की करैल चिकनी मिट्टी में धँसकर लुप्त हो गये। गैल्सवर्दी निराशावादी है, किन्तु उसके निराशावाद का आधुनिक विज्ञान पूरा साथ देता है और उसे इस परिवर्तनशील संसार में सिद्धान्तों की ऐसी दृढ़ शिला पर स्थान देता है, जिसे साम्यवाद हिला भी नहीं सकता।

साहित्य के दूसरे अंगों की भाँति उपन्यास पर भी इस युग के सैकड़ों नये प्रयोग हुए, जिनके फलस्वरूप सैकड़ों नयी प्रणाली के उपन्यास लिखे गये। इस

नवीनता ने युग को उपन्यासकारों की जगह उपन्यासों का युग बना दिया, और उपन्यासों की भीड़-भाड़ में उस श्रेष्ठता को देख सकना कठिन हो गया जो जीवित रहकर अपने प्रभाव से भविष्य के उपन्यास को श्रेष्ठता देगी। ऐसी दशा में उपन्यास के इतिहास को आगे बढ़ाना मानो जंगल के अन्दर से जंगल को देखने की चेष्टा करना है। जब हम किसी पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी को देखना चाहते है तो पहाड़ से कुछ दूर हटकर देखते है। जिस प्रकार वृक्षों से जंगल छिप जाता है उसी तरह निकट से देखने पर पहाड़ अस्तव्यस्त चट्टानों का ढेर जान पड़ता है। इतिहास के तथ्यों तथा घटनाओं के ठीक अर्थ समझने के लिए ऐसी दूरी की आवश्यकता होती है जहाँ से उनके दूरस्थ सम्बन्धो के सहित उन्हें देखा जा सके। यही हाल उपन्यास के इतिहास का भी है। कुछ काल व्यतीत होने पर ही हम युग की उन श्रेष्ठताओं को समझ सकेंगे, जो भविष्य के उपन्यास का रूप निर्णीत करेगी और जीवित रहेंगी।